कामाख्य त्रवीखनाथ ठाकूत



বিশ্বভারতী গ্রন্থালয় ২ বন্ধিম চাটুন্সে খ্রীট, কলিকাভা প্রকাশ ১২৪৪ বৈশাধ
গরিবর্ধিত সংক্ষরণ ১৩৫২ পৌষ
প্রকাশক শ্রীপুলিমবিহারী সেন
বিশ্বভারতী, ৬০ ছারকানাথ ঠাকুম লেন, কলিকাতা
মুদ্রাকর শ্রীপ্রনারারণ ভটাচার্ধ
তাপসী প্রেস, ৩০ কর্নপ্রয়জিস স্ট্রীট, কলিকাতা

मू ही शख

ক্ৰান্ত্ৰ _ত	0-310
विद्या ७ चित्रिका	5.5
লো:কহিত	23
मछारेटात म्म	88
क्छात्र रेष्ट्रांत कर्व	89
ट्हाटिंग ७ वट्या	71
चाविकावत्रायखः	>->
বাভায়নিকের পত্র	250
শক্তিপুৰা	264
জিকার মিলন	745
সভােব আহ্বান	>5-7
সমস্তা	376
স্মাধান	₹8,€
म्यागर्भ	\$65
5 ते क 1	263
चनाचगाधन '	296
त्रावटलंब क्या	5,27
বুৰ্ত্তর ভারত	908
हिन्द्र्याग्यान	@78
यांनी सहान्त्र	
हिस्यूगणया न	45.4
'त्रवीत्यनारथत्र बाह्रेरेनिक्क यक'.	⇔8 ≥
नाबी	· VE 3
- क्व्रांग	80
चारत्राग्र	996
राजाजात गरक्ठे	96

त्व माध्य चुनीर्घ कान त्यत्क किला कराज कत्र जित्यद्य जात्र जन्नात थात्रादक केचि-शामिकणाट्य राषारे मरभछ। -:- ब्राइनीजिन मटलो वियदम द्कारना बीधा मक अदक्रादन जुनन्श्र्वाद्य कारना-ध्रक विस्नय नमस्य चार्यात्र मन (पटक छरश्रम रहा नि, जीवरनंत्र অভিক্রভার সঙ্গে সঙ্গে নানা পরিবর্তনের मर्या जाता भएक केटिट्र । त्यहे-समख পরিবর্জনপর পরার মধ্যে নি:সন্দেহ একটা ঐক্যস্ত্র আছে। সেইটিকে উদ্ধার করতে श्राम ब्राचात्र कान् जाः म प्र्या, कान् जाः म लीन, कान्छ। उৎসাময়िक, कान्छ। विल्य मगरमञ्ज मीयां क का किल्लम करन व्यवस्थान, म्बर्टि विहास क'रत स्मथा हारे। वस्तु मिटिक व्यर्भ व्यर्भ विहास क्रमण (शुरु পাওয়া যায় না, শ্ৰেগ্ৰভাবে অমূভৰ ক'রে ভবে ভাকে পাই।

— क्रांगाखर, १ ७८२

कानाखन

এक मिन छ खीय खरल जायारमय जाथजा यगज, जानान जयज नाजानजनित्तत्र कृष्टित्र, व्यात्नाहनात्र विवत्र हिन व्यात्मत्र नीयात्र मत्यारे यह। भद्रम्भद्रक निष्म व्राभिष्ट्य गहा-एक्ट्य जारम-भाषात्र अवश ভার সঙ্গে ঘণ্টা-ভিন-চার পরিমাণে দিবানিদ্রা মিশিয়ে দিনটা যেভ (करि। जात्र वाहेदत्र मार्क भारक िखानू नेनात्र य जारबाजन एक रन ছিল যাত্রা সংকীর্তন কথকতা রামায়ণপাঠ পাঁচালি ক্বিগান নিয়ে। তার বিষয়বস্ত ছিল পুরাকাহিনীভাণ্ডারে চিরদঞ্চিত। যে জগতের মধ্যে वाग (गठा गःकीर्व এवः चिन्निविष्ठि। छात्र गमछ छषा এवः त्रगवात्रा বংশামুক্রমে বংসরে বংসরে বার বার হয়েছে আবভিত অপরিবভিত ठऊ भए । त्रहेश्विष्टक चर्यक्षन कर्य चार्याप्यय की वन्याद्यात्र मः स्राव निविष इत्य खर्म फेट्ठिइ, रमर्-मक्न कठिन मःश्वाद्यत्र हैहेशायत्र पिद्य व्यायात्मत्र वित्वय गः गात्रत्र निर्माणकार्य गयाया हत्य शित्र्वाह्म । अहे गश्गारमम वाहरम मानव-खन्नारखन मिक्मिगरस विन्नाहे हेलिहारमम অভিব্যক্তি নিরম্বর চলেছে, ভার ঘূর্ণাদান নীহারিকা আছোপান্ত সনাতন श्रवात्र ७ माञ्चवहरन हित्रकारणव गरणा द्वावत्र इस्त्र ७८५ नि, छात्र गरश এक चः भित्र गटक चाद- এक चः भित्र घां छगः घांट नव नव गमछात्र सृष्टि रुष्ट, क्यांग्रंडरे छारमंत्र প्रम्भारत्र शैयानात्र गश्रकाहन-क्षेत्रात्र्र পরিবভিত হচ্ছে ইতিহাসের রূপ, এ আযাদের গোচর ছিল না।

বাইরে থেকে প্রথম বিরুদ্ধ আঘাত লাগল মুসলমানের। কিন্ধ, সে মুসলমানও প্রাচীন প্রাচ্য, সেও আধুনিক নর। সেও আপন জভীত শতাকীর মধ্যে বন্ধ। বাহুৰলে সে রাজ্যসংঘটন করেছে, কিন্তু তার চিভের স্থিবৈচিত্ত্য ছিল না। এইজন্তে সে ব্যন আমাদের দ্বিগন্তের

याथा द्यांत्री वामदान वांशाल, ७थन जांत्र माल वांगालक मः वर्ष वहेटल नामन- किन्न (म मश्चर्य वाक्, এक वित्रश्चात्र महन चात्र-अक वित्रश्चात्र, এक दीथा गएवत्र गएक चात्र-अक दीथा गएवत्र। त्राहेश्रमानीएड यूगनयात्नत्र श्रेष्ठाव श्राद्य करत्रह्, हिरखन्न गर्था छोत्र किन्ना मर्राजाजार अवन इम्र नि, जायरे अयाग पिश माहिए। एसम्बाय ভদ্রসমাজে সর্বাই প্রচলিত ছিল পাসি, তবু বাংলা কাবোর প্রকৃতিতে এই পাসি বিভার স্বাক্তর পড়ে নি— একমাত্র ভারতচন্ত্রের বিভাস্থকরে यांकिত ভাষার ও অশ্বলিত ছন্দে যে নাগরিকতা প্রকাশ পেয়েছে ভাতে পাসি-পড़ा चिত्रপরিহাসপটু বৈদয়োর আভাস পাওয়া যায়। তথ্যকার वाश्मा माहित्जात ख्रशान्ज हुई जांग हिन ; এक मननकारा, चात्र-अक देवक्षव भागवणी। यज्ञनकार्या यास्य यास्य यूगनयान बाष्णामागरनव विवदन चाट्य, किन्द छात्र विवयवन्त किया यनस्ट यू यूगमयान गाहिएछात्र कारना हान पित्र रन, रेवक्षव शैं जिकारना रहा क्षांहे स्ने । ज्यह वाःना ভाষায় পাनि भक्ष कर्याह विखत्र, তा ছाড়া मिनि चश्छ भहरत्र রাজধানীতে পারসিক আদবকায়দার যথেষ্ট প্রাচুর্ভাব ছিল। তথনকার कारम इरे गनाजन रिष्।-मिन्या मनाजा नायजर्ध भागाभाभि अरम माँ फिर्याह, भवन्भदिव शिक यूथ-किविद्य। जात्मव यद्या किह्रे किया-প্রতিক্রিয়া হয় নি তা নয়, কিছ তা সামান্ত। বাহুবলের ধারা দেশের **छि** भरत थून क्यारत क्यार्ग्स, कि**स** क्यारना नकून **हिसात्रारका क्यार**ना नजून रुष्टित्र छेष्ठरम छात्र यनत्क छिछिएत्र छाट्न नि। छ। छ। चाद्रा এको। कथा चाट्छ। वाहित (थटक यूगमयान हिन्दुशाटन এटम श्राप्ती वागा (वैश्वर्ष्ट किंग चामारमन्न मृष्टिक वाश्वित्र मिरक कागानिक करन नि। **छात्रा चर्त्र अरम चत्र मथन करत वमन, वह करत मिरन वाहिर्देव मिरन** मत्रका। गाय गाय रगरे मत्रका-छाडाछाडि हरनहिन, किंद अयब कि षर्छ नि याटक वाश्रित्रत्र विरथ कामारमत्र भित्रहत्र विश्वात्रिक रूक भारत्र।

रगरेषक गद्दीय छात्र अर्थ एक व्यापादक श्री व्याप्त व्याप्त ।

তার পরে এল ইংরেজ, কেবল মাছ্বরপে নয়, নব্য র্রোপের
চিত্তপ্রতীকরণে। বাছ্ব জোড়ে স্থান, চিত্ত জোড়ে বনকে। আজ
ম্সলমানকে আমরা দেখি সংখ্যারপে; তারা সম্প্রতি আমাদের রাষ্ট্রক
ব্যাপারে ঘটরেছে বোগ-বিরোপের সমস্তা। অর্থাৎ এই সংখ্যা
আমাদের পক্ষে গুণের অভ্যক্ত না কবে তাগেরই অভ্যক্ত করছে।
দেশে এরা আছে অবচ রাষ্ট্রজাতিগত ঐক্যের হিসাবে এরা না বাকার
চেরেও কাক্ষণতর, তাই ভারতবর্ষের লোকসংখ্যাতালিকাই তার অতিবহলব নিয়ে সব চেয়ে শোকাবহ হয়ে উঠল।

ইংরেজের আগমন ভারতবর্ষের ইতিহাসে এক বিচিত্র ব্যাপার। याञ्च हिनाद छात्रा त्रहेन यूननगानदित कार्य छायादित काह (बेंदक चरिक मृत्य, किन्न भूत्रारिय हिछम्छक्रिश देश्य এछ गार्थक छ গভীর ভাবে আযাদের কাছে এসেছে যে আর-কোনো বিদেশী আভ क्लामा मिन अयन करत्र चागरण भारत्र नि। यूर्त्राभीत्र हिरखत्र चन्नयमिक चार्यात्वत्र श्वतंत्र यत्वत्र छेलद्र चाघाछ कद्रण, रयमन मूद्र चाकाम त्यरक वाषां करत वृष्टियात्रा याष्ट्रित 'शरत ; कृषिक लात नित्निष्ठ विखातत्र मर्या क्यर्यम क'रव क्यार्यव रहेश मकाव करव रमय, महे रहेश विहिजकर्म च्यूत्रिक विक्षिक रूक थारक। এই চেষ্টা य कृषर अ এक्বाরে ना यटि मिठा यक्ष्यि, जात्र त्य अकाख व्यवख्याशिका मि का मुकुत्र धर्म। আমরা মুরোপের কার কাছ থেকে কী কতটুকু পেয়েছি, তাই অতি স্ক विठारत्र हृत्न हृत्न व्यत्नक পत्रियार्ग कन्नना ७ किছू পत्रियार्ग भरवर्गा विश्वात्र क'रत्र व्याक्षकान कारना कारना नियाना नियानिक व्याधुनिक रमधरकत्र প্রতি কলম উত্তত করে নিপুণ ভলীতে বোঁটা দিয়ে বাকেন। একদা द्रार्निराजन िखर्यना हेवेनि स्थित्क छेन्द्रका हरत जमक सूर्त्रार्भन स्व यथन প্রতিহত হয়েছিল তথন ইংলপ্তের সাহিত্যপ্রটাদের মনে তার প্রভাব

य नाना करण প্रकाभ (भरत्रष्ट मिछा किहूरे चाफर्यंत्र कथा नम्न, ना इरगरे मिछाक वर्षत्रण वना यण। जहन मन्त्र श्रणांच मधीन मन ना निरम पाकरण्ये भारत ना— এই দেওয়া-নেওয়ার প্রবাহ সেইখানেই नিমত চলেছে যেখানে চিড বৈচে আছে, চিড জেগে আছে।

বর্তমান বুগের চিন্তের জ্যোতি পশ্চিম দিগন্ত থেকে বিচ্ছুরিত হরে মানব-ইতিহাসের সমস্ত আকাশ জুড়ে উদ্ভাসিত, দেখা যাক তার স্বরূপটা কী। একটা প্রবল উন্তমের বেগে মুরোপের মন ছড়িয়ে পড়েছে সমস্ত পৃথিবীতে— গুরু তাই নয়, সমস্ত জগতে। বেখানেই সে পা কড়িয়েছে সেইখানটাই সে অধিকার করেছে। কিসের জ্যোরে ? সত্যসন্ধানের সততায়। বৃদ্ধির আলভে, কয়নার কুহকে, আপাতপ্রতীয়মান সাল্জে, প্রাচীন পাণ্ডিত্যের অন্ধ অন্থর্কনায় সে আপনাকে ভোলাতে চায় নি ; মাহ্মষের স্বাভাবিক প্রবৃত্তি যা বিশ্বাস ক'রে নিশ্চিত্ত থাকতে চায় তার প্রবেশ সংগত ক'রে সত্যকে সে যাচাই করে নি। প্রতিদিন জয় করেছে সে জানের জগৎকে, কেননা তার বৃদ্ধির সাধনা বিশুদ্ধ, ব্যক্তিগত মোহ থেকে নিমুক্ত।

যদিও আমাদের চার দিকে আঞ্রন্ত পঞ্জিকার প্রাচীর খোলা আলোর প্রতি সন্দেহ উন্থত করে আছে, তবু তার মধ্যে কাঁক করে মুরোপের চিত্ত আমাদের প্রাক্তণে প্রবেশ করেছে, আমাদের সামনে এনেছে জ্ঞানের বিশ্বরূপ; মান্থবের বৃদ্ধির এনন একটা সর্বব্যাপী ঔংস্ক্যু আমাদের কাছে প্রকাশ করেছে বা অহৈত্বক আগ্রহে নিকটভন-দ্রতম অণ্তম-রহজম প্ররোজনীয়-অপ্ররোজনীর সমস্তকেই সন্ধান, সমস্তকেই অধিকার করতে চার; এইটে দেখিরেছে বে, জ্ঞানের রাজ্যে কোথাও কাঁক নেই, সকল ভণাই পরস্পর অচ্ছেন্ড হত্তে গ্রাণিত, চতুরানন বা পঞ্চাননের কোনো বিশেব বাক্য বিশ্বের ক্ষুত্রতম সাকীর বিক্তি আর্পন অগ্রাকৃত

कामास्त्र

श्रामानिक्छ। मावि क्राट भारत मा।

বিশ্বতম্ব সম্বন্ধে বেমন, তেমনি চরিত্রনীতি সম্বন্ধে। নতুন শাসনে যে আইন এল তার মধ্যে একটি বাণী আছে, সে হচ্ছে এই যে, ব্যক্তি-তেদে অপরাধের তেদ ঘটে না। ব্রাহ্মণই শৃত্রকে বধ করুক বা শৃত্রই ব্রাহ্মণকে বধ করুক, হত্যা-অপরাধের পংক্তি একই, তার শাসনও সমান— কোনো মুনিশ্ববির অমুশাসন স্থার-অস্থানের কোনো বিশেষ দৃষ্টি প্রবর্তন করতে পারে না।

সমাজে উচিত-অন্থচিতের ওজন, শ্রেণীগত অধিকারের বাটধারাবোগে আপন নিত্য আদর্শের তারতম্য ঘটাতে পারবে না, এ কথাটা
এখনো আমরা সর্বত্র অন্তরে অন্তরে মেনে নিতে পেরেছি তা নর, তর্
আমাদের চিন্তার ও ব্যবহারে অনেকখানি বিপ্লব এনেছে সন্দেহ নেই।
সমাজ বাদের অপ্রশুশ্রেণীতে গণ্য করেছে তাদেরও আজ দেবালরপ্রবেশে বাধা দেওয়া উচিত নয়, এই আলোচনাটা তার প্রমাণ। যদিও
এক দল পোক নিত্যধর্মনীতির উপর ভর না দিরে এর অন্তর্গুলে শাল্পের
সমর্থন আওড়াছেন, তর্ সেই আগুরাক্যের ওকালতিটাই সম্পূর্ণ জ্বোর
পাছেন না। আলল এই কথাটাই দেশের সাধারণের মনে বাজছে
যে, যেটা জ্ব্রার সেটা প্রথাগত শাল্প্রগত বা ব্যক্তিগত গারের জ্বোরে
শ্রের হতে পারে না, শংকরাচার্য উপাধিবারীর স্বর্গুচিত মার্কা সন্ত্রেও সে
শ্রেরের নয়।

মুসলমান-আমলের বাংলা সাহিত্যের প্রতি দৃষ্টি করলে দেখা যার বে, অবাধে অস্তার করবার অধিকারই যে ঐশর্ষের লক্ষণ এই বিশ্বাসটা কল্বিত করেছে তথনকার দেবচরিত্র-করনাকে। তথনকার দিনে বেমন অত্যাচারের বারা প্রবল ব্যক্তি আপন শাসন পাকা করে ভুলত, তেমনি করে অস্তারের বিভীবিকার দেবদেবীর প্রতিপত্তি আমরা করনা করেছি। লেই নির্ভুর বলের হার-জিতেই তাঁদের প্রেক্তা-স্বপ্রেক্তার প্রমাণ হত।

शर्यत्र नित्रम त्यत्न ठलात् जाशात्रन मासूच, त्यहे नित्रमत्क लब्बन कत्रवात्र क्षांय अधिकांत्र अगाशांत्र एवं । गिक्षिण एक अध्यादि आश्रांत সংযত করা আবশ্যক সভারকা ও লোকস্থিতির থাতিরে, কিছ প্রভাপের অভিমান তাকে জ্ঞাপ অফ্পেণারের মতো ছিল্ল করবার স্পর্ধারাখে। নীতিবন্ধন-অসহিষ্ণু অধর্মসাহসিকতার ঔষতাকে এক দিন ঈশ্বরত্বের লক্ষণ वल याञ्च चीकात्र करत्र छ। ७४नकात्र मित्न व्यव्हाल 'मिद्योचर्ता वा कानीयद्या वा' এই क्वाहात्र व्यर्व এই यে, कानीयद्वत्र कानीयत्र ভার অপ্রতিহত শক্তির প্রমাণে, ভারপরতার বিধানে নয়, সেই পছার मिन्नीयंत्रथ क्रामीयद्वत्र जूना थााजित्र चिरकाती। जथन वाक्रगटक रामध्य ভূদেৰ, তার দেবতে মহত্তের অপরিহার্য দায়িত্ব নেই, আছে অকারণ শ্রেষ্ঠতার নির্থক দাবি। এই অকারণ শ্রেষ্ঠতা ন্তার-অক্তারের উপরে; তার প্রমাণ দেখি শ্বতিশাল্কে, শুদ্রের প্রতি অধর্মাচরণ করবার অব্যাহত चिकादा। हेश्टब्रक-माञ्चाका सामन-माञ्चाकात्र हिरब्रक क्षेत्रम ७ वामिक गत्मर (नरे; किन्न अयन कथा कारना मृद्ध्य मूथ मिर्य (वर्त्यार्क शास्त्र ना (य, উইनिङ्खाना वा कामीयात्रा या। छात्र कात्रम वाकाम (बाक বোমাবর্ষণে শত্রুপল্লী-বিধ্বংসনের নির্মম শক্তির দারা ঈশব্রতের আদর্শের তুল্যতা আজ কেউ পরিমাপ করে না। আজ আমরা মরতে মরতেও रेश्द्रबन्नाग्रानव विठाव क्वर् भावि छात्र-ब्रह्माख्य बाहर्न : এ क्या यत्न कत्रि त्न, त्कार्त्ना त्नाहारे त्नर् मिख्यानरक चनः यङ मिख्या করতে বলা অশক্তের পক্ষে পর্যা। বন্ধত ক্রায়-আদর্শের সর্বভূমিনতা খীকার ক'রে এক ভারগার ইংরেজ-রাজের প্রভূত শক্তি ভাগনাকে चनएकत नगानकृषिएक में ए कतिरत्र ।

যথন প্রথম ইংরেজি সাহিত্যের সজে আমাদের পরিচর হল তথন তথু বে তার থেকে আমরা অভিনব রস আহরণ করেছিলেম তা নর, আমরা পেরেছিলেম মান্তবের প্রতি মান্তবের জন্তার তুর করবার আগ্রহ; ভনতে

(भरत्रिं हिल्म दांडेनी ভिट्न सांस्ट्यत मृत्यम-सांहरनंत्र (वांवना ; (मर्थि हिल्म বাণিজ্যে মাহ্বকে পণ্যে পরিণত করার বিক্তছে প্রয়াস। স্বীকার कत्र छहे हत्व, बायारमन्न कार्छ अहे यत्ना छावछ। न्छन। छ९ भूर्व बायना মেনে निय्विष्ट्रम् रव, बन्नगछ निछाविशान वा পूर्वबन्नाविष्ठ कर्वकरण বিশেষ জাতের মান্ত্র আপন অধিকারের থর্বতা, আপন অসম্বান भित्राधार्य कत्त्र निष्ठ वाधाः छात्र शैनछात्र मास्ना क्वनमाञ्ज मिरक्रा पृष्ठा भारत बन्नभित्रवर्धन। बाबल बागारमत्र मिक्छिमलगैत्र गरश वह लाक दाडीय वाशोवव मृत्र कदात्र वाख्य वाख्य कही गान, वर्ष गमाक्विवित्र बादा व्यथःकुरुएनत्रदक धर्मत्र माहाहे पिरम निष्कि हरम चाचावगानना चीकात्र कत्रए राम ; এ कथा जूल यात्र रय, जागानिष्ठि विधानत्क निर्विद्यार्थ मानवात्र मत्नावृष्टिहे द्राष्टिक भवाधीनछात्र मुध्यकत्क হাতে পায়ে এটে রাখবার কাজে সকলের চেমে প্রবল শক্তি। যুরোপের कात्रविधित्र गार्वएकोभिक्छा ; चात्र-এक मिएक क्राप्त-चक्रारम् त्रहे विश्वष चामर्भ या कारना भाष्यवारकात्र निर्मिष, कारना वित्रश्रविश्व প্রথার সীমাবেষ্টনে, কোনো বিশেষ শ্রেণীর বিশেষ বিধিতে খণ্ডিভ ছভে পারে ना। আত আমরা সকল ছুর্বলভা সম্বেও আমাদের রাষ্ট্রকাভিক व्यवश्रा-পরিবর্তনের অত্তে যে-কোনো চেষ্টা করছি সে এই তত্ত্বের উপরে मैफिरम, अबर य-गकन मावि चामन्ना कारना मिन यागन-गमारिम काष्ट्र ऐषाभन कद्रवाद कन्ननास गत्न चानए भावि नि छारे नित्र क्षवन बाजमागत्नव गरण উচ্চকটে বিবোধ বাধিষেছি এই তত্ত্বেরই জোরে, य ভन्न किवारका ध्यकाम (भरब्राह् : A man is a man for a' that.

वाक वामात्र वत्रम मछत्र পেরিয়ে পেছে। <u>प्रध्यान यूक्त,</u> वर्षाद वारक इर्जाणीत यूग वनरछहे हरव, गाहे यूरम वाक छावन छारवल कन्नजून

गममें। जर्मन चार्छारता त्ना थुणिरकत्र मासामासि। अरेटिक चिस्त्रीम रि चर्ट न न चार्यात्र क्रिका निष्क, त्रहे हेरन छथन जैयर्षित छ রাষ্ট্রীয় প্রতাপের উচ্চতম শিখরে অধিষ্ঠিত। অনম্ভ কালে কোনো ছিত্র निरंत्र जात्र चन्नजा जारत य चननी अर्थन क्रांक भारत, अ क्षा क्ष रातिन गरन करत्र नि। श्रीहीन हे छिहारा वाहे घर हे था कूक, वाधूनिक ইতিহাসে যারা পাশ্চাত্য সভ্যতার কর্ণধার তাদের সৌভাগ্য যে क्लानामिन भिष्ट हर्राट भारत, वाजान वहेरल भारत উल्हा मिरक, जात्र क्लात्ना चामका ७ मक्न काषा छ छ न। द्रिक्टर्मन-यूर्ग, क्रिक-রেভোল্যশন-যুগে যুরোপ যে মতস্বাতন্ত্রের অন্তে, ব্যক্তিস্বাতন্ত্রের অন্তে नएए छिन, रामिन छात्र राष्ट्रे चामर्प्स विश्वाम कूक्ष इत्र नि। रामिन व्याप्यत्रिकात युक्तत्राष्ट्रि ভाইয়ে ভাইয়ে युष्क বেধেছিল দাসপ্রধার বিরুদ্ধে। गाऐंगिनि-गात्रिवान्छित्र वाणेएं कीर्जिए त्रहे यूग हिन गोत्रवाचिक, সেদিন তুর্কির স্থলতানের অত্যাচারকে নিন্দিত ক'রে মন্ত্রিত হয়েছিল গ্লাড স্টোনের বজ্রস্বর। আমরা সেদিন ভারতের স্বাধীনভার প্রভ্যাশা মনে म्मिष्टें जानन कर्त्राण चात्रस करत्रि । त्यहे खण्डामात्र यत्था अक नित्क रयमन ছिन हेश्टब्रस्क क्रिकि विक्रक्ता, चात्र-अक मिरक हेश्टब्रच-ठित्रस्कत প্রতি অসাধারণ আত্তা / কৈবলমাত্র মন্ত্রতত্বের দোহাই দিয়ে ভারতের भागनकर्ष्ट्राच हेरदब्बन भित्रक हर्लि भागि अमन कथा मन करा य मञ्चन रुप्ति हिन, रमरे प्लात्र काथा (बरक পেরেছিলেন ? কোন্ যুগ খেকে गरुगा (कान् य्गास्टर्य अटगिष्टि ? यास्ट्रिय प्रमा, यास्ट्रिय अटब्रिया र्हा । এত আশ্চর্য বড়ো হয়ে দেখা দিল কোন্ শিক্ষায় ? অথচ আমাদের নিজের পরিবারে প্রতিবেশে, পাড়ায় সমাজে, মান্তবের ব্যক্তিগত স্বাভয়্য वा ग्यात्मव्र मावि, त्यशिनिविठाद्य छात्रगश्यक व्यवहाद्यव म्यान-चिकात-छत्त, अथरना गर्म्गर्वस्थ चारारमत हितास धारम कत्र शास

-নি। তা হোক, আচরণে পদে পদে প্রতিবাদ সত্ত্বে বুরোপের প্রভাব অল্লে অল্লে আমাদের মনে কাজ করছে। বৈজ্ঞানিক বৃদ্ধি সম্বন্ধেও ঠিক সেই একই কথা। পাঠশালার পথ দিয়ে বিজ্ঞান এসেছে আমাদের বারে, কিন্তু ঘরের মধ্যে পাঁজিপুঁ বি এখনো ভার সম্পূর্ণ দখল ছাড়ে নি। তবু বুরোপের বিজ্ঞা প্রতিবাদের মধ্য দিয়েও আমাদের মনের মধ্যে সম্মান পাছেছে।

তारे एक्टन एनश्रम पार्य, এर यून यूट्याएनव नरक चामाएनव গভীর সহযোগিতারই যুগ। বস্তুত, ষেধানে তার সঙ্গে আমাদের চিত্তের, चामारमद्र मिकात्र चगर्रयात्र, रगरेशार्त्व चामारमद्र भदां छर। अरे गर्याग गरक रूब, यि जामामित्र अवाब जावान ना नार्ग। शूर्वरे नलिहि, यूरब्रारभव চिविराद्धव क्षिण चान्हा निरवहे चानारमव नवयूरभव चान्छ रमिष्ण ; मिर्थिष्ट्रिय कार्निय क्रिया यूर्याण यासूरवर याष्ट्रस्क वृद्धिक । चिथकात्रक। এতে क'त्रिहे मकनश्चकात्र चलारकि माखु चामापित्र व्याचारावादनत्र भष भूटम शिरम्रष्ट्। এই व्याचारावादनत्र भीत्रवर्षार्थहे चाक পर्यस चायत्रा चक्रािक महस्क इःमाश्रामाश्यानत्र चामा कत्रिह, এवः व्यवन भक्तक विठाव कब्राए गाइग कब्रिइ ग्रेड व्यवन भक्तबरे विठादबब्र चाप्तर्भ निष्य। वनाएक हर्त, अहे िष्ठभाक हिन्द्रभाक महर्त्वाभ हिन ना व्यागारमत्र পूर्वछन त्राव्यमत्रवारत् । ७थन कर्ज्भरकत्र गरक व्यागारमत्र त्यहे मूनगछ पूर्व छिन याए क'र्त्र व्यामदा व्याकचिक खलापृष्ठेकस्य मिकिमानीय कार्ष कर्नाहर चश्रश्रह (भएछछ भावजूम, किंद्र म छायहे निक्कारण ; बनारक भारतूम ना रय, गर्वकनीन खात्रवर्भ क्यूमारत्रहे, मासूव व'रमहे मास्रवित्र कार्ष्ट् चास्क्रमात्र मावि चार्छ।

रेजियभा रेजिए। अभिद्य हनन। वह काटन युख अनिवाय प्रथा निन जानवर्णय छन्य। भान्हारजायरे मश्चारजामस्य जानान जिल

অন্ন কালের মধ্যেই বিশ্বজাতি-সংঘের মধ্যে জয় করে নিলে সম্মানের অধিকার। অর্থাৎ জাপান বর্তমান কালের মধ্যেই বর্তমান, অতীতে ছায়াজ্বর নয়, সে তা সম্যক্রপে প্রমাণ করল। দেখতে পেলেম, প্রাচ্য জাতিরা নব্যুগের দিকে যাত্রা করেছে। অনেক দিন আশা করেছিল্ম, বিশ-ইতিহাসের সকে আমাদেরও সামঞ্জত হবে, আমাদেরও রাইজাতিক রখ চলবে সামনের দিকে; এবং এও মনে ছিল যে, এই চলার পথে টান দেবে স্বয়ং ইংরেজও। অনেক দিন তাকিয়ে থেকে অবশেবে দেখল্ম, চাকা বন্ধ। আজ ইংরেজ-শাসনের প্রধান গর্ব ল এবং অর্ডর, বিধি এবং ব্যবস্থা নিয়ে। এই স্বরহৎ দেশে শিক্ষার বিধান, স্বাস্থ্যের বিধান অতি অকিঞ্জিৎকর; দেশের লোকের হারা নব নব পথে ধন-উৎপাদনের স্থযোগ-সাধন কিছুই নেই। অদ্র ভবিশ্বতে তার যে সম্ভাবনা আছে তাও দেখতে পাই নে, কেননা দেশের সম্বল সমস্তই তলিয়ে গেল ল এবং অর্ডরের প্রকাণ্ড কবলের মধ্যে। যুরোপীয় নব্যুগের শ্রেষ্ঠ দানের থেকে ভারতবর্ষ বঞ্চিত হয়েছে য়ুরোপেরই সংশ্রবে। নব্যুগের স্থ্যিশগুলের মধ্যে কলক্ষের মতো রয়ে গেল ভারতবর্ষ।

আত্র ইংলও ফ্রান্স ভার্মানি আমেরিকার কাছে খণী। খণের অহ

খ্ব মোটা। কিন্তু, এর বিশুণ মোটাও যদি হত তবু সম্পূর্ণ শোধ করা
অসাধ্য হত না, দেনদার দেশে যদি কেবলমাত্র ল এবং অর্ডর বজায় রেথে
তাকে আর-সকল বিষয়ে বঞ্চিত রাখতে আপত্তি না থাকত— যদি তার
অরসংস্থান রইত আধ-পেটা পরিমাণ, তার পানযোগ্য জলের বরাদ্দ হত
সমত দেশের তৃঞ্চার চেয়ে বহুওণ স্বল্লতর, যদি দেশে শতকরা পাঁচ-সাত
জন মামুবের মতো শিক্ষার বাবস্থা থাকলেও চলত, যদি চিরস্থায়ী রোগে
প্রজনাস্ক্রমে দেশের হাড়ে হাড়ে ছ্র্বলতা নিহিত করে দেওয়া সত্তেও
নিশ্চেইপ্রায় থাকত তার আরোগ্যবিধান। কিন্তু, বেহেতু জীবনধাত্রার
সভ্য আদর্শ বজায় রাথবার পক্ষে এ-সকল অভাব একেবারেই মারাজ্যক,

এইবন্তে পাওনাদারকে এমন কথা বলতে শুনসুম যে, 'আমরা দেনাশোধ করব না।' সভ্যতার দোছাই দিয়ে ভারতবর্ধ কি এমন কথা বলতে পারে না যে, 'এই প্রাণ-দেউলে-করা তোমাদের ছুর্মূল্য শাসনতন্ত্রের এত অসহু দেনা আমরা বহন করতে পারব না যাতে বর্বরদশার জগদল পাথর চিরদিনের মতো দেশের বুকের উপর চেপে থাকে।' বর্তমান যুগে যুরোপ যে সভ্যতার আদর্শকে উদ্ভাবিত করেছে ছুরোপই কি স্বহস্তে তার দাবিকে ভূমগুলের পশ্চিম সীমানাতেই আবদ্ধ করে রাখবে? সর্বজনের সর্বকালের কাছে সেই সভ্যতার মহুং দারিশ্ব কি যুরোপের নেই।

क्राय क्राय प्रथा राग, यूद्राराभव वाहरत्र व्यनाचीय्रयक्रम यूद्राभीय मछाछात्र यभागिष्ठि चारमा रमशारात्र चर्छ नत्र, चाछन मागारात्र चरछ। তाই এক দিন কামানের গোলা আর আফিমের পিও এক সঙ্গে ব্যিত इन ही तित्र मर्मशानित्र छेलत्। रेलिशारा चाक लर्म ध्रमन गर्दनान चात्र (कात्ना भिन (काषा अ र्म नि— এक राम्रिक यूर्याभीम मञ्जाका छि यथन नवाविष्ठा चारमित्रकाम वर्गिणिए वर्ग लाए इत्न वत्न मन्भूर्ग विश्वष्ठ करत्र निरम्रष्ट 'मामा' खालित चश्र्व गलालाक। यश्रूर्भ चगला তাতার বিঞ্জিত দেশে নরমুখ্রের স্তুপ উঁচু করে তুলেছিল; তার বেদনা चनिक्रिकान भरत्र मुखे हरम्रहि। मन् मूर्त्राभ हीरनेत्र मरका এक रए। দেশকে জোর করে যে বিষ গিলিয়েছে তাতে চিরকালের মতো তার यका कर्कत्रिक रुख राम। এकिनिन कक्रन भारतिरुद पम मीर्घकारमञ्ज चगाएठात्र काम (चटक भात्रज्ञाटक উद्यात्र कत्रवात् काज यथन व्यानभन करत्र मैं फिरिविष्टिन, जथन गङा यूर्त्राभ कित्रकम क'र्त्न हुई हार्ज जात्र টুটি চেপে ধরেছিল, সেই অমার্জনীয় শোকাবছ ব্যাপার জানা যায় পারভের তদানীম্বন পরাহত আমেরিকান রাজস্বসচিব শুস্টারের Strangling of Persia बहेथाना পড়লে। ও मिरक चांकिकांत्र कन्त्रा धाराटम यूद्राणीय भागन य कित्रकम धकषा विशेषिकाय

পরিণত হয়েছিল সে সকলেরই জানা। আজও আমেরিকার যুক্তরাষ্ট্রে নিগ্রোজ্ঞাতি সামাজিক অসন্মানে লাঙ্হিত, এবং সেই-জাভীয় কোনো হতভাগ্যকে যথন জীবিত অবস্থায় দাহ করা হয় তখন খেতচর্মী নর-নারীরা সেই পাশব দৃশ্য উপভোগ করবার জন্মে ভিড় ক'রে আসে।

তার পরে মহাযুদ্ধ এসে অকসাৎ পাশ্চাত্য ইতিহাসের একটা পর্দা जूल मिला रयन कान् याजालात्र चाङ राम यूटा এङ यिया. এত বীভংগ হিংশ্ৰতা নিবিড় হয়ে বহুপূৰ্বকার অন্ধ যুগে কণকালের ब्बल्य इम्नला यात्व यात्व উर्পाठ क्द्रब्ह, किन्न এयन छीर्य উपश्च ষৃতিতে আপনাকে প্রকাশ করে নি। তারা আগত কালো আঁধির गरणा भूमात्र व्यापनारक व्यात्र करत्र ; किन्न এ এगেছে यেन व्याधिनित्रित व्याध्ययः व, व्यवक्रक भारभद्र वाधायुक छे । अ-छेक्कारम निश्निगक्रक वािंद्य जूटन', नक्ष क'द्र नित्य मूब्रम्बात्यव शृषिवीत ज्ञायनजादक। जाब পর থেকে দেখছি যুরোপের শুভবুদ্ধি আপনার পরে বিশ্বাস হারিয়েছে, चाक (म म्मर्था क'द्र कन्गाद्रगर चामर्निक छेनहाम कर्द्रा छेन्न । चाक তात्र मञ्जा रगः इ एउए । धेक्मा हेश्द्राध्यत्र मध्यत् वागता रम सूद्राध्यक कानजूम, कूर्निएजत्र महर्ष एात्र এको गःरकाठ छिन ; चाक रम नका मिटक रमरे मःरकां हरके। चाककान प्रथित, चाननारक छन ध्यान क्तवात्र ब्राट्य गञ्जाञात्र माग्निष्टावाथ याटक हाम। व्यमानविक निर्वृत्रञा रिश्वा निष्क अकारण युक कृतिया। मजा गुर्वारभन महीत-भाषा कालानरक (मथनूम कांत्रियाय, मथनूम हीरन; छात्र निर्हत वनपृश चिरिकात्रमञ्चन एक निका क्यरम एन चहेशास्त्र निक्रिय एवत्र क्रिय पुरवारिक्य रेजिरान (परक। चात्रर्गाः त्रकानिकानत रा जेनाच वर्रत्रका सिथा গেল, অনতিপূর্বেও আমরা তা কোনো দিন কলনাও করতে পার্তুম ना। তার পরে চোখের সামনে দেখলুম জালিয়ানওয়ালাখালের विछीषिका। य गूर्त्राभ এक पिन छৎकानीन कृषितक खनासूव व'रम

গঞ্জনা দিয়েছে তারই উন্মৃক্ত প্রান্ধণে প্রকাশ পেল ফ্যানিজ্মের নিবিচার
নিদার্কণতা। এক দিন জেনেছিল্ম আত্মপ্রকাশের স্বাধীনতা মুরোপের
কৈটা প্রের্চ সাধনা, আজ্ম দেখছি মুরোপে এবং আমেরিকায় সেই
স্বাধীনতার কঠরোধ প্রতিদিন প্রবল হয়ে উঠছে। ব্যক্তিগত প্রেরোবৃদ্ধিকে প্রদ্ধা করবার কথা অরবয়সে আমরা মুরোপের বেদী থেকে
শুনতে পেতৃম, আজ্ম সেখানে যারা খুস্টের উপদেশকে সত্য ব'লে বিশাস
করে, যারা শক্রকেও হিংসা করা মনে করে অথর্ম, তাদের কী দশা ঘটে
তার একটা দুষ্টাস্ত খেকে কিয়দংশ উদ্ধৃত করে দিছিছ।

यूष्विदाधी कताणी यूवक द्वान द्वरमं निश्चल-

So after the war I was sent to Guiana... Condemned to fifteen years' penal servitude I have drained to the dregs the cup of bitterness, but the term of penal servitude being completed, there remains always the accessory punishment—banishment for life. One arrives in Guiana sound in health, young, vigorous, one leaves (if one leaves), weakly, old, ill... One arrives in Guiana honest— a few months later one is corrupted... They (the transportees) are an easy prey to all the maladies of this land—fever, dysentery, tuberculosis and most terrible of all, leprosy.

পোলিটিকাল মততেদের অন্তে ইটালি যে ঘীপান্তরবাসের বিধান করেছে, সে কিরকম ছংসহ নরকবাস সে কথা সকলেরই জানা আছে। যুরোপীয় সভ্যতার আলোক যেশব দেশ উজ্জলতম ক'রে আলিরেছে, তাদের মধ্যে প্রধান হান নিতে পারে জর্মনি। কিছ আজ সেখানে সভ্যতার সকল আদর্শ টুকরো টুকরো ক'রে দিয়ে এমন অক্সাৎ, এত সহজে উন্মন্ত দানবিকতা সমস্ত দেশকে অধিকার করে নিলে, এও তো অসম্ভব হল না। যুদ্ধপরবর্তীকালীন যুরোপের বর্বর নির্দ্ধতা যথন আজ এমন নির্দ্ধভাবে চার দিকে উদ্যান্তিত হতে থাকল তথন এই

कथारे वाव वाव यत्न चारम, काथाव वरेन यास्त्व तरे मववाव यिथान माञ्चरवत्र (अव चानिन भोहरव चाक। मञ्चारवत्र 'नदत्र विचान कि ভাঙতে হবে ? वर्वत्रणा निष्त्रहे कि ित्रकान ঠেकाट हरव वर्वत्रणा ? किन्छ मिहे निवारणात्र मर्थाहे अहे कथा अ मन चारम स्व, हुर्गछि यछहे উদ্বতভাবে ভয়ংকর হয়ে উঠুক, তবু তাকে মাথা তুলে বিচার করতে পারি, ঘোষণা করতে পারি 'তুমি অশ্রদ্ধের', অভিসম্পাত দিয়ে বলতে পারি 'বিনিপাত', বলবার জন্তে পণ করতে পারে প্রাণ এমন লোকও क्षित्नित्र यथा प्रथा प्रम्य अहे एका मकल इः त्थत, मकल खरमन छे प्रमन কথা। আজ পেয়াদার পীড়নে হাড় গুঁড়িয়ে যেতে পারে, তবুও ভো चाराकाव गरण शाजस्वाए करत्र वनरण भात्रि (न, निद्योचरत्रा वा खगनीयद्रा वा। वन एक भादि (न, एक दोशान एप कांद्र कि हू हे मार्यं व नम्। वदक मूक्करर्थ वनाज भादि, जादह नामिष वाषा, जादह जानार्न ভারই অপরাধ সকলের চেয়ে নিন্দনীয়। যে ছু:খী, যে অবমানিত, रा रामिन जारमन माहाहरक चलाहारतम पिःहगर्जनम उपान আত্মবিশ্বত প্রবলকে ধিকার দেবার ভরসা ও অধিকার সম্পূর্ণ হারাবে, मिनहे तुवार, अहे यूग चालन अर्छ गलाम लिय कड़ा लर्यस मिडिन হল। তার পরে আত্তক করান্ত।

শ্ৰাবণ ১৩৪০

विद्वा ७ व्यविद्वा

বাংলা দেশে এক দিন খদেশপ্রেমের বান ডাকিল; আমাদের প্রাণের ধারা হঠাৎ অসম্ভব রক্ম কুলিয়া উঠিয়া পাড়ি ছাপাইয়া পড়ে আর কি। সেই বেগটা যে সভ্য ভাছার প্রমাণ এই যে, ভাছার চাঞ্চল্যে কেবল আমাদের কাগজের নৌকাঞ্জাকে দোলা দেয় নাই, কেবল সভাতলেই করভালির ফুকান উঠিয়া সমস্ত চুকিয়া গেল না।

সেদিন সমাজটাও ষেন আগাগোড়া নড়িয়া উঠিল, এমনতরো বোধ হইরাছিল। এক মুহুর্তেই তাঁতের কাজে ব্রাহ্মণের ছেলেদের বাধা ছুটিয়া গেল; ভদ্রসন্থান কাপড়ের মোট বহিয়া রান্তায় বাহির হইয়া পড়িল; এমন কি, হিন্দু মুসলমানে একরে বসিয়া আহার করার আরোজনটাও হয়-হয় করিতে লাগিল।

তর্ক করিয়া এগব হর নাই— কেছ বিধান সইবার অন্ধ্র অধ্যাপকপাড়ার বাডারাত করে নাই। প্রাণ জাগিলেই কাহারো পরাবর্ণ না
লইরা আপনি সে চলিতে প্রবৃত্ত হয়; তথন সে চলার পথের সমস্ত
বাধাণ্ডলাকে কোলের কাছে টানিয়া লইয়া তাহাতে গল্পীরভাবে
সিঁহুর চন্দন মাধাইতে বসে না, কিয়া তাহাকে লইয়া বসিয়া বসিয়া
স্থানিপুণ তস্ত বা স্থচাক কবিষের স্ক্র বুনানি বিশ্বার করিতেও তাহার
প্রবৃত্তি হয় না। বেমনি চলিতে যায় অমনি সে আপনিই বুরিতে
পারে কোন্ওলা লইয়া তাহার চলিবে না; তথন যাহা গায়ে ঠেকে
তাহাকেই সমস্ত গা দিয়া সে ঠেলা দিতে গুরু করে। সেই সাবেক
পাধরগুলা যখন ঠেলার চোটে টলিতে থাকে তথন বোঝা বায়, প্রাণ
জাগিয়াছে বটে; ইহা মায়া নহে, স্বপ্ন নহে।

ग्रहे बढ़ाव (वश किया जानियाह) नवार्षिय यहा (व हजाव वीक जानियाहिन (नही काहिया जिया जाक जावाय दीवि (वार्ण्य

र्वा वैश्वितात्र पिन चानित्राष्ट्र।

वाक वावात ममाक्र वाइवा मिवात शामा वात्र इहेम। क्रगालत म्या क्रिक वाद्य क्रिक

যে লোক কাজের উৎসাহে আছে, ন্তবের উৎসাহে তাহার প্রয়োজনই থাকে না। ইহার প্রমাণ দেখো, আমরাও পশ্চিমসমুদ্ধ-পারে গিয়া সেথানকার মামুখদের মুথের উপর বলিয়া আসিয়াছি, 'তোমরা মরিতে বিসয়াছ! আত্মা বলিয়া পদার্থকে কেবলই বস্তু চাপা দিয়া তাহার দম বন্ধ করিবার জ্যো করিয়াছ— তোমরা সুলের উপাসক।' এসব কঠোর কথা শুনিয়া তাহারা তো মারমুতি ধরে নাই। বরঞ্চ ভালোমামুবের মতো মানিয়া লইয়াছে; মনে মনে বলিয়াছে, 'হবেও বা। আমাদের বয়স অল্ল, আমরা কাজ বুঝি— ইহারা অত্যন্ত প্রাচীন, অতএব কাজ কামাই করা সম্বন্ধে ইহারা যে তত্ত্বকথাগুলা বলে নিশ্চয় সেগুলা ইহারা আমাদের চেয়ে ভালোই বোঝে।' এই বলিয়া ইহারা আমাদিগকে দক্ষিণা দিয়া খুলি করিয়া বিদায় করিয়াছে এবং তাহার পরে আন্তিন গুটাইয়া বেমন কাজ করিতেছিল তেমনিই কাজ করিতে লাগিয়াছে।

त्वनना, हाखाद्रहे हेहामिश्र किन्मा कित चात्र छत्र प्रथाहे, हेहाद्रा त्य हिन्दि हेहाद्रा त्य व्यानवान, छाहाद्र व्यमान त्य हेहापद्र निष्यद्रहे बत्या। मदाद्र वाणा गानि नाहे, ७ कथा हेहापद्र लक्क थाटि ना। हेहाद्रा चान्न मदाद्र वाणां शानि चाहि— वैहिता मद्रा। हेहापद्र चीवनवाद्राव मश्क्टिद शीमा नाहे, शम्छाद श्राहं विख्य, किंद्र शक्तव

विद्यहमा ७ व्यविद्यहमा

উপরে ইহানিগকে ভরস। দিতেছে ইহাদের প্রাণ। এইজন্ত ইহারা নিন্দা অনায়াদে সহিতে পারে এবং নৈরাশ্রের ক্থাটাকে লইরা ক্ণ-কালের জন্ত খেলা করে মাত্র, তাহাতে তাহাদের প্রাণের বেগে আর-একটু উত্তেজনার সঞ্চার করে।

আমরাও তেমনি নিন্দা সহজে সহিতে পারিতাম যদি প্রাদমে কাজের পথে চলিতাম। কারণ, তাহা হইলে আপনিই বুঝিতে পারিতাম, প্রাণের গতিতে সমস্ত মানিকে ভাসাইয়া লইয়া যায়। পত্ত যথন অচল হইয়া থাকে তথন সেটা নিন্দিত, কিছু জোয়ারের গঙ্গাকে পঙ্কিল বলিয়া দোষ দিলেও যাহারা স্নান করে তাহাদের তাহাতে বাধা হয় না।

এইজন্ত, নির্দ্ধণ্য যে ভাহারই অহোরাত্র শুবের দরকার হয়। যে ধনীর কীভিও নাই, হাতে কোনো কর্মও নাই, চাটুকারের প্রয়োজন সব চেয়ে ভাহারই অধিক, নহিলে সে আপনার জড়জের বোঝা বহিবে কেমন করিয়া। ভাহাকে পরামর্শ দেওয়া উচিত যে, 'ভোমার এই বনেদি স্থাবরত্ব গৌরব করিবার জিনিস নয়, যেমন করিয়া পার একটা কর্মে লাগিয়া যাও।' কিন্তু, এ স্থলে পরামর্শদাভার কাজটা নিরাপদ নহে, বাবুর পারিষদবর্গ ভখনই হাঁ-হাঁ করিয়া আসিবে। স্থভরাং বকশিসের প্রত্যাশা থাকিলে বলিতে হয়, 'হজুর, আপনি যে সনাভন ভাকিয়া ঠেগান দিয়া বসিয়াছেন উহার তুলার জুপ জগতে অতুল, অভএব বংশের গৌরব যদি রাখিতে চান ভো নড়িবেন না।'

আমাদের সমাজে যে পরিমাণে কর্ম বন্ধ হইরা আসিরাছে সেই পরিমাণে বাহবার ঘটা বাড়িয়া উঠিয়াছে। চলিতে সেলেই দেখি, সকল বিষয়েই পদে পদে কেবলই বাধে। এমন ছলে হয় বলিতে হয় 'থাঁচাটাকে ভাঙো, কারণ ওটা আমাদের ঈশরদন্ত পাখান্টাকে অসাড় করিয়া দিল' নয়ু বলিতে হয়, ঈশরদন্ত পাখার চেয়ে খাঁচার লোহার

শলাগুলো পবিত্র, কারণ, পাখা তো আজ উঠিতেছে আবার কাল পড়িতেছে, কিন্তু লোহার শলাগুলো চিরকাল স্থির আছে। বিধাতার স্থান্ত পাখা নৃতন, আর কামারের স্থান্ত গাঁচা সনাতন, অতএব ঐ ঝাঁচার সীমাট্রুর মধ্যে যতটুরু পাখাঝাপট সম্ভব সেইটুকুই বিধি, ভাহাই ধর্ম, আর তাহার বাহিরে অনন্ত আকাশ-ভরা নিষেধ। ঝাঁচার মধ্যে যদি নিভাত্তই থাকিতে হয় তবে ঝাঁচার স্তব করিলে নিশ্চয়ই মন ঠাওা থাকে।

আমাদের সামাজিক কামারে যে শলাটি যেমন করিয়া বানাইয়াছে
শিশুকাল হইতে তাহারই শুবের বুলি পড়িয়া পড়িয়া আমরা অন্ত সকল
গান ভূলিয়াছি, কেননা অন্তথা করিলে বিপদের অন্ত নাই। আমাদের
এখানে সকল দিকেই ঐ কামারেরই হইল জয়; আর সব চেয়ে বিভৃত্বিত
হইলেন বিধাতা, যিনি আমাদিগকে কর্মশক্তি দিয়াছেন, যিনি মানুষ
বলিয়া আমাদিগকে বুদ্ধি দিয়া গৌরবান্থিত করিয়াছেন।

गैहाता विनिष्ठिहन, रियशान याहा चाहि नमछह रखात्र थाक्, छाँहाता नकलहे चामार्गत व्यवमा— कात्रन, छाँहारगत रम्न चन्नहे हिंक चात्र विनिष्ट हिंक, छाँहाता नकलहे व्यवीन। नःनारत छाँहारगत व्यवमान चामता चामता चामता करित ना। श्रीविष्ठ व्यम्न नमांच नाहे रियशान छाँहाता मछ धित्रमा विनिष्म। नाहे। किन्न विधालात वरत य नमांच वैक्षिया धाकिरव रन नमांच छाँहारगत मछहे हत्म विनिष्म। मान भाग ना।

সেদিন একটি কুকুরছানাকে দেখা গেল, মাটির উপর দিয়া একটি কীট চলিতেছে দেখিয়া ভাহার ভারি কৌত্হল। সে তাহাকে ত কিভে ভ কিতে তাহার অমুসরণ করিয়া চলিল। যেমনি পোকাটা একটু ধড় ফড়্ করিয়া উঠিতেছে অমনি কুকুরশাবক চমকিয়া পিছাইয়া আসিতেছে।

पिथा राम, जाहात मर्था निर्वय এवः जातिम हो। विनिमहे चाहि। व्यापित पाजिक व्यव्छि এहे या, ममस्टक्ट रम भन्न किन्ना स्वर्थ।

विदिवहना ७ व्यविदिवहना

ন্তন ন্তন অভিক্রতার পথ ধরিয়া সে আপনার অধিকার বিন্তার করিরা চলিতে চায়। প্রাণ ছংগাছনিক— বিপদের ঠোকর থাইলেও সে আপনার অয়বাজার পথ হুইতে সম্পূর্ণ নিরস্ত হুইতে চায় না। কিছু তাহার মধ্যে একটি প্রবীণও আছে, বাধার বিকট চেহারা দেখিবা মাত্রই সে বলে, 'কাজ কী!' বহু প্রাতন যুগ হুইতে পুরুষাস্ক্রমে যত-কিছু বিপদের তাড়না আপনার ভরের সংবাদ রাখিয়া গিয়াছে ভাহাকে পূর্ণির আকারে বাধাইয়া রাখিয়া একটি বৃদ্ধ ভাহারই খনরদারি করিতেছে। নবীন প্রাণ এবং প্রবীণ ভয়, জীবের মধ্যে উভয়েই কাজ করিতেছে। ভয় বলিতেছে 'ধোসো রোসো', প্রাণ বলিতেছে 'দেখাই যাক-না'।

অতএব এই প্রবীশভার বিক্তম আমরা আপতি করিবার কে ? অ'পতি করিও না। উাহার বৈঠকে তিনি গদিয়ান হইয়া থাকিবেন, শেখান হইতে তাহাকে আমরা নড়িয়া বসিতে বলি এমন বেআদব আমরা নই। কিন্তু প্রোণের রাজ্যে তাহাকেই একেশ্বর করিবার যখন যড়যন্ত্র হয় তথনই বিজ্ঞান্তের ধ্বজা তুলিয়া বাহির হইবার দিন আসে। ছুভাবনা এবং নির্ভাবনা উভয়কেই আমবা থাতির করিয়া চলিতে রাজি আছি।

्थालित राष्ण्राधिकारत এই উভয়েই শরিক বটে, किन्न উভয়ের অংশ যে সমান ভাষাও আমরা মানিতে পারি না। নির্ভাবনার অংশটাই বেশি হওরা চাই, নহিলে শ্রোত এতই মন্দ বহে যে শেওলা জমিরা জলটা চাপা পড়ে। মৃত্যুসংখ্যার চেয়ে জন্মসংখ্যা বেশি হওৱাই কল্যাপের লক্ষণ।

পৃথিবীতে বাবো আনা অল, চার আনা স্থল। এক্লণ বিভাগ না হইলে বিপদ ঘটিত। কারণ, অল্ই পৃথিবীতে পতিস্কার করিতেছে, প্রাণকে বিভারিত করিয়া দিতেছে। অলই বাভকে সচল করিয়া

গাছপালা পশুপন্দীকে শুন্তদান কৰিতেছে। অলই সমুদ্র হইতে আকাশে উঠিতেছে, আকাশ হইতে পৃথিবীতে নামিতেছে, মলিনকে থোত করিতেছে, প্রাতনকে নৃতন ও শুন্তকে সরস করিয়া তুলিতেছে। পৃথিবীর উপর দিয়া যে জীবের প্রবাহ নব নব ধারায় চলিয়াছে তাহার মূলে এই জলেরই ধারা। স্থলের একাধিপত্য যে কী ভয়ংকর তাহা মধ্য-এশিয়ার মরুপ্রান্তরের দিকে তাকাইলেই বুঝা যাইবে। তাহার অচলতার তলে কত বড়ো বড়ো শহর লুপ্ত হইয়া গিয়াছে। যে প্রাতন পথ বাহিয়া ভারতবর্ষ হইতে চীনে আপানে পণ্য ও চিত বিনিময় চলিত, এই রুদ্র মক্র সে পথের চিহ্ন মূহিয়া দিল; কত যুগের প্রাণেচঞ্চল ইতিহাসকে বালু চাপা দিয়া সে ক্রাল্যার করিয়া দিয়াছে। উলঙ্গ ধূর্জটি সেখানে একা স্থাবু হইয়া উপ্রনেত্রে বসিয়া আছেন; উমা নাই। দেবতারা তাই প্রমাদ গণিতেছেন— কুমারের জন্ম হইবে কেমন করিয়া ? নৃতন প্রাণের বিকাশ হইবে কী উপায়ে ?

জাের করিয়া চােষ বৃজিয়া যদি না থাকি, ভবে নিজের সমাজের দিকে ভাকাইলেও এই চেহারাই দেখিতে পাইব। এখানে স্থলের স্থাবরতা ভয়ংকর হইয়া বসিয়া আছে— এ যে পককেশের শুল্র মরুভূমি। এখানে এক কালে যথন প্রাণের রস বহিত তথন ইতিহাস সজীব হইয়া, সচল হইয়া, কেবল যে এক প্রদেশ হইতে আর-এক প্রদেশে ব্যাপ্ত হইত ভাহা নহে— মহতী প্রোভস্থিনীর মতাে দেশ হইতে দেশান্তরে চলিয়া যাইত। বিশ্বের সঙ্গে সেই প্রাণবিনিময়ের, সেই পণ্যবিনিময়ের ধারা ও ভাহার বিপুল রাজপথ কবে কান্ কালে বালু চাপা পড়িয়া গেছে। এখানে সেখানে মাটি খৃঁড়িয়া বাহনদের কন্ধাল খুঁজিয়া পাওয়া যায়, প্রাতত্ত্ববিদের খনিত্রের মুখে পণ্যসামগ্রার ছটো একটা ভাঙা টুকরা উঠিয়া পড়ে। গুহাগছবরে গহনে সেকালের শিল্পপ্রবাহিণীর কিছু কিছু খংশ আটকা পড়িয়া গেছে; কিন্তু আজে তাহা স্থির, তাহার ধারা নাই।

विद्या ७ व्यविद्या

সমস্ত সংপ্রের মতো মনে হয়। আমাদের সঙ্গে ইহাদের সন্ধ কী । সমস্ত স্প্রির স্রোভ বন্ধ। যাহা আছে তাহা আছে, যাহা ছিল তাহা কেবলই তলাইয়া যাইতেছে।

চারি দিক এমনি নিশুক নিশ্চল যে মনে শ্রম হর, ইহাই সনাতন।
কখনোই নহে, ইহাই নৃতন। এই মরুভূমি সনাতন নহে, ইহার বহু পূর্বে
এখানে প্রাণের নব নব লীলা চলিত— সেই লীলায় কত বিজ্ঞান দর্শন,
লিল্ল সাহিত্য, রাজ্য সাম্রাজ্য, কত ধর্ম ও সমাজ্য -বিপ্লব তরক্ষিত হইয়া
উঠিয়াছে। কিছু না করিয়া একবার মহাভারতটা পড়িয়া দেখিলেই দেখা
যাইবে, সমাজ্বটা কোনো সংহিতার কারখানাম্বরে ঢালাই-পেটাইকরা ও কারিগরের ছাপ-মারা সামগ্রী ছিল না— ভাহাতে বিধাতার
নিজের স্পত্তির সমস্ত লক্ষণ ছিল, কেননা ভাহাতে প্রাণ ছিল। ভাহা
নিখুত নয়, নিটোল নয়; ভাহা স্থীব, ভাহা প্রবল, ভাহা কৌতূহলী,
ভাহা ছঃশাহসিক।

ইঞ্জিপ্টের প্রকাণ্ড কবরগুলার তলায় যে সমন্ত 'মমি' মৃত্যুকে অমর করিয়া দাত মেলিয়া জীবনকে বাঙ্গ করিতেছে তাহাদিগকেই কি বলিবে সনাতন ? তাহাদের সিজুকের গায়ে বত প্রাচীন তারিখের চিহ্নই খোদা থাক্-না কেন, সেই ইঞ্জিপ্টের নীলনদীর পলিপড়া মাঠে আজ যে 'ফেলাহীন্' চাষা চাব করিতেছে তাহারই প্রাণ যথার্থ সনাতন । মৃত্যু যে প্রাণের ছোটো ভাই; আগে প্রাণ, তাহার পরে মৃত্যু । বাহা-বিছু চলিতেছে তাহারই সঙ্গে জগতের চিরস্থন চলার যোগ আছে— যাহা থামিয়া বিসয়াছে তাহার সঙ্গে সনাতন প্রাণের বিচ্ছেদ ঘটিয়াছে । আজ ক্রে ভারতের প্রাণ একেবারে ঠাণ্ডা হইয়া স্থির হইয়া গেছে; তাহার মধ্যে সাহস নাই, স্প্রের কোনো উল্পম নাই, এইজন্মই মহাভারতের সনাতন প্রাণের সঙ্গে তাহার যোগই নাই। যে যুগ দর্শন চিন্তা করিয়াছিল, যে যুগ দিল শুষ্টি করিয়াছিল, যে যুগ রাজ্য বিস্তার

করিয়াছিল, তাছার সঙ্গে ইহার সম্বন্ধ বিচ্ছিন্ন। অথচ আমরা তারিখের হিসাব করিয়া বলিতেছি, জগতে আমাদের মতো সনাতন আর-কিছুই নাই। কিন্তু তারিখ তো কেবল অঙ্কের হিসাব, তাহা তো প্রাণের হিসাব নয়। তাহা হইলে তো ভন্মও অক গণনা করিয়া বলিতে পারে, সেই সকলের চেয়ে প্রাচীন অগ্নি।

পৃথিবীর সমন্ত বড়ো বড়ো সভ্যতাই ছংসাহসের সৃষ্টি। শক্তির ছংসাহস, বৃদ্ধির ছংসাহস, আকাজ্জার ছংসাহস। শক্তি কোপাও বাধা মানিতে চায় নাই বলিয়া মামুষ সমুদ্র পর্বত লক্ষন করিয়া চলিয়া গিয়াছে: বৃদ্ধি আপাতপ্রতীয়মানকে ছাড়াইয়া, অন্ধ সংস্কারের মোহজালকে ছিন্ন-বিদ্ধিন্ন করিয়া, মহৎ হইতে মহীয়ানে, অনু হইতে অনীয়ানে, দূর হইতে দ্রান্তরে, নিকট হইতে নিকটতমে সগৌরবে বিহার করিতেছে; ব্যাধি দৈত্ত অভাব অবজ্ঞা কিছুকেই মামুষের আকাজ্জা অপ্রতিহার্য মনে করিয়া হাল ছাড়িয়া বসিয়া নাই, কেবলই পরীক্ষার পর পরীক্ষা করিয়া চলিতেছে। যাহাদের সে ছুংসাহস নাই তাহারা আজও মধ্য-আফ্রিকার অরণ্যতলে মৃত্তার স্বকপোলকন্নিত বিভীধিকার কাঁটার বেড়াটুকুর মধ্যে যুগ্যুগান্তর গুঁড়ি মারিয়া বসিয়া আছে।

এই ছু:সাহসের মধ্যে একটা প্রবল অবিবেচনা আছে। আজ বাহারা আকাশ্যানে উডিতে উড়িতে আকাশ হইতে পড়িরা চুরনার হইরা মরিতেছে তাহাদের মধ্যে সেই ছুরস্ত অবিবেচনা কাজ করিতেছে। এমনি করিরাই এক দিন যাহারা সমুদ্র পার হইবার সাধনা করিতে করিতে হাজার হাজার জলে ডুবিয়া মরিয়াছে, সেই অবিবেচনাই তাহাদিগকে তাড়া করিয়াছিল। সেই ছুর্ধ অবিবেচনার উত্তেজনাতেই আজও মান্থ্য ত্যারদৈত্যের পাহারা এড়াইয়া কখনো উভরমেক, কখনো দকিপ্যেকতে কেবলমাত্র দিগ্বিজয় করিবার জন্ত ছুটিয়া চলিয়াছে। এমনি করিয়া যাহারা নিতাত্ত লন্ধীছাড়া ভাহারাই লন্ধীকে ছুর্গম অস্তঃপুর

विदिवा ७ व्यविदिवा

इट्रेट इत्र कतिया चानियाए।

এই ছংগাছলিকের দল নিজের স্মাজের মধ্যেও বে লন্নীছেলে হইরা ঠাণ্ডা হইরা বলিরা আছে ভাহা নহে। বাহা আছে ভাহাই বে চূড়ান্ত, এ কথা কোনোমতেই ভাহাদের মন মানিতে চার না। বিজ্ঞ মান্ত্রদের নিরত ধমকানি খাইরাও এই অশান্তের দল জীর্ণ বেড়া ভাঙিরা, প্রাতন বেড়া সরাইরা, কত উৎপাত করিতেছে ভাহার ঠিকানা নাই। প্রাণের চাঞ্চল্য ভাহাদের অভাবতই প্রবল বলিয়াই, ভাহাদের সাহসের অভ নাই বলিয়াই, সেই বিপুল বেগেভেই ভাহারা সমস্ত দীমাকে কেবলই থাকা মারিয়া বেড়ায়। ইছা ভাহাদের অভাব। এমনি করিয়াই আবিয়্লভ হইরা পড়ে, বেখানে দীমা দেখা বাইতেছিল বস্তুতই সেখানে দীমা নাই। ইহারা ছংখ পায়, ছংখ দেয়, মান্তবকে অভির করিয়া ভোলে এবং মরিবার বেলায় ইহারাই মরে। কিন্তু বাঁচিবার পথ ইহারাই বাহির করিয়া দেয়।

আমাদের দেশে সেই জন্মলন্ধীছাড়া কি নাই ? নিশ্চরই আছে।
কারণ তাহারাই বে প্রাণের বাভাবিক সৃষ্টি, প্রাণ বে আপনার গরজেই
তাহাদিগকে জন্ম দেয়। কিন্তু পৃথিবীতে বে-কোনো শক্তিই মান্ত্রকে
সম্পূর্ণ আপনার তাঁবেদার করিতে চার সে প্রাণের দীলাকেই সব চেয়ে
ভয় করে— সেই কারণেই আমাদের সমাজ ঐসকল প্রাণহল ছুরস্ত ছেলেকে শিশুকাল হইতে নানাপ্রকার শাসনে এমনই ঠাণ্ডা করিতে চার
বাহাতে তাহাদের ভালোমান্থবি দেখিলে একেবারে চোধ জুড়াইরা যার।
মানা, মানা, মানা— শুইতে বসিতে কেবলই তাহাদিগকে মানা মানিরা
চলিতে হইবে। বাহার কোনো কারণ নাই, যুক্তি নাই, ভাহাকে মানাই
বাহাদের নিরভ অভ্যাস, মানিরা চলা ভাহাদের এমনি আশ্রেব ছুরস্ত হইরা
উঠে বে, বেখানে কাহাকেও মানিবার নাই সেখানে ভাহারা চলিভেই
পারে না। এইপ্রকার হতবুদ্ধি হতোজম মান্ত্রকে আপন ভর্জনিসংক্রেত

ওঠ বোস্ করানো সহজ। আমাদের সমাজ সমাজের মাহ্যগুলাকে লইয়া এই প্রকারের একটা প্রকাণ্ড পুতুলবাজির কারখানা খুলিয়াছে। তারে তারে আপাদমন্তক কেমন করিয়া বাঁধিয়াছে, কী আশ্রেষ তাহার কৌশল। ইহাকে বাহবা দিতে হয় বটে। বিধাতাকে এমন সম্পূর্ণরূপে হার মানানো, প্রাণীকে এমন কলের পুতুল করিয়া তোলা জগতে আর-কোপায় ঘটিয়াছে ?

তবু হাজার হইলেও যাহাদের মধ্যে প্রাণের প্রাচুর্য আছে তাহাদিগকে সকল দিক হইতে চাপিয়া পিষিয়াও তাহাদের তেজ একেবারে নট করা যায় না। এইজন্ত আর কোনো কাজ না পাইরা সেই উত্যম, সেই তেজ তাহারা সমাজের বেড়ি গড়িবার জন্তই প্রবলবেশে খাটাইতে থাকে। স্বভাবের বিকৃতি না ঘটিলে যাহারা স্বাত্রে চলার পথে ছুটিত, তাহারাই পথের মধ্যে প্রাচীর তুলিবার জন্ত সব চেয়ে উৎসাহের সঙ্গে লাগিয়া থাকে। কাজ করিবার জন্তই তাহাদের জন্ম, কিন্তু কাজের ক্ষেত্র বন্ধ বলিয়া কালে বন্ধ করিবার কাজেই তাহারা কোমর বাঁনিয়া উঠিয়া পড়িয়া লাগে।

ইহারা কুন্তীন্থত কর্ণের মতো। পাশুবের দলে কর্ণের ষধার্থ স্থান ছিল, কিন্তু সেধানে অনৃষ্টক্রমে কোনো অধিকার না পাশুরাতে পাশুবদিগকে উদ্ভেদ করাই তাঁহার জীবনের প্রত হইয়া উঠিয়াছিল। আমরা বাঁহাদের কথা বলিভেছি তাঁহারা স্বভাবতই চলিফু, কিন্তু এ দেশে জনিয়া সে কথাটা তাঁহারা একেবারেই ভূলিয়া বিস্মাছেন— এইজন্ত বাঁহারা ঠিক তাঁহাদের এক দলের লোক তাঁহাদের সঙ্গেই অহরহ হাতাহাতি করিতে পারিলে ইহারা আর কিছু চান না।

यहे जिनीत लाक चाककान चरनक प्रथा यात्र हैशता छान र्रेकिया राजन, 'यामीनछा-शैनछात्र कि राँ। छिटछ छात्र द्रा ।' चाटक म क्रिया राजन, 'चामाप्तत अजूप्तत माना चाट्स राजिया है धामत्रा लोक्स प्रथाहें ए

विद्या ७ व्यविद्या

পারি না।' অবচ সমাজের চোখে ঠুলি দিয়া, ভাছাকে সক্র মোটা হাজার বাধনে বাঁধিয়া, মানার প্রকাণ্ড ঘানিতে জুড়িয়া, একই চক্রপথে ঘুরাইবার সব চেয়ে বড়ো ওন্ডাদ ইহারাই। বলেন, এ ঘানি সনাতন, ইহার পবিত্র প্রিয় তৈলে প্রকুপিত বায়্ একেবারে শাস্ত হইয়া যায়। ইহারা প্রচণ্ড তেজের সঙ্গেই দেশের তেজ নির্ভির জন্ত লাগিয়াছেন; সমাজের মধ্যে কোথাও কিছু বাছভার লক্ষণ না দেখা দেয়, সেজন্ত ইহারা ভয়ংকর বাস্ত।

কিন্তু পারিয়া উঠিবেন না। অন্থিরতার বিরুদ্ধে যে চাঞ্চলা ইহাদিগকে এমন অন্থির করিয়া তুলিয়াছে, সেটা দেশের নাড়ীতে প্রবেশ করিয়াছে তাহার প্রমাণ তাঁহারা নিজেই। সকালবেলায় জাগিয়া উঠিয়া যদি কেহ কেহ ঘরে আলো আসিতেছে বলিয়া বিরক্ত হইয়া ছড়্দাড় শব্দে ঘরের দরজা-জানালাগুলো বন্ধ করিয়া দিতে চায় তবে নিশ্চর আরো অনেক লোক জাগিবে যাহারা দরজা খুলিয়া দিবার জন্ত উৎক্ষক হইয়া উঠিবে। জাগরণের দিনে ছুই দলই জাগে, এইটেই আমাদের সকলের চেয়ে আশার কথা।

যাহারা দেশকে ঠাণ্ডা করিয়া রাখিয়াছিলেন তাঁহারা অনেক দিন
একাধিপতা করিয়াছেন। তাঁহাদের সেই একেশ্বর রাজ্যন্তর কীতিগুলি
চারি দিকেই দেখা যাইতেছে; ভাহা লইয়া আলোচনা করিতে সেলেই
রাগারাগি হইবার সন্তাবনা আছে। কিন্তু, দেশের নববৌবনকে তাঁহারা
আর নির্বাসিত করিয়া রাখিতে পারিবেন না। তাঁহারা চণ্ডীমণ্ডপে
বিসিয়া থাকুন, আর বাকি স্বাই পথে ঘাটে বাহির হইয়া পতুক।
সেখানে তারুপারে জয় হউক। তাহার পায়ের ভলার ভলল মরিয়া
যাক, জয়াল সরিয়া যাক,কাঁটা দলিয়া যাক, পথ খোলসা হউক; ভাহার
অবিবেচনার উদ্ধৃত বেগে অসাধাসাধন হইতে থাক্।

ठलात পছिত्रित्र याथा व्यवित्यहमात्र त्यां प्रत्यकात्र, वित्यहमात्र ग्रथ्यक

আবশ্রক। কিন্তু, অবিবেচনার বেগও বন্ধ করিব আবার বিবেচনা করিতেও অধিকার দিব না— মানুষকে বলিব 'তৃমি শক্তিও চালাইয়ো না, বৃদ্ধিও চালাইয়ো না, তৃমি কেবলমাত্র ঘানি চালাও', এ বিধান কখনোই চিরদিন চলিবে না। যে পথে চলাফেরা বন্ধ সে পথে ঘাস জন্মায় এবং ঘাসের মধ্যে নানা রভের ফুলও ফোটে। সে ঘাস, সে ফুল অন্দর, এ কথা কেহই অস্বীকার করিবে না; কিন্তু পথের সৌন্দর্য ঘাসেও নহে, ফুলেও নহে, তাহা বাধাহীন বিচ্ছেদহীন বিস্তারে; তাহা প্রমর্থন নহে কিন্তু পথিকদলের অক্লান্থ পদধ্যনিতেই রমণীয়।

देवभाग ३७२३

লোকহিত

লোকসাধারণ বলিয়া একটা পদার্থ আমাদের দেশে আছে এটা আমরা কিছুদিন হইতে আন্দাল করিতেছি এবং 'এই লোকসাধারণের জন্ত কিছু করা উচিত' হঠাৎ এই ভাবনা আমাদের মাধার চাপিয়াছে। যাদৃশী ভাবনা যন্ত সিন্ধিভ্রতি তাদৃশী। এই কারণে, ভাবনার জন্তই ভাবনা হয়।

আমরা পরের উপকার করিব মনে করিলেই উপকার করিতে পারি
না। উপকার করিবার অধিকার থাকা চাই। যে বড়ো সে ছোটোর
অপকার অতি সহজে করিতে পারে কিছু ছোটোর উপকার করিতে
হইলে কেবল বড়ো হইলে চলিবে না, ছোটো হইতে হইবে, ছোটোর
সমান হইতে হইবে। মাছুব কোনো দিন কোনো বথার্থ হিতকে ভিকারূপে গ্রহণ করিবে না, বণরূপেও না, কেবলমাত্র প্রাপ্য বলিয়াই প্রহণ
করিতে পারিবে।

কিন্ধ, আমরা লোকহিতের জন্ত বধন মাতি তধন অনেক স্থলে সেই

মততার মূলে একটি আত্মাভিমানের মদ পাকে। আমরা লোক
সাধারণের চেয়ে সকল বিবরে বড়ো, এই কথাটাই রাজকীয় চালে

সভোগ করিবার উপায় উহাদের হিত করিবার আয়োজন। এমন

সংলে উহাদেরও অহিত করি, নিজেদেরও হিত করি না।

হিত করিবার একটিমাত্র ঈশরদন্ত অধিকার আছে, সেটি প্রীতি।
প্রীতির দানে কোনো অপমান নাই কিন্তু হিতৈবিতার দানে মান্ত্র্ব
অপমানিত হয়। মান্ত্র্যকে সকলের চেয়ে নত করিবার উপায় ভাহার
হিত করা অবচ ভাহাকে প্রীতি না করা।

এ কথা অনেক সময়েই শোনা যায় যে, মানুষ স্বভাৰতই অকৃতজ্ঞ— যাহার কাছে সে পণী ভাহাকে পরিহার করিবার অস্ত ভাহার চেঠা।

মহাজ্ঞনো যেন গতঃ স পন্থাঃ, এ উপদেশ পারতপক্ষে কেছ মানে না। তাহার মহাজনটি যে রাস্তা দিয়ে চলে মানুষ সে রাস্তায় চলা একেবারে ছাড়িয়া দেয়।

ইহার কারণ এ নয় যে, স্বভাবতই মান্থবের মনটা বিক্নত। ইহার কারণ এই যে, মহাজনকৈ স্থদ দিতে হয়; সে স্থদ আগলকে ছাড়াইয়া যায়। হিতৈষী যে স্থদটি আদায় করে সেটি মান্থবের আত্মসন্মান; সেটিও লইবে আবার কৃতজ্ঞতাও দাবি করিবে, সে যে শাইলকের ৰাড়া হইল।

অন্ন দিন হইল, এ সম্বন্ধে আমাদের একটা শিক্ষা হইয়া গেছে। যে কারণেই হউক ঘেদিন স্বদেশী নিমকের প্রতি হঠাং আমাদের অত্যন্ত একটা টান হইয়াছিল, সেদিন আমরা দেশের মুসলমানদের কিছু অস্বাভাবিক উচ্চস্বরেই আত্মীয় বলিয়া, ভাই বলিয়া ভাকাভাকি শুকু করিয়াছিলাম।

সেই স্নেহের ডাকে যথন তাহারা অশ্রুগদগদ কঠে সাড়া দিল না তথন আমরা তাহাদের উপর ভারি রাগ করিয়াছিলাম। ভাবিয়াছিলাম, এটা নিতান্তই ওদের শয়তানি। এক দিনের জন্তও ভাবি নাই, আমাদের ডাকের মধ্যে গরজ ছিল কিন্তু সভ্য ছিল না। মান্ত্যের সঙ্গে মান্ত্যের বে একটা সাধারণ সামাজকভা আছে, যে সামাজকভার টানে আমরা সহজ প্রীতির বশে মান্ত্যকে ঘরে ডাকিয়া আনি, ভাহার সঙ্গে বসিয়া থাই, যদি ব' তাহার সঙ্গে আমাদের পার্থক্য থাকে সেটাকে অভ্যন্ত লগাই করিয়া দেখিতে দিই না— সেই নিতান্ত সাধারণ সামাজকভার ক্ষেত্রে যাহাকে

লোকহিত

আমরা ভাই বলিয়া, আপন বলিয়া মানিতে না পারি, দারে পড়িয়া রাষ্ট্রীয় কেত্রে ভাই বলিয়া যথোচিত সতর্কতার সহিত ভাহাকে বুকে টানিবার নাট্যভন্নী করিলে সেটা কথনোই সফল হইতে পার্মেনা।

্রতিক মান্ধবের সঙ্গে আর-এক মান্ধবের, এক সম্প্রদায়ের সঙ্গে আর-এক সম্প্রনারের তো পার্থকা থাকেই, কিন্তু সাধারণ সামাজিকভার কাজই এই— সেই পার্থকাটাকে রুচ্ছাবে প্রভাক্ষগোচর না করা। ধনী দরিজ্ঞে পার্থকা আছে কিন্তু দরিদ্র ভাহার ঘরে আসিলে ধনী বদি সেই পার্থকাটাকে চাপা না দিয়া সেইটেকেই অত্যুগ্র করিয়া ভোলে, ভবে আর যাই হউক, দায়ে ঠেকিলে সেই দরিজের বুকের উপর ঝাপাইয়া পড়িয়া অশ্রবর্ষণ করিতে যাওয়া ধনীর পক্ষে না হয় সত্য, না হয় শোভন।

হিন্দু মুসলমানের পার্থকাটাকে আমাদের সমাজে আমর্র এতই কুল্লীভাবে বেআজে করিরা রাখিরাছি যে, কিছুকাল পূর্থে খদেনী অভিযানের দিনে একজন হিন্দু খদেনী-প্রচারক এক গ্লাস জল বাইবেন বলিরা উহার মুসলমান সহযোগীকে দাওরা হইতে নামিরা বাইতে বলিতে কিছুমাত্র সংকোচ বোধ করেন নাই। কাজের ক্ষেত্রে প্রতিবোগিতার বলে মামুর মামুরকে ঠেলিরা রাবে, অপমানও করে—ভাহাতে বিলেব ক্ষতি হর না। কুন্তির সময়ে কুন্তিগিরদের পারে পরস্পরের পা ঠেকে, ভাহার হিসাব কেছ জমাইরা রাখে না; কিছ সামাজিকভার খলে কবার কবার কাহারো গারে পা ঠেকাইতে বাকিলে ভাহা ভোলা শক্ত হর। আমরা বিল্লালয়ে ও আপিসে প্রভিযোগিতার ভিডে মুসলমানকে জারের সঙ্গে ঠেলা দিয়াছি; সেটা সম্পূর্ণ প্রীতিকর নহে ভাহা মানি, ভরু সেখানকার ঠেলাঠেলিটা গারে লাগিতে পারে, ফ্রন্মে লাগে না। কিছ সমাজের অপমানটা পারে লাগে না, ফ্রন্মের লাগে না। কারণ, সমাজের উক্লেক্তই এই বে, প্রস্পরের পার্থক্যের উপর অশোভন গামঞ্জন্তের আজ্বন বিছাইরা দেওরা।

বন্ধবিচ্ছেদ বাপোরটা আমাদের অন্নবস্ত্রে হাত দের নাই, আমাদের হৃদরে আঘাত করিয়াছিল। নেই হৃদরটা যত দূর পর্যন্ত অথশু তত দূর পর্যন্ত তাহার বেদনা অপরিচ্ছিন্ন ছিল। বাংলার মুসলমীন যে এই বেদনার আমাদের সঙ্গে এক হয় নাই তাহার কারণ, তাহাদের সঙ্গে আমরা কোনো দিন হৃদরকে এক হইতে দিই নাই।

সংস্কৃত ভাষায় একটা কথা আছে, ঘরে যখন আগুন লাগিয়াছে তখন কৃপ খুঁড়িতে যাওয়ার আয়োজন রখা। বঙ্গবিচ্ছেদের দিনে হঠাৎ যখন মুসলমানকে আমাদের দলে টানিবার প্রয়োজন হইল তখন আমরা সেই কৃপখননেরও চেষ্টা করি নাই— আমরা মনে করিয়াছিলাম, মাটির উপরে ঘটি ঠুকিলেই জল আপনি উঠিবে। জল যখন উঠিল না, কেবল ধুলাই উড়িল, তখন আমাদের বিশ্বয়ের সীমাপরিসীমা রহিল না। আজ পর্যন্ত সেই কৃপখননের কথা ভূলিয়া আছি। আরো বার বার মাটিতে ঘট ঠুকিতে হইবে, সেই সঙ্গে সে ঘট আপনার কপালে ঠুকিব।

লোকসাধারণের সম্বন্ধেও আমাদের ভদ্রসম্প্রদারের ঠিক ঐ অবস্থা।
তাহাদিগকে সর্বপ্রকারে অপমানিত করা আমাদের চিরদিনের অভ্যাস।
যদি নিজেদের হৃদরের দিকে তাকাই তবে এ কথা স্বীকার করিতেই
হইবে যে, ভারতবর্ষকে আমরা ভদ্রলোকের ভারতবর্ষ বলিয়াই জানি।
বাংলাদেশে নিয়শ্রেণীর মধ্যে মুসলমানদের সংখ্যা যে বাড়িয়া গিগছে
ভাহার একমাত্র কারণ, হিন্দু ভদ্রসমাজ এইশ্রেণীয়দিগকে হৃদরের সহিত
আপন বলিয়া টানিয়া রাথে নাই।

আমাদের সেই মনের ভাবের কোনো পরিবর্তন হইল না, অথচ এই শ্রেণীর হিতসাধনের কথা আমরা ক্ষিয়া আলোচনা করিতে আরম্ভ করিয়াছি। তাই এ কথা শ্ররণ করিবার সময় আসিয়াছে যে, আমরা যাহাদিগকে দরে রাখিয়া অপমান করি তাহাদের মুলসাধনের সমারোহ করিয়া সেই অপমানের মাত্রা বাড়াইয়া কোনো কল নাই।

লোকহিত

এক দিন বখন আমরা দেশছিতের ধ্বজা লইয়া বাহির হইয়াছিলাম তখন তাহার মধ্যে দেশের অংশটা প্রায় কিছুই ছিল না, হিতের অভিমানটাই বজা ছিল। সেদিন আমরা মুরোপের নকলে দেশছিত শুরু করিয়াছিলাম, অন্তরের একান্ত তাগিদে নর। আজও আমরা লোকছিতের জন্ত বে উৎস্থক হইয়া উঠিয়াছি তাহার মধ্যে অনেকটা নকল আছে। সম্প্রতি মুরোপে লোকসাধারণ সেধানকার রাষ্ট্রীয় রঙ্গভূমিতে প্রধান নারকের সাজে দেখা দিয়াছে। আমরা দর্শকরূপে এত দ্বে আছি বে, আমরা তাহার হাত-পা নাড়া যতটা দেখি তাহার বাণীটা সে পরিমাণে শুনিতে পাই না। এইজন্তই নকল করিবার সময় ঐ অজ-তলীটাই আমাদের একমাত্র সমল হইয়া উঠে।

किस रमथारन काखें। की इहेरलए रमें। खाना हाहे।

যুরোপে খাহার। এক দিন বিশিষ্টসাধারণ বলিয়া গণ্য হইত তাহার।
সেখানকার ক্ষত্রিয় ছিল। তখন কাটাকাটি মারামারির অন্ত ছিল না।
তখন বুরোপের প্রবল বহিঃশক্ত ছিল মুসলমান; আর ভিতরে ছোটো
ছোটো রাজ্যগুলা পরস্পরের গায়ের উপর পড়িয়া কেবলই মাধাঠোকাঠুকি করিত। তখন ছঃসাহসিকের দল চারি দিকে আপনার ভাগ্য
পরীকা করিয়া বেড়াইত— কোবাও শাস্তি ছিল না।

সে সময়ে সেখানকার ক্ষজিয়েরাই ছিল দেশের রক্ষ। তখন তাহাদের প্রাধান্ত স্বাভাবিক ছিল। তখন লোকসাধারণের সঙ্গে তাহাদের যে সম্বন্ধ ছিল সেটা কৃত্রিম নহে। তাহারা ছিল বন্ধাক্তা এবং শাসনকর্তা। লোকসাধারণে তাহাদিগকে স্বভাবতই আপনাদের উপরিবতী বলিয়া মানিয়া লইত।

তাहाর পরে ক্রমে অবস্থার পরিবর্তন হইরাছে। এখন রুরোপে রাজার জারগাটা রাইভন্ত দখল করিভেছে, এখন লড়াইয়ের চেয়ে নীতিকৌশল প্রধান হইয়া উঠিয়াছে। যুদ্ধের আরোজন পূর্বের চেয়ে

বাড়িয়াছে বই কমে নাই, কিন্তু এখন যোজার চেয়ে যুদ্ধবিষ্ঠা বড়ো; এখন বীর্ষের আগনে বিজ্ঞানের অভিষেক হইয়াছে। কাজেই যুরোপে সাবেক কালের ক্ষত্রিয়বংশীয়ের। এবং সেই সকল ক্ষত্রিয়-উপাধিধারীরা যদিও এখনো আপনাদের আভিজ্ঞাত্যের গৌরব করিয়া পাকে তবু লোক-সাধারণের সঙ্গে তাহাদের স্বাভাবিক সম্বন্ধ ঘুচিয়া গেছে। তাই রাষ্ট্র-চালনার কাজে তাহাদের আধিপত্য কমিয়া আগিলেও সেটাকে জাগাইয়া তুলিবার জ্যোর তাহাদের নাই।

শক্তির ধারাটা এখন ক্ষত্রিয়কে ছাড়িয়া বৈশ্বের কৃলে বহিতেছে। লোকসাধারণের কাঁধের উপরে তাহারা চাপিয়া বসিয়াছে। মামুষকে লইয়া তাহারা আপনার ব্যবসায়ের যন্ত্র বানাইতেছে। মামুষের পেটের জালাই তাহাদের কলের স্টীয় উৎপন্ন করে।

পূর্বকালের ক্ষত্রিয়নায়কের সঙ্গে মানুষের যে সম্বন্ধ ছিল সেটা ছিল মানবস্থা। ছংগ কট অত্যাচার যতই থাক, তবু পরস্পরের মধ্যে হাদমের আদান-প্রদানের পথ ছিল। এখন বৈশ্য মহাজনদের সঙ্গে মানুষের সম্বন্ধ যান্ত্রিক। কর্মপ্রণালী-নামক প্রকাণ্ড একটা জাতা মানুষের আর-সমন্তই গুড়া করিয়া দিয়া কেবল মজুরটুকু মাত্র বাকি রাখিবার চেটা ক্রিভেছে।

ধনের ধর্মই অসামা। জ্ঞান ধর্ম কলাহোন্য পাচজনের সঙ্গে ভাগ করিলে বাড়ে বই কমে না, কিন্তু ধন জিনিসটাকে পাচজনের কাছ হইতে শোষণ করিয়া লইয়া পাচজনের হাত হইতে তাহাকে রক্ষা না করিলে সে টেকে না। এইজন্ত ধনকামী নিজের গরভে দারিদ্রা ভৃষ্টি করিয়া থাকে।

তाই ধনের বৈষম্য লইয়া যথন সমাজে পার্থকা ঘটে তথন ধনীর দল পেই পার্থকাকে সমূলে ঘুচাইতে ইচ্ছা করে না, অথচ সেই পার্থকাটা যথন বিপদজনক হইয়া উঠে তথন বিপদটাকে কোনোমতে ঠেকো দিয়া

লোকহিত

र्क्ठकारेमा त्राथिए हाम ।

তাই, ও দেশে শ্রমজীবীর দল বতই গুমরিয়া গুমরিয়া উঠিতেছে ততই তাহাদিগকে ক্ধার অর না দিয়া ঘ্ম পাড়াইবার গান সাওয়া হইতেছে; তাহাদিগকে অল্লন্ধল এটা-ওটা দিয়া কোনোমতে ভ্লাইয়া রাখিবার চেটা। কৈহ বলে 'উহাদের বাসা একটু ভালো করিয়া দাও', কেহ বলে 'ঘাহাতে উহারা ছ চামচ ক্ষপ খাইয়া কালে যাইতে পারে তাহার বনোবন্ত করে৷', কেহ বা তাহাদের বাড়িতে গিয়া মিটমুবে ক্শল জিল্পাসা করে, শীতের দিনে কেহ বা আপন উদ্বৃদ্ধ গরম কাপড়টা তাহাদিগকে পাঠাইয়া দেয়।

এমনি করিয়া ধনের প্রকাণ্ড জালের মধ্যে আটকা পড়িয়া লোকসাধানণ ছট্ফট্ করিয়া উঠিয়াছে। ধনের চাপটা বদি এত জোরের
সঙ্গে তাহাদের উপর না পড়িত তবে তাহারা জমাট বাঁধিত না— এবং
তাহার) যে কেহ বা কিছু তাহা কাহারও খবরে আসিত না। এখন
ও দেশে লোকসাধানণ কেবল সেন্সস্-রিপোর্টের তালিকাভুক্ত নহে;
সে একটা শক্তি। শে আর তিশা করে না, দাধি করে। এইজন্ত
তাহার কথা দেশের সোকে আর ভুলিতে পারিস্তিছে না; সকলকে সে
বিষম ভাবাইয়া ভূলিয়াছে।

এই লইয়া পশ্চিমদেশে নিয়ত ষেস্ব আলোচনা চলিতেছে আমরা তাহাদের কাগতে পত্রে তাহা স্বদাই পড়িতে পাই। ইহাতে হঠাৎ এক-একবার আমাদের ধর্মবৃদ্ধি চমক হাইয়া উঠে। বলে, তবে তো আমাদেরও ঠিক এইরকম আলোচনা কর্তব্য।

ভূলিয়া যাই, ও দেশে কেবলমাত্র আলোচনার নেশায় আলোচনা নহে, ভাহা নিভান্তই প্রাণের দায়ে। এই আলোচনার পশ্চাতে নানা বোঝাপড়া, নানা উপার-অধ্বেদ আছে। কারণ, সেধানে শক্তির সঙ্গে শক্তির লড়াই চলিভেচ্ছে— যাহারা অক্ষমকে অনুত্রহ করিয়া চিত্ত-

वितामन ७ व्यवकाण्याभन कतिए हाम, এ ভাছাদের সেই विनाम-कना नरह।

আমাদের দেশে লোকসাধারণ এখনো নিজেকে লোক বলিয়া জানে না, সেইজন্ত জানান দিতেও পারে না। আমরা তাহাদিগকে ইংরেজি বই পড়িয়া জানিব এবং অনুগ্রহ করিয়া জানিব, সে জানায় তাহারা কোনো জোর পায় না, ফলও পায় না। তাহাদের নিজের অভাব ও বেদনা তাহাদের নিজের কাছে বিচ্ছিয় ও ব্যক্তিগত। তাহাদের একলার হৃংখ যে একটি বিরাট হৃংখের অন্তর্গত, এইটি জানিতে পারিলে তবে তাহাদের হৃংখ সমস্ত সমাজের পক্ষে একটি সমস্তা হইয়া দাঁড়াইত। তখন সমাজ, দয়া করিয়া নহে, নিজের গরজে সেই সমস্তার মীমাংসায় লাগিয়া যাইত ৮ পরের ভাবনা ভাবা তখনই সত্য হয়, পর যখন ক্ষামাদিগকে ভাবাইয়া তোলে। অনুগ্রহ করিয়া ভাবিতে গেলে কথায় কথায় অন্তমনন্ধ হইতে হয় এবং ভাবনাটা নিজের দিকেই বেশি করিয়া বৌকে।

সাহিত্য সম্বন্ধেও এই কথা খাটে। আমরা যদি আপনার উচ্চতার অভিমানে পুলকিত হইয়া মনে করি যে, ঐসব সাধারণ লোকদের জন্ত আমরা লোকসাহিত্য স্টে করিব তবে এমন জিনিসের আমদানি করিব যাহাকে বিদায় করিবার জন্ত দেশে ভাঙা কুলা চুর্ল্য হইয়া উঠিবে। ইহা আমাদের ক্মতায় নাই। আমরা যেমন অন্ত মামুবের হইয়া খাইতে পারি না, তেমনি আমরা অন্ত মামুবের হইয়া বাঁচিতে পারি না। সাহিত্য জীবনের স্বাভাবিক প্রকাশ, তাহা তো প্রয়োজনের প্রকাশ নহে। চিরদিনই লোকসাহিত্য লোক আপনি স্টে করিয়া আসিয়াছে। দয়ালু বাবুদের উপর বরাত দিয়া সে আমাদের কলেজের দোতলার ঘরের দিকে হাঁ করিয়া তাকাইয়া বিসরা নাই। সকল সাহিত্যেরই যেমন এই লোকসাহিত্যেরও সেই দশা, অর্ধাৎ ইহাতে

লোকহিত

ভালো মন্দ মাঝারি সকল জাতেরই জিনিস আছে। ইহার বাহা ভালো তাহা জলরপ ভালো— জগতের কোনো রসিকসভার তাহার কিছুমাত্র লক্ষা পাইবার কারণ নাই। অতএব, দরার ভাগিদে আমাদের কলেজের কোনো ডিগ্রিধারীকেই লোকসাহিত্যের মুক্রজিরানা করা সাজিবে না। স্বয়ং বিধাতাও অমুগ্রহের জোরে জগৎ স্পষ্ট করিতে পারেন না, তিনি অহেতুক আনন্দের জোরেই এই যাহা-কিছু রচিরাছেন। যেখানেই হেতু আসিরা মুক্রজি হইরা বসে সেইখানেই স্পষ্ট মাটি হয়। এবং বেখানেই অমুগ্রহ আসিরা সকলের চেয়ে বড়ো আসনটা লয় সেইখান হইতেই কল্যাণ বিদার গ্রহণ করে।

আমাদের ভদ্রমাজ আরমে আছে, কেননা আমাদের লোকসাধারণ নিজেকে বোঝে নাই। এইজন্তই জমিদার তাহাদিগকে
মারিভেছে, মহাজন তাহাদিগকে ধরিভেছে, মনিব তাহাদিগকে গালি
দিভেছে, পুলিস তাহাদিগকে শুষিভেছে, গুরুঠাকুর তাহাদের মাধার
হাত বুলাইভেছে, মোজার তাহাদের গাঁট কাটিভেছে, আর তাহারা
কেবল সেই অদৃষ্টের নামে নালিশ করিভেছে যাহার নামে সমন-জারি
করিবার জো নাই। আমরা বড়োজোর ধর্মের দোহাই দিয়া জমিদারকে
বলি 'হোমার কর্তব্য করো', মহাজনকে বলি 'ভোমার হৃদ কমাও',
পুলিসকে বলি 'ভূমি অন্তায় করিরো না'— এমন করিয়া নিতান্ত ছুর্বলভাবে কত দিন কত দিক ঠেকাইব। চালুনিতে করিয়া জল আনাইব
আর বাহককে বলিব 'যতটা পার ভোমার হাত দিয়া ছিন্ত সামলাও'—
সে হয় না; তাহাতে কোনো এক সময়ে এক মৃহুর্ভের কাজ চলে কিন্তু
চিরকালের এ ব্যবহা নয়। সমাজে দ্বার চেয়ে দায়ের জ্যের কোলে কেলি।

অতএব সব-প্রথমে দরকার, লৈতিকরা আপনাদের পরস্পরের সধ্যে যাহাতে একটা যোগ দেখিতে পার। অর্থাৎ ভাহাদের পরস্পরের মধ্যে একটা রাস্তা থাকা চাই। সেটা যদি রাজপথ না হয় তো অন্তত

গলিরান্তা হওয়া চাই।

লেখাপড়া শেখাই এই রাস্তা। যদি বলি জ্ঞানশিকা, তাহা হইলে তর্ক উঠিবে, আমাদের চাষাভ্ষারা যাত্রার দল ও কথকঠাকুরের রূপায় জ্ঞানশিকায় সকল দেশের অগ্রগণ্য। যদি বলি উচ্চশিকা, তাহা হইলে ভদ্রসমাজে খুব একটা উচ্চহান্ত উঠিবে— সেটাও সহিতে পারিতাম যদি আন্ত এই প্রভাবটার কোনো উপযোগিতা থাকিত।

আমি কিন্তু গব চেয়ে কম করিয়াই বলিতেছি, কেবলমাত্র লিখিতে পড়িতে শেখা। তাহা কিছু লাভ নহে, তাহা কেবলমাত্র রান্তা— শেও পাড়াগাঁয়ের মেটে রান্তা। আপাতত এই যথেষ্ট, কেননা এই রান্তাটা না হইলেই মান্ত্র আপনার কোণে আপনি বন্ধ হইয়া থাকে। তখন তাহাকে যাত্রা-কথকতার যোগে গাংখ্য যোগ বেদান্ত প্রাণ ইতিহাস সমস্তই শুনাইয়া যাইতে পার, তাহার আছিনায় হরিনামসংকীর্তনেরও ধুম পড়িতে পারে, কিন্তু এ কথা তাহার স্পষ্ট বুঝিবার উপায় থাকে না যে, সে একা নহে, তাহার যোগ কেবলমাত্র অধ্যান্ত্রযোগ নহে, একটা বৃহৎ লৌকিক যোগ।

म्दित गर्म निकर्णेत, चञ्चलिशिएत मर्म छेलिशिएत मध्यत्वा मंग्रेस पर्या क्रिक्त व्याप्त निक्षा है है जि एत्ये छा एत्ये छा छ । मर्मित चञ्च छत्य क्रिक्त वार्थित है हो विश्व है है विश्व है वि

তাই আমি এই বলি, লিখিতে পড়িতে লিখিয়া মাছ্য কী নিখিবে ও কতখানি লিখিবে, সেটা পরের কথা, কিছু সে যে অস্তের কথা আপনি শুনিবে ও আপনার কথা অন্তকে শোনাইবে, এমনি করিয়া সে যে শোপনার মধ্যে বৃহৎ মাছ্যকে ও বৃহৎ মাছ্যের মধ্যে আপনাকে পাইবে, তাহার চেতনার অধিকার যে চারি দিকে প্রশন্ত হইয়া যাইবে, এইটেই গোড়াকার কথা।

লোকহিত

হুরোপে লোকসাধারণ আচ্চ যে এক হইরা উঠিবার শক্তি পাইরাছে তাহার কারণ এ নয় যে, তাহারা সকলেই পরম পণ্ডিত হইরা উঠিবাছে। হয়তো আমাদের দেশভিমানীরা প্রমাণ করিয়া দিতে পারেন যে, পরাবিতা বলিতে যাহা বুঝার তাহা আমাদের দেশের সাধারণ লোকে তাহাদের চেয়ে বেশি বোঝে। কিন্তু, ইহাতে কোনো সন্দেহ নাই যে, য়ুরোপের সাধারণ লোকে লিখিতে পড়িতে শিবিয়া পরস্পারের কাছে পৌছিবার উপায় পাইয়াছে, হৃদয়ে হৃদয়ে গতিবিধির একটা মন্ত বাধা দ্র হইয়া গেছে। এ কথা নিশ্চিত সত্য যে, য়ুরোপে লোকশিক্ষা আপাতত অগতীর হইলেও তাহা যদি ব্যাপ্ত না হইত তবে আন্ধারেশ লামক যে সন্তা আপনার শক্তির গৌরবে জাগিয়া উঠিয়া আপন প্রাণ্য দাবি করিতেছে তাহাকে দেখা যাইত না। তাহা মইলে যে গরিব সে কণে কণে ধনীর প্রসাদ পাইয়া ক্রতার্থ হইত, যে ভ্রা সে মনিবের পায়ের কাছে মাঝা রাখিয়া পড়িয়া থাকিত এবং যে মজুর সে মহাজনের লাভের উচ্ছিইকণা মাত্র খাইয়া ক্র্যালয় পেটের একটা কোণ মাত্র ভ্রাইত।

লোকহিতৈবীরা বলিবেন, 'আমরা তো দেই কাজেই লাগিরাছি, আমরা তো নাইট সুল থুলিয়াছি।' কিন্তু ভিন্দার বারা কেই কথনো সমৃদ্ধি লাভ করিতে পারে না। পুআমরা ভত্রলোকেরা যে শিক্ষা লাভ করিতেছি দেটাতে আমাদের অধিকার আছে বলিয়া আমরা অভিমান করি— সেটা আমাদিগকে দান করা অহুগ্রাহ করা নয়, কিন্তু সেটা হইতে বঞ্চিত করা আমাদের প্রতি অভার করা। এইজয় আমাদের শিক্ষাব্যবহায় কোনো ধর্বতা ঘটিলে আমরা উত্তেজিত হইয়া উটি। আমরা মাথা তৃলিয়া শিক্ষা দাবি করি। সেই দাবি ঠিক গায়ের জারের নহে, তাহা ধর্মের জোরের। কিন্তু লোকসাধারণেরও সেই জোরের দাবি আছে; যত দিন ভাহাদের শিক্ষার ব্যবস্থা না হইতেছে তত দিন

ভাহাদের প্রতি অন্তার জমা হইরা উঠিতেছে এবং সেই অস্তারের ফল আমরা প্রত্যেকে ভোগ করিতেছি, এ কথা বত কণ পর্যন্ত আমরা স্বীকার না করিব তত কণ দয়া করিয়া তাহাদের জন্ত এক-আবটা নাইট স্থল খুলিয়া কিছুই হইবে না। সকলের গোড়ায় দরকার লোকসাধারণকে লোক বলিয়া নিশ্চিতরূপে গণ্য করা।

কিন্তু সমস্তাটা এই যে, দল্লা করিয়া গণ্য করাটা টেঁকে না। তাহারা শক্তি লাভ করিয়া যেদিন গণ্য করাইবে সেই দিনই সমস্তান্ধ মীমাংসা হইবে। সেই শক্তি যে তাহাদের নাই তাহার কারণ, তাহারা অজ্ঞতার দ্বারা বিচ্ছিল্ল। বাষ্ট্রব্যবস্থা যদি তাহাদের মনের রাজ্ঞা, তাহাদের যোগের রাজ্ঞা খুলিয়া না দেয়, তবে দয়ালু লোকের নাইট স্কুল খোলা অক্রবর্ষণ করিয়া অগ্রিদাহ-নিবারণের চেপ্তার মতো হইবে। কারণ, এই লিখিতে পড়িতে শেখা তথনই যথার্থ ভাবে কাজে লাগিবে যখন তাহা দেশের মধ্যে সর্বব্যাপী হইবে। সোনার আঙটি কড়ে আঙুলের মাপে হইলেও চলে, কিন্তু একটা কাপড় সেই মাপের হইলে তাহা ঠাট্রার পক্ষেও নেহাং ছোটো হন্ধ— দেহটাকে এক আবরণে আর্ত করিতে পারিলেই ভবে ভাহা কাজে দেখে। সামান্ত লিখিতে পড়িতে শেখা ত্ইচারজনের মধ্যে বন্ধ হইলে ভাহা দামি জিনিস হয় না, কিন্তু সাধারণের মধ্যে ব্যাপ্ত হইলে ভাহা দেশের লক্ষা রক্ষা করিতে পারে।

পূর্বেই বলিয়াছি, শক্তির সঙ্গে শক্তির বোঝাপড়া হইলে তবেই সেটা সত্যকার কারবার হয়। এই সত্যকার কারবারে উভর পক্ষেরই মঙ্গল। মুরোপে শ্রমজীবীরা বেমনি বলিষ্ঠ হইয়াছে অমনি সেখানকার বণিকরা জনাবদিহির দায়ে পড়িয়াছে। ইহাতেই হুই পক্ষের সম্বন্ধ সত্য হইয়া উঠিবে— অর্থাৎ বেটা বরাবর সহিবে সেইটেই দাড়াইয়া ঘাইবে, সেইটেই উভয়েরই পক্ষে কল্যাপের। স্ত্রীলোককে সাধনী রাধিবার

লোকহিত

জন্ত প্রব সমন্ত সাঘাজিক শক্তিকে তাহার বিরুদ্ধে থাড়া করিরা রাখিরাছে— তাই দ্রীলোকের কাছে প্রক্ষের কোনো জবাবদিহি নাই — ইহাতেই দ্রীলোকের সহিত সহজে প্রক্ষ সম্পূর্ণ কাপ্রক্ষ হইরা দাঁড়াইরাছে; দ্রীলোকের চেরে ইহাতে প্রক্ষের ক্ষতি অনেক বেশি। কারণ, হুর্বলের সঙ্গে বাবহার করার মতো এমন হুর্গতিকর আর কিছুই নাই। আমানের সমাজ লোকসাধারণকে যে শক্তিহীন করিরা রাখিরাছে এইখানেই সে নিজের শক্তিকে অপহরণ করিতেছে। পরের অন্ত কাড়িয়া লইলে নিজের অন্ত নির্ভিরে উদ্ধুখল হইরা উঠে— এইখানেই মানুবের পতন।

আমাদের দেশের জনসাধারণ আজ জমিদারের, মহাজনের, রাজপ্রবের, মোটের উপর সমস্ত ভদ্রসাধারণের দয়ার অপেকা রাখিতেছে;
ইহাতে তাহারা ভদ্রসাধারণকে নামাইয়া দিয়াছে। আমরা ভ্তাকে
অনায়াসে মারিতে পারি, প্রভাকে অনায়াসে অভিন্ঠ করিতে পারি,
গরিব মূর্থকৈ অনায়াসে ঠকাইতে পারি; নিয়তনদের সহিত স্তায়ব্যবহার করা, মানহীনদের সহিত শিষ্টাচার করা নিতাহুই আমাদের
ইচ্চার পারে নির্ভর করে, অপর প্রের শক্তির পারে নহে— এই
নিরম্বর সংকট হইতে নিজেদের বাচাইবার জন্তই আমাদের দরকার
হইয়াছে নিয়প্রেণীয়দের শক্তিশালী করা। সেই শক্তি দিতে গেলেই
তাহাদের হাতে এমন একটি উপায় দিতে হইবে যাহাতে ক্রমে
তাহারা পরক্ষর স্মিলিত হইতে পারে— সেই উপায়টিই তাহাদের
সকলকেই লিখিতে পড়িতে শেখানো।

डाम ३७१३

লড়াইয়ের মূল

অগ্রহায়ণের সবুজ্বপত্তে সম্পাদক বর্তমান যুদ্ধ সম্বন্ধে যে কয়টি কথা বলিয়াছেন তাহা পাকা কথা, স্মৃতরাং তাহাতে শাঁসও আছে, রসও আছে। ইহার উপরে আর বেশি কিছু বলিবার দরকার নাই— সেই ভরসাতেই লিখিতে বসিলাম।

সম্পাদক বেশ করিয়া বুঝাইয়া দিয়াছেন, এবারকার যে লড়াই তাহা সৈনিকে বণিকে লড়াই, ক্তিয়ে বৈশ্যে। পৃথিবীতে চিরকালই পণ্য-জীবীর পৈরে অন্ত্রধারীর একটা স্বাভাবিক অবজ্ঞা আছে— বৈশ্যের কর্তৃত্ব ক্তিয়ে সহিতে পারে না। তাই জর্মনি আপন ক্ষত্রতেকের দর্পে ভারি একটা অবজ্ঞার সহিত এই লড়াই করিতে লাগিয়াছে।

মুরোপে যে চার বর্ণ আছে তার মধে। ব্রাহ্মণটি তাঁর যজন যাজন ছাড়িয়া দিয়া প্রায় সরিয়া পড়িয়াছেন। যে খুফাসংঘ বর্তমান মুরোপের শিশু বয়সে উচু চৌকিতে বসিয়া বেত হাতে গুরুমহাশয়গিরি করিয়াছে আজ সে তার বয়:প্রাপ্ত শিয়ের দেউড়ির কাছে বসিয়া পাকে— সাবেক কালের ঝাতিরে কিছু তার বরাদ্দ বাধা আছে, কিন্তু তার সেই চৌকিও নাই, তার সেই বেতগাছটাও নাই। এখন ভাছাকে এই শিশুটির মনজোগাইয়া চলিতে হয়। তাই বুদ্ধে বিগ্রহে, পরজাতির সহিত বাবহারে, মুরোপ যত-কিছু অল্লায় করিয়াছে খুফাসংঘ তাহাতে আপত্তি করে নাই, বরঞ্চ ধর্মকথার ফোড়ঙ দিয়া তাহাকে উপাদেয় করিয়া তুলিয়াছে।

এ দিকে ক্তিয়ের তলোয়ার প্রায় বেবাক গলাইয়া ফেলিয়া লাঙলের ফলা তৈরি হইল। তাই ক্তিয়ের দল বেকার বসিয়া রুধা গোঁকে চাড়া দিতেছে। তাহারা শেঠজির মালখানার দ্বারে দরোয়ানগিরি করিতেছে মাত্র। বৈশুই সব চেয়ে মাণা ভুলিয়া উঠিল।

এখন দেই ক্তিয়ে বৈশ্রে 'অন্ত যুদ্ধ ত্য়া ময়া'। বাপর যুগে

नড़ाইয়ের মূল

আমাদের হলধর বলরামদাদা কুরুক্তেত্তের যুদ্ধে বোগ দেন নাই। কলিযুগে তাঁর পরিপূর্ণ মদের ভাড়িটিতে হাত পড়িবা মাত্র তিনি হংকার দিয়া
ছুটিয়াছেন। এবারকার কুরুক্তেত্রযুদ্ধের প্রধান সর্দার রুক্ত নহেন, বলরাম।
রক্তপাতে তাঁর রুচি নাই— রক্তকেনোজ্জন মদের টোক গিলিয়া
এত কাল ধরিয়। তাঁর নেশা কেবলই চড়িয়া উঠিতেছিল; এবারকার
এই অচম্কা উৎপাতে গেই নেশা কিছু ছুটিতে পারে, কিন্তু আবার
সময়কালে বিগুল বেগে মৌতাত জমিবে সে আশকা আছে।

हेहात পরে আর-একটা লড়াই সামনে রহিল, দে বৈশ্রে শ্রে,
মহাজনে মজুরে— কিছুদিন হইছে তার আয়োজন চলিতেছে।
সেইটে চুকিলেই বর্তমান মন্তর পালা শেষ হইয়া নৃতন ময়জর
পড়িবে।

বিশিকে গৈনিকে লড়াই তো বাদিল, কিন্তু এই লড়াইয়ের মূল কোখায় সেটা ফ্লিজাসা করিবার বিষয়। সাবেক কালের ইতিহাসে দেখা ধায়, যারা কারবারী ভারা রাজশক্তির আশ্রম পাইয়াছে, কথনো বা প্রশ্রম পাইয়াছে, কথনো বা শুভাচার ও শুপমান সহিয়াছে, কিন্তু লড়াইয়ের শাসরে ভাহাদিগকে নামিতে হয় নাই। সেকালে ধন এবং মান শুভন্ন ছিল, কাজেই ব্যবসায়ীকে তখন কেছ বাভির করিত না, বর্ফ শুবজ্ঞাই করিত।

रक्नना किनिम महेशा याञ्चरमत्र यूना नट्ह, याञ्चर नहेशाहे याञ्चरत्र यूना। जाहे या काटन कितिश्वरा हिन गंने कि এवः देश्ट हो हिन सन्निक, ज्ञन जाहारमत्र यथा यशका हिन ना।

তথন ঝগড়া ছিল ব্রাহ্মণ-ক্ষত্রিয়ে। কেননা তথন ব্রাহ্মণ তো কেবলমাত্র যজন-যাজন অধ্যয়ন-অধ্যাপন লইয়া ছিল না— মামুদের উপর
প্রভূষ বিস্তার করিয়াছিল। তাই ক্ষত্রিয়-প্রভূ ও ব্রাহ্মণ-প্রভূতে সর্বদাই
ঠেলাঠেলি চলিত; বলিটে বিশ্বামিত্রে আপস করিয়া থাকা শক্ত।

बूर्त्रार्थि त्राष्ट्राप्त र्थाए वांध-क्वाक्वित्र चन्न हिन ना।

কারবার জিনিসটা দেনাপাওনার জিনিস; তাহাতে ক্রেতা বিক্রেতা উভরেরই উভরের মন রাখিবার গরজ আছে। প্রভূত্ব জিনিসটা ঠিক তার উন্টা, তাহাতে গরজ কেবল এক পক্ষের। তাহাতে এক পক্ষ বোঝা হইয়া চাপিয়া বসে, অন্ত পক্ষই তাহা বহন করে।

প্রভাৱ জিনিসটা একটা ভার, মানুষের সহজ চলাচলের সম্বন্ধের মধ্যে একটা বাধা। এইজন্ত প্রভূত্বই যত-কিছু বড়ো বড়ো লড়াইরের মূল। বোঝা নামাইয়া ফেলিতে যদি না পারি, অন্তত বোঝা সরাইতে না পারিলে বাঁচি না। পাল্কির বেহারা ভাই বার বার কাঁধ বদল করে। মানুষের সমাজকেও এই প্রভূত্বের বোঝা লইয়া বার বার কাঁধ বদল করিতে হয়— কেননা ভাহা ভাহাকে বাহির হইতে চাপ দেয়। বোঝা অচল হইয়া থাকিতে চায় বলিয়াই মানুষের প্রাণশক্তি ভাহাকে সচল করিয়া ভোলে। এইজন্তই লক্ষী চঞ্চলা। লক্ষী যদি অচঞ্চল হইতেন ভবে মানুষ বাঁচিত না।

ইতিপূর্বে মান্নবের উপর প্রভূষচেষ্টা ব্রাহ্মণক্ষ ব্রিয়ের মধ্যেই বন্ধ ছিল—
এই কারণে তথনকার যত-কিছু শল্পের ও শাল্পের লড়াই ভাহাদিগকে
লইয়া। কারবারীরা হাটে মাঠে গোঠে ঘাটে ফিরিয়া বেড়াইত, লড়াইয়ের
ধার ধারিত না।

সম্প্রতি পৃথিবীতে বৈশ্বরাজক যুগের পন্তন হইয়াছে। বাণিজা এখন আর নিছক বাণিজা নহে, সাম্রাজ্ঞার সঙ্গে একদিন তার গান্ধর্ব বিবাহ ঘটিয়া গেছে।

এক সময়ে জিনিসই ছিল বৈশ্যের সম্পত্তি, এখন মামুষ তার সম্পত্তি হইয়াছে। এ সম্বন্ধে সাবেক কালের সঙ্গে এখনকার কালের তফাত কী তাহা বুঝিয়া দেখা যাক। সে আমলে ষেধানে রাজত্ব রাজাও সেই-খানেই; জমাধরচ সব এক জায়গাতেই।

লড়াইয়ের মূল

কিন্ত এখন বাণিজ্য-প্রবাহের মতো রাজন্ব-প্রবাহেরও দিনরাত আমদানি রফতানি চলিতেছে। ইহাতে পৃথিবীর ইতিহাসে সম্পূর্ণ একটা নূতন কাণ্ড ঘটিতেছে— তাহা এক দেশের উপর আর-এক দেশের রাজন্ব এবং সেই সুই দেশ সমুদ্রের সুই পারে।

এত বড়ো বিপুল প্রভূষ প্রসতে আর-কথনো ছিল না। যুরোপের সেই প্রভূষের ক্ষেত্র এশিরা ও আফ্রিকা।

এখন মুশকিল হইয়াছে অমনির। তার বুম ভাঙিতে বিলম্ব হার্যাছিল। সে ভোজের শেব বেলায় হাঁপাইতে হাঁপাইতে আসিয়া উপিছিত। ক্ষ্যা যথেই, মাছেরও গন্ধ পাইতেছে, অবচ কাঁটা ছাড়া আর বড়ো-কিছু বাকি নাই। এখন রাগে তার শরীর গস্গস্ করিতেছে। সে বলিতেছে, 'আমার জন্ত বদি পাত পাড়া না হইয়া বাকে, আমি নিমন্ত্রপাত্রর অপেকা করিব না। আমি গায়ের জ্যোরে যার পাই তার পাত কাড়িয়া লইব।'

এক সময় ছিল যখন কাড়িয়া-কুড়িয়া লইবার বেলার ধর্মের দোহাই পাড়িবার কোনো দরকার ছিল না। এখন তার দরকার হইয়াছে। জর্মনির নীতিপ্রচারক পণ্ডিতেরা বলিতেছেন, যারা ছ্বল, ধর্মের দোহাই তাদেরই দরকার; যারা প্রবল, তাদের ধর্মের প্রয়োজন নাই, নিজের গায়ের জোরই যথেষ্ট।

আত্র কৃষিত জর্মনির বুলি এই বে, প্রভু এবং দাস এই ছুই জাতের
মানুব আছে। প্রভু সমন্ত আপনার জন্ত লইবে, দাস সমন্তই প্রভুর জন্ত জোগাইবে— যার জোর আছে সে রব হাকাইবে, যার জোর নাই সেপ্র করিয়া দিবে।

যুরোপের বাহিরে যখন এই নীতির প্রচার হয় তখন মুরোপ ইহার কটুত্ব বুঝিতে পারে না।

वाक छाहा निष्कत्र गाम्ब वाक्रिएह । क्षि कर्यन পश्चिछ व्य छन्

আজ প্রচার করিতেছে এবং যে তত্ত্ব আজ মদের মতো জর্মনিকে অক্সার
যুদ্ধে মাতাল করিয়া তুলিল, সে তত্ত্বের উৎপত্তি তো জর্মন-পণ্ডিতের
মগজের মধ্যে নহে, বর্তমান মুরোপীয় সভ্যতার ইতিহাসের মধ্যে।
পৌষ ১৩২১

একটু বাদলার হাওয়া দিয়াছে কি, অমনি আমাদের গলি ছাপাইয়া সদর রাজা পর্যন্ত বক্তা বহিয়া যায়, পশিকের জ্বাজোড়াটা ছাতার মতোই শিরোধার্য হইয়া উঠে, এবং অন্তত এই গলিচর জীবেরা উভচর জীবের চেয়ে জীবনয়ায়ায় যোগাভর নয়, শিশুকাল হইতে আমাদের বারান্যা হইতে এইটে বছর বছর লক্ষ্য করিতে করিতে আমার চুল পাকিয়া গেল।

ইহার মধ্যে প্রায় বাট বছর পার হইল। তথন বাশ ছিল কলীয় ঘূগের প্রধান বাহন, এখন বিদ্বাৎ ভাহাকে কটাক্ষ করিয়া হাসিতে ভক্ষ করিয়াছে; তথন পরমাণুতত্ত্ব পৌছিয়াছিল অনুজ্ঞে, এখন ভাহা অভাব্য হইয়া উঠিল; ও দিকে মরিবার কালের পিশড়ার মতে। মানুষ আকাশে পাখা মেলিয়াছে— এক দিন এই আকাশেরও ভাগবখরা লইয়া শরিক-দের মধ্যে মামলা চলিবে, আটেনি ভার দিন গণিতেছে; চীনের মানুষ একরাত্রে ভাদের গনাতন টিকি কাটিয়া সাফ করিল, এবং আপান কালসাগরে এমন এক বিপর্যয় লাফ মারিল যে, পঞ্চাশ বছরে পাঁচ শো বছর পার হইয়া গেল। কিন্তু বর্ষার জলধারা সহক্ষে আমাদের রাজ্যর আভিপেরতা যেমন ছিল তেমনই আছে। যখন কন্ত্রেসের ক অক্রেরও পতন হন্ধ নাই তখনও এই পধ্যের প্রিকবধুদের বর্ষার গান ছিল—

> क्छ काम-পরে পদচারি ওরে ছ্থসাগর সাতরি পার হবে १

আর আজ খবন হোমকলের পাকা ফলটা প্রায় আমাদের গোঁফের কাছে ঝুলিয়া পড়িল আজও সেই একই গান— মেঘমল্লাররাগেন, যতিতালাভ্যাং।

ছেলেবেলা হইভেই কাওটা দেখিয়া আসিভেছি, স্বভরাং ব্যাপারটা

আমাদের কাছে অভাবনীয় নয়। যা অভাবনীয় নয় তা লইয়া কেছ
ভাবনাই করে না। আমরাও ভাবনা করি নাই, সহাই করিয়াছি। কিছ
চিঠিতে যে কথাটা অমনিতে চোথ এড়াইয়া যায় দেটার নীচে লাইন
কাটা দেখিলে যেমন বিশেষ করিয়া মনে লাগে, আমাদের রাজ্যর
জলাশয়তার নীচে তেমনি জোড়া লাইন কাটা দেখিয়া, তথু মনটার মধ্যে
নয় আমাদের গাড়ির চাকাতেও কণে কণে চমক লাগিল। বর্ধাও
নামিয়াছে, ট্রামলাইনের মেরামতও তরু। যার আরম্ভ আছে তার
শেষও আছে, ক্রায়লাক্রে এই কথা বলে; কিছ ট্রামওয়ালাদের অক্রায়
লাক্রে মেরামতের আর শেষ দেখিনা। তাই এবার লাইন কাটার
সহযোগে যখন চিংপুর রোডে জলক্রোতের সঙ্গে জনক্রোতের হন্দ্র দেখিয়া
দেহমন আর্দ্র হইতে লাগিল, তখন অনেক দিন পরে গভীরভাবে ভাবিতে
লাগিলাম, সহু করি কেন।

সহ্থ না করিলে যে চলে, এবং না করিলেই যে ভালো চলে, দৌরঞ্চি অঞ্চলে একবার পা বাড়াইলেই তা বোঝা যায়। একই শহর, একই ম্যানিসিপালিটি, কেবল তফাতটা এই, আমাদের সয়, ওদের সয় না। যদি চৌরলি রাস্তার পনেরে৷ আনার হিস্সা ট্রামেরই থাকিত, এবং রাস্তা উৎথাত করিয়া লাইন মেরামত এমন স্থমধুর গঞ্জমনে চলিত, আজ তবে ট্রাম-কোম্পানির দিনে আহার, রাজে নিপ্রা থাকিত না।

वागातित निजीह ভाলোगाञ्चि विलान, 'ता की कथा! वागातित्र এक ट्रे व्यक्तिभा हहेत्व विलग्नाहे कि द्वातित्र त्राचा त्यत्राम् छहेत्व ना ।'

'श्रेटिव वर्षे कि ! किन्न, अयन चार्क्य श्रम्भ (यकारक अवः मीर्ष (यग्नाम नम्र।'

नित्रीर ভाলायाञ्चि विलन, 'म कि महाद ?'

या रहेए ए छात्र ए ए बार्त्र जारता जारणा रहेए भारत, अहे छत्ना जारणामाञ्चरत्त्र नारे विणवारे चरत्र ए एक्त जरण जारण वक्त जारण

कर्णात्र रेक्शात्र कर्म

এবং তাদের পথঘাটেরও প্রান্ন সেই দশা। এমনি করিয়া ছঃথকে আমরা সর্বান্ধে মাঝি এবং ভাঙা পিপের আলকাৎরার মতো পেটাকে দেশের চার দিকে গড়াইয়া ছড়াইয়া পড়িতে দিই।

क्षां । अनित्य (हाटों, किंद बागटन (हाटों। नत्र। (काषां । व्यामार्गत कारिना कर्ष्य व्याष्ट्र, এটা व्यामत्रा किंद्रु एवं भूतामाजात्र वृक्षिणाम ना। वहेरत्र পড়িয়ाছि, माছ ছিল काँटिव हेरवे मर्था ; म चानक याचा चूं फिन्ना चनत्नरय नृतिन त्य, कांठठा चन नम। जान नरम त्र वर्षा जनामस्य हाषा नाहेन, छत् छात्र बहा वृक्ति नाहन हहेन ना (य, क्लों) काँ नम ; छाई (म अक्ट्रेशनि काम्गाट्टिई चून्निट्ट माणिन। ७हे गाषा ठ्रेकिवात्र अब्रेडी चामारमत्र छाएअमारम चड़ारना, छाहे राथारन मांजान हिलाज भारत रमशारमध यन हरण ना। व्यक्तियम् याख्य मार्थित मर्जि नारह टारम कतिवात विष्ठा मिथिन, वाहित हहेवात विष्ठा मिथिन ना, छाहे त्र गर्वात्त्र गरावषीय भावहा थाहेबाएए। व्यामवाश व्याचाय भूव हरेए हैं वैथा পড़िवाद विद्याहार निश्चिमाय, गाँठ चूनिवाद विद्याहा नद ; তার পর জন্ম-মাত্রই বৃদ্ধিটা হইতে ওক করিয়া চলাকেরাটা পর্যন্ত পাকে পारक बड़ाहेगाम, बाद मिहे इहेए इ बगए एथान यह द्रशी बाह्य, अयन कि लगाछिक लग्ध, नकत्नव यात्र चाहेन्रा यविष्ठि। याञ्चरक, श्रीवित्क, हेमात्रात्क, गिखित्क विना वात्का श्रकत्व श्रकत्व यानिया ठनाहे এমনি আমাদের অভাত্ত যে, অগতে কোপাও যে আমাদের কর্তৃত্ব আছে তাহা চোষের সামনে সশরীরে উপস্থিত হইলেও কোনো মতেই ঠাহর र्य ना, अयन कि. विमाछि हमया मित्रिम् ना।

চলিতে গেলে পাছে দূরে গিয়া পড়ে এইজন্ত নিজের পথ নিজেই ভাঙিয়া দের, সেই দেশে ধর্মের দোহাই দিয়া মান্ত্যকে নিজের পারে অপরিসীম অপ্রদা করিতে শেখানো হয় এবং সেই দেশে দাস তৈরি করিবার জন্ত সকলের চেয়ে বড়ো কারখানা খোলা হইয়াছে।

আমাদের রাজপুরুষেরাও শান্তীয় গান্তীর্যের সঙ্গে এই কথাই বলিয়া থাকেন, 'ভোমরা ভূল করিবে, ভোমরা পারিবে না, অভএব ভোমাদের হাতে কর্তৃত্ব দেওয়া চলিবে না।'

আর যাই হোক, মমু-পরাশরের এই আওয়াজটা ইংরেজি গলায় ভারি বেহুর বাজে, তাই আমরা তাঁদের যে উত্তরটা দিই সেটা তাঁদেরই সহজ হুরের কথা। আমরা বলি, ভূল করাটা তেমন সর্বনাশ নয় আধীনকর্ত্ব না পাওয়াটা যেমন। ভূল করিবার আধীনতা থাকিলে তবেই সভ্যকে পাইবার আধীনতা থাকে। নিগুত নির্ভূল হইবার আশায় যদি নির্ভূণ নির্ভাব হইতে হয়, তবে ভার চেয়ে নাহয় ভূলই করিলাম।

আমাদের বলিবার আরো কথা আছে। কর্তৃপক্ষদের এ কথাও সরণ করাইতে পারি যে, আফ তোমরা আত্মক্তৃত্বের মোটর গাড়ি চালাইতেছ, কিন্তু এক দিন রাত থাকিতে যখন গোরুর গাড়িতে যাত্রা শুরু হইরাছিল তখন খালুখন্দর মধ্য দিয়া চাকাছটোর আর্তনাদ ঠিক জ্বয়্বনির মতো শোনাইত না। পার্লামেন্ট্ বরাবরই ডাইনে বাঁয়ে প্রবল ঝাঁকানি খাইয়া এক নজির হইতে আর-এক নজিরের লাইন কাটিতে কাটিতে আসিয়াছে, গোড়াগুড়িই স্থীমরোলার-টানা পাকা রাস্তা পায় নাই। কত ঘূর্ঘাব, স্বাত্মি, দলাদলি, অবিচার এবং অব্যব্দার মধ্য দিয়া সে হেলিয়া হেলিয়া চলিয়াছে। কখনো রাজা, কখনো গির্জা, কখনো জমিদার, কখনো বা মদওয়ালারও স্বার্থ বিহ্যাছে। এমন এক সময় ছিল সদস্থেরা যখন জ্বিমানা ও শাসনের

ভারেই পার্গানেটে হাজির হইত। আর, গলদের কথা যদি বল, কবেকার কালে গৈই আরার্গিও আমেরিকার গছর হইতে আরম্ভ করিয়া আজকের দিনে বোয়ার বৃদ্ধ এবং ভার্ডানেলিস মেসোপোটেমিয়া পর্যন্ত গলদের লখা ফর্দ দেওয়া যায়; ভারতবিভাগের ফর্দুটাও নেহাত ছোটো নয়— কিছু সেটার কথার কাজ নাই। আমেরিকার রাষ্ট্রতক্রে কুবের দেবতার চরগুলি যেগকল কুকীতি করে সেগুলো গামান্ত নয়। ডেকুসের নির্যাতন উপলক্ষ্যে ফ্রান্সের রাষ্ট্রতক্রে সৈনিক প্রাথান্তের বে অক্তার প্রকাশ পাইয়াছিল, ভাহাতে রিপুর অন্ধশক্তিরই ভো হাত দেখা যায়। এগকল সত্ত্বেও আজকের দিনে এ কথায় কারও মনে সন্দেহ লেশমাত্র নাই যে, আত্মকর্ত্তিরর চির গচলতার বেগেই মানুষে ভূলের মথ্য দিয়াই ভূলকে কাটার, অন্তান্তের গর্তে ঘাড়যোড় ভাঙিয়া পড়িয়াও ঠেলাঠেলি করিয়া উপরে ওঠে। এইজক্ত মানুষ্বকে পিছমোড়া বাধিয়া ভার মুধে পারসায় ভূলিয়া দেওয়ার চেয়ে ভাকে।।

এর চেয়েও একটা বড়ো কথা আমাদের বলিবার আছে, সে এই

যে, রাষ্ট্রীয় আত্মকর্তৃত্বে কেবল যে হ্ববাবস্থা বা দায়িছবোধ জন্ম তা নয়,

মাহ্রের মনের আয়তন বড়ো হয়। কেবল পল্লীসমাজে বা ছোটো
ছোটো সামাজিক শ্রেমীবিভাগে থাদের মন বছ, রাষ্ট্রীয় কর্তৃত্বের
অধিকার পাইলে তবেই মাহ্র্যকে বড়ো পরিধির মধ্যে দেখিবার তারা
হ্রেযোগ পায়। এই হ্রেযোগের অভাবে প্রত্যেক মাহ্র্য মাহ্র্য-হিসাবে
ছোটো হইয়া থাকে। এই অবস্থায় সে যথন মহ্র্যুত্বের বৃহৎ ভূমিকার
উপরে আপন জীবনকে না ছড়াইয়া দেখে তখন তার চিন্তা, তার শক্তি,
তার আশা ভরসা সমন্তই ছোটো হইয়া যায়। মাহ্র্যের এই আত্মার
থবঁতা তার প্রাণনাশের চেয়ে চেয় বেশি বড়ো অমকল। ভূমেব হ্বথং
নাল্লে হ্র্থমন্তি। অতএব ভূলচুক্রের সমন্ত আশক্ষা মানিয়া লইয়াও

আমরা আত্মকণ্ঠন চাই। আমরা পড়িতে পড়িতে চলিব; দোহাই তোমার, আমাদের এই পড়ার দিকেই তাকাইয়া আমাদের চলার দিকে বাধা দিয়ো না।

এই জবাবই সত্য জবাব। যদি নাছোড্বালা হইরা কোনো এক শ্রের মার্য এই জবাব দিয়া কর্তৃপক্ষকে বেজার করিয়া তোলে, তবে সে দিক হইতে সে ইন্টার্ন্ড্ হইতে পারে, কিন্তু এ দিক হইতে বাহবা পার। অবচ ঠিক এই জবাবটাই যদি আমাদের সমালকর্তাদের কাছে দাখিল করি, যদি বলি 'তোমরা বল, যুগটা কলি, আমাদের বৃদ্ধিটা কম, স্বাধীন বিচারে আমাদের ভূল হয়, স্বাধীন ব্যবহারে আমর। অপরাধ করি, অভএব মগজটাকে অগ্রাহ্ম করিয়া প্রতিটকে শিরোধার্য করিবার জন্তই আমাদের নতশিরটা তৈরি, কিন্তু এত বড়ো অপমানের কর্বা আমরা মানিব না', তবে চণ্ডীমণ্ডপের চক্ষু রাঙা হইয়া ওঠে এবং সমাজকর্তা তথনই সামাজিক ইন্টার্নমেন্টের ছকুম জারি করেন। যারা পোলিটিকাল আকাশে উড়িবার জন্ত পাথা ঝটুপট্ করেন তারাই সামাজিক দীড়ের উপর পাত্রটাকে শক্ত শিকলে জড়াইয়া রাখেন।

আসল কথা, নৌকাটাকে ডাইনে চালাইবার অন্তও যে হাল, বাঁরে চালাইবার অন্তও সেই হাল। একটা মূলকথা আছে, সেইটেকে আরত করিতে পারিলেই সমাজেও মান্তব সত্য হয়, রাষ্ট্রব্যাপারেও মান্তব সত্য হয়। সেই মূলকথাটার ধারণা লইয়াই চিৎপুরের সজে চৌরঙ্গির তফাত। চিৎপুর একেবারেই ঠিক করিয়া আছে বে, সমস্তই উপর-ওয়ালার হাতে। তাই সে নিজের হাত থালি করিয়া চিত হইয়া রহিল। চৌরঙ্গি বলে, কিছুতে আমাদের হাত নাই এ যদি সত্যই হইত তবে আমাদের হাতহুটোই থাকিত না। উপরওয়ালার হাতের সঙ্গে আমাদের হাতের একটা অবিচ্ছিন্ন যোগ আছে, চৌরঙ্গি এই কথা মানে বলিয়াই অগৎটাকে হাত করিয়াছে; আর চিংপুর তাহা মানে

ना विनेषां कारिता हालहाए। कविया हुई हक्त्र लावा छेन्टेहिया भिवतनज हहेया विहेन।

আমাদের ঘরগড়া কুনো নিয়মকেই স্ব চেয়ে বড়ো মনে করিতে হইলে চোগ বৃজিতে হয়। চোগ চাহিলে দেখি, বিশেব আগাগোড়া একটা বৃহৎ নিয়ম আছে। নিজের চেষ্টার সেই নিয়মকে দখল করাই শক্তিলাভ, সমৃদ্ধিলাভ, ছংখ হইতে পরিক্রাণ লাভ— এই নিশ্চিত বোধটাই বর্তমান মুরোপীয় সভ্যতার পাকা ভিত বিভিন্ন বৈশ্বের সফলতা কোনো বিশেষ বিধানে নয়, বিশ্ববিধানে— এইটে শক্ত করিয়া জানাতেই শক্তির ক্ষেত্রে যুরোপের এত বড়ো মুক্তি।

আমরা কিন্ত ছুই ছাত উন্টাইয়া দীর্ঘনিশাস ফেলিয়া বলিতেছি—
বর্তার ইচ্চার কর্ম। সেই কর্তাটকে— বরের বাপদাদা, বা প্লিসের
দারোগা, বা পাণ্ডা প্রোহিত, বা শ্বতিরত্ব, বা শীতলা মনসা ওলাবিবি
দক্ষিণরায়, শনি মঙ্গল রাহু কেতু প্রভৃতি হাজার রক্ম নাম দিয়া
নিছের শক্তিকে হাজার টুকরা করিয়া আকাশে উড়াইয়া দিই।

কালেজি পাঠক বলিবেন, 'আমরা তো এসর মানি না। আমরা তো বসম্বের টিকা লই; ওলাউঠা হইলে মুনের জলের পিচকিরি লইবার আয়োজন করি; এমন কি মলাবাহিনী ম্যালেরিয়াকে আজও আমরা দেবী বলিয়া থাড়া করি নাই, তাকে আমরা কীটক্ত কীট বলিয়াই গণা করি'— এবং 'সেই সঙ্গে সজে মন্ত্রভারা তাবিজ্ঞটাকে পেটভরা পিলের উপর ঝুলাইয়া রাখি।'

মূথে কোনটাকে মানি বা নাই মানি তাতে কিছু আসে বার না কিছ ওই মানার বিবে আমাদের মনের ভিতরটা অর্জরিত। এই মানসিক কাপ্রকতার ভিন্তি একটা চরাচরব্যাপী অনিন্চিত ভরের উপর। অথও বিশ্বনির্মের মধ্যে প্রকাশিত অথও বিশ্বনির্মের মধ্যে প্রকাশিত অথও বিশ্বনির্মের ব্যানি

कत्रिया विनि। अप्र (कवनहे वर्ल, की कानि, काक की। अप्र किनिमिं। এই त्रक्य। चायापित त्रांखशूक्षपत्र याधा पत्रि, त्रांखाभागत्नत्र क्लाना এको। ছিদ্র দিয়া ভয় চুকিলেই তারা পাশাতা স্বধর্মকেই ज्लिया यात्र, य अप व चाहेन जारमत मिक्कित अप निर्जन जात्रहे जे भत्र চোথ বুজিয়া কুড়াল চালাইতে থাকে। তথন স্থান্তরকার উপর ভরসা চলিয়া বায়, প্রেপ্তিজ রক্ষাকে তার চেয়ে বড়ো মনে করে; এবং विशालांत्र উপत होका निया लात्न, श्रमात्र हात्थित कनहारक गारमत (धाँत्राहोटक यटनाद्रम कदा यात्र। এই टिहे (छ। विश्वविधादनद्र श्रीक व्यविश्वाम, निरक्षत्र विश्विष विश्वास्त्र श्रीष्ठ खत्रमा। এत्र मुरम ছোটো **अप्र, किशा (हाति। लाज, किशा कांक्टक (माका क**दिवाद खाँज (हाति। ठाकूदी। व्यागदाख व्यक्ष ज्याद्र जाजाम मञ्जूषभंजीरक दिनर्कन निर्ज खाएं हां कि किया गानिए नागियाहि। एाई वागवा की विखान वा रखिरिकानरे পড़ि, व्यात्र दाष्ट्रेन्टाइत रेन्टिराटम পदीकारे भाम कि. 'क्डांत्र हेन्हा क्यं' এই वीक्यब्रहाटक यन इहेटल याष्ट्रिया किलिएल भाति ना। छाहे, यिन धार्यापद এ काल्बद छात्गा (मर्म चरनकक्षि मर्भद काट्यत পত्তन इहेन्नाइ, छतु ज्यामात्मत्र तम काटमद छात्मा तमहे मत्मत्र कास একের कास इहेशा छेठिवां न स्वश्च क्विश क्विश किवा मादिए बारक। काषा इहेट थायका এकही-ना-এकहे। कर्छ। फूं फिन्ना खर्छ। छात्र এक्याख कात्रन, य मर्भन्न क्या इहेर्ड्स् छात्रा छ्रि तरम, याच माच, विवाह अ ि छात्राह्म कर्त्र अवः भवकारम भिष् महेर्छ हाछ वाषाम कर्जात्र हेव्हात्र ; किरम भाभ, किरम भूगा, कि धरत पृक्तिम है कान धना क्लिए इहेर्द, क हाल प्रदित्र क्रांत्र क्लान का यात्र, खालात्र धर्मद्रकाद भक्ति यद्रदाद हाएलद मुहिदरे वा की खन, कृष्टिदरे वा की,

রেচ্ছের তৈরি মদেরই বা কী আর রেচ্ছের ছোওয়া অলেরই বা কী—
কর্তার ইচ্ছার উপর বরাত দিয়া সে বিচার তারা চিরকালের মতো
সারিয়া রাথিয়াছে। যদি বলি পানিপাড়ে নোংরা ঘট ড্বাইয়া
যে অল বালভিতে লইয়া ফিরিতেছে সেটা পানের অযোগ্য, আর পানিমিঞা ফিলটার হইতে যে অল আনিল সেটাই শুচি ও স্বাস্থ্যকর,
তবে উত্তর শুনিব, ওটা তো তুচ্ছ যুক্তির কথা, কিন্তু ওটা তো কর্তার
ইচ্ছা নয়। যদি বলি, নাই হইল কর্তার ইচ্ছা, তবে নিমন্ত্রণ বন্ধ। শুধু
অতিথিসংকার নয়, অস্থ্যেষ্টিসংকার পর্যন্ত অচল। এত নির্চুর অবর্দন্তি
ঘারা যাদের অভি সামান্ত খাওয়াছোওয়ার অধিকার পর্যন্ত পদে পদে
ঠেকানো হয়, এবং সেটাকে যায়া কল্যাণ বলিয়াই মানে, ভারা রাইব্যাপারে অবাধ অধিকার দাবি করিবার বেলার সংকোচ বোধ করে
না কেন গ

যখন আপন শক্তির মৃত্যন লইরা জনসাধারণের কারবার না চলে তথন সকল ব্যাপারেই মান্থন দৈবের কাছে, প্রহের কাছে, পরের কাছে হাত পাতিয়া ভয়ে ভয়ে- কাটায়। এই ভাবটার বর্ণনা যদি কোথাও খব স্পষ্ট করিয়া ফুটিয়া থাকে তাহা বাংলার প্রাচীন মঙ্গলকাব্যে। চাঁদ সদাগরের মনের আদর্ল মহৎ, তাই যে দেবতাকে নিক্নষ্ট বলিয়া কিছুতে সে মানিতে চায় নাই বহু হুংখে ভারই শক্তির কাছে তাকে হার মানিতে হইল। এই যে শক্তি, এর সঙ্গে জান বা ভারথর্মের যোগ নাই। মানিবার পাত্র যতে ছালিরী ভতই সে ভয়ংকর, ততই ভার কাছে নতিস্ততি। বিশ্বকর্ত্তের এই ধারণার সঙ্গে তথনকার রায়ীয় কর্তৃত্বের যোগ ছিল। কবিকরণের ভূমিকাতেই ভার থবর মেলে। আইন নাই, বিচার নাই, কোর যার মৃত্রক ভার; প্রবলের অভ্যাচারে বাধা দিবার কোনো বৈধ পথ নাই; হুর্বলের একমাত্র উপায় ভবস্ততি, ভূম্যায় এবং অবশেবে পলায়ন। দেবচরিত্র-কলনাতেও বেমন, সমাজেও ভেমন,

बाडुंज्डिंज (गर्किश।

অধচ এক দিন উপনিবদে বিধাতার কথা বলা হইরাছিল, বাধাতথ্যতোহর্থান্ ব্যুদ্ধাৎ শাখতীতাঃ সমাত্যঃ। অর্থাৎ তাঁর বিধান যথাতথ, তাহা এলোমেলো নয় এবং সে বিধান শাখত কালের। তাহা নিত্যকাল হইতে এবং নিতাকালের জয়্ম বিহিত, তাহা মুহূর্তে মুহূর্তে নৃতন নৃতন থেয়াল নয়। অতরাং সেই নিত্যবিধানকে আমরা প্রত্যেকেই জ্ঞানের ঘারা বৃথিয়া কর্মের ঘারা আপন করিয়া লইতে পারি। তাকে যতই পাইব ততই নৃতন নৃতন বাধা কাটাইয়া চলিব। কেননা, যে বিধানে নিত্যতা আছে কোথাও সে একেবারে ঠেকিয়া যাইতে পারে না, বাধা সে অতিক্রম করিবেই। এই নিত্য এবং যথাতথ বিধানকে যথাতথক্তপে জানাই বিজ্ঞান। সেই বিজ্ঞানের জোরে যুরোপের মনে এত বড়ো একটা ভরসা জনিয়াছে যে সে বলিভেছে, 'ম্যালেরিয়াকে বিদ'য় করিবই, কোনো রোগকেই টি কিতে দিব না; জ্ঞানের অভাব, অনের অভাব লোকালয় হইতে দূর হইবেই; মামুবের ঘরে যে-কেছ জানিবে সকলেই দেহে মনে অন্ত সম্পূর্ণ হইয়া উঠিবে।'

আধ্যান্থিক অর্থে ভারতবর্ষ এক দিন বলিয়াছিল, অবিস্থাই বন্ধন, মৃত্তি জ্ঞানে; সত্যকে পাওয়াতেই আমাদের পরিয়াণ। অসত্য কাকে বলে ! নিজেকে একান্ধ বিচ্ছিন্ন করিয়া জানাই অসত্য। সর্বভূতের সঙ্গে আয়ার মিল জানিয়া পরমান্থার সঙ্গে আধ্যান্থিক যোগটিকে জানাই সভ্য জানা। এত বড়ো সত্যকে মনে আনিতে পারা বে কী পরমান্তর্য ব্যাপার, তা আজ আমরা বৃঝিতেই পারিব না।

এ দিকে আধিভৌতিক ক্ষেত্রে মুরোপ যে মুক্তির সাধনা করিতেছে তারও মূল কথাটা এই একই। এখানেও দেখা যায়, অবিছাই বন্ধন, সভাকে পাওয়াতেই মুক্তি। সেই বৈজ্ঞানিক সতা মান্ধবের মনকে

বিচ্ছিন্নতা হইতে বিশ্বব্যাপিকতান লইরা বাইতেছে এবং লেই পশ্বে মান্নবের বিশেষ শক্তিকে বিশ্বশক্তির সহিত বোগযুক্ত করিতেছে।

ভারতে ক্রমে ক্ষিদের যুগ, অর্থাৎ গৃহস্থ ভাপসদের যুগ গেল; ক্রমে वोद मद्रामीत प्रा चानिन। ভারতবর্ষ যে মহাসত্য পাইরাছিল তাহাকে कीरानद्र रावहारद्रद्र अथ इहेर्ड उकांड कदिया निम। रिमम, मद्रामी इहेरल छरवहे मुख्यित गांधना मख्य नत्र हत्। छात्र करन এ मिल् विश्वात महिला विकास अक्टो वालाम हहेश भएए; विवस्विवासिस महिला উভারর মহল-বিভাগ হইরা মাঝখানে একটা দেয়াল উঠিল। সংসারে जारे धर्म-कर्ष चाठारत-विठारत यक मश्कीर्गका, यक बूनका, यक बूनकारे थाक, উচ্চতম সভ্যের দিক ছইভে ভার প্রতিবাদ নাই, এমন কি, সমর্থন षाङ्ग। গাছতলায় বসিয়া छानी विलएएए '(य मानूब चाननारक प्रदेश्ख्य मर्था ও प्रदेश्ख्य चालनात्र मर्था এक क्रिया मिथियार्छ प्रहे महाक (मिश्रियाहिं); ध्यानि मश्मायी छिछिएछ गिमिया छात्र जिकात सूनि ভরিয়া দিল। ও দিকে সংশারী তার দরদালানে বসিয়া বলিভেছে 'বে বেটা স্বভূতকে যত দূর সম্ভব ভফাতে রাখিয়া না চলিয়াছে ভার (शराना भिक दक्ष'; चात्र कानी चानिया छाद्र याषाय भारतद शुना निया धानीर्वाप कदिया रभन, 'वावा, वैकिश पारका।' এই अग्रहे अ मिर्न कर्मगः माद्र विक्रित्र खड़ला अपन भाग वाफिया हिनन, काषा व लादक वाधा मिराव किছू नाहै। এই अन्न संख्या कर्म गर्मा व আমাদের এত অপমান, এত হার।

যুরোপে ঠিক ইহার উণ্টা। যুরোপের সভাসাধনার ক্ষেত্র কেবল জ্ঞানে নহে, বাবহারে। সেধানে রাজ্ঞা সমাজে যে-কোনো খুঁত দেধ যার এই সভ্যের আলোতে সকলে মিলিয়া তার বিচার, এই সভ্যের সাহায্যে সকলে মিলিয়া তার সংশোধন। এইজ্ঞ সেই সভ্য যে শক্তি, যে মুজি দিতেছে, সমস্ত মান্ত্রের ভাহাতে অবিকার; ভাহা সকল

মানুষকে আশা দেয়, সাহস দেয়— তাহার বিকাশ তন্ত্রমন্ত্রের কুরাশায় ঢাকা নয়, মুক্ত আলোকে সকলের সামনে তাহা বাড়িয়া উঠিতেছে এবং সকলকেই বাড়াইয়া তুলিতেছে।

এই-যে কর্মসংসারে শত শত বছর ধরিয়া অপমানটা সহিলাম সেটা আমাদের কাছে দেখা দিয়াছে রাষ্ট্রীয় পরাধীনভার আকারে। যেখানে ব্যথা সেইখানেই হাত পড়ে। এইজন্তই যে য়ুরোপীয় জাতি প্রভূষ পাইল তাদের রাষ্ট্রব্যবস্থার দিকেই আমাদের সমস্ত মন গেল। আমরা আর সব কথা ভূলিয়া কেবলমাত্র এই কথাই বলিতেছি যে, ভারতের শাসনভন্তের সঙ্গে আমাদের ইচ্ছার যোগসাধন হোক; উপর হইতে যেমন-খূলি নিয়ম হানিবে আর আমরা বিনা খুলিতে সে নিয়ম মানিব, এমনটা না হয়। কর্তৃত্বকে কাঁধে চাপাইলেই বোঝা হইয়া ওঠে, ওটাকে এমন একটা চাকাওয়ালা ঠেলাগাড়ির উপর নামানো হোক যেটাকে আমরাও নিজের হাতে ঠেলিতে পারি।

আজকের দিনে এই প্রার্থনা পৃথিবীর সব দেশেই জাগিয়া উঠিয়াছে যে, বাহিরের কর্তার সম্পূর্ণ এক তরফা শাসন হইতে মাত্রব ছুটি লইবে। এই প্রার্থনায় আমরা যে যোগ দিয়াছি তাহা কালের ধর্মে; না যদি দিতাম, যদি বলিতাম, রাষ্ট্রব্যাপারে আমরা চিরকালই কর্তাভজা— সেটা আমাদের পক্ষে নিতান্ত লক্ষার কথা হইত। অস্তত একটা ফাটল দিয়াও সত্য আমাদের কাছে দেখা দিতেছে, এটাও গুভলক্ষণ।

সতা দেখা দিল বলিয়াই আন্ধ এতটা জোর করিয়া বলিতেছি যে, দেশের যে আত্মাভিমানে আমাদের শক্তিকে সমুখের দিকে ঠেলা দিতেছে তাকে বলি সাধু, কিন্তু যে আত্মাভিমান পিছনের দিকের অচল খোঁটার আমাদের বলির পাঁঠার মতো বাঁধিতে চার তাকে বলি ধিক! এই আত্মাভিমানে বাহিরের দিকে মুখ করিয়া বলিতেছি, রাইতত্তের কর্তৃত্বসভার আমাদের আসন পাতা চাই; আবার সেই অভিমানেই ব্রের

দিকে মুখ ফিরাইয়া হাঁকিয়া বলিতেছি 'খবরদার ! ধর্মতত্ত্বে, সমাজতত্ত্বে, এমন কি বাজিগত বাবহাবে কর্তার হকুম ছাড়া এক পা চলিবে না'—ইহাকেই বলি হিন্দুয়ানির প্নক্ষমীবন। দেশাভিমানের তরফ হইতে আমাদের উপর হকুম আসিল, আমাদের এক চোথ জাগিবে, আর-এক চোথ ঘুমাইবে। এমন হকুম তামিল করাই দার।

বিধাতার শান্তিতে আমাদের পিঠের উপর যথন বেত পড়িল তথন
দেশাভিমান ধড়্ফড়্করিয়া বলিয়া উঠিল, 'ওপ্ডাও ওই বেতবনটাকে।'
ভূলিয়া গেছে, বেতবনটা গেলেও বাশবনটা আছে। অপরাধ বেতেও
নাই, বাশেও নাই, আছে আপনার মধ্যেই। অপরাধটা এই বে, শভ্যের
আয়গায় আমরা কর্তাকে মানি, চোথের চেয়ে চোথের ঠুলিকে শ্রদ্ধা
করাই আমাদের চিরাভ্যাগ। যত দিন এমনি চলিবে তত দিন কোনোনা-কোনো ঝোপে ঝাড়ে বেতবন আমাদের জন্ত অমর হইয়া থাকিবে।

সমাজের সকল বিভাগেই ধর্মতন্ত্রের শাসন এক সময় মুরোপেও প্রবল ছিল। তারই বেড়-জালটাকে কাটিয়া যথন বাহির হইল তথন হইতেই সেথানকার জনসাধারণ আত্মকর্ত্ত্বের পথে যথেষ্ট লঘা করিয়া পাফেলিতে পারিল। ইংবেজের বৈপায়নতা ইংরেজের পক্ষে একটা বড়ো স্থযোগ ছিল। কেননা মুরোপীয় ধর্মতন্ত্রের প্রধান আগন রোমে। সেই রোমের পূর্ণপ্রভাব অস্বীকার করা বিচ্ছিন্ন ইংলণ্ডের পক্ষে কঠিন হয় নাই। ধর্মতন্ত্র বলিতে যা বোঝায় ইংলণ্ডে আত্মপ্ত তার কোনো চিল্ল লাই, এমন কথা বলি না। কিন্তু বড়োঘরের গৃহিণী বিধবা হইলে যেমন হয় তার অবস্থা তেমনি। এক সময়ে যাদের কাছে সে নথনাড়া দিয়াছে, লায়ে অলায়ে আত্ম তাদেরই মন জোগাইয়া চলে; পাশের থরে তার বাসের জায়গা, থোরপোশের জল সামাল কিছু মাসহারা বরাদ্ধ। হালের ছেলেরা পূর্বদন্তর্বমতো বৃড়িকে হপ্তায় হপ্তায় প্রশাম করে বটে কিন্তু মাল করে না। এই গৃহিণীর দাবরাব যদি পূর্বের মতো থাকিত তবে

ছেলেযেদের কারও আজ টু শব্দ করিবার জো থাকিত না।

ইংলও এই বৃড়ির শাসন অনেক দিন হইল কাটাইয়াছে, কিছ স্পেন এখনও সম্পূর্ণ কাটায় নাই। এক দিন স্পেনের পালে খ্ব জোর হাওয়া লাগিয়াছিল; সেদিন পৃথিবীর ঘাটে আঘাটায় সে আপনার জয়য়য়জা উড়াইল। কিছ তার হালটার দিকে সেই বৃড়ি বসিয়া ছিল, তাই আজ সে একেবারে পিছাইয়া পড়িয়াছে। প্রথম দমেই সে এতটা দৌড় দিল, তবু একটু পরেই সে যে আর দম রাখিতে পারিল না, তার কারণ কী। তার কারণ, বৃড়িটা বরাবর ছিল তার কাঁধে চড়িয়া। অনেক দিন আপেই সেদিন স্পেনের হাঁপের লক্ষণ দেখা গেল যেদিন ইংরেজের সঙ্গে স্পেনের রাজা ফিলিপের নৌযুদ্ধ বাধিল। সেদিন হঠাং ধরা পড়িল, স্পেনের ধর্মবিখাসও যেমন সনাতন প্রথায় বাধা তার নৌযুদ্ধবিভাও তেমনি। ইংরেজের যুদ্ধজাহাজ চঞ্চল জলহাওয়ায় নিয়মকে ভালো করিয়া বৃঝিয়া লইয়াছিল, কিয় স্পেনীয়দের যুদ্ধজাহাজ নিজের অচল বাঁধি নিয়মকে ছাড়িতে পারে নাই। যার নৈপুণ্য বেশি তার কৌলীল যেমনি থাক্ সে ইংরেজ-যুদ্ধজাহাজ্যের স্পার হইতে পারিত,কিছ কুলীন ছাড়া স্পেনীয় রণ্ডেরীর পতিপদে কারও অধিকার ছিল না।

আৰু যুরোপের ছোটো-বড়ো যে-কোনো দেশেই জনসাধারণ মাধা তুলিতে পারিয়াছে, সর্বত্রই ধর্মতন্ত্রের অন্ধ কর্ত্ব আলগা হইয়া মান্তব নিজেকে শ্রন্ধা করিতে শিবিয়াছে। গণসমাজে যেখানে এই শ্রন্ধা ছিল না, যেমন জার-কর্তার রাশিয়ায়, সেখানকার সমাজ বেওয়ারিস ক্রেরে মতো নানা কর্তার কাটাগাছে জলল হইয়া উপ্তিয়াছিল। সেখানে এ কালের পেরাদা হইতে সে কালের প্রি পর্বন্ধ সকলেই মন্ত্রাজ্বর কান মসিয়া অন্তায় খাজনা আদায় করে।

यत्न द्रांथा नदकात, धर्म चात्र धर्मछन्न এक किनिम नद्र। ७ एवन चार्यन चात्र हारे। धर्मछत्त्रद्र काल्ह धर्म यथन चाति। इत्र छथन मनीत्र

বালি নদীর জলের উপর মোড়লি করিতে থাকে। তখন শ্রোত চলে
না, মক্ষভূমি ধুধু করে। তার উপরে, সেই অচলতাটাকে লইয়াই মাতুর
যখন বুক ফোলায় তখন গগুলোপরি বিক্ষোটকং।

ধর্ম বলে, যাস্থ্যকে বলি শ্রদ্ধা না কর তবে অপ্যানিত ও অপ্যানকারী কারও কল্যাণ হয় না। কিন্তু ধর্মতন্ত্র বলে, মাস্থ্যকে নির্দিয়ভাবে

অশ্রদ্ধা করিবার বিস্তারিত নির্মাবলী যদি নির্পূত করিয়া না মান তবে

ধর্মপ্রই হইবে। ধর্ম বলে, জীবকে নির্প্রক কট্ট বে দের সে আজাকেই

হনন করে। কিন্তু ধর্মতন্ত্র বলে, যত অস্থ্য কট্ট হোক, বিধবা মেয়ের

মুখে যে বাপ-মা বিশেষ তিথিতে অন্তলে তুলিয়া দেয় সে পাপকে

লালন করে। ধর্ম বলে, অস্থুপোচনা ও কল্যাণকর্মের ধারা অন্তরে

বাহিরে পাপের পোধন। কিন্তু ধর্মতন্ত্র বলে, গ্রহণের দিনে বিশেষ

জলে তুব দিলে, কেবল নিজের নয়, চোদ্দ প্রক্ষের পাপ উদ্ধার। ধর্ম

বলে, সাগরগিরি পার হইয়া পৃথিবীটাকে দেখিয়া লও, তাতেই মনের

বিকাশ। ধর্মতন্ত্র বলে, সমুদ্র যদি পারাপার কর তবে ব্র লখা করিয়া

নাকে খত দিতে হইবে। ধর্ম বলে, যে মান্ত্র যথার্থ মান্ত্র সে যে ঘরেই

জন্মক প্রদীয়। ধর্মতন্ত্র বলে, যে মান্ত্র রান্ধণ সে যত বড়ো অভাজনই

হোক, মাথায় পা তুলিবার বোগ্য। অর্থাৎ মুক্তির মন্ত্র পড়ে ধর্ম, আর

দাসজের মন্ত্র পড়ে ধর্মতন্ত্র।

আমি জানি, এক দিন একজন রাজা কলিকাতার আর-এক রাজার সঙ্গে দেখা করিতে গিয়াছিলেন। বাড়ি বার তিনি কলেজে পাশ-করা শুশিকিত। অতিথি যখন দেখা সারিয়া গাড়িতে উঠিবেন এমন সময় বাড়ি বার তিনি রাজার কাপড় ধরিয়া টানিলেন; বলিলেন, আপনার মুখে পান!' গাড়ি বার তিনি দায়ে পড়িয়া মুখের পান কেলিলেন, কেননা সারথি মুসলমান। এ কথা জিজ্ঞাসা করিবার অধিকারই নাই, গারথি বেই হোক, মুখের পান ফেলা যায় কেন গে ধর্মুদ্ধিতে বা

কর্মকৃত্বিতে কোথাও কিছুমাত্র আটক না খাইলেও গাড়িতে বসিয়া স্বছন্দে পান খাইবার স্বাধীনতাটুকু যে দেশের মান্ত্র অনায়াসে বর্জন করিতে প্রস্তুত, সে দেশের লোক স্বাধীনতার অস্ত্রেষ্টিসৎকার করিয়াছে। অবচ দেখি, যারা গোড়ায় কোপ দেয় তারাই আগায় জন ঢালিবার জন্ম ব্যস্তু।

निष्ठी भनार्थित এक है। स्थान चार्छ। कारना कारना विषय এ দেশে ভাসিয়া সেই শোভার ব্যাখ্যা করেন। এটাকে বাহির হইতে তারা সেই ভাবেই দেখেন, একজন আটিণ্ট পুরানো ভাঙা বাড়ির চিত্র-योगाजा रयमन कविमा प्राथ, जांत्र वाग्रायागाजांत थवत नम्र ना। স্নান্যাত্রার পরবে বরিশাল হইতে কলিকাতায় আসিতে গঙ্গাস্নানের याखी (मिश्रवाधि, जांत्र विभिन्न जांग जीत्माक। कीमाद्रित घाटि बाटि, বেলওয়ের স্টেশনে স্টেশনে তাদের কষ্টের অপমানের সীমা ছিল না। वाहिद्रित्र पिक इहेटल এই ব্যাকুল সহিষ্ণুতার সৌন্ধর্য আছে। কিছ व्यायारमञ्ज रमर्भन्न व्यस्थायी এই व्यक्ष निष्ठात्र रमोन्सर्यरक श्रष्ट्रण करत्रन नाहे। তिनि প्रकात मिल्निन ना, नाखिरे मिल्निन। इःथ वाफिल्टिरे ठिनिन। এই মেরেরা মানত-স্বস্তারনের বেড়ার মধ্যে যেশব ছেলে মানুষ क्रियाह, ইरकालिय ममञ्ज वञ्जय कार्ह्स जाया याषा (रैं) क्रिन এवः পরকালের সমস্ত ছায়ার কাছেই তারা মাধা খুঁড়িতে লাগিল। নিজের काट्यत्र वाशांक त्राञ्चात्र वाटक वाटक गाफिया मिख्याहे अपन्त काळ. এবং निष्कत्र উन्नजित्र चन्द्रतात्रक चाकानभित्रगा के कत्रिया कालाक्र এরা বলে উন্নতি। সভ্যের জন্ত মানুষ কট সহিবে, এইটেই সুন্দর। काना वृक्षि किया (थोड़ा मिकिक हाल हहेटल मासूव लिममा अ कहे यिन मम, छ:व (महे। कृष्ण। कात्रन, विश्वां चायात्मत्र मव हित्र वर्षा य गण्णम मित्राष्ट्रन, जाग-त्रीकाद्रव बीवच, এই कहे जावह दिहिगावि वाटक थर्ड। चाक छार्रहे निकान चामारमय हिनाए एह- हेराय सर्वय

कर्महोहे (याहे।। हार्थित नायत्न मिश्रिताहि, हाब्बात हाब्बात व्यवस्थित পুণোর সন্ধানে যে পথ দিয়া স্নানে চলিয়াছে ঠিক ভারই ধারে মাটিভে পড়িয়া একটি বিদেশী রোগী মরিল, সে কোন্ জাতের মান্তব জানা ছিল ना विनिया (कह जाहारक हूँ हैन ना। धहे (जा अनमास पिछेनियाद नक्ता এই क्ट्रेमिट्यू भूगाकाभी एत्र निर्धा प्रिया स्कार, कि ह हेरात्र लाकमान मर्वाना (य चक्का मास्याक भूर्णाव चक्क चान क्रिए (ছाটाब, সেই অভ্নাই তাকে অভানা মুম্বুর সেবার নিরস্ত क्रव। এकन्रवा প्रमिन्द्रेत छापाठार्वक छात्र बुड़ा चाडून काणिया मिन. किन এই चन्न निष्ठांत्र बादा मि निर्द्धत्र हिद्रधीवरनत जिल्डाकन इहेट जात्र गम्य जापन-जनरक दक्षिण कत्रिवाहि। এहे-स मृह निष्ठांत्र निविधित्रम निकारण विधाण हेशांक गयानव करवन ना. किनना हेश डांत्र मार्नित च्यानन।। अग्राष्ठीर्य मिश गिर्ह, य भाषांत्र ना चार्ह रिष्ठा, ना चार्ड ठादिख, धनी खीरमाक द्रामि द्रामि ठोका ঢामिया पिया তার পা পূজা করিয়াছে। সেই সময়ে তার ভক্তিবিহ্বলতা ভারুকের চোখে चुन्मन : किन्न अहे व्यविष्ठिनि निष्ठां, अहे व्यविद्याण वराज्ञा कि ग्ठा प्रश्नंत्र अर्थ এই जीलांकरक এक भा व्यथ्नत्र कत्रिशां ए हेरात्र উত্তর এই যে, তবু তো সে টাকাটা খরচ করিতেছে; সে যদি পাণ্ডাকে পবিত্র বলিয়া না মানিত তবে টাকা খরচ করিতই না কিয়া নিজের জন্ত क्रिछ। (म क्या क्रिकः, क्रिड छात्र এक्ट्री यस मास्र इहेस এই यू, रगरे भर्ठ ना क्यां ठारक किया निष्क्रत क्या भर्ठ क्यां ठारक रम धर्म बिन्दा निष्यत्क लानाइल ना- এই মোহের দাসৰ হইতে তার यन युक थाकिछ। यत्नद এই यूक्तिद चछार्त्य एत्निद मक्ति वाहित्व चानिष्ठ পারিতেছে না। কেননা যাকে চোধ বুজিয়া চালানো অভ্যাস করানো रहेबाहि, हाथ पुनिवा हनिए छात्र भा कारभ ; जब्भ नारमत यरका य क्विण मनित्य अवहे लाग पिए निविद्याए, जाननि अजू इहेबा

चिक्ति जात्रश्यंत्र खन्न श्राण (पश्या जात्र शक्क खनाशा।

এইজন্তই আমাদের পাড়াগায়ে অর জল স্বাস্থ্য শিক্ষা আনন্দ সমস্ত আজ ভাঁটার মুখে। আত্মশক্তি না আগাইতে পারিলে পরীবাসীর উদ্ধার নাই— এই কথা মনে করিয়া, নিজের কল্যাণ নিজে করিবার শক্তিকে একটা বিশেষ পাড়ায় আগাইবার চেষ্টা করিলাম। এক দিন পাড়ায় আগুন লাগিল; কাছে কোখাও এক ফোঁটা জল নাই; পাড়ায় লোক দাঁড়াইয়া হায়-হায় করিতেছে। আমি তাদের বিলাম, 'নিজেরা মজুরি দিয়া যদি ভোমরা পাড়ায় একটা কুয়ো পুঁড়িয়া দাও আমি তার বাধাইবার খরচা দিব।' তারা ভাবিল, পুণ্য হইবে ওই সেয়ানা লোকটার, আর তার মজুরি জোগাইব আমরা, এটা ফাঁকি। সে কুয়ো খোঁড়া হইল না, জনের কট রহিয়া গেল, আর আগুনের সেখানে বাধা নিমন্ত্রণ।

এই-যে অটল ছুর্দশা এর কারণ, গ্রামের যা-কিছু পূর্তকার্য তা এ পর্যন্ত পূলার প্রলোভনে ঘটরাছে। তাই মান্তবের সকল অভাবই পূরণ করিবরে বরাত হয় বিধাতার 'পরে নয় কোনো আগন্ধকের উপর। পূলার উমেদার যদি উপস্থিত না থাকে তবে এরা জল না থাইয়া মরিয়া গোলেও নিজের হাতে এক কোদাল মাটিও কাটিবে না। কেননা এরা এখনও সেই বুড়ির কোল থেকে নামে নাই থে বুড়ি এদের জাতিকুল ধর্মকর্ম ভালোমন্দ শোভয়াবসা সমস্তই বাহির হইতে বারিয়া দিয়ছে। ইহাদের দোব দিতে পারি না কেননা বুড়ি এদের মনটাকেই আফির থাওয়াইয়া ঘূম পাড়াইয়াছে। কিন্তু জবাক হইতে হয় যখন দেখি, এখনকার কালের শিক্ষিত যুবকেরা, এমন কি, কলেজের তর্মণ, ছাত্রেরাও এই বুড়িতক্ষের গুণ গাহিতেছেন। ভারতবর্ষকে সনাতন ধাতীর কাঁথে চড়িতে দেখিয়া ইহাদের ভারি গর্মণ, ওটা বড়ো উচ্চ জায়পা, ওপান হইতে পা মাটিতেই পড়ে না। বলেন, ওটা

कारिय पाकियारे चाजुक्श्रिय याजन्छ राट्छ यतिया उट्छा लाखा रहेर्य।

অধচ স্পষ্ট দেখি, ছংখের পর ছংখ, ছুর্ভিক্ষের পর ছুর্ভিক্ষ ; বম-লোকের যতগুলি চর আছে সবগুলিই আমাদের খরে খরে বাসা লইল। বাঘে ছাকাতে তাড়া করিলেও যেমন আমাদের অন্ত ভূলিবার হুকুম নাই তেমনি এই অমলগুলো লাক দিরা বখন ঘাড়ের উপর দাত বসাইতে আসে তখন দেখি, সামাজিক বলুকের পাস নাই। ইহাদিপকে খেলাইবার অন্ত জানের অন্ত, বিচারর্ভির অন্ত। বুড়ির শাসনের প্রতি থাদের ভক্তি অটল তারা বলেন, 'ওই অন্তটা কি আমাদের একেবারে নাই ? আমরাও সারাল শিখিব এবং যতটা পারি খাটাইব।' অন্ত একেবারে নাই বলিলে অত্যুক্তি হর, কিছ অন্ত-পাসের আইনটা বিষম কড়া। অন্ত ব্যবহার করিতে দিরাও বতটা না-দিতে পারা যায় তারই উপর যোলো আনা কোঁক। ব্যবহারের গভি এতই, তার একটু এদিক ওদিক হইলেই এত ছুর্লর কানমলা, সমন্ত গুরুপুরোহিত তাগাভাবিত সংল্পত প্লোক ও মেরেলি মন্ত এত ভরে ভরে সাবধানে বাঢ়ীয়া চলিতে হর যে, ডাকাত পড়িলে ডাকাতের চেরে অনভ্যাসের বন্দুকটা লইরাই কাঁপরে পড়িতে হয়।

याहे (हाक, 'लाखित (विकित) व्यक्त (हाक' विनिधाहे यथन व्यक्तिम कता हहेन उथन नवान् (लाक अवश्व विनाद विनाद विश्व (वि, 'माइयरमत कार्य किए विकास विकास विकास विकास करिया (वि, 'माइयरमत कार्य किए विकास विकास विकास करिया लागा कराहे विनि श्रमक्की वन हम, यि अपनि करिया जीवरनत व्यक्तिक वार्याक्षक वित्र व्यक्ति व्यक्ति विश्व विवाद व्यक्ति विश्व विवाद विश्व विश्व विवाद विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष

नारे। ज्यार्छत चड़ावि गमछ ह्त्रमात कतिर्त, जात शरत हान्नि वित्रा खन चानिए चन चन चाटि चरत चानारगाना, এ चानवात विश्वाचात्र गरू इत्र ना। चरनरक वर्णन, এ प्रत्म शर्म शर्म अंख रव इत्र चानारगाना क्रिया जात्र मृत्र कात्रव, अधानकात गर्म् भागनजात शर्मािछत छेशत। क्यां हार्क विहास कतिश्वा एतथा वर्मात्र ।

ইংরেজ-রাষ্ট্রনীতির মূলতত্ত্বই রাষ্ট্র হল্লের সঙ্গে প্রজাদের শক্তির যোগ। এই রাষ্ট্রতন্ত্র চিরদিনই একতরফা আধিপত্যের বুকে শেল হানিয়াছে, এ কথা আমাদের কাছেও কিছুমাত্র ঢাকা নাই। এই কথাই সরকারি বিস্থালয়ে আমরা সদরে বিসিয়া পড়ি, শিখি, এবং পড়িয়' এগ্জামিন পাস করি। এ কথাটাকে এখন আমাদের কাছ হইতে ফিরাইয়া লইবার আর উপায় নাই।

কন্প্রেশ বল, লীগ বল, এ-সমন্তর মূলই এইখানে। যেমন ছুরোপীর সায়ান্দে আমানের সকলেরই অধিকারটা সেই সায়ান্দেরই প্রকৃতিগত, তেমনি ইংরেজ-রাইত্রে তারতের প্রজার আপন অধিকার সেই রাইনীতিরই জীবনধর্মের মধ্যেই। কোনো একজন বা দশজন বা পাঁচশোজন ইংরেজ বলিতে পারে, ভারতীর ছাত্রকে সায়ান্দ লিখিবার স্থযোগটা না দেওরাই ভালো, কিছু সায়ান্দ সেই পাঁচশো ইংরেজের কঠকে লক্ষা দিয়া বক্সবরে বলিবে, 'এসো তোমরা, তোমানের বর্ণ বেমনি হোক, তোমানের দেশ ধেখানেই থাক, আমাকে গ্রহণ করিয়া শক্তি লাভ করো।' তেমনি কোনো দশজন বা দশ-ছাজার-জন ইংরেজ রাজসভার মঞ্চে বা খবরের কাগজের ছাজ চড়িয়া বলিতেও পারে বে, ভারত-শাসনতত্রে ভারতীয় প্রজার কর্তৃত্বকে নানা প্রকারে প্রবেশে বাধা দেওয়াই ভালো, কিছু সেই দশহাজার ইংরেজের মন্ত্রণাকে তিরভার করিয়া ইংরেজের রাইনীতি বক্সবরে বলিতেছে, 'এসো ভোমরা, ভোমানের বর্ণ বেমনি হোক, ভোমানের দেশ বেধানেই থাক, ভারতশাসনতত্রে

কর্তার ইচ্ছায় কর্ম

ভারতীয় প্রজার আপন অধিকার আছে, ভাছা গ্রহণ করো।'

কড়া জ্বাব শুনিবার আশন্ত। আছে। ভারতবর্ধে আন্ধান বেষন বলিয়াছিল, উচ্চতর জানে ধর্মে কর্মে শুক্তের অধিকার নাই, এও সেই রক্মের কথা। কিন্ধু আন্ধান এই অধিকারভেদের ব্যবস্থাটাকে আলাগোড়া পাকা করিয়া গাঁথিয়াছিল, যাহাকে বাহিরে পঙ্গু করিবে ভার মনকেও পঙ্গু করিয়াছিল। জ্ঞানের দিকে গোড়া কাটা পড়িলেই কর্মের দিকে ভালপালা আপনি শুকাইয়া যার। শুক্তের সেই জ্ঞানের শিক্টা কাটিভেই আর বেশি কিছু করিতে হয় নাই; ভার পর হইতে ভার মাথাটা আপনিই মুইয়া পড়িয়া আন্ধানের পদরজে আসিয়া ঠেকিয়া রহিল। ইংরেজ আমাদের জ্ঞানের ছার বন্ধ করে নাই, অবচ সেইটেই মুক্তির সিংহ্লার। রাজপুক্রেয়া সেজস্ত বোধ করি মনে মনে আপ্রোম করেন এবং আন্তে আন্তে বিশ্বালয়ের ছুটো-একটা জ্ঞানলা-দর্জাও বন্ধ করিবার গতিক দেখি; কিন্ধু তবু এ কথা তারা কোনো দিন একেবারে ভূলিতে পারিবেন না যে, স্থেবিয়ার খাভিরে নিজের মহুয়াথকে আঘাত করিলে ফলে সেটা আত্মহন্ডার মভোই হয়।

ভারতশাসনে আমাদের স্থায় অধিকারটা ইংরেজের মনন্তত্ত্বর মধ্যেই নিহিত— এই আশার কথাটাকৈ যদি আমাদের শক্তি দিয়া ধরিতে পারি তবে ইহার জন্ত বিভার হুঃখ সহা, ভাাগ কয়া, আমাদের পক্ষে সহজ্ঞ হয়। যদি আমাদের হুবঁল অভ্যাসে বলিয়া বসি 'কর্ভার ইজার কর্ম, ওর আর নড়চড় নাই', তবে যে অগভীর নৈরাশ্ত আসে, ভার হুই রকষের প্রকাশ দেখিতে পাই— হয় গোপনে চক্রাশ্ত করিয়া আকৃষ্মিক উপদ্রবেশ্ব বিভার করিতে থাকি নম্ন ঘরের কোণে বসিয়া পরস্পরের কানে কানে বলি, অমুক লাটসাহেব ভালো কিয়া মন্দ, অমুক ব্যক্তি মন্ত্রিসভার সচিব থাকিতে আমাদের কল্যাণ নাই, মলি সাহেব ভারতস্থিব হুইলে হয়ভো

আমাদের স্থাদিন হইবে নয়তো আমাদের ভাগ্যে এই বিড়াল বনে গিয়া বনবিড়াল হইয়া উঠিবে। অর্থাৎ নৈরাশ্রে, হয় আমাদের মাটির তলার স্থাবন্ধের মধ্যে ঠেলিয়া শক্তির বিকার ঘটায় নয় গৃহকোণের বৈঠকে বসাইয়া শক্তির ব্যর্থতা সৃষ্টি করে; হয় উন্মাদ করিয়া ভোলে নয় হাবা করিয়া রাখে।

किस मञ्जाषक व्यविधान कतिव नाः अमन ब्लादित नक्ति हिन्द, रयन हेरद्रब-दाष्ट्रेनी जित्र मर्का क्वन मिक्कि मजा नरह, नौजि जात किस বড়ো সভ্য। প্রতিদিন তার বিরুদ্ধতা দেখিব; দেখিব স্বার্থপরতা, ক্ষমতাপ্রিয়তা, লোভ, ক্রোধ, ভয় ও অহংকার সমস্তরই লীলা চলিতেছে; किन यासूरवत्र এই त्रिপ्छामा रमहेशात्महे व्यायारमत्र यादत्र रयशात्म वायामित वरहाद विश् वाहि— (यशान वायदा क्ष क्ष वास वीक, क्ष लाएड नुक, रयथान चामारमत भद्रम्भारत्र क्रांड वेश दिर्घय चित्रिया। (यथारन वागदा वर्षा, वागदा वीद्र, वागदा छात्री छल्दी छहादान, সেধানে অন্ত পক্ষে যাহা মহৎ তার সঙ্গে আমাদের সত্য যোগ হয়: मिश्रात चन्न भक्ति दिश्र यात्र थाहेशां छ ज् चायदा चश्री इहे, वाहित्र ना इट्टांच चरुदा। चामत्रा यि जिड्ड इट्, ह्या है। इट्, छ द दे: द्रब-भवर्षाण्डेब नी छिएक थाएँ। कदिया छात्र त्रिभू होएक है ध्यवन कित्र। रियान कुरे नक नरेया कायबाद रियान कुरे नक्ष्य मिक्स स्वार्गरे मिखित छे९कर्व, कृष्टे भिटकत कुर्वमलात यार्ग हत्य कुर्वमला। खबाक्रग यथनरे (काफ्राट व्यक्षिकाद्रशैनका मानिया नरेन, वाक्रान्य व्यक्ष्मकान्य গঠটা তথনই গভীর করিয়া বোঁড়া হইল। সবল চুংলের পক্ষে যভ বড়ো भक, हुर्तम गवरमञ् भरक छात्र क्रिय क्य वर्षा भक् नग्र।

এক জন উচ্চপদস্থ ইংরেজ-রাজপুরুষ আমাকে বলিয়াছিলেন, 'ভোমরা আয়ই বল, পুলিস ভোমাদের পরে অভ্যাচার করে, আমিও ভা অবিশ্বাস করি না, কিছ ভোমরা ভো ভার প্রমাণ দাও না।' বলা

কর্তার ইচ্ছায় কর্ম

राहना, 'भूनिरमत्र मरक नाठानाठि यात्रायात्रि करता' এ कथा जिनि यरनन ना। किंद चक्रारिय गर्म गढ़ा है रहा शास्त्र रंकार्य नय ; रंग रहा তে ब्लंब ने ने किंद्र किंद्र किंद्र । स्थित निवस्त भी जन इहेरिक वैहिरोत्र षश्च এक मन लाटकत्र एहा बुटकत्र भाहे। बाका हाई, जञ्चात्रटक তারা প্রাণপণে ক্রমাণ করিবে, পুনঃপুনঃ ছোবণা করিবে। ভানি, পুলিসের একজন চৌকিদারও একজন মানুষ মাত্র নয়, সে একটা প্রকাত্ত শক্তি। একটি পুলিশের পেয়াদাকে বাঁচাইবার অন্ত মকদমায় গবর্ষেন্টের इ। जात्र हाजात्र होका बत्रह हम । जबीर जानामज-महाम्य भात्र हहेवात रिकाम (भन्नामात कन्न गदकादि विभान ; चात्र गतिव कत्रिवामिटक कृकात्न मांडात्र मित्रा भात्र हहेए इहेट्न, अक्थाना क्लात्र एडलाख नाहे। अ रचन এक दक्य म्लाहे कि देशा विनिद्या (मध्या, 'वाशू यात्र यनि थाख छट्व निः नटक मदाहों विचीव श्वाश्वाकत । अब भरत चात्र हां भा हरण ना। अधिय। अहे। य चामामित्र चत्नक मित्नत्र किना लाक। अहे का कडा ; अहे का वागामित्र कविकद्दान्य हती ; वहे त्वा विह्नाकार्यात्र यनगा ; स्राप्त धर्म मकरमत्र উপরে ওকেই তো পূজা দিতে হইবে, নহিলে হাড় खंড়া হইরা गाहेर्द। चल्लाबन-

> या (पर्यो ताकामागटन (११४०-ऋत्भव गश्यिका नमस्रोत्र नमस्रोत्र नमस्रोत्र नत्मानमः।

কিন্ধ ইহাই তো অবিদ্যা, ইহাই তো নারা। বেটা মূল চোৰে
প্রতীয়মান হইতেছে তাই কি সভা ? আসল সভা, আনাকে লইনাই
গবর্মেণ্ট। এই সভা সমস্ত রাজপুরুষের চেয়ে বজো। এই সভাের
উপরই ইংরেজ বলী, সেই বল আমারও বল। ইংরেজ-সবর্মেণ্টও এই
সভােকে হারার, যদি এই সভাের বল আমার মধ্যেও না বাকে। আনি
যদি ভীক হই, ইংরেজ-রাইভিত্রের নীভিতত্ত্বে আমার যদি শ্রদ্ধা না বাকে,
তবে পুলিস অভাাচার করিবেই, মাাজিস্টেটের পক্ষে অবিচার করিবেই

হইবেই, প্রেপ্তিজ-দেবতা নরবলি দাবি করিতেই থাকিবে এবং ইংরেজের শাসন ইংরেজের চিরকালীন ঐতিহাসিক ধর্মের প্রতিবাদ করিবে।

এ কথার উন্তরে শুনিব, 'রাষ্ট্রতন্ত্রে নীতিই শক্তির চেয়ে সত্য এই কথাটাকে পারমাধিক ভাবে মানা চলে কিন্তু ব্যবহারিক ভাবে মানিতে গেলে বিপদ আছে, অতএব হয় গোপনে পরম-নিঃশন্ধ গরম-পন্থা, নয় তো প্রেস অ্যাক্টের মুখ-থাবার নীচে পরম-নিঃশন্ধ নরম-পন্থা।'

'हा, विभन चाह्य वहें कि, जबू खानि या मछा वावहादि जात्क मछा कतिव।'

'किन्न चारामिद्र मिट्न लाकरे खार किन्ना लाख स्नार्यत्र शक्त माका मिट्न ना, विक्र करे मिट्न।'

'এ कथा ७ कि । जबू मला क मानिया ठिन ए इहेर ।'

'किन्न चामारमंत रमण्यत लाक्टे अभागा किन्न। भूतकारत लाख्य (बारभित्र मध्य ट्टेर्ड चामात मानाम वाफि मातिरद।'

'এ কথাও ঠিক। তবু সত্যকে মানিতে হইবে।'
'এতটা কি আশা করা যায় ?'

হাঁ, এতটাই আশা করিতে হইবে, ইহার একটুকুও কম নর।
গবর্মেণ্টের কাছ হইতেও আমরা বড়ো দাবিই করিব কিছু নিজেদের
কাছ হইতে তার চেয়ে আরো বড়ো দাবি করিতে হইবে, নহিলে অক্ত
দাবি টি কিবে না। এ কথা মানি, সকল মানুষই বিশিষ্ঠ হয় না এবং
আনক মানুষই হবল; কিছু সকল বড়ো দেশেই প্রত্যেক দিনই আনকগুলি করিয়া মানুষ জন্মেন যারা সকল মানুষের প্রতিনিধি— যারা
সকলের হুংথকে আপনি বছেন, সকলের পথকে আপনি কাটেন, যারা
সমস্ত বিক্তমতার মধ্যেও মনুষ্ঠাতক বিশাস করেন এবং বার্থতার গভীরতম
আত্তকারের পূর্বপ্রান্তে অক্রেণাদ্বের প্রতীক্ষার আগিয়া থাকেন। তারা
আবিশ্বানীর সমস্ত পরিহাসকে উপেকা করিয়া জোরের সক্রে বলেন:

কর্তার ইচ্ছায় কর্ম

শ্বন্দপ্যশ্ব ধর্মস্ত জারতে মহতো ভরাৎ। অর্থাৎ কেন্ত্রন্থলৈ যদি শ্বর্নাজও ধর্ম থাকে তবে পরিধির দিকে রাশি রাশি ভরকেও ভর করিবার দরকার নাই। রাষ্ট্রতত্ত্বে নীতি যদি কোনোখানেও থাকে তবে তাহাকেই নমন্বার, ভীতিকে নর। ধর্ম আছে, শত্রুব মরা পর্যন্ত তাহাকে মানিরাও তাহাকে মানিতে হইবে।

মনে করো, ছেলের শক্ত ব্যামো। শেজস্ত দূর হইতে শবং ইংরেজ সিভিল সার্জনকৈ আনিয়ছি। খরচ বড়ো কম করি নাই। যদি হঠাৎ দেখি, তিনি মন্ত্র পড়িরা মারিয়া-ধরিয়া ভূতের ওঝার মতো বিষম বাড়া-ঝুড়ি শুরু করিলেন, রোপীর আত্মাপুরুব ত্রাহি-ত্রাহি করিতে লাগিল, তবে ডাক্তারকে জ্যোর করিয়াই বলিব, 'দোহাই সাহেব, ভূত বাড়াইবেন না, চিকিৎসা করুন।' তিনি চোধ রাঙাইয়া বলিতে পারেন, 'তুমি কে হে। আমি ডাক্তার, বাই করি-না তাই ভাক্তারি।' ভরে যদি বৃদ্ধি দমিয়া না বায় তবে তাঁকে আমার এ কথা বলিবার অধিকার আছে, 'বে ডাক্তারিতত্ব লৃইয়া তুমি ভাক্তার, আমি তাকে তোমার চেমে বড়ো বলিয়াই জানি, তার মূল্যেই তোমার মূল্য।'

এই-যে অধিকার এর সকলের চেয়ে বড়ো জোর ওই ডাজারসম্প্রদায়েরই ডাজারিশাল্রে এবং ধর্মনীতির মধ্যে। ভাজার বতই
আফালন করুক, এই বিজ্ঞান এবং নীতির দোহাই মানিলে লজা না
পাইরা সে বাকিতেই পারে না। এমন কি, রাপের মুখে সে আমাকে
ঘৃষিও মারিতে পারে, কিন্তু তবু আল্তে আল্তে আমার সেলাম এবং
সেলামিটি পকেটে করিয়া গাড়িতে বসার চেয়ে এই ঘৃষির বৃল্যা
বড়ো। এই ঘৃষিতে সে আমাকে যত মারে নিজেকে তার চেয়ে বেশি
মারে। তাই বলিতেছি, যে ক্বাটা ইংরেজের ক্বা নয়, ক্বেল্যাত্র
ইংরেজ আমলাদের ক্বা, সে ক্বায় বদি আমরা সায় মা দিই তবে আজ
ছংব ঘটিতে পারে কিন্তু কাল ছংব কাটিবে।

मिए भी बहुत छात्रा है। द्विष-भागतित भन्न बाब अयन क्या भीना राम, याजाक गर्दाके ভाলायम याहे कक्क वाश्नारमण छ। महेबा मीर्घनियानि किनिवात व्यथिकात्र वाढानित्र नाहे। এछ पिन এই वानिতाम, देश्द्राब्बन्न व्यथ्थ भागत्न माजाव्य वाश्मा भावाव मात्राठा चिতदा वाहिता এक श्हेशा উঠিতেছে, এই গৌরবই ইংরেজ সাম্রাজ্যের मुक्रित काश्यित-मणि। विशक्षित्रम ७ क्वाप्मित इर्गिष्ठिक चालन इर्गिष्ठ मन कत्रिया हैश्द्रक युष्क एक खान निष्ठ हुिर शाहि, नमूर जुर निन्म-পারে যখন এই বার্তা তখন সমুদ্রের পূর্বপারে এমন নীতি কি এক দিনও थांििरव रय, माजारक्यत्र जारमायन स्थब्ः रथ वाडामित्र रकारमा माबावाबा नारे ? अयन रुकूम कि चायदा याचा (रुं हे कदिया यानिव ? अ कचा कि निन्छत्र कानि ना त्य, मूर्य এই हकूम यछ कार्त्रिहे हैं। को कछक करात्र हेरात्र निर्दान यस अको। नक्का चार्ह? हेश्यास्त्र राहे चक्कारत्रत्र গোপন লব্জা আর আমাদের মহুন্তাত্তর প্রকাশ্ত সাহস- এই ছুয়ের মধ্যে यिन क्रिएं इहेर्द। हेश्द्रक ভावछित्र काष्ट्र गुछा वह ; हेश्द्रक बूद्राभीव गण्यात माविष दिवा अहे পूर्वम्य चानिवादः , तिहे সভাভার বাণীই ভাছার প্রতিশ্রতি-বাণী। সেই দলিলকেই আমরা সব চেয়ে বড়ো দলিল করিয়া চলিব; এ কৰা তাকে কথনোই বলিতে দিব ना य 'छात्रछवर्षक चामदा हेक्द्रा हेक्द्रा कदिया बाह्-काठे। कदिवात चलरे गमूल পाद रुरेया चागियाहि'।

বে জাতি কোনো বড়ো সম্পদ পাইরাছে সে তাহা দেশে দেশে দিকে
দিকে দান করিবার জন্তই পাইরাছে। বদি সে কুপশতা করে তবে সে
নিজেকেই বঞ্চিত করিষে। হুরোপের প্রধান সম্পদ বিজ্ঞান এবং
জনসাধারপের ঐক্যবোধ ও আত্মকর্তৃত্বলাভ। এই সম্পদ, এই শক্তি
ভারতকে দিবার ষহং দারিছই ভারতে ইংরেজ-শাসনের বিধিদন্ত রাজপরোয়ানা। এই কথা শাসনকর্তাদের স্বরণ করাইবার ভার জামাদের

কর্তার ইচ্ছায় কর্ম

উপরেও আছে। কারণ, ছুই পক্ষের যোগ না ছুইলে বিশ্বতি ও বিকার ঘটে।

हेश्त्रक निष्कत्र हेलिहारमत्र भाहाहे पित्रा अयन कवा विमाल भारत, 'कनगाशायर वा वा वर्ष किं एक किंनिंग का वामया नाना विপ्रदित यथा मित्रा छट्य वृक्षित्राष्ट्रि এदः नाना नाथनात्र यथा मित्रा छट्य সেটাকে গড়িয়া তুলিয়াছি।' এ क्या गानि। जगरू এक-এक অঞ্জগামী मन এक-अक वित्मव गजातक चारिकाद करत्र। तिरे चारिकारदेव भाषात्र चानक जून, चानक इ:थ, चानक छा।त चाहि। कि छात्र कन बाता পায় ভাহাদিগকে দেই ভূল, সেই ছ:খের সমস্ত লখা রাস্তাটা মাড়াইভে इम्र ना। (पिरिनाम, वाढानित ছেলে चाम्मित्रिकाम शिम्रा श्टल-कन्य এঞ্জিন গড়িল এবং তার তত্ত্ত শিধিয়া লইল, কিন্তু আন্তনে কাৎলি हिए। एक एक किया शिव अश्वित्तत्र नम्ख अखिहानिक भागा विव তাকে সারিতে হইত তবে সভারুসের পরমার নহিলে ভার কুলাইত না। शुर्वार्ण बाहा अव्याहेबा ऐडिए वह गुर्भन स्रोजनृष्टि क्छवाछान नाभिन कानात्न जाहा निकष्ण भूजियात्र त्वनात्र (वनि नयत्र नात्र नाहे। वागामित्र চति एक वकारिंग विषे कर्ड्मिकित विस्थित वकार परिता पारक छटन चामारमद्रहे निर्मित मन्नकान कर्कुरचन्न ठर्छ। नाकिनिरमस्बन्न मरशा किছू नाई अठे। यनि भाषा इहेए इसित्रा नथ, छर्व छात्र मरश्र कि ए य चार ए तरे चाविकात काता काता है हहेर न। चाचुकईर बन অযোগ দিয়া আমাদের ভিতরকার নৃতন নৃতন শক্তি-আবিহারের প্র युनिया नाख ; मिठोटक द्वांव कदिया दाविया विन व्यामारमञ्ज व्यवका कद এবং বিষের কাছে চিরদিন অবজ্ঞাভাজন করিয়া রাখ, ভবে ভার চেয়ে পর্য শক্তভা আর-কিছু হইভেই পারে না। ভাইনে বাঁরে ছুপা वाफ़ाइटनइ बाब याबा ठेक कवित्रा स्वताटन नित्रा टिंटक, छात्र यटन कथरना कि राहे रए। जामा हिंकिए हे भारत यात्र जारत यात्र मासून गकन

विভাগে আপন মহত্তকে প্রাণ দিয়াও সপ্রমাণ করে ?

দেখিয়াছি, ইতিহাসে যখন প্রভাত হয় সূর্ব তখন পূর্বদিকে ওঠে বটে, কিন্তু সেই উত্তরে দক্ষিণে পশ্চিমেও আলো ছড়াইয়া পড়ে। এক-এক ইঞ্চি করিয়া ধাপে ধাপে যদি জাতির উন্নতি হইত তবে মহাকালকেও হার মানিতে হইত। মামুব আগে সম্পূর্ণ বোগ্য হইবে, তার পরে স্থযোগ পাইবে, এই কথাটাই যদি সত্য হয় তবে পৃথিবীতে কোনো জাতিই আলু স্বাধীনতার যোগ্য হয় নাই। ডিমক্রেসির দেমাক করিতেছ! কিন্তু মুরোপের জনসাধারণের মধ্যে আছও প্রচুর বীভৎসভা আছে— সেসব কুৎসার কথা ঘাটতে ইচ্ছা করে না। যদি কোনো কর্ণধার বলিত এইসমন্ত যত কণ আছে তত কণ ডিমক্রেসি তার কোনো অধিকার পাইবে না, তবে বীভৎসতা তো থাকিতই, আবার সেই পাপের স্বাভাবিক প্রতিকারের উপায়ও চলিয়া যাইত।

তেমনি আমাদের সমাজে, আমাদের বাক্তিস্বাতয়্রের ধারণায় ছুর্বলতা যথেষ্ট আছে, সে কথা ঢাকিতে চাহিলেও ঢাকা পড়িবে না। তবু আমরা আত্মকর্তৃত্ব চাই। অন্ধকার ঘরে এক কোণের বাতিটা মিট্মিট্ করিয়া জলিতেছে বলিয়া যে আর-এক কোণের বাতি জালাইবার দাবি নাই, এ কাজের কথা নয়। যে দিকের বে সলতে দিয়াই হোক আলো জালাই চাই। আল মনুয়ান্তের দেয়ালি-মহোৎসবে কোনো দেশই তার সব বাতি পুরা জালাইয়া উঠিতে পারে নাই, তবু উৎস্ব চলিতেছে। আমাদের ঘরের বাতিটা কিছু কাল হইতে নিবিয়া গেছে; তোমাদের শিখা হইতে যদি ওটাকে জালাইয়া লইতে যাই তবে ভা লইয়া রাগারাগি করা কল্যাণের নহে। কেননা, ইহাতে ভোমাদের আলো কমিবে না, এবং উৎসবের আলো বাড়িয়া উঠিবে।

छेरगरवत्र मिवछ। खाळ खामामिगरक छिछत इहेरछ छाक्रिएहन। भाषा कि खामामित्र निरुष्ध कित्रा टिकाहेना वाथिएछ भातिव १ स्म स्व

কর্তার ইচ্ছায় কর্ম

কেবল ধনী যজ্ঞযানকেই দেখিলে গদগদ হইরা ওঠে, ক্যানাজা অস্ট্রেলিয়ার নামে সে স্টেশন পর্যন্ত ছুটিয়া যার, আর গরিবের বেলায় তার ব্যবহার উণ্টা— এটা ভো সহিবে না। দেবতা বে দেখিতেছেন। ইহাতে শ্বরং অন্তর্গামী যদি লজ্জারূপে শহরে দেখা না দেন, তবে ক্রোধ

কিন্তু আশার কারণটা উহাদের মধ্যেও আছে, আমাদের মধ্যেও আছে। বাঙালিকে আমি প্রত্তা করি। আমি জানি, আমাদের যুবকদের যৌবনধর্ম কখনোই চিরদিন ধার-করা বার্ধক্যের মুখোব পরিরা বিজ্ঞ লাজিবে না। আবার আমরা ইংরেজের মধ্যেও এমন মহাত্তা বিশুর দেখিলাম থারা অভাতির কাছে লাজনা সহিরাও ইংরেজনইতিহাসরক্ষের অমৃতকলটি ভারতবাসীর অধিকারে আনিবার জন্ত উংস্ক। আমাদের তরকেও অংমরা তেমনি মাসুবের মতো মান্তব চাই যারা বাহির হইতে ছংগ এবং অজনদের নিকট হইতে ধিক্কার সহিতে প্রস্তা। থারা বিফলতার আশ্বাকে অভিক্রম করিয়াও মনুবাদ প্রকাশ করিবার জন্ত ব্যপ্তা।

ভারতের জরাবিহীন জাগ্রত ভগবান আজ আমাদের আত্মাকে আহ্বান করিতেছেন, যে আত্মা অপরিমের, যে আত্মা অপরাভিত, অমৃতলোকে যাহার অনন্ত অধিকার, অবচ যে আত্মা আজ অন্ধ প্রবা ও প্রভাবের অপমানে ধুলার মুখ লুকাইয়া। আঘাতের পর আঘাত, বেদনার পর বেদনা দিয়া তিনি ভাকিতেছেন, 'আত্মানং বিভি। আপনাকে ভানো।'

আত্ত আমরা সমূধে দেখিলাম বৃহৎ এই মামুবের পৃথিবী, মহৎ এই
নামুবের ইতিহাস। মামুবের মধ্যে ভূমাকে আমরা প্রত্যক্ষ করিভেছি;
শক্তির রথে চড়িয়া তিনি মহাকালের রাজপণে চলিয়াছেন, রোগ তাপ
বিপদ মৃত্যু কিছুতেই ভাঁহাকে বাধা দিতে পারিল না, বিশ্বপ্রকৃতি

वत्रयात्मा डाँशांक वत्रव कतिया महेन, खात्नित खाािकर्यय िनत्न डाँत উচ্চ नना हे यहाब्दन, चिन्द्र चित्रशास्त्र निश्रह्णा इरेट जांत्र कन्न আগমনীর প্রভাতরাগিণী বাজিতেছে। সেই ভূমা আজ আমার মধ্যেও वाभनात्र वामन श्किष्टिष्ट्न। ७ दत्र वकाम-बन्ना-वर्षत्रिष्ठ, वाषा-অবিশাসী ভীক, অসভাভারাবনত মৃচ, আজ चदের লোকদের লইরা कुछ वेर्षात्र, कुछ विष्ट्रिय कन्नर कत्रिवात्र मिन नत्र : वाक कुछ वाना, कुछ পদমানের জন্ত কাঙালের মতো কাডাকাডি করিবার সময় গেছে: আজ সেই यिथा। অহংকার দিয়া নিজেকে ভুলাইয়া রাখিব না, বে অহংকার क्विन चापन गृह्कार्पत्र चक्कार्त्रहे नामिछ हहेन्ना न्पर्धा करत्र, विद्राष्टे বিশ্বসভার সন্মুথে যাহা উপহসিত লজ্জিত। অন্তকে অপবাদ দিয়া वाश्वायामना एवं एष्ट्री वकत्यत्र हिखरित्नामन, वायामित्र छाहाए काक नारे। यूर्ण यूर्ण वामामित পूक्ष পूक्ष व्यभन्नाथ व्यभिष्ठा छेठिन, छारात्र ভারে আমাদের পৌরুষ দলিত, আমাদের বিচারবৃদ্ধি মুম্যু — সেই বছ শতाकीत्र व्यावर्জना व्याख गवला गलिए जित्रक्षु कतिवात्र मिन। गन्नुर्थ চলিবার প্রবলতম বাধা আমাদের পশ্চাতে; আমাদের অভীত তাহার সম্মোহনবাণ দিয়া আমাদের ভবিশ্বৎকে আক্রমণ করিয়াছে, ভাহার थुनिश्र ७४भटा (म चाकिकात न्छन यूरात প্রভাতস্থকে मान कतिन, नव-नव-व्यश्वताम् नीन वामाप्तत्र योवनश्रर्य व्यक्तिक कतिमा पिन-वाक निर्मय वरन वायारमन राहे शिर्छन मिक्छेरक मुक्ति मिर्ड इहेरव ভবেই निতारसूथगांभी महर मस्यास्त्र रहिल याग निया वामदा वजीय ব্যর্থতার লজ্জা হইতে বাঁচিব— সেই মন্ত্রাত্ত যে মৃত্যুজয়ী, যে চির-জাগরক চিরসন্ধানরত, যে বিশ্বকর্মার দক্ষিণহস্ত, জ্ঞানজ্যোতিরালোকিত সভ্যের পথে যে চির্যাত্রী, যুগ্যুগের নব নব ভোরণ্যারে যাহার জয়ধ্বনি উচ্ছিসিত হইয়া দেশদেশাস্তরে প্রতিধানিত।

বাহিরের ছ:খ প্রাবণের ধারার মতো আমাদের মাধার উপর নিরম্ভর

কর্তার ইচ্ছায় কর্ম

বর্ষিত হইরাছে, অহরহ এই হৃ:থভোপের যে ভাষসিক অন্তচিতা, আজ তাহার প্রারশ্চিত্ত করিতে হইবে। তাহার প্রারশ্চিত্ত কোবার ? নিজের মধ্যে নিজের ইচ্ছার হৃ:থকে বরণ করিরা। সেই হৃ:থই পবিত্র হোমারি; সেই আগুনে পাপ পৃড়িবে, বৃচতা বাপা হইরা উড়িয়া বাইবে, ভড়তা ছাই হইরা মাটিতে মিশাইবে। এসো প্রভু, ভূমি দীনের প্রভু নও। আমাদের মধ্যে যে অদীন, যে অমর, যে প্রভু, যে ঈশ্বর আছে, হে মহেশ্বর ভূমি ভাহারই প্রভু— ভাকো আল ভাহাকে ভোমার রাজসিংহাসনের দক্ষিণপার্যে। দীন লক্ষিত হউক, দাস লাহ্নিত হউক, বৃঢ় তিরত্বত হইয়া চিরনির্বাসন প্রহণ করক।

खास ३७३८

যে সময়ে দেশের লোক তৃষিত চাতকের মতো উৎকণ্ডিত; যে সমরে রাদ্রীয় আবহাওয়ার পর্যবেক্ষকেরা খবর দিলেন যে, হোমকলের প্রবল মৈত্য হাওয়া আরব-সমূদ্র পাড়ি দিয়াছে, মুবলধারে বৃষ্টি নামিল বিলিয়া; ঠিক সেই সময়েই মুবলধারে নামিল বেহার অঞ্চলে মুসল্মানের প্রতি হিন্দুদের একটা হালামা।

অন্ত নেশেও সাম্প্রদারিক ঈর্বাছের লইয়া মাঝে মাঝে তুমুল ছম্মের কথা গুনি। আমানের দেশে যে বিরোধ বাধে সে ধর্ম লইয়া, যদিচ আমরা মুখে সর্বলাই বড়াই করিয়া থাকি যে, ধর্ম বিষয়ে ছিলুর উলারতার তুলনা জগতে কোথাও নাই। বর্তমান কালে পশ্চিম-মহাদেশের উত্তর-পশ্চিম অঞ্চলে যে বিরোধ বাধে তাহা অর্থ লইয়া। সেখানে থনির শ্রমিকেরা, সেখানে ডক ও রেলোরের ক্মিকেরা মাঝে মাঝে হলপুল বাধাইয়া তোলে; তাহা লইয়া আইন করিতে হয়, ফৌজ ভাকিতে হয়, আইন বন্ধ করিতে হয়, রজারক্তি কাও ঘটে। সে দেশে এইয়প বিরোধের সমর ছই পশ্ব থাকে। এক পশ্ব উৎপাত করে, আর-এক পশ্ব উৎপাত নিবারণের উপায় চিল্লা করে। বাছপ্রিয় কোনো তৃতীয় পশ্ব সেখানে বাহির হইতে ছয়ো দেয় না। কিন্তু আমানের ছুংখের বাসরখরে গুধু যে বয় ও কনের বৈততন্ত্ব তাহা নহে; তৃতীয় একটি কুটুছিনী আহেন, অট্টাক্ত এবং কান-মলার কাজে তিনি প্রস্তত।

ইংলতে এক সময় ছিল, যথন এক দিকে তার রাষ্ট্রন্থটা পাকা হইয়া উঠিকেছে এমন সময়েই প্রটেস্ট্যান্ট্ ও রোমান স্থাপলিকদের মধ্যে ধন্দ চলিতেছিল। সেই ঘন্দে ছই সম্প্রদায় যে পরস্পরের প্রতি বরাবর স্থবিচার করিয়াছে তাহা নহে। এমন কি, বহু কাল পর্যন্ত ক্যাপলিক্রা

वह चिवात हरेए विका रहेतारे काठारेताए। चाज काला विष्य अकि गालामानिक ठाएँद वात्र डान देश्मरखन गमछ लाकरक वहन कतिए इहेर एए ह, त्म (मत्मन चन्न मच्चमात्र खनिन खिंछ हेश व्यमात्र। व्यमात्रि ७ व्यमात्यात्र এই বাহ্मिक ७ मानमिक कात्रवश्रीन व्याव इंश्वा विक्र ना इरेबा छित्रिवा ए किन १ व्यक्त राभारन गम्छ विष्यु लात्क मिनिया अकि जालन मामनष्य लाहेबाए। अहे मामनष्य यिन मण्मूर्ग विष्मित्र 'भारत बाक्छि छात (यथान ब्लाफ़। याम नाहे रमशास्त क्रमागछ छाकार्र्यक नाथिया निष्क्रम यात्री हरेछ। এक मिन विषिन निविद्या क्ष्रेमञ् । अ देश्मरखत्र विद्याय क्य छीव छिन ना। रकनना উভय ब्याভिय मर्था ভाষা ভাষ कृति ख्रेबा ও ঐতিহাসিক স্থৃতি-श्रात्र गलाकात्रहे भाषका हिना बत्स्त्र जिल्द निवाहे बस् क्रा प्रियारह। এই पण प्रियात প्रधान कादन এই य्व, हेरद्रक ७ क्र উভয়েই একটা শাসনতম পাইয়াছে যাহ' উভয়েরই স্বাধিকারে; যাহাতে मन्नाम ७ विभाग উভয়েরই निक्ति ममान काक करिएछछ। ইহার ফল रुरेग्राट्य अरे त्य, व्याक रेश्यर अपिन ठाटर्ड ७ रेश्यिन ठाटर्ड व्यास्थ्य थाकित्वथ, त्रायान कााष्ट्रिक व्यक्तिगारक व्यक्तिका घिरमथ, द्राष्ट्रेक द्वत यरश मिल्कित ओरका, यक्रमगाधरनत्र रिवारम, छाङ्गारमत्र यिमन चित्रेतारङ् । ইহাদের মাধার উপর একটি ভৃতীয় পক্ষ যদি সম্পূর্ণ শ্বতম থাকিয়া আপন रेष्ट्रायरणा इंहामिनरक ठानना कदिल, लाहा हरेरन कारना कारनरे कि देशापत्र त्याप मिनिष्ठ ? यात्रमध्यित मत्म याय भर्यस पात्मा कतित्रा (काफ (यरन नार्श रकन १ व्यरनक मिन পर्यक्षरे व्यावर्ग अत मान्य है निए अत वाडीय व्यक्षिकाद्यय मामा छिन ना विनया।

এ কথা মানিভেই হইবে, আমাদের দেশে ধর্ম লইরা হিন্দুমুসলমানের মধ্যে একটা কঠিন বিরুদ্ধতা আছে। বেখানে সভ্যন্তইতা সেইখানেই অপরাধ, যেখানে অপরাধ সেইখানেই শান্তি। ধর্ম যদি অন্তরের

किनिम ना इहेश भाज्यमञ ७ वाङ् चाठा इत्क्हे मूथा क्रिया जाएन छर् 'जग्या' वर्षाद भाजयकरक वाहित्र हरेरक भागन कता गरेत्रा सुर्त्रारभन्न रेजिराम कल बात्र त्रास्क नान रहेत्राष्ट्र। चिरिश्मारक यमि धर्म बन, তবে সেটাকে কর্মক্ষেত্রে ছঃসাধ্য বলিয়া ব্যবহারে না মানিতে পারি, किन्ध विश्व बार्रे छित्रात्वत्र कित्व बार्राक बोकात्र कतिया क्रिय म দিকে অগ্রসর হওয়া অসম্ভব নছে। কিন্তু বিশেষ শান্তমতের অমুশাসনে विष्य कतिया रिम (करन विष्य পশুरूषा ना कदारक रे धर्म वना यास, এবং দেইটে জোর করিয়া যদি অন্ত ধর্মতের মানুষকেও মানাইতে চেষ্টা क्रा रुप्त, তবে মামুষের শঙ্গে মামুষের বিরোধ কোনো কালেই মিটিতে পারে না। নিজে ধর্মের নামে পশুহত্যা করিব অবচ অন্তে ধর্মের नार्य পশুহত্যা করিলেই নরহত্যার আয়োজন করিতে বাকিব, ইহাকে অত্যাচার ছাড়া আর-কোনো নাম দেওয়া যায় না। আমাদের আশা এই यে, চিরদিন আমাদের ধর্ম আচারপ্রধান হইয়া থাকিবে না। আরো-এकि वाना वार्छ, এकिन हिन्सू ७ यूगनयानित यर्था मिन्छिनायनित এक है दाड़ीय चारे जियान यिन चारातिय बाहेल छ वाखन इहेबा छै छै তবে সেই অন্তরের যোগে বাহিরের সমস্ত পার্থকা তুচ্ছ হইরা যাইবে।

অন্ন দিন হইল, রেলগাড়িতে আমার এক ইংরেজ সলী জ্টিরাছিল।
তিনি বেহার অঞ্জের হালামার প্রসঙ্গের গন্ধ করিলেন— সাহাবাদে কিছা
কোনো-একটা জারগায় ইংরেজ কাপ্তেন সেখানকার এক জমিদারকে
বিজ্ঞাপ করিয়া বলিয়াছিলেন, 'ভোষার রায়ভদের ভোমরা ভো
ঠেকাইতে পারিলে না! ভোমরাই আবার হোমকল চাও!' জমিদার
কী জবাব করিলেন শুনি নাই। সম্ভবত তিনি লছা সেলাম করিয়া
বলিয়াছিলেন, 'না সাহেব, আমরা হোমকল চাই না, আমরা জ্বোপ্য
অধ্য। আপাতত আমার রায়ভদের তুমি ঠেকাও।' বেচারা জানিতেন,

চামরুল তথন সমুজ্রপারের স্বপ্নলোকে, কান্তেন ঠিক সমুখেই, সার ক্রিমাটা কাথের উপর চড়িয়া বসিয়াছে।

আমি বলিলাম, 'হিলুমুসলমানের এই দালাটা হোমকলের অধীনে তা ঘটে নাই। নিরম্ভ অমিদারটি অক্ষমতার অপবাদে বােধ করি একবার সেনাপতি-সাহেবের ফৌজের দিকে নীরবে তাকাইরাছিলেন। উপায় রহিল একজনের হাতে আর অতিকার করিবে আর-একজনে, এমনতরো শ্রমবিভাগের কথা আমরা কোখাও শুনি নাই। বাংলাদেশেও ঠিক খদেশী উত্তেজনার সময়, শুধু আমালপুরের মতাে মফখলে নয়, একেবারে কলিকাতার বড়োবাজারে হিলুদের প্রতি মুসলমানের উপদ্রব প্রচিত হইরাছিল— সেটা তাে শাসনের কলফ, শুধু শাসিতের নয়। এইরপে কাণ্ড যদি সদাস্থদা নিজামের ছাইন্রাবাদে বা জয়পুর বরোদা নৈশুরে ঘটিতে থাকিত তবে সেনাপতি সাহেবের জবাব খুঁজিবার জঞ্জ আমাদের ভাবিতে হইত।'

আমাদের নালিশটাই বে এই— বর্ত্তের দারিত্ব আমাদের হাতে নাই, বর্তা বাহির হইতে আমাদিগকে রক্ষা করিবার ভার লইরাছে। ইহাতে আমরা ক্রমণাই অন্তরের মধ্যে নিংগহার ও নিংগ্রহণ হইতেছি; গেজন্ত উন্টিয়া বর্তারাই আমাদিগকে অবজ্ঞা করিলে ভরে ভরে আমরা জ্বাব দিই না বটে, কিন্তু মনে মনে যে ভাষা প্রয়োগ করি ভাষা সাধু নহে। কর্ত্বর যদি থাকিভ ভবে ভাহাকে বজার রাখিতে ও সার্বক্ করিতে হিন্দু মুগলমান উভয়েরই সমান গরক্ষ থাকিভ, সমজ উজ্জ্ঞালভার দারিত্ব গকলে মিলিরা অভি সাবধানে বহন করিতে হইত। এমনি করিয়া গুরু আক্র নহে, চিরদিনের মতো ভারভবর্ত্বর পোলিটকাল আশ্রয় নিক্ষের ভিত্তিতে পাকা হইত। কিন্তু এমন যদি হয় বে, একদিন ভারত-ইভিহাসের পরিচ্ছেদপরিবর্তন-কালে প্রস্থানের বেলার ইংরের ভার স্থাগাসনের ভ্যাবশেষের উপর রাখিরা গেল আত্মনির্ভরে

অনভ্যন্ত, আত্মরকার অকম, আত্মকলাণসাধনে অসিত্ব, আত্মনজিতে
নইবিখাস বহুকোটি নরনারীকে— রাখিরা গেল এমন কেত্রে যেখানে
প্রতিবেশী নব উপ্তমে জাগ্রত, নব শিকার অপরিমিত শক্তিশালী— তবে
আমাদের সেই চিরদৈস্তপীড়িত অস্তহীন ছুর্ভাগ্যের জন্ত কাহাকে আমরা
দারী করিব? আর যদি করনাই করা যায় যে, মানবের পরিবর্তনশীল
ইতিহাসের মাঝখানে একমাত্র ভারতে ইংরেজসাদ্রাজ্যের ইতিহাসই
ক্রব হইরা অনস্ত ভবিশুংকে সদর্পে অধিকার করিয়া থাকিবে, তবে এই
কি আমাদের ললাটের লিখন যে, ভারতের অধিবাসীরা ছিরবিছির
হইয়া থাকিবে, তাহাদের পরস্পরের মধ্যে দেশের কল্যাণকর্মবন্ধনের
কোনো যোগ থাকিবে না; চিরদিনের মতোই তাহাদের আশা কৃত্রে,
তাহাদের শক্তি অবরুদ্ধ, তাহাদের কেত্র সংকীর্ণ, তাহাদের ভবিশ্বং
পরের ইচ্ছার পাযাণপ্রাচীরে পরিবেন্তিত ?

এ পর্যন্ত ইংরেজের রাজত্বে আমরা এক-শাসন পাইয়াছি কিন্তু একদারিত্ব পাই নাই। তাই আমাদের ঐক্য বাহিরের। এ ঐক্যে
আমরা মিলি না, পাশে পাশে সাজানো থাকি, বাহিরে বা ভিতরে
একটু ধাকা পাইলেই ঠোকাঠুকি বাধিয়া যায়। এ ঐক্য জড় অকর্থক,
ইহা সজীব সকর্মক নয়। ইহা ঘুমন্ত মামুষের এক মাটিতে ভইয়া
ভাকিবার ঐক্য, ইহা সজাগ মামুষের এক পথে চলিবার ঐক্য নহে।
ইহাতে আমাদের গৌরব করিবার কিছু নাই, অতরাং ইহা আনন্দ
করিবার নহে; ইহাতে কেবল স্তুতি করিতে পারি, নতি করিতে পারি,
উন্নতি করিতে পারি না।

এক দিন আমাদের দেশে যে সমাজ ছিল তাহা সাধারণের প্রতি আমাদের দারিত্বের আদর্শকে সচেষ্ট রাথিরাছিল। সেই দারিত্বের ক্ষেত্র ছিল সংকীর্ণ, তথন আমাদের জন্মগ্রামকেই আমরা জন্মভূমি বলিয়া জানিতাম। তা হউক, সেই ছোটো সীমার মধ্যে ধনীর দারিত্ব ছিল

তার ধন লইরা, জ্ঞানীর দায়িত্ব ছিল তার জ্ঞান লইরা। বার যা শক্তি ছিল তার উপরে চারি দিকের দাবি ছিল। সচেষ্ট জীবনের এই-বে নানা দিকে বিস্তার, ইহাতেই মান্তবের যথার্থ আনন্দ ও গৌরব।

व्यागारमद राहे मात्रिष गगाव हहेरछ दाहित गतिया रगहि। এक याज नवकात-वाहा हुवहे का या दिता विताब करवन, वका करवन, भाहां वा एनन, हिकिৎमात्र वावका करत्रन, नाकि एनन, मधान एनन, ममारक कान्ही हिम् (कान्दे। चहिम् चामानज इहेटल जात्र विदान रानन, मरामत्र छाडित नत्मावस करवन এवः श्रायत्र लाकत्क वार्घ धतिया बाहरस पाकित्न (छनात गाकिएमुँडेक नवाक्तर निकात कतिवात ऋरवाग निमा पारकन। স্তরাং এখন আমাদের সমাজ আমাদের উপর যে পরিমাণে ভার ठालाहेश्वाद्ध (म लित्रियारण खाद विहास्ट ना। खात्राण अथरना मिला जानात्र करतन किन्न निका एनन ना, जूयांभी शक्तना खिराता नन किन ठांत्र (कारना माग्र नाहे, छम्रास्थामात्र कनगाधात्रपत्र काह हरेए गन्नान नन कि खनगाभाद्रमा चा अप्र एमन ना। कियाक र्य ४८० थ वाषिष्ठार्छ वहे करम नाहे; अबह तिश्र वर्षवाय नमाखवावद्यारक ধারণ ও পোষণের জভ্য নয়, ভাহা ব্লীভিরক্ষা ও সমারোহ করিবার कन्न। हेशाल (मत्मद्र धनीमद्रिम गक्रमहे भीषा (वाभ क्रद्र। ध मिर्क मनामनि, खाएक ঠেनाঠেनि, প्रेंषित्र विधान - दिकारकना প্রভৃতি সমস্ত উৎপীড़नहे चाहि। य गांजीत वांशा थात्राक खांगाहेट हि त इस (मस्या खाय दक कविन, किंह रांका निष्डिय खंडा यात्राहै। छात्र क्रय नारे।

যে ব্যবস্থা সমাজের ভিতরে ছিল সেটা বাহিরে আসিয়া পড়াতে স্বাবস্থা হইল কি না সেটা লইয়া তর্ক নয়। মাসুষ ষদি কভকণুলা পাধরের টুকরা হইত তবে তাহাকে কেমন করিয়া শৃথালাবদ্ধরূপে সাজাইয়া কাজে লাগানো যায়, সেইটেই সব চেয়ে বড়ো কথা হইত।

किन मास्य (य मास्य। जात्क वांतिष्ठ इहेत्व, वाणिए इहेत्व, तिलिए रहेरव। जाहे এ क्वांना मानिएक हरेरव रय, मिएन मश्रक मिएन स लात्कत्र क्ष्टीरक निक्रक कत्रिया य नित्रानत्कत्र खख्छात्र म्हानत बूरक চাপিয়া বসিতেছে সেটা শুধু যে निष्टुंत्र ভাহা নছে, সেটা রাষ্ট্রনীতি हिरादि निसनीय। सामद्रा य सिकाद ठाहिए छां हो अक्छा করিবার বা প্রভুত্ব করিবার অধিকার নছে। আমরা স্কল কুধাতুরকে ठिकाहेशा जगৎमात्रोटिक এकना इहिया नहेतात जन नश नाहि कैरिय नहेट हारे ना ; यूट्य नत्रचा गयद्य वित्यत गकरनत्र (हर्ष बर्फा मिक्कि, बर्फा উर्फ्वांग ७ वर्फा উरमाह द्राश्चि विनया मयुजानस्क नब्जा मिवात इत्राकाञ्का व्यागारमत्र नाहे; नित्रीह हिन्सू विनेशा श्रवन পশ্চিম আমাদের উপরে ধেঞ্চেষ প্রয়োগ করে তাছাকেই ভিলক करिया वागामित ननाहरक वाग्या नाक्ष्ठि दाचिव ; वाधाविक विभा वायामित्र वाधुनिक भागनकछात्रा वायामित्र 'भरत ए कहाकदर्यन করিয়াছেন তারই শরশয্যায় শেষ পর্যন্ত শ্যান থাকিতে আমরা ছু:খ (वांध कतिव ना— वांगवा (करनगां वांभन (म्या (म्या किवांब, তার দারিতগ্রহণ করিবার স্বাভাবিক অধিকার চাই। এই অধিকার हरेट बहे रहेशा चार्यारीन चक्र्यगुजात दः व जिल्दा चिल्दा चनक् रुदेशार्छ। এইखग्रदे मच्छि कन्दमनात कग्र वामारमत ग्रक्तात गर्श এक्टो প্রবল আগ্রহ দেখিতে পাই। নিরাপদ শান্তির আওতায় याञ्च वैटि न। टकनना, यही याञ्चरवत्र व्यवत्रक्षय व्यादिश काहा वाषिया চলিবার আবেগ। यहर निकात क्रिका इ:थ श्रीकात कत्रारे मिरे वाषिया চलिवान गिछ। मकल वर्षा खालित रेजिशारारे এर गाजित छूनिवात चार्वण वार्वण ७ गार्वकात छनन-वसुत्र १८५ गर्बिमा, रकनाहेमा, वाथा छाडिमा-চ्रिमा, व्यक्तिमा পড़ि-তেছে। ইতিহাদের সেই মহৎ দৃশ্ত আমাদের মতো পোলিটিকাল

পঙ্গুদের কাছ হইতেও আড়াল করিয়া রাথা অসম্ভব। এইএস रिश्व श्वरक्त প्रकृष्टिए প্রাণের স্বাভাবিক উত্তেজনা আছে, মহতের উপদেশ ও ইতিহাসের শিক্ষা হইতে প্রেরণা লাভ করা সম্বেও নিশ্চেষ্ট रहेशा बाका जात्मन्न काटह त्य मृजूान किटन मान्नवजन, त्म क्वा वाबुर्छ। काल महीस मामश्रास्त्र प्रयासिक विमनात्र भवशानि भिएटनरे वुवा गाहेरन। किन्न क्ला करन करन करन वज्रावृद्धिकत निमिश्चिक উপলক্ষ্যে অন্তর্গু সমস্ত ভাতচেষ্টা নির্মুক্ত হইতে পারে না। দেশ-वाशी निভाक्र्यंत्र मर्पाहे मासूरवत्र विविध निष्कि विविधनार्व नकन हत्र। नजूना जात्र व्यक्षिकाः महे नक हहेत्रा व्यक्तिक नित्रात्त्रत छेखात्र विक्रुष्ठ इरेट्ड थाट्य। এই विकाद इरेट्ड मिट्न नाना शानन छेन्छट्वद शृष्टि। এই बज एमथा यात्र, मिट्न वर्षपृष्टि ও एक एक छोत्र व्यक्ति कर्डभरक्त मत्क्रह छ्छीत। य लाक वार्थभत्र (वहेमान, य छेमानीन निएन्डे, वर्षमात्मव खश्च वावदाव छात्रहे जीवनयाजा नकरनद राह निवालन ; छात्रहे উन्नछि ७ প्रकारत्रत्र भर्ष गकरमत्र क्राय वाधा चन्न। ि: यार्थ পরহিতৈবিতার অবাবদিহি ভরংকর হইরাছে। কেননা, गिमाधित कार्ष्ट अहे व्यक्तित छेखत प्रथमा किंति व 'महर क्यानगास তোমার দরকার কী-- তুমি খাইয়া দাইয়া বিয়া-পাওয়া করিয়া আপিসে व्यानामार्क पुत्रिया योगे। यो यक याहिनाय यथन चक्का निन काठे।हेरक পার, তখন ঘরের খাইরা বনের মোব ভাড়াইতে বাও কেন'। বস্তুত कर्लभक बात्नन, अहे बात्ना अवर के स्वांत्रा अकहे कात्रन इहेटल উঠিতেছে। সে কারণটা, নিজিয়তার অবসাদ হইতে দেশের গুভরুদ্ধির युक्त इहेवात्र (ठंडी। युक्तिभाष्य वर्ण, भर्वाका विस्थान् युवार। खश्रहरवन्न गुक्ति वरम, পर्वरणा भूगवान वरमः। क्षि याहे वमुक जान याहे कक्क, यादिव छलाव ओ-एय द्वावन खुएकन्य (याना इहेन, द्यथादन षाला नाहे, भक्त नाहे, विठात नाहे, निकृष्टित काता देश देशात नाहे,

এইটেই কি ত্থপথ হইল। দেশের ব্যাকুল চেষ্টাকে বিনা বাছনিতে এক দমে কবরস্থ করিলে তার প্রেতের উৎপাতকে কি কোনো দিন শাস্ত করিতে পারিবে। কুধার ছট্ফটানিকে বাছির হইতে কানমলা দিয়া ঠাণ্ডা করিয়া চিরছ্ভিক্ষকে ভদ্র আকার দান করাই যে যথার্থ ভদ্রনীতি, এমন কথা ভো বলিতে পারিই না, তাহা যে বিজ্ঞনীতি ভাহাও বলা যায় না।

এই রক্ম চোরা উৎপাতের সময় সমৃদ্রের ও পার হইতে খবর व्यामिन, व्यामामिनरक मान कतिवात बन्न व्याभीन भागरनत এक है। थम्पा তৈরি হইতেছে। যনে ভাবিলাম, কর্তৃপক্ষ বুঝিয়াছেন যে, শুধু দমনের विजीविकाम ज्ञासि पृत्र रुम्र ना, नाकित्गात्र पत्रकात्र। तम ज्ञामात्र प्रिम, त्म (**डा क्विवन अशान क्वित्रा**क्ति विष्यारे नम्र: अ प्रिम्ब ইতিহাসস্প্রির ব্যাপারে আমার তপস্তার উপরে সম্ভ দেশের দাবি चार्ছ विनिष्ठा है এ দেশ चार्याद मिन, এहे गडीद समस्ति यिन मिल्यू लाक चरू जव क तिवात छे ८ नाइ लाम छ त्वहे अ ति न है १ देख-दा क एक त ইতিহাস গৌরবান্বিত হইবে। কালক্রমে বাহিরে সে ইতিহাসের व्यवनान चिंद्रिन व्यक्टद्र ठाहात्र गहिगा व्यद्गीय हहेया वाकित्य। छा ছাড়া নিরভিশয় ছুর্বলেরও প্রতিকৃশতা নৌকার কুদ্রতম ছিদ্রের মতো। नाखित गमम नित्रस्त सन (नैिया (नहें काही (नोका वास्त्रा याम, कि कुकारनेत्र मयत्र यथन जकन हाउहे माए हाटन भारन चाहेक बारक তথন তলার অতি ভূচ্ছ ফাটলগুলিই মুশকিল বাধায়। রাগ করিয়া তার উপরে প্লিসের রেগুলেশন বা নন্-রেগুলেশন লাঠি ঠুকিলে ফাটল क्विन वाष्ट्रिष्ट् बाक्। कांक्छनिक द्वाहेवात वक्र ममत्रम्हा गांगाछ थत्र कितिल कानक्रायं धमायाछ थत्र वै। ति। अहे क्या स्य देश्माख्य मनीयी ताड्रेरेनिङ्क्ति वृद्धि एड्स्न न। छाहा चामि मन् क्रि ना। वृतिएए इन विवाहे हामकरणव कथाहै। छेठियाइ।

কিছ রিপু অদ্ধ; সে উপস্থিত কালকেই বড়ো করিয়া দেখে, অনাগতকে উপেন্দা করে। ধর্মের দোহাইকে সে হুর্বলতা এবং শৌধিন ভারুকতা বলিয়া অবজ্ঞা করে। অভাবনীর প্রভ্যাশার আনন্দে উৎফুর হইয়া ইংরেজের এই রিপুর কথাটাকে ভারতবর্ষ সামাক্ত বলিয়া জ্ঞান করিয়াছিল। যে-সমন্ত ইংরেজ এ দেশে রাজ-সেরেজ্ঞার আমলা বা পণ্য-জীবী ভাহারা ভারতবর্ষের অভ্যন্ত বেশি নিকটে আছে। এই নিকটের দৃশ্ভের মধ্যে ভাদেরই প্রভাপ, ভাদেরই ধনসঞ্চয় সব চেয়ে সমৃচচ; আর ভারতবর্ষের ত্রিশ কোটি মাছ্ম্ম ভাদের সমন্ত স্থেছঃখ লইয়া ছায়ার মতো অস্পাই, অবান্তব ও য়ান। এই কাছের ওজনে, এই উপস্থিত কালের মাণে ভারতবর্ষের দাবি ইহাদের কাছে তৃদ্ধ। তাই যে-কোনো বরলাভের প্রভাবে ভারতবর্ষ কিছুমাত্র আত্মশক্তি লাভ করিবে ভাহা ক্ষীণ হইয়া, খণ্ডিত হইয়া, রক্তশ্ব্র হইয়া আমাদের কাছে পৌছিবে অথবা অর্থপথ্য অপ্যাতমৃত্যুতে মরিয়া ভারতভাগ্যের মন্ধ্রপথ্যে ব্যর্থ সাধুসংকরের কঙালে আকীণ করিবে।

এই বাধা দিবার শক্তি বারা বহন করিতেছে অব্যাহত প্রতাপের
মদের নেশার তারা মাতোয়ারা, কঠিন বাজাত্যভিমানের ত্তরসঞ্চিত
আবরণে তাহাদের মন ভারতবর্ষের মাহ্যবসংস্পর্ণ হইতে বিচ্ছির।
ভারতবর্ষ ইহাদের কাছে একটা অতি প্রকাপ্ত সরকারি বা সওদাগরি
আপিস। এ দিকে ইংলপ্তের যে ইংরেজ আমাদের ভাগ্যনায়ক তার
রক্তের সঙ্গে ইহাদের রক্তের মিল, তার হাতের উপরে ইহাদের হাত,
তার কানের কাছে ইহাদের মুখ, তার মন্ত্রণাগৃহে ইহাদের আসন, তার
পোলিটিকাল নাট্যশালার নেপথাবিধান-গৃহে ইহাদের গতিবিধি।
ভারতবর্ষ হইতে নিরন্তর প্রবাহিত হইতে হইতে ইংলপ্তের ইংরেজসমাজের পরতে পরতে ইহারা মিশিয়াছে; সেধানকার ইংরেজের
মনস্তত্ত্বকে ইহারা গড়িয়া তুলিতেছে। ইহারা নিজের প্রক্ষেশের শপ্ত

করে, অভিক্রতার দোহাই পাড়ে এবং 'আমরাই ভারতসামাজ্যের শিধরচ্ড়াকে অপরিমিত উচ্চ করিয়া তুলিয়াছি' এই বলিয়া ইহারা অপরিমিত প্রশ্রর দাবি করে। এই অত্রভেদী অভিমানের ছারাজ্বালে আমাদের ভাষা, আমাদের আশা, আমাদের অভিত্ব কোঝার? ইহাকে উত্তীর্ণ হইয়া আপিসের প্রাচীর ডিঙাইয়া, ত্রিশ কোটি ভারতবাসীকে মাহুব বলিয়া দেখিতে পায় এমন অসাধারণ দৃষ্টিশক্তি কার কাছে প্রত্যাশা করিব ?

य पूत्रवर्जी हेश्टब्रक शूट्वाणीय चावहाख्यात्र गर्धा चार्ह विषयाहे चक्क चार्थित कृष्टक काठोष्ट्रेया ভात्रज्वर्यत्क छेनात्र मृष्टिएज मिथिएज भाग्न, हेरात्रा তारामिगरक कानाम (य, नौरहत्र काकारमत्र भूमानिविष वाछारमञ्ज यथा निम्ना रमथारे वास्त्रदक रमथा, উপরের স্বচ্ছ আকাশ হইতে দেখাই वश्चलञ्जविक्ष। ভারতশাসনে দূরের ইংরেজের হতকেপ কথাকে ইহারা म्मिशिक व्यमद्राध विषया गगा करत्र। ভात्रकवानीक এই क्षांना मन वाशिष्ठ इहेरव, हेरदब्ब विषया य अविष यहर बार्डि बार्ड श्रव्रजनिक त्रहे (य ভারতশাসন করিতেছে তাহা নহে; ভারত-দফ্তরখানার वहकानक्यागल मः बाद्रिय चामिए कां विषय हरेल जीर्ग हरेया एव-একটি আমলা-সম্প্রদায় আমাদের পক্ষে কৃত্রিম মানুষ হইয়া আছে আমরা তাহারই প্রজা। যে মাতুষ তার সমস্ত মন প্রাণ হুদয় লইয়া মাতুষ, त्म नम्र ; त्य मासूष त्करममाख वित्यव श्रीतमास्य मात्य मासूष, त्म हे त्या ङ्खिम माञ्च। काटोा खाक्त्र का यात्राक ङ्खिम छात्र विल्छ भाति। এই क्यारमत्रा पूर म्लंडे क्रिया एएरथ क्रिक मन्नूर्ग क्रिया एएरथ ना, जाहा চলতিকে দেখে না, যাছাকে দেখা যায় না ভাছাকে দেখে না। এইজয় वना यात्र (य, क्यारमदा चक रहेना एएटथ। मधीय (ठारभद्र निष्ठत मम्ब याञ्च चार्छ विनया छाहात रमश कारना चारनिक श्राह्मान्त्र भरक वक चगल्ल होक, याश्रवंत्र गरक याश्रवंत्र गल्लू वावहात-रकत्व काहाहे

गर्ल्या विशालां काष्ट्र चायत्रा कुल्क एव जिनि कार्यत्र वन्त्रन वागामिगरक कार्यदा एमन नाहै। किंद्र हात्र, छात्रछमागरन छिनि अ की मित्नन ? (य वर्फा-हेश्द्रक वात्ना-चान। मासूय चामात्मत्र ভारगा रम बारक मम्राज्य ७ भारत, जात अ भारत भाषि बिर्छ्ट व्याताज्ञानत के। िक रण व्र व्यापनाव वारवा चाना है। विश्वा रण अछ हेकू हारि। হইয়া বাহির হইয়া আসে। সেই এভটুকুর পরিমাণ কেবল সেইটুকু याटि वाष्ठित्र लाग किहुरे नारे; वर्षाৎ याष्ट्र(यत रवें। याम गद्ध लावना, (यहे। जात्र कमनीम्रजा ও नमनीम्रजा, जीवत्नत्र चाजाविक निम्नत्य याहा निख्य वाष्ट्रिष्ठ बादक व्यक्टक्थ वाष्ट्राहेट्छ बादक, रा-गम हरे कि वाम পড়িল ? এই ছোটোখাটো ছাটাছোটা ইংরেজ কোনোমতেই বুকিতে পারে না, এমন অভ্যন্ত দামি ও নিপুঁত ক্যামেরা পাইয়াও সজীব চোখের চাহনির অস্ত ভিতরে-ভিতরে আমাদের এত ভ্রুণ কেন। বোবে না তার কারণ, কলে ছাট পড়িবার সময় ইছাদের কলনাবৃত্তিটা যে বাদ পড়িরাছে। ইংলভের সরকারি অনাথ-আশ্রমে যারা থাকে ভাদের মন किन भागाई-भागाई जर खान क्न जाहि-जाहि क्रत १ क्निना, के उचार्क-हाडेंग मन्मूर्व षद्रध नम्, मन्मूर्व वाहिन्नध नम् । डेहा चाचीन्नछा छ रमय ना, युक्ति एमय ना। উहा कड़ाय भशाय हिमान कविया किनमाज वाज्य रमग्र। वाज्यको चलास मदकावि वर्ते, किस माञ्च रयरक्षू गासूव (महेक्क तम चत्र क ठाव, चर्बार मत्रकाद्यव मदन वहन निव्यादन च-मद्रकाद्रक ना भाहेला ता वाकि ना। नहिला ता चनमानिख इद्र, श्चिश-मुर्यात्र रक्षियात रा भागाहरू रहे। करत। क्यांप-कास्त्रत्र क्षा कार्याधाक এই অञ्चलकाम विकित ७ क्ष एव अवः (क्रम जान क्यारिय बाबाहे इःश्टक ममन कविवाब बड़ म मख्यावन करत्। टकनना, अहे कार्याश्यक भूता यासूच नव, हेशाव भूता वृष्टि नाहे, अहे हाटी मासूर यत्न करत- वृक्षांगा वाकि क्विनमात बाद्धरतत्र नाविहेवूत

खन्न मुख्यित-खनीय-धाभात्र-गाकून धानन धार्षाटक वित्रमित्नत्र मटणारे विक्तित्र पदत्र वैशि त्राथिटल भारत् ।

বড়ো-ইংরেজ অবাবহিতভাবে ভারতবর্ষকে স্পর্শ করে না— সে
মাঝখানেরাখিয়াছে ছোটো-ইংরেজকে। এইজন্ত বড়ো-ইংরেজ আমাদের
কাছে সাহিত্য-ইতিহাসের ইংরেজি পুঁথিতে। এবং ভারতবর্ষ বড়োইংরেজের কাছে আপিসের দক্তরে এবং ভমাখরচের পাকা থাতার,
অর্ধাৎ ভারতবর্ষ তার কাছে স্পাকার স্ট্যাটিষ্টিক্সের সমষ্টি। সেই
স্ট্যাটিষ্টিক্সে দেখা যায়— কত আমদানি কত রপ্তানি; কত আয় কত
ব্যয়; কত জন্মিল কত মরিল; শান্তিরক্ষার জন্ত কত পুলিস, শান্তি দিবার
জন্ত কত জেলখানা; রেলের লাইন কত দীর্ঘ, কলেজের ইমারত কর
তলা উচ্চ। কিন্তু, স্ক্টি তো শুধু নীলাকাশ-ভোড়া অন্তের তালিকা না
দেই অন্ধালার চেয়ে অনেক থেশির হিসাবটা ভারত-আপিসের কোনো
ডিপার্ট্রেণ্ট্ দিয়া কোনো মানবজীবের কাছে গিয়া পৌছায় না।

এ কথা বিশ্বাস করিতে যত বাধাই পাক্, তরু আমাদের দেশের লোকের ইহা নিশ্চর জানিতে হইবে যে, বড়ো-ইংরেজ বলিরা একটা বড়ো জাতি সত্যই ভূগোলের এক জারগার আছে। প্রবলের প্রতি হুর্বল যে অবিচার করে তাহাতে তার হুর্বলতারই পরিচর হয়— সেই দীনতা হইতে মুক্ত থাকিলেই আমাদের গৌরব। এ কথা শপথ করিয়া বলা যায় যে, এই বড়ো-ইংরেজ সর্বাংশেই মামুষের মতো। ইহাও নিশ্চিত যে, জগতের সকল বড়ো জাতিই যে ধর্মের বলে বড়ো হইয়াছে ইংরেজও সেই বলেই বড়ো; অত্যন্ত রাগ করিয়াও এ কথা বলা চলিবে না যে সে কেবল তলোয়ারের ডগার ভর করিয়া উচু হইয়াছে কিছা টাকার পলির উপরে চড়িয়া। কোনো জাতিই টাকা করিতে কিছা লড়াই করিতে পারে বলিয়াই ইতিহাসে গৌরব লাভ করিয়াছে, এ কথা অপ্রশ্বের। মহুল্বত্বে বড়ো না হইয়াও কোনো জাতি

বড়ো হইরাছে, এ কথাটাকে বিনা সাক্ষ্যপ্রমাণে গোড়াতেই ছিস্মিস্
করা যাইতে পারে। স্থায় সত্য এবং স্বাধীনতার প্রতি শ্রদ্ধা এই
ইংরেজ জাতির অস্তরের আদর্শ। সেই আদর্শ ইহাদের সাহিত্যে ও
ইতিহাসে নানা আকারে ও অধ্যবসায়ে প্রকাশ পাইয়াছে এবং
আজিকার মহাযুদ্ধেও সেই আদর্শ নানা ছলনা ও প্রতিবাদ সম্বেও
তাহাদিগকে শক্তিদান করিতেছে।

এই २८७:-हेश्टब श्रिव नाई, मে অগ্রসর হইরা চলিরাছে। हेल्हिरित्र मशा मित्रा छात्र कीवरनद भदिवर्जन ७ £नाद घिरिट्हि। रम क्विण जांद्र दाहै ও वाणिका महेशा नय, जांद्र भिन्न गाहिला मर्भन दिखान धर्म ७ नमाक नहेवा भूर्ग भराह । हिन्द्राहि। तम म्हन्यमी, बुद्राभीव সভাভার বিরাট যভে সে একজন প্রধান হোতা। বর্তমান যুদ্ধের মহৎ শিকা তার চিতকে প্রতি মৃহুর্তে আন্দোলিত করিতেছে। মৃত্যুর উদার विदागा-चालाक म माम्यवद हे छिहामक न्छन कदिया अधिवाद श्रुर्याग भाइत। त्म (मिथन, ध्वभमानिष्ठ मसुग्रापत्र क्रिक्टन श्राकारणाव व्याचाविमान द्व- अकास कदिया कृतिवाद व्यनिवार्य कृत्या गठे। दम चाक निष्कृत भागदि वा चागाहत्व क्षाछा वृक्षिर्छ ए य. चनाछित्र যিনি দেবতা সর্বজাতির দেবতাই তিনি, এইজন্ত তাঁহার পূজায় নরবলি व्याभित्म अक्तिन क्रम छात्र त्यमग्रक्षण शहन करद्रन। व्याक यनि त्य ना'ल वृक्षित्रा बात्क, এक मिन रा वृक्षित्वहे (य, हाल्या (यशात्वहे नारका यएव क्या का बाबगाहोत्र— किनना, हादि पिक्व बाहा हाख्या गिर्हे काँक मथन कहिएड में किया भएए। एउमिन भृषिदीय (बगर मन ष्र्वेंस, गवरमव बरम्ब काद्रम राभार्तिहे; (माएडद क्या राभार्तिहे; गाञ्च रमशारन जानन गहरचकरन विद्राज करत्र ना: याञ्च প্राज्ञाहरे राथान चग्राक रहेमा चालन यशुष्ठा कि निष्न कतिया वर्জन कतिराष्ठ षात्य। मञ्जान त्मशात्न चागन कृषिया जगरानत्य ह्रवंस रिक्सि

करत्र। वर्षा-इश्टब्रक এ कथा वृक्षित्वहे त्य, वानित्र छे भन्न वाष्ट्रि कन्ना চলে ना, একের শক্তিহীনতার উপরে অপরের শক্তির ভিত্তি কথনোই পাকা হইতে পারে না।

किं इ (ছाটো-हेश्ट्रक चर्चित्र इहेग्रा हता ना। य प्रमादक रा निम्हन कदिया वैश्वियाहि, भेडाकीय भेत्र भेडाकी राहे परभेत्र गर्क रा আপনি বাধা। তার জীবনের এক পিঠে আপিস, আর-এক পিঠে व्यात्माम । य निर्छ वानिन मिर्छ मि छात्राखत्र वहरकाि मासूर्यक वाडिएकत वाक्यमण्डित वा विगटकत्र यानमण्डित छगाहै। मिश्रा म्लर्म करत्र, चात रा निर्छ चार्याम रम निर्वते। हारमत्र नम्हामिरकत्र यर्छ। वश्मरत्रव পর বৎসর সম্পূর্ণ অদৃশ্র। তবু কেবলমাত্রে কালের অঙ্কপাত হিসাব कत्रिया हेशका व्यक्तिकात मावि कर्त्र। ভারত-অধিকাবের গোড়ায় रेशता रुखरनत कारक दल जिल, किन्न लाशत भन्न वहनीर्घकान रेशता <u> भाका माञ्राका ७ भाका वाभिकारक क्रथानल भाहादा मिरलह ७ (लाग</u> कत्रिट्टिश नित्रस्त क्रिंग्नित घानि होनिया हेशता विषयी लाकप्तय भाका প্রকৃতি পাইয়াছে, সেই প্রকৃতি কঠিন অসাড়ভাকেই বল বলিয়া थाक। जावा गत्न करव, जामित्र चालिनहे। चनित्रस्य हिन्छि, अहरिहे विष्यंत्र गव रहरत्र वर्षा घटेना। किन्न व्याभिरम्ब व्यामनात्र वःहिरत द्राष्टात्र धूनाद উপद्र पिया विश्वाप्तरका छोत्र द्रष्याद्राय किलीनत्क ध निष्यत्र गात्र(षारे ठामारे छिएहन, এই ठामना क छात्रा चन्हा कर्य। অক্ষ্যের সঙ্গে নিয়ত কারবার করিয়া এ কথা তারা প্রব বলিয়া ধরিয়া लहेबाइ, एयमन छात्रा वर्डमारनद मानिक एकमनि छात्रा छविषाछत्र नियस। 'वायदा এখানে चानियाछि' এই क्या बनियाहे छाता हुन करत्र ना. 'व्यायदा अशारन पाकिवह' अहे कथा विषया छादा म्मर्धा करत्र।

च्छ এ व, अद्र अत्री हिकानुक क्छात्रा, वर्षा-देशदान्य काछ हहेर्छ चाहाच वाकारे कतिया वत चात्रिरछ हि, क्विन এই चानाहारक वृत्क

করিয়াই পশ্চিমের ঘাটের দিকে অন্ত বেশি কলরব করিতে করিতে ছুটিয়ো না। এই আশকাটাকেও মনে রাখিয়ো যে, ভারতসাগরের তলার তলার ছোটো-ইংরেজের মাইন সার বাঁধিয়া আছে। এটা অসম্ভব নর যে, ভোষার ভাগো জাহাজের যে ভাঙা কাঠ আছে সেটা স্বাধীনশাসনের অস্ত্রেটিসংকারের কালে লাগিতে পারে। ভার পরে লোনা জনে পেট ভরাইয়া ভাঙায় উঠিতে পারিলেই আমাদের অন্তর্টের কাছে ক্রতক্ত থাকিব।

দেখিতে পাই, বড়ো-ইংরেজের দান্দিশাকেই চরম সম্পদ গণ্য করিয়া আমাদের লোকে চড়া চড়া কথায় ছোটো-ইংরেজের মুখের উপর জবাব দিতে গুরু করিয়াছেন। ছোটো-ইংরেজের জোর বে কতটা থেয়াল করিতেছেন না। ভূলিয়াছেন, মাঝবানের পুরোহিতের মামুলি বরান্দের পাওনা উপরের দেবতার বরকে বিকাইয়া দিতে পারে। এই মধ্যবতীর জোর কতটা এবং ইহাদের মেজাজটা কী ধংনের সে কি বারে বারে দেখি নাই? ছোটো-ইংরেজের জোর কত সেটা বে কেবল আমরা লর্ড রিপনের এবং কিছু পরিম'ণে লর্ড ছাড়িঞের আমলে দেখিলাম ভাছা নহে, আর-এক দিন লর্ড ক্যানিং এবং লর্ড বেটিছের আমলেও দেখা গেছে।

তাই দেশের লোককে বার বার বলি, 'কিসের জোরে স্পর্যা কর ?
গায়ের জোর ? তাহা তোমার নাই। কঠের জোর ? তোমার বেমনি
অহংকার পাক সেও তোমার নাই। মুকলির জোর ? সেও তো দেখি না।
যদি ধর্মের জোর পাকে তবে তারই প্রতি সম্পূর্ণ তরসা রাখো। স্বেজাপূর্বক হুংখ পাইবার মহৎ অধিকার হইতে কেছ তোমাকে বঞ্চিত করিতে
পারিবে না। সত্যের জন্ত, ভারের জন্ত, গোকভারের জন্ত আপনাকে
উৎসর্গ করিবার গৌরব হুর্গম পথের প্রান্তে তোমার জন্ত অপেকা
করিতেছে।' বর বদি পাই তবে অন্তর্গামীর কাছ হইতে পাইব।

দেখ नारे कि, वद्रमारनद्र मःकन्न-व्याभारत ভात्रछ-गवर्यर छे छे छ छ य विভাগের যোগ আছে শুনিয়া এদেশী ইংরেজের সংবাদপত্র অটুহাস্তে थन कतिराज्य , 'ভারত-সচিবদের স্নায়ুবিকার ঘটিল নাকি ? এমন কী উৎপাতের কারণ ঘটিয়াছে যে বক্রপাত-ডিপাট্মেণ্ট্ হইতে হঠাৎ वृष्टिभाष्टित चाम्याक्यन इहेर्डिइ ?' चथ्ठ चामाप्तत हेन्स्मात कि ছেলেগুলোকে পর্যন্ত ধরিয়া যখন দলে দলে আইনহীন রসাভলের निदालाक धार्य পाঠाना इस ज्थन ইहादाह वलन, 'উৎপাত এত खक्र एय, हेरदिख-माओएकात चाहेन हात यानिन, यरगत यून्रक (व-णाहेरनत चामनानि कतिएक इहेन।' चर्षाः मादिवात रचनाम (य व्याख्यहो मेला, यमय निरात दिनाएक है (महा मेला नम् । किनना यातिष्ठ थवह नाहे. मनम नागाहेटल भवहा चाहा। किन्न छाउ विन, माविवाव थद्रठाद्र विन कारन मन्द्रमत थद्रठाद रहात्र वर्षः इहेत्रा छेठिएन भारत । তোমরা জোরের সঙ্গে ঠিক করিয়া আছ যে, ভারতের যে ইভিছাস ভারতবাসীকে লইয়া, সেটা সামনের দিকে বহিতেছে না, ভাষা ঘূপির गर्छ। এक्টा व्यदन क्रिन्ड ठाडि निक पृदिष्ट पृदिष्ठ छनात्र मूर्वहे बुंक्टिएह। अयन नयम चालिन इहेर हाहित इहेवान काल हार এক দিন দেখিতে পাও স্রোভটা ভোমাদের নক্শার রেখা ছাড়াইয়া कि पूत्र व्यागारेया रगरह। जयन दाशिया गर्काहरे गर्काहरे वन, 'भाषद्र मित्रा दे। देश एम्, देश मित्रा छेशादक (चर्त्रा।' व्यवाह छथन পথ ना পाইश्रा উপরের দিক হইতে নীচের দিকে ভলাইতে থাকে-रगहे होंद्रा खराहरक छिकाहेर्ड शिक्षा गम्ख मिएनव रक मीर्न दिमीर्न করিতে ধাক।

व्यागात गर्न धरे (हारहो-हे: त्राबद (व-क्रवे) दिरहार परिवाहिन रा क्या विन । विना विहारत गर्छ गर्छ लागरम वनी कतात विक्रा किह्न मिन व्यारा क्रथानि (हारहे। हिठि निश्चित्र हिना । हेशास्त्र व्यात्र व्यात्र व्यात्र विवाहिन।

कारना हे र दिख्य का शक्ष चायारक यिथू कि extremist विनिन्ना हिन। ইহারা ভারতশাসনের তক্ষাহীন সচিব, স্বভরাং আমাদিপকে সভ্য कत्रिया जाना ইहारमत्र भरक जनावज्ञक, चल्जव जामि ইहामिशरक क्या कतिव। ध्रमन कि, चामारमन्न रमरमन्न रमाक यात्रा वरमन चामात्र भरख्य चर्य नाहे, गरण्य रख नाहे, जारमद्र मरश्य रि हुहे- এक्खन घटनाकरम चायात (मथा পড়িয়াছেন তাঁহাদিগকে অন্তত এ কথাটুকু করুল করিতেই इहेर्द रम, यरमनी উरख्यनात्र मिन इहेर्ड चाय পर्गस चामि चडिन्स-পश्र दिक्ट निश्रिया चागिए हि। चामि এই क्षारे दिनया चागिए हि ए। चन्नात्र करिया एव कन भाष्या यात्र ভाष्टा कथरना है भिष भर्वस्थ करनत्र माय (भाषात्र ना, चक्रारत्रत्र सम्होहे खत्रःकत्र हादि हहेत्रा উঠে। त्र याहे दशक, मिलि रा विमिष्ठि (य-कारना कानिए उहे रहाक-ना चायात निष्यत नार्य कारना माधनार्छ चायि छत्र कदित ना। चायात्र (यहे। विभिवाद कथा (म এहे यि, चिल्मिय-भए। विभारत चामद्रा এहे वृक्ति, (य नश् ना खम् ना देवर, ना श्रकाम ; चर्बार महस्र नर्ष करनद्र चामा लान कदिया ज्ञान विलाध हनात्कहे अकृष्टि विक्म रान। अहे भवछ। य निद्रिज्य गर्हिज एम कवा चामि क्यादिव महमहे निक्य लाकरक विषयि ; महेबबहे चामि बादिय महाहे विनयाय व्यविकाय दाथि (य, अक्षिष्ठि मिक्स म श्वर्या गढेंद्र नी जिएल अ अवदाय। आहेरनद दाखा वैाधा दाखा विषया मार्क मार्क छाहार्छ गमाश्वास भौहिर्छ गृद भए वर्छ, किस छाडे विश्वया (वनस्थित्रस्य वृत्कत्र छेनद्र निया लाका दीडिया द्राञ्चः मः क्या कदाव मर्छ। अक्मृष्यिक् म् काश्टिक् लाखा भाव ना।

ইংরেজিতে যাকে 'শর্টকাট্' বলে আদিমকালের ইতিহাসে তাহা চলিত ছিল। 'লে আও, উদ্কো শির লে আও' এই প্রণালীতে প্রন্থি খুলিবার বিরক্তি বাচিয়া যাইত, এক কোপে প্রন্থি কাটা পড়িত। যুরোপের অহংকার এই যে, সে আধিদার করিয়াছে, এই সহজ প্রশালীতে

গ্রন্থি কাটা পড়ে বটে কিন্তু মালের গুরুতর লোকসান ঘটে। সভ্যতার একটা দায়িত্ব আছে, সকল সংকটেই সে দায়িত্ব তাহাকে রক্ষা করিছে হইবে। শান্তি দেওয়ার মধ্যে একটা দারুণতা অনিবার্ধ বলিয়াই শান্তিটাকে জারবিচার-প্রণালীর ফিল্টারের মধ্য দিয়া ব্যক্তিগত রাগবেষ ও পক্ষপাত -পরিশৃক্ত করিয়া সভ্যসমাজ তবে তাহাকে গ্রহণ করিতে পারে। তাহা না হইলেই লাঠিয়ালের লাঠি এবং শাসনকর্তার ক্যায়দণ্ডের মধ্যে প্রজেদ বিলুপ্ত হইতে থাকে।

चीकात कति, काख कठिन इहेग्राष्ट्र। वांश्नाम्बद्ध अक्षन वांशक ও যুবক স্বদেশের সঙ্গে স্বদেশীর সত্য যোগসাধনের বাধা-অভিক্রমের যে পথ অবলম্বন করিয়াছে তাহার অন্ত আমরা লক্ষিত আছি। আরো লজ্জিত এইজন্ত যে, দেশের প্রতি কর্তবানীতির সঙ্গে ধর্মনীতির বিচ্ছেদ-गार्थन कदाव व्यक्रिंग नारे, এ कथा व्यायवा পन्टियंत्र काह रहेए है ৰিখিয়াছি। পলিটিকোর শুপ্ত ও প্রকাশ্য মিখ্যা এবং পলিটিকোর শুপ্ত ও প্রকাশ্র দহারুত্তি পশ্চিম সোনার সহিত খাদ মিশানোর মতো মনে कर्त्रन, यत्न कर्त्रन ಅहेकू ना बाकित्न त्यांना मक इम्र ना। चायत्राध निधियाछि (य, याष्ट्रदेव भद्रयार्थिक मिल्य चार्थिव छेभरव बगाहेया धर्म नहेंबा िक्षिक् कब्रिट बाका यूष्ठा, इर्वनछा, हेहा त्मिका निख्य— वर्वत्रতारक निप्राहे में जाठारक এवः व्यथ्नेरक निप्राहे धर्मरक मक्क्यू करा চাरे। এयनि कतिया चायदा एव क्विन चर्यक वदन कदिया नहेयाहि তाहा नरह, व्यागारित्र शुक्रमभात्ररित (यथारन वीख्रम्या, रमहे वीख्रम्यात्र काष्ट्र याथा (ईं हे क्रियाছि। निष्कत यत्नद्र (कार्त्र, धर्यद्र (कार्त्र, खक्रमभाष्मित्र উপরে দাঁড়াইয়াও এ কথা বলিবার তেজ ও প্রভিভা वाशास्त्र वाव नारे (य--

> অধর্মেণৈধতে তাবং ততো ভদ্রাণি পশ্বতি-। ততঃ সপদ্বান্ অয়তি সমূলক বিনশ্বতি ॥

वर्षार व्यवस्थित बाबा माञ्च वाणिया कर्ठि, व्यवस् रहेरक रम व्यानन कन्तान रिएए, व्यर्धित बात्रा टिंग अव्यक्तिगरक्ष व्यत्न करतं, किन्द अरक्वारत मुन हहेट विनाम भाषा ।— छाहे विनिष्ठिहि, श्रम्यमाष्ट्रपत्र कारह चाबारपत्र (চয়ে বড়ো नव्या। - বড়ো আশা कदिवाहिनाय, श्राटम यथन श्रमणकित वालाक बनिया উঠिन তখন वामालिय ध्वकृष्टिय मध्य याहा नक्लब हित्र यहर जाहाहे उच्चन हहेग्रा क्षकान नाहत्व; चामारमत्र याहा यूननिक्छ चनताथ जारा चानन चक्कात स्थान हाफिया नानारेबा बारेरन ; इःगर निदास्त्रित भाषानखन्न विमीर्ग कनिन्ना चक्त्र चामान छरम छरमानिक इहेना উঠিবে এবং ছুত্রহ নিরুপায়তাকেও উপেন্দা করিয়া অপগ্রাহত বৈর্ব এক-এक পा क्रिया व्यापनाय बाष्ण्य निर्माण क्रियर; निर्मूत व्याघारवय छारव এ দেশে মামুষকে মামুষ যে অবনত অপমানিত করিয়া রাখিয়াছে, चक्रजिम श्रीजित्र चानसम्ब मिक्टित्र दात्रा गिरे छात्रक मृत्र कतिया गमख म्हिन्द्र लाक अकराज याथा जूनिया बाषाहरे । किंद्र जायामित्र छारगा এ की रहेन ? तमलिकित चालाक चनिन, किंच त्नरे चालाए अ कान् मुख रमथा याद्य— এই চুद्रि, छाकाछि, श्रेष्टहणा ? रमवछा यथन लकानिल इहेशार्छन लथन भारभद चर्चा नहेशा छाहाद भूका? य रेमञ्ज, य व्यष्णात्र अल काम वागवा भागितिकाम जिकावृत्तिक्हे गल्लमनात्त्रम मनुभाष विनिद्या क्वन याजमयवाद्य मयवाच निविद्या राज পাকাইরা আসিরাছি, দেশপ্রীতির নববসম্ভেও সেই দৈয়, रारे बढ़ा, रारे बाबा-बिनाग लागिष्ठिकान होर्बद्रिक्टि রাভারাভি ধনী হইবার একমাত্র পথ মনে করিয়া সমস্ত দেশকে কি कगिष्ठ कितिए हिना । अहे छात्रित्र भष चात्र नीत्रित्र भष कात्ना कोगाथाम अकल जानिया मिनिटन ना। मूट्याशीम म**ा**जाणाम अहे हुहे পথের সন্মিলন ঘটিয়াছে বলিয়া আমলা অম করি, কিছ বিধাতার

मत्रवादत अथना भरवत विठात त्यव इत नाहे त्य कथा मन त्राधित्य इहेरव। चात वांक कममां दे रव ठत्रम मांछ अ कथा ममछ भृथिवी यि मांन छत् छात्र छवर्ष रयन ना मान— विधाछात्र कार्छ अहे वत ध्यार्थनां कित, छात्र भन्न त्यामिष्टिकाम मूख्यि यि भाहे एछ। छात्मा, यि ना भाहे छत्व छात्र रुद्ध वर्षा मूख्यित भथक कम्विष्ट भनिष्टिकात चार्यका विमा वांधाश्य कित ना।

किंद এको कथा जुनिम हिन्दि ना य, प्रमञ्क्तित्र चाम्मारक वाः नामित्न (कवन (य होत्र-छाकां छ क मिश्रिनाय छोहा नहः, वीत्रक्छ (मिश्राहि। यहर वाषाठारिगत रेनरी मिक्कि वाक वामारिगत युवकरिनत गर्था रयमन ममुब्दन कत्रिया पिथियाছि अमन कारना पिन पिथ नाहै। हेहात्रा कुछ विषयवृद्धिक खनाश्रमि मिया প्रवन निष्ठां नक परम गिरात्र पञ्च गमस कीरन छेरमर्ग कतिए श्रास्ट इहेगाहि। এই প্रिय প্রান্তে কেবল যে সবর্মেণ্টের চাকরি বা রাজসম্বানের আশা নাই ভাছা नरह, चरत्रत्र विक चिन्नावकरमत्र मराष्ठ विरत्नार्थ এ द्रावा करोकिन। चाक गरुगा रेहारे मिथिया পूनिकिछ रुरेयाहि य, वाःनामित्न अरे धन-यानहीन गःक्ठेयम् हूर्गय পথে তक्रन পথিকের অভাব নাই। উপদ্রের দিক रुरेट छाक चानिन, चामामित्र यूव्यकता माणा मिट ए दि क्रिन ना ; ভারা মহৎ ভ্যাগের উচ্চ শিখরে নিজের ধ্যব্দির সমল মাত্র লইয়া প্র काष्टिक काष्टिक विनिदाद बन्न मर्ग मर्ग शब्द इहेरल्टा हेरादा क्रिकारमञ्ज मन्ने चार्य विद्यारमा व्यापन प्रथ क्रम्य क्रिक ठाम नाहे; ছোটো-ইংবেজ ইহাদের গুভ শংকল্পকে ঠিকমভো বুকিবে কিখা ছাভ जूनिया जानीवान कतिरुव, अं इतामा छ हेराया मरन यारथ नाहे। ज मोভागावान् परम, रवशान कनरगवात्र ७ प्रनरगवात्र विविक नथ क्षमच रहेशा पिटक पिटक ठिनिया लिएह, त्यथारन एक हेव्हा अवः एक हेव्हा ब्र क्ष्य अरे इरेरवव मरशा পविপूर्ग स्थान चार्ट, मिरेशान अरे वक्रवब

मृत्रश्क्त व्याचाविगर्जनका विषयवृद्धित क्वनाव्यव एएलबाहे प्राप्त गकरमत्र रहस्य वर्षा गण्यम । वाब्रवाषी महीस्मत्र व्यक्तियत्र हिठि পर्फिरम (वावा यात्र त्य, . এ ছেলেকে যে हेः त्रिक गाका निवाह गहे हेः त्रिक्त मिट्न के यिन कि विशेष करने कि लिए के विशेष कर कि लिए कि लि यद्रिए भाषिए। चामिय काल्य वा अथनकात्र काल्य (य-कात्ना वाचा वा दाखांत्र चामना এहे (अगीद कीवनवान) हिल्लामंत्र भागन कदिया. मनन করিয়া, দেশকে এক প্রান্ত হুইতে আর-এক প্রান্ত পর্যন্ত অসাড় করিয়া मिएल भाष्य। देहारे महक, किंद्र हेहा एम नम्न, अवः चामन्रा एनियाहि, हेश ठिक है शिन नरह। यात्रा नित्रनताथ चवठ महर, चवता महर উৎসাহের ক্লিক বিকারে যারা পথ ভূল করিয়াছে, যীরা উপরে চড়িতে शिया नीति পড়িয়াছে এবং অভয় পাইলেই বারা সে পর হইতে ফিরিয়া এক দিন জীবনকে সার্থক করিতে পারিত, এমন-সকল ছেলেকে সন্মেছ यारखत्र 'পরে নির্ভন্ন করিয়া চিরজীবনের মতো পঙ্গু করিয়া দেওয়ার गएला मानविधीरत्नव अमन निर्मम चलवाब चाव-किहुरे रहेएल लाइब ना। (मर्भित्र गम्ख बानक ७ यूवकरक चाक श्रृनिर्भित्र ७४ मन्दित्र शटल निर्विठारत हाणिका (पश्या- व स्वयनल्या ताहेनीलि १ व-रय পাপকে হীনতাকে রাজপেয়াদার তক্যা পরাইয়া দেওয়া। এ ষেন द्रां छ छ भूदि के कि क मार्ग क र्या क स्था विषय । या व (थछ (ग क्लान ठाल्डाहेबा हाब-हाब क्रिया बद्द चाव वाव यहिव रग वुक कृनाहेशा वरन- रवन इहेशार्छ, अक्षेत्र जानाष्ट्रां जाता वाकि नाहे।

আর-একটা সর্বনাশ এই বে, পুলিস একবার বে চারার অন্নযাত্রও দাত বসাইরাছে সে চারার কোনো কালে ফুলও কোটে না, ফলও ধরে না। উহার লালার বিব আছে। আমি একটি ছেলেকে নিজে আনি, তার বেমন বৃদ্ধি তেমনি বিভা, তেমনি চরিত্র; পুলিসের হাত ভুইতে পে বিকত হইরা বাহির হইল বটে, কিছু আজু সে ভক্ষণ বরুগে উন্নার

रहेशा वर्त्रमभूत्र भागमा-गात्रम जीवन कामेरिजस्य। जामि जाम করিয়া বলিতে পারি, তার কাছে ব্রিটিশরাজের একচুল মাত্র আশকার कांत्रन हिन ना, चवठ छात्र काह (परक चामारमत्र रमम विखन चामा कत्रिष्ठ পারিত। পুলিদের মারের তো কথাই নাই, তার স্পর্ণই সাংখাতিক। কিছু কাল পূর্বে শান্তিনিকেতনের ছেলেরা বীরভূমের ब्बनाक्र्रान भन्नीका निष्ठ शिल श्रृनिम्ब लाक वात्र-किह्रू ना कतिया কেবলমাত্র ভাহাদের নাম টুকিয়া লইভ। আর বেশি কিছু করিবার मत्रकात्र नाहे; উहारमत्र नियाम नागिरमहे काँठा প্রাণের অন্তর ওকাইতে खक करता छेशामत्र थांछ। य खक्ष थांछा, छेशामत्र ठाम य खक्ष ठाम। সাপে-शास्त्रा कर्न रयगन क्ट थात्र ना, व्याव्यक्तत्र मिरन एवगनि श्रुनिएन-(ছाँ अया यासूयरक (कह काला व) वहार ब नागांत्र ना। अयन कि, य मित्रया माञ्चरक वृष्क कथ नित्रेष कृष्टी कूठितिख क्ष्र निष्कू हर्राहेएछ পারে না, বাংলাদেশের সেই কন্তাদায়িক বাপও ভার কাছে ঘটক পাঠাইতে ভয় করে। সে দোকান করিতে গেলে তার দোকান চলে ना, त्म जिका ठाहित्न जाशांक मन्ना कदित्ज भावि कि मान कवित्ज विश्वन गि। प्राप्तत कात्ना हिडकार्य छाहारक नागाहरनं त्र कर्य नष्टे रहेरव।

বে অধান্দদের পরে এই বিভীবিকা-বিভাগের ভার ভারা ভো রক্তন্মাংসের মান্নব। তাঁরা ভো বাগবেববিৰজিত মহাপুরুষ নন। রাগ বা আতক্বের সমর আমরাও বেমন অল্ল প্রমাণেই ছারান্দে বন্ধ বলিয়া ঠাহর করি, তাঁরাও ঠিক ভাই করেন। সকল মান্নবন্দে সন্দেহ করাটাই খবন ভানের ব্যবসায় হয় তথন সকল মান্নবন্দে অবিশাস করাটাই তাঁলের বভাব হইয়া ওঠে। সংশরের সামান্ত আভাস মাত্রকেই চুড়ান্ত করিয়া নির্মুণ্ডান্দেক পাকা করিতে ভানের বভাব হই প্রবৃদ্ধি হয়— কেননা, উপরে ভানের দারিদ্ধ অল্ল, চারি পাশের লোক ভবে নিজ্জ, আর পিছনে

रहार्छ। ७ वरण

ভারতের ইংরেজ হয় উদাসীন নয় উংসাহদাতা। বেধানে স্বাভাবিক मत्रम नारे व्यथह त्काथ व्यांट्स, अवः मिकिश व्याग्राह्स, त्मशात्न कार्यक्षमानी यि खर् धवर विठावधानानी यिन वियूच हम, छटव मिरे क्टबरे व छात्र-धर्म प्रक्रिक इहेरकर्छ अ कथा कि चार्यारम्य ह्याटी-हेश्स्वक मठाहे विशाम करवन १ व्यामि भाषा कविद्या विभाग करवन ना, किंद जांत्र विचान এই यে कांक ऐदात्र हरेएटह । कांत्रन मित्रवाहि, छर्यानिए এই विचारमञ्ज त्यादित हेन्छ। तुष्ठामनाम व्याहेनरक अवः प्रश्ना-र्श्यक च्याङ् कतिया युष जिल्लियात नित्रमाक गर्क कतियार । जातं काद्रण, वृज्ञाशाक्रत्य व्यर्गानिए वाच यए। वर्गात्नद्र काद्रण व्याप्त कर्यात्नत्र व्यक्तां वर्षा इहेन्नार्छ, य कर्यान काक कतिवात्र यन अवः युष कित्रवाद कात्रमा भाज। चाराद विन, 'निद्र म चाउ' विनिष्ठ भादिम दाककार्य উद्यात इहेटल भारत, रच त्राव्यकार्य छेभश्चित्र ; किन्न त्राव्यनी जित्र चथः পতन घटि, य वाषनीिक विविधितव। এই वाषनीिकव षक देः माख्य देखिहारम देः राज्य मज़ारे क्रियार्छ, এर यायनी छित्र वाकिठादबरे वर्षनित्र व्यक्ति यहर घुनाव केकीश रे:दब व्यक मरन मरन एकत्क त्वान बिटल हृष्टिशास्त्र ।

বিষমানবের ইতিহাসকে অথপ্ত করিয়া দেখিবার অধ্যাত্মদৃষ্টি
যাহাতে শান্তিনিকেতন-আশ্রমের বালকদের পক্ষে হুর্বল বা কর্বিত
না হয়, আমি এই লক্ষ্য দৃঢ় করিয়া রাধিয়াছি। তাই এই আশ্রমের
ওভকার্যে ইংরেজ সাধকেরও জীবন-উপহার দাবি করিতে আমি
কৃষ্টিত হই নাই। পরম সভাকে আমি কোনো বড়ো নামের দোহাই
দিয়া খণ্ডিত করিতে চাই নাই, ইহাতে আমার ধর্মনীভিকে নিজ্বের
ইংরেজ ও এদেশী শিশ্যপণ হুর্বলের ধর্মনীভি ও মৃষুর্ব সাছনা
বলিয়া অবজ্ঞা করিতে পারেন। আমাদের অবস্থা অস্বাভাবিক;
আমাদের বর্তমানের ক্ষেত্র ও ভবিশ্বতের আশা চারি বিকে সংকীর্ণ;

वायामित्र व्यक्षनिष्टिक यानिनिक भिक्तिविकात्मित्र উৎসাছ की । । व्यायां श वाशाश्यः ; वर्षा वर्षा উद्धा भगगान ও माग्निष्यत्र निम्ना व्याप्याम कुम अर्व इहेमा जामना एव कन. कनाहेमा शांकि जगरजन हाटि जान. क्षरबाक्रन कुक्क, जात्र माम यःकिकिः ; व्यवह त्रहे थर्वजाहे। व्यामादमत्र চিরস্বভাব এই অপবাদ দিয়া সেই আওভাটাকে চিরনিবিড করিয়া রাখা व्यायात्मत्र यत्ना श्राचात्र भटक कन्याभकत्र विनिन्ना (मट्न वित्मत्न त्यावना চলিতেছে— এই অবস্থায় যে অবসাদ আনে তাহাতে দেশের লোকের यन चखरत्र चखरत्र शक्नाताकाष्ठ हहेवा छेर्छ। अहे कात्र एवं अबर वन-विविधिक वाधााश्चिक मूक्तिगाधानत डेलाम এ माम वाद्यकाल अहा পায় না ৷ তবু আমার বিশ্বাপ, এই-সকল বাধার সঙ্গে লড়াই করিয়াও वांगामित वांव्यत्र ऐएम् मण्यूर्ग वार्थ इम्र नाहे। एकनना वांश इद्गह रुरेलिও পর্মার্থেব সভ্যাটকে মান্তবের সামনে উপস্থিত করিলে সে তাকে একেবারে অশ্রদ্ধা করিতে পারে না— এমন কি, আমাদের দেখের অত্যস্ত আধুনিক ছেলের পক্ষেও তাহা কঠিন হয়। আমাদের এই चर्चार मध्यक भावारित नार्षेत्र महत्व चामात्र मर्छत्र मिन चार्छ। किन्द अक-अक मगरम अगन कूर्यांग चारम यथन अहे वांडानित ছেल्म म মতো অতাস্ত ভালোমামুষের কাছেও উচ্চত্য সত্যের কথা অবজ্ঞাভাজন इहेशा উঠে। क्निना, ब्रिश्र সংঘাতে व्रिश्र कार्ग, ज्थन প্রমন্তভার উপরে कन्गांगरक चीकांत्र कता इःगांधा इत्र। व्यामात्मत्र वाट्यां इति हाति। ছেলে আছে। তাদের অভিভাবকদের অবসা বেশ ভালোই ছিল। বরাবর তারা এখানে পাকিবার খরচ জোগাইয়াছে। । কছু কাল ইইল তাদের পরিবারের তিনজন পুরুষের একসঙ্গে অন্তরায়ণ হইয়াছে। এখন कृषि क्वम य निष्मद्र भानि विश्व छ। नय, जात्व भारत्र य इ: थ

ছোটো ও বড়ো

कड छ। छात्रा बाद्य। (य गुषात्र बडाद्य ७ नित्राम्दम छाद्यत्र षत्र ভরিয়া উঠিয়াছে ভা ভাদের অপোচর নাই। বাপকে ব্যালেরিয়ার धित्रशास्त्र, या वार्क्न रहेशा एडी क्रिएएस्न वास्त्र कीएक वास्त्रकत्र काय्रगाय वसी याचा दय, এই-সমস্ত इन्छियाय इ:च এই শিশুছটিকেও भीए। मिर्छिष्ट । अ नष्ट छ्रिष्टित यूर्य अवि भक्त नाहे, वामत्राख किছू विन ना- किन्न अहे एएएनदा यथन गायरन बारक छथन देशर्यद्र कथा, প্রেমের কথা, নিত্যধর্ষের প্রতি নিষ্ঠার কথা, সর্বমানবের ভগবানের श्राक्त विचारमद्र कथा विमास्य व्यामाद्र कुर्श (वाथ इत्र ; छथन म्बर्-मकन लाटकत्र विक्रनहाज-कृष्ठिन यूच व्यायात्र यटन পড़ে वात्रा लाखाटवत्र नाटित्र রিপুর সহিত রিপুর চক্যকি ঠোকায় আগুন অলিতেছে; এমনি করিয়া वाःनारमरमत्र अरमरम अरमरम इः १४ चालर माञ्च वाहिरवत्र (अमरक व्यष्ट(त्रत्र निलाला शादि मिक्ल क्रिएल्स्। भागनक्रीत्र व्यमुख स्यापत्र ভিতর **হইতে হঠাৎ সং**সারের মাঝখানে যে বোমাগুলা আসিরা পড়িতেছে তাহাতে মরিতেছে বিস্তর অনাধা রমণী এবং অসহায় শিশু। हेशामिशक कि non-combatants विनाद ना १

যদি জিঞাসা কর, এই ছুই সমস্তার ব্ল কোথার, তবে বলিতেই হইবে— স্বাধীন শাসনের অভাবে। ইংরেজের কাছে আমরা বড়োই পর, এমন কি, চীন-জাপানের সজেও তারা আমাদের চেয়ে অনেক বেশি আন্তরিক সামীপ্য অমুভব করেন— এ কথা তাঁদের কোনো কোনো বিশ্বান অমশকারী লিখিয়াছেন। তার পরে আমাদের আধ্যাত্মিকতা আছে, তনিতেছি তাঁদের সে বালাই নাই— এত বড়ো মূলগত প্রভেদ মান্তবে মান্তবে আর-কিছু হইতেই পারে না। তার পরে তাঁরা আমাদের ভাষা জানেন না, আমাদের সঙ্গ রাখেন না। বেখানে এত দ্রুজ, এত কম জানা, সেখানে সভর্ক সন্ধিয়তা একমাত্র পলিসি হইতে বাধ্য। সেখানে

দেশের যেসব লোক ভার্থপর ও চতুর, যারা ভবৈতনিক ভপ্তচরবৃত্তি করাই উন্নতির উপায় বলিয়া জানে, তাদের বিবাক্ত প্রভাব শাসনতত্ত্বর ছিজে ছিজে প্রবেশ করিয়া তাহাকে যিপ্যায় এবং যিপ্যার চেয়ে ভয়ংকর वर्षम्हा अविश्वा वार्ष। यात्रा चार्षत्र ८ हस्य व्यायम्यानस्य राष्ट्रा व्यार्गः যারা নিজের উন্নতির চেয়ে দেশের মঙ্গলকে শ্রেয় বলিয়া জানে, ভারা यकक्ष ना श्रित्रत श्रात्म পড़ उठक्ष এই भामनवावहा इहेट यथामञ्च मृद्र पादक। এই निश्चल भा हिभिन्ना हला अवर हुभिहुभि वला, এই দিনরাত আড়ে আড়ে চাওয়া এবং ঝোপে ঝাড়ে ঘোরা— আর-किছू नव, এই-यে অবিরত পুলিসের সঙ্গ করা— এই কলুবিত হাওয়ার यर्था रय मामनक्की वाम कर्त्रन छौत यरनत मत्मह कार्य निमाक्र न रुरेबा উঠिতে কোনো चार्जिक वाश भाव ना। एकनना, छाएमब কাছে আমরা একটা অবচ্ছিন্ন সন্তা, আমরা কেবলমাত্র শাসিত गच्छानाय। (गरेक्क चामारित घर यथन मा कैं। निर्छ है, जी चाच्रह्छ। क्रिटिल्ह, निरुद्धित निका दक्ष, यथन छात्राहीन प्रत्नेत्र वह हु: (बन्न गर्टिहोक्षिन गि-चार-िए'व वाका रेभावा गाटक ठावि मिटक छाछिया ভাঙিয়া পড়িতেছে— তখন অপর পক্ষের কোনো মান্তবের ভিনারের कुश वा निनीपनिजात वााघाक घटने ना अवः विक-रचनारक छेरनाइ चक्छ थारक। ইहा দোষারোপ করিয়া বলিতেছি না, ইहा चाछाविक। এই-সব মাপুষ্ট যেখানে ধোলো-আনা মামুষ, সেখানে আপিসের खकरना পार्চ्यर नेटि इहेट छाएम समयो महत्व वाहित हहेगा षाक। वादाकिंग वनिष्ठ गर्वे ए क्रिंगित वादाम यात्रा विशाजात एष्ठे मञ्जालाक नहेश कांत्रदात करत ना, वात्रा निष्कत বিধানরচিত একটা ক্টুত্রিম জগতে প্রভূত্তাল বিস্তার করে। স্বাধীন দেশে এই ব্যুরোক্রেসি সর্বপ্রধান নয়, এইজন্ত মানুষ ইছাদের ফাঁকের মধ্য দিয়া वाषित्रा छेठिएल भारत । अथीन मिट्न अहे बुरिवारकिंग स्नापा अक्षेत्र

ছোটো ও বড়ো

কাঁক রাখিতে চার না। আমরা যখন খোলা আকাশে বাখা তুলিবার অন্ত কাঁকের দরবার করি, তখন ইহাদের ছোটোবডো শাখাপ্রশাধা সমুদ্রের এপারে-ওপারে এমনি প্রচণ্ড বেপে আন্দোলিত হইতে থাকে যে, তখন আমরা ব্যতিবাস্ত হইরা ভাবি— কাঁকে কাজ নাই, এখন ঐ ডালের ঝাপটা খাইরা ভাঙিরা না পড়িতে হয়। তবু শেব কখাটা বলিয়া রাখি— কোনো অখাভাবিকভাকে কেবলমাত্র গায়ের জোরে অত্যন্ত বলবান জাভিও শেব পর্যন্ত সঙিনের আগার নিধা রাখিতে পারে না। ভার বাড়িয়া ওঠে, হাত ক্লান্ত হয় এবং বিশ্বপৃথিবীর বিপ্রত ভারাকর্ষণ খভাবের অসামঞ্জকে গুলিসাৎ করিয়া দের।

বাভাবিকতাটা কী ? না, শাসনপ্রণালী বেমনি হোক আর যারই হোক, দেশের লোকের সঙ্গে দেশের শাসনতত্ত্বের দারিছের বোগ থাকা, দেশের শাসনতত্ত্বের প্রতি দেশের লোকের মমন্ত্র থাকা। সেই শাসন নিরবছির বাহিরের জিনিস হইলে তার প্রতি প্রজার উদাসীন্ত বিভ্ন্নার পরিণত হইবেই হইবে। আবার সেই বিভ্ন্নাকে বারা বাহিরের দিক হইতেই দমন করিতে থাকেন তারা বিভ্ন্নাকে বিছেবে পাকাইরা তোলেন। এমনি করিয়া সমন্তা কেবলই জটিলতর হইতে থাকে।

বর্তমান যুগসতোর দৃত হইয়া ইংরেজ এ দেশে আসিরাছেন। বে কালের যাহা সব চেয়ে বড়ো বিশ্বসম্পদ ভাহা নানা আকারে নানা উপায়ে দেশে দেশে ছড়াইয়া পড়িবেই। থারা সেই সম্পদের বাহন ভারা যদি লোভের বল হইয়া রূপণভা করেন, ভবে ভারা ধর্মের অভিপ্রায়কে অনর্থক বাধা দিয়া ছঃখ প্রষ্টি করিবেন; কিছু ভারা বে আগুন বহন করিভেছেন ভাকে চাপা দিয়া রাখিতে পারিবেন না। যাহা দিবার ভাহা ভাহাদিগকে দিভেই হইবে; কেননা এ দানে ভাহারা উপলক্ষ্য, এ দান এখনকার যুগের দান। কিছু অস্বাভাবিকভা হইভেছে এই যে, ভাদের ঐভিহাসিক শুক্ল পক্ষের দিকে ভারা বে সভাকে বিকীর্ণ

कत्रिएए इन, उँ। एम से छिङ्। जिक् कृष्ण भएक व निष्क छै। बाहे जिहे जा जा क শাসনের অন্ধকারে আছেন করিতেছেন। কিন্তু নিজের প্রকৃতির এক व्यथित छात्रा वात्र- अक व्यथ्म मिय्रा किहूर छ द्यविष्ठ कत्रिष्ठ भात्रिर्वन ना। वर्षा-हेः दब्किक छाटो।-हेः दब्क ित्रमिन चार्यत वैष मित्रा र्फिकाहेगात्र एडो कदिल इः श्रृशिक वाजाहरू शाकिरवन। खेलिहानिक খেলায় হাতের কাগজ দেখাইয়া খেলা হয় না। তার পরিণাম সমস্ত हिनादिन विकृत्क हठीर प्रथा पिया ठमक नानाय। এই जन साहिन উপর এই তত্ত্বটা বলা যায় যে, কোনো অস্বাভাষিকভাকে দীর্ঘকাল প্राथम प्रिंग पिर्फ एथन गरन अरे विचान मृह रम रय, चामान रेजनि निषय है निषय, ज्थन है है जिहान है हों विकास नामा छ । जिस्से बाहेश छेन्टोहेन्रा পড़ে। শত বৎসর ধরিয়া মানুষ মানুষের কাছে আছে অৰচ তার गटक यानरमञ्जू नाहे, ভাকে भागन कदिए एह व्यष्ठ जारक काता-यटिं वाषोत्र कतिए हि ना, পूर्वभर्गीत आठीत छाडिया भन्तिय अरक-বারে তার গোলাবাড়ির ভিতরে আসিয়া পড়িল অবচ এ মন্ত্র ছাড়িল না খে never the twain shall meet' — এত বড়ো অসাভাবিকতার कु: थक्द्र (वाद्या विषय कथरनारे चठेन रहेशा थाकिएल भारत ना। यनि ইহার কোনো স্বাভাবিক প্রতিকার না থাকে তবে একটা ঐতিহাসিক हि। एक फिन्न पक्ष्मारक हेरान यनिकाशकन रहेरन। जान्यकन वामारमन वूर्गिलिय (य गर्गा किक द्वारिक छ। तक एक एक विका এমনি করিয়া রচিত হইয়াছিল। আমরাও মানুষকে কাছাকাছি वाश्विष्ठ पृद्ध ঠिकाहेवाद दिखादिक चाद्यांचन कत्रिवाहि; य व्यक्षिकांद्रक नकरनद हिर्द मृगायान यनिया निष्य अहम कविनाम चक्रक (करमहे छाहा इहेटल दक्षिल कतिया बाधियाहि; चामबाध 'यथर्य' विनिन्ना अकडे। वर्ष्णा नाम मिशा मासूरवन्न व्यवमानना कृतिना নিত্যধর্ষকে পীড়িত করিয়াছি। শান্তবিধির অভি কঠিন বাধন দিয়াও

ছোটো ও বড়ো

এই অসাভাবিকতাকে, এই অপবিত্র দেবজোহকে আমরা নিজের ইতিহাসের অন্তক্ত করিয়া তুলিতে পারি নাই। মনে করিয়াছিলাম, আমাদের বল এইখানেই; কিন্তু এইখানেই আমাদের সকলের চেমে তুর্বলতা। এইখানেই শভানীর পর শভানী আমরা প্রতি পদে কেবল আপনাকে মারিতে মারিতে মরিয়াছি।

वर्षगारनव रिहावा रायनि रहाक, छवु अहे चाना, अहे विचान मरन हुन कत्रियां हि त्य, शन्तिय शूर्तिय महिल मिनित्य। किन्न अहेशात्म चामारमय कर्ठना चारह। चामना गिन हाटि। इहेना छन्न भाहे छट्न देशदबा ध ছোটো হইরা ভর দেখাইবে। ছোটো-ইংরেজের সমস্ত জোর আমাদের हाहो नकिय উপরে। পৃথিবীর সেই ভাষী যুগ আসিয়াছে, অন্তের ৰিক্তম নিৰ্ম্ভকে দীড়াইতে হটবে। সেদিন যে মারিতে পারিবে ভার किंछ इहेर्द ना, य मदिएक भाषित्य छात्रहे क्या इहेर्द। त्रिनिन इ:स तिय (य बाक्ष्य छात्र भद्राख्य इहेर्द, इःथ भाव (य बाक्ष्य छाद्रहे (भव भोद्रय। मिन माःमभित्र महिल वासाद मिन मश्चित्र मश्चाम इहेवा गाञ्च कानाहेवा पिटव (य, १७ প७ नव, आकृष्टिक निर्दाऽत्नव निवय (ग অভিক্রম করিয়াছে। এই মহন্ত প্রমাণ করিবার ভার আমাদের উপর चार्छ। পूर्व-পन्टियद्र यपि भिन्न चर्छ छर्व अक्टा महर चाडे फियालिक डेलव इहेर्द। छाहा निष्ठक चक्क शहर है लिएव इहेर्द ना। अंदर कार्यान रम्क এवः त्रक्त्रीत छेलद्र इंटर ना। इःश्टक व्यायादित महात्र किर्ण इहेरन, मुकारक चामारमंत्र महाम किरिए इहेरन, एरन मुकासम व्यायामित्र महात्र हहरियम । व्यायता यमि मक्ति मा भाहे, उत्य व्यम्दक्त गरिल मरक्षत्र यिमन मन्पूर्व इहेरल भात्रिय ना। এक उत्का चारिभरलात यांग यांगई नहा वायांमिग्द निष्य मक्टिएई भ्देश मकित गत्म गिक कत्रिए इहेर्य। त्महे मिक धात-करा मिक, जिमा-करा मिक ना रुपेक। ভारा गरणात्र बन्न, नारतत बन्न इःच गरिवात बनविगीय

শক্তি হউক। জগতে কাহারও সাধ্য নাই— ছঃধের শক্তিকে, ত্যাগের শক্তিকে, ধর্মের শক্তিকে বলির পশুর মতো শিকল দিয়া বাধিয়া রাখিতে পারে। তাহা হারিয়া জেতে, তাহা মরিয়া অমর হয়, এবং মাংসপেশী আপন জয়ন্তম্ভ নির্মাণ করিতে গিয়া হঠাৎ দেখিতে পার সে পকাঘাতে অচল হইয়াছে।

चत्रशाय ३७२८

সাধিকারপ্রমতঃ

দেড় শো বংগর পার ছইরা পেল, ইংরেজ-শাগন ভারতবর্ধকে আগাগোড়া দখল করিয়া বসিয়াছে। এ শাগনে ভারতের কল্যাণ হইয়াছে কি না, ভার ধনসম্পদ শিল্পবাশিলা পূর্বের চেয়ে বাড়িয়াছে কিবা ভার আত্মশক্তির ও আত্মশাগনের প্রযোগ বিভূত হইয়াছে কিনা, গে তর্কে আমাদের কোনো লাভ নাই, কারণ এ তর্কে অতীত মৃছিবে না এবং বর্তমানের হুঃখ ঘৃচিবে না। ঐতিহাসিক কৌত্হলের তরক হইতেও ইহার মূল্য খ্ব বেশি নয়। কারণ, অনেক তথা আছে যাহা গোপনে এবং নীরবে ছাড়া শরণ করিয়া রাখিবার হকুম আমাদের নাই। অতএব এমন আলোচনার আমার দরকার কী যার পরিশাম ভত্ত বা সন্তোবজনক না হইতে পারে ?

ক্ষি একটা কথা আছে যার সহক্ষে কোনো ঢাকাঢ়াকি নাই। এ
কথা সকল পক্ষেই স্থীকার করিয়া থাকেন যে, এত কালের সহস্ক থাকা
সংগ্রেও পূর্ব ও পশ্চিম মেলে নাই, বরং তালের মারখানের কাঁক বাড়িয়াই
চলিল। যথন ছুই জাতি পরস্পারের সঙ্গে ব্যবহার করিতে বাধ্য অথচ
উভয়ের মধ্যে সভাক্লার মিলন অগন্তব, তখন এ সংশ্রুব হইতে যত
উপকারই পাই ইহার বোঝা বড়ো ভারি। অভএব বখন আমরা বলি
বে এই অস্বাভাবিক বিচ্ছেদের অভভারে চাপা পড়িয়া আমাদের হাড়েমানে এক হইল, তখন সে কথা আমাদের শাসনতত্ত্রের অভিশ্রোর বা
প্রণালীর বিক্লক্ষে অভিবোগের ভাবে বলি না। আজকের দিনে সে
কথাটা স্লামাদের ভারতবর্ষের ভালোমক্ষকে ছাড়াইয়াও অনেক দূর
প্রসারিত। আমাদের নিজের ব্যথা হইতে ব্রিতে পারি, আজ এখন
একটা প্রবল্প সভাতা লগৎ ভুড়িয়া আপন আল বিভার করিভেছে বা

শোষণ করিতে পারে, শাসন করিতে পারে, কিন্তু যার মধ্যে সেই
আধ্যাত্মিক শক্তি নাই যে শক্তিতে মাহুষের সঙ্গে মাহুষকে মিলাইরা
দের— যে সভ্যতা অবজ্ঞার সহিত বাহির হইতে আমাদের মাধার
উপর উপকার বর্ষণ করে অথচ আমাদের অস্তরের রুভজ্ঞতা উদ্ধৃতভাবে
দাবি করিতে থাকে, অর্থাং যাহা দানের সঙ্গে হৃদয় দের না অথচ
প্রতিদানের সঙ্গে হৃদয়ের মূল্য চাহিয়া বসে।

অতএব এ কথা শীকার করিতে হইবে যে, এই সভাতার মধ্যে বৃত্তিসম্পাদ যথেষ্ট থাকিতে পারে কিন্তু ইহাতে এমন একটি সভাের কমিতি আছে যে সভাা মাহুবের সকলের চেন্নে বড়ো জিনিস। এই জন্তুই যেসব জাত এই আধুনিক সভাাভার হাতে গড়িয়া উঠিল ভারা কোনো মুশকিলে ঠেকিলেই প্রথমেই বাহিরের দিকে হাৎড়ায়— মনে করে ভানের আপিসে, ভানের কার্যপ্রশালীতে একটা-কিছু লােকসান ঘটিয়াছে; মনে করে সেই প্রণালীটাকেই সারিয়া লইলে ভারা উদ্ধার পাইবে। ভানের বিশ্বাস, মাহুবের সংসারটা একটা সভরক খেলা, বড়েগুলোকে বৃদ্ধিপূর্বক চালাইলেই বাজি মাত করা যায়। ভারা এটা বৃত্তিতে পারে না যে, এই বৃদ্ধির খেলায় যাকে জিত বলে মাহুবের পক্ষে সেইটেই সব চেন্নে বড়ো হার হইতে পারে।

মাহ্ব এক দিন স্পষ্ট হউক, অস্পষ্ট হউক, এই একটি বিশ্বাসে আসিরা পৌছিরাছিল বে, কোনো-একটি সন্তা আছেন বার সঙ্গে সম্বন্ধ থাকাতেই আমাদের পরস্পরের প্রতি সম্বন্ধ সত্য হইরাছে। সেই দিন হইতেই তার ইতিহাস শুক্ত হইরাছে। যুরোপের বৈজ্ঞানিক-বৃদ্ধি বলে, এই বিশ্বাসের গোড়া ভূতের বিশ্বাসে। কিন্তু আমরা জানি, ওটা একেবারেই বাজে কথা। মাহুষের পরস্পরের মধ্যে একটি গভীর ঐক্য আছে, সেই ঐক্যবোধের ভিতরেই ঐ বিশ্বাসের মূল; এবং এই ঐক্যবোধই মাহুষের কর্তবানীতির ভিত্তি। এই একটি সত্যের উপলব্ধিই মাহুষের

স্বাধিকারপ্রমন্তঃ

गमण रूजनीमकित मर्था लाग ও জ্যোতি गकात कतिवाहर, हेशार है। रग जागन जाजारूक्टिन मर्था जगीरमन रूगन गांच कतिग।

শভাবতই ইতিহাসের আরম্ভে মান্তবের ঐক্যবোধ এক-একটি আতির পরিধির মধ্যেই বদ্ধ ছিল। বেমন বড়ো থেতের মধ্যে চারা রোপণ করিবার আগে ছোটো থেতের মধ্যে বীক্ষ বপন করিতে হর, এও ঠিক তেমনি। এইক্ষন্ত গোড়ায় মান্তব আপন দেবতাকে শ্বন্ধাতির বিশেব দেবতা বলিয়াই গণ্য করিত, এবং তার কর্তবোর দায়িত্ব বিশেব ভাবে তার শ্বনাতির সীমার মধ্যেই সংকীর্ণ ছিল।

আর্থরা যথন ভারতে আদিলেন তথন তাঁরা যে দেবতা ও যে
প্লাবিধি সঙ্গে আনিলেন সে খেন তাঁদের নিজের বিশেষ সম্পত্তির
মতোই ছিল। অনার্থদের সজে তাঁদের লড়াই বাধিল— সে লড়াই
কিছুতেই মিটিতে চার না, অবশেষে যথন আর্থসাধক সর্বভূতের মধ্যে
সর্বভূতাত্মাকে উপলব্ধি ও প্রচার করিলেন তথনি ভিতরের দিক হইতে
বিরোধের পোড়া কাটা পড়িল। হৃদ্ধের মধ্যে মনীবা না আসিলে
বিভেদের মধ্যে মিলন আনে কী করিয়া ?

মৃগলমান বধন ভারতে রাজন্ব করিতেছিল তথন আমাদের রাষ্ট্রীর চাঞ্চল্যের ভিতরে ভিতরে একটা আধ্যাত্মিক উদ্বোধনের কাজ চলিতেছিল। সেইজন্ত বৌদ্ধুপের অশোকের মতো মোগল-সম্রাট আকররও কেবল রাষ্ট্রসাম্রাজ্য নয়, একটি ধর্মসাম্রাজ্যের কথা চিল্লা করিয়াছিলেন। এইজন্তই সে সময়ে পরে পরে কত হিন্দু সাধু ও মুসলমান অফির অভ্যানর হইয়াছিল বারা হিন্দু ও মুয়লমান ধর্মের অন্তর্ম মিলনক্ত্রে এক মহেত্ররের পূজা বহন করিয়াছিলেন। এবং এমনি করিয়াই বাহিলের সংসারের দিকে বেধানে অনৈক্য ছিল, অন্তরাত্মার দিকে পরম সভ্যের আলোকে সেবানে সভ্য অনিষ্ঠান আবিষ্কৃত হইতেছিল।

া কালান্তর

ভারতে সেই আধাদ্মিক সভ্য সম্বন্ধের সাধনা আজিকার দিনেও
নিশ্চেষ্ট হর নাই। তাই এ কথা জাের করিরা বলা যায় বে, রামবােহন
রাম্বের জায় এবং তাঁহার তপস্তা আধুনিক ভারতের সকল ঘটনার মধ্যে
বড়াে ঘটনা; কারণ, পূর্ব ও পশ্চিম আপন অবিচ্ছিরতা জায়্তব করিবে,
আজা পৃথিবীতে ইহার প্রয়ােজন সকলের চেয়ে গুরুতর। পশ্চিম
যখন ভারতের ছারে আঘাত করিল তখন ভারত সর্বপ্রথমে রামমােহন
রাব্রের মধ্য দিরাই সেই আঘাতের সভ্যকার সাড়া দিরাছিল। তিনি
ভারতের তপস্তালক আধ্যাত্মিক সম্পাদের মধ্যেই, অর্থাৎ পর্মাত্মায়
সকল আত্মার ঐক্য এই বিখাসের মধ্যেই, সর্বমানবের মিলনের সভ্যতা
উপলক্ষি করিরাছিলেন।

আরো অনেক বড়ো লোক এবং বৃদ্ধিমান লোক আমাদের কালে দেখিরাছি। তাঁরা পশ্চিমের গুরুর কাছে শিক্ষা পাইরাছেন। এই পশ্চিমের বিশ্বালয়ে নিজের জাতির সন্তাকে অত্যন্ত তীত্র করিয়া অন্তত্ত্ব করিতে শেখার— এই শিক্ষার যে খাদেশিকতা জয়ে তার ভিত্তি অক্ত জাতির প্রতি অবজ্ঞাপরারণ পার্থকাবোধের উপরে প্রতিষ্ঠিত। এইজক্ত এই শিক্ষা জগতের যেখানেই পৌছিয়াছে সেইখানেই পরজাতির প্রতি সন্দেহসুংকুল বিরুদ্ধতা জাগিরাছে; সেইখানেই মান্ত্র্যর অক্ত দেশের মান্ত্র্যক ছলে বলে ঠেলিয়া পৃথিবীর সমন্ত শ্বেষাপ নিজে প্রা দখল করিবার অক্ত নিজের সমন্ত শক্তিকে উন্তত করিয়া ভূলিতেছে। এই-যে একটা প্রকাশ্ত ব্যহ্বন্ধ অহংকার ও ভার্তপরতার চর্চা, এই-যে একটা প্রকাশ্ত ব্যহ্বন্ধ অহংকার ও ভার্তপরতার চর্চা, এই-যে মান্ত্র্যক সত্ত করিয়া দেখিবার দৃষ্টিকে ইচ্ছা করিয়া বিকৃত করিবার চেটা, ইহা আজ বিলিতি মদ এবং আর-আর পণ্যক্রব্যের সঙ্গে ভারতেও আগিয়া পৌছিয়াছে। এই শিক্ষার বিপুল ও প্রবল মিশ্যার মধ্যে যেটুকু সত্য আছে সেটুকু আমাদিগকে লইতে হইবে; নছিলে আমাদের প্রকৃতি একবোঁকা হইয়া পড়িবে। কিন্ত সেই সঙ্গে এই কথাও মনে

স্বাধিকারপ্রমন্ত:

রাখা চাই যে, ভারত যদি এমন কোনো সভ্য উপলব্ধি করিয়া থাকে যাহার অভাবে অক্স দেশের সভ্যতা আপন সামঞ্জ হারাইয়া টলিরা পড়িতেছে, তবে আজ সেই সভ্যকে বলের সঙ্গে প্রকাশ করাই ভার সকলের চেয়ে বড়ো কাজ।

আৰু পশ্চিম মহাদেশের লোক হঠাৎ পৃথিবীর সকল জাতির সংশ্রহে আসিয়া পড়িয়াছে। এই মহৎ ঘটনার অন্ত তার ধর্মবৃদ্ধি সম্পূর্ণ প্রস্তুত হইয়া উঠে নাই। তাই ভারতের প্রাচীন বাশিল্য আৰু বিধ্বস্ক, চীন বিষে জীর্ণ, পারত পদদলিত; তাই কলোর মুরোপীর বশিকের দানবদীলা এবং পিকিনে বল্লার মৃদ্ধে মুরোপীরদের বীভৎস নিদার্রণতা দেখিরাছি। ইহার কারণ, মুরোপীয়েরা অলাতিকেই সব চেয়ে সত্য বলিয়া মানিতে শিবিয়াছে। ইহাতে কিছু দূর পর্যন্ত ভাহাদিগকে উত্তীর্ণ করিয়া দিয়াছে, কিন্তু শেব পর্যন্ত ভাহাদিগকে গার করিবে না। বালকবর্ত্তে এক প্রকার ঘূর্দান্ত আরুজ্বিতা তেমন অসংগত হয় না, কিন্তু বরস হইলে সামাজিক দায়িত স্বীকার করিবার সময় আসে; তখনো যদি মাছ্য পরের সম্বন্ধে বিবেচনা করিতে না শেথে তবে ভাহাতে অন্তেরও অস্থবিধা ঘটে এবং তাহারও চিবদিন স্থবিধা ঘটে না।

আক তাই এমন দিন আসিয়াছে যথন পশ্চিমের মামুব নিজের বরের
মধাট বেশ করিয়া বৃঝিতেছে, স্বাজ্ঞাতিকতা বলিতে কী বুরায়। এত
দিন যে স্বাজ্ঞাতিকতার সমস্ত স্থবিধাটুকু ইহারা নিজে ভোগ করিয়াছে
এবং সমস্ত অস্থবিধার বোঝা অন্ত জ্ঞাতির ঘাড়ে চাপাইয়া আসিয়াছে,
আক তাহার ধাকা ইহাদের নিজের গৃহপ্রাচীরের উপর আসিয়া
পড়িয়াছে।

এত দিন মানুষ বলিতে ইছারা মুখ্যত আপনাদিপকেই বুবিয়াছে।
তাহাতে ইছাদের আত্মোপলন্ধি এই সংকীর্ণ সীমার মধ্যে প্রচণ্ডরূপে
প্রবল হইয়া উঠিয়াছে; এবং এই সীমার বাহিরে নিজের স্থবিধা এবং

অসুবিধা অমুসারে, নিজের লাভক্তির পরিমাণ বুঝিয়া, ইহারা ধর্মবুজিকে ক্যাইয়া বাড়াইয়া বেশ সহজ করিয়া আনিতে পারিয়াছে।

কিন্তু স্থবিধার মাপে সত্যকে ছাঁটিতে গেলে সত্যও আমাদিগকে ছাঁটিতে আসে। কিছু দিন ও কিছু দ্র পর্যন্ত সে অবজ্ঞা সহ্থ করিরা যার। তার পরে এক দিন হঠাৎ সে স্থানে আসলে আপনার পাওনা আদার করিতে আসিরা উপস্থিত হয়। এমন সময়ে আলে যেটা অত্যন্ত অস্থবিধার সময়, এমন উপলক্ষ্যে আসে যেটা হয়তো অত্যন্ত ভূচ্ছ। তথন সেটাকে আমরা বিধাতার অবিচার মনে করি। অধর্মের টাকার ভদ্র সমাজে যে যাহ্যুব গৌরবে বয়স কাটাইল, হঠাৎ এক দিন যদি তার থাতা ধরা পড়ে তবে সেটাকে সে অসার অত্যাচার বলিরাই মনে করে। বড়ো বড়ো সন্ত্য জাতি তেমনি আপন সমৃদ্ধিকে এমনি স্বাভাবিক এবং স্থসংগত বলিরা মনে করে যে, ছুদিন যথন তার সেই সমৃদ্ধির ইতিহাস লইয়া কৈফিয়ত তলব করে তথন সেটাকে সে স্থবিচার বলিয়া মনেই করিতে পারে না।

এইজন্ত দেখিতে পাই, যুরোপ যখন কঠিন সংকটে পড়ে তখন বিধাতার রাজ্যে এত হৃংখ কেন ঘটে তা লইয়া সে ভাবিয়া কৃল পায় না। কিন্তু পৃথিবীর অন্ত অংশের লোকেরাই বা কেন হৃংখ এবং অপমান ভোগ করে, সে কথা লইয়া বিধাতাকে কিম্বা নিজেকে তেমন জোরের সঙ্গে এরা প্রশ্ন জিজাসা করে না। তা হউক, এই সহজ্ব সভাটুকু তার ভালো করিয়াই জানা দরকার ছিল যে, মহুয়াম্ব জিনিস একটা অথও সভা, সেটা সকল মাহুয়কে লইয়াই বিরাজ করিতেছে। সেটাকে যখন কেহ স্বার্থের বা স্বজাতির খাতিরে খণ্ডিত করে তখন শীঘ্রই হোক, বিলম্বেই হোক, তার আঘাত এক দিন নিজের বক্ষে আদিয়া পৌছে। ঐ মহুয়াম্বের উপলব্ধি কী পরিমাণে সভা হইয়াছে ইহা লইয়াই সভাভার বিচার হইবে— নহিলে, তার আমদানি-মফ্তানির প্রাচুর্য, তার রণভরীর দৈর্ঘ্য,

সাধিকারপ্রমন্তঃ

ভার অধীন দেশের বিস্তৃতি, ভার রাষ্ট্রনীভির চাতুরী, এ লইয়া বিচার नम्र। ইতিহাদের এই বিচারে আমরা পূর্বদেশের লোকেরা প্রধান गाकी। वायानिगरक वागःरकारा गठा विगट इहरव, छात्र कन व्यागामित भिक्त यक कठिन এवः चम्रामित भिक्त यक चित्र इंडेक। वागामित वाणी वा कृष्यत्र वाणी नत्र, जात्र भणाएक भक्तवन नाहे। वागता त्महे एक दाक्क काफाहे नाहे त्यथान हहेए एम विएम नहिंद्र चाम्न अञ्नकद्र। चामरा त्राक्षमछात्र वाहित्त तम्हे भरवत्र शास्त्र धुनाय উপরে দাঁড়াইয়া আছি, যে পথে যুগরুগান্তের যাত্রা চলিতেছে— य भर्ष व्यानक क'ि প্रভাতে क्षत्रक्षका উড़ाইया निग्निगरक धूना इप्राहेश वाश्त्र श्रेशार्थ, मुझार्यमात्र छात्रा छग्न मुख अवः श्रीर्व क्षात्र याजा (नव क देन – कछ गाञारकात्र चहःकात्र के भरवत्र धूनात्र कारनत द्रषठक्र ठरम हुर्ग इहेग्रा रभम, चाक जाद मन-जादिरयद शढा हैकदाखना कु डाहेशा ঐতিহাসিক উन्ট:-পान्টा कदिया खाड़ा मिया मदिए ছ। चामाप्तव वाणी (क्लनाव वाणी - मण्डाव वर्ण याव वल, अक मिन याहा অग्र-मक्न कन्मगर्कानद উर्ध्व हे जिल्लानियां जिल्ला क्रियां (भोड़िदर।

এক দিন ছিল যখন যুরোপ আপন আত্মাকে খুঁজিতে বাহির চুইয়াছিল। তখন নানা চিড়বিক্ষেপের মধ্যেও সে এ কথা বুঝিয়াছিল যে, বাহিরের লাভের ছারা নয় কিন্তু অন্তরে সভ্য হইয়া মামুদ আপন চরম সম্পদ পায়। সে জানিত, এ লাভের মূলা কেবল আমাদের মনগড়া নয়, কিন্তু ইহার মূল্য সেই পরম প্রেমের মধ্যে যাহা চিরদিন মামুদ্রের সংসারের মধ্যে সচেষ্ট হইয়া আছে। তার পরে এমন দিন আসিল যখন বিজ্ঞান বহির্জগতের মহিমা প্রকাশ করিয়া দিল এবং মুরোপের নিষ্ঠাকে আত্মার দিক হইতে বস্তর দিকে জাের করিয়া ছিনাইয়া লইল।

यासूरवत्र शरक विकारनत प्र अक्टा वर्षा छा९शर्य चार्छ। अङ्ख्रि

নিয়মের সঙ্গে মান্থবৈর জ্ঞানের সহযোগিতা আছে, বিজ্ঞান ইহাই প্রমাণ করে। প্রকৃতির নিয়মের সাহাযোই প্রাকৃতিক নির্বাচনের অধীনতা কাটাইয়া মান্থব আপন ধর্মবিবেকের স্বাধীন নির্বাচনের গোরব লাভ করিতে পারে, ইহাই বিজ্ঞানের শিক্ষা। প্রকৃতি যে মান্থবের পরিপূর্ণতালাভের পথে অন্তরায় নহে, প্রকৃতির সহিত সত্য ব্যবহার করিয়া তবেই আমাদের চিনায়কে রূপদান করিয়া তাহার বাস্তপ্রতিষ্ঠা করিতে পারি, মুরোপের প্রতি এই সত্য-প্রচারের ভার আছে।

বিজ্ঞান যেখানে সর্বসাধারণের হুংখ এবং অভাব -মোচনের কাজে লাগে, যেখানে তার দান বিশ্বজ্ঞনের কাছে গিয়া পৌছায়. সেইখানেই বিজ্ঞানের মহত্ত্ব পূর্ণ হয়। কিন্তু, যেখানে সে বিশেষ ব্যক্তি বা জাতিকে ধনী বা প্রবল করিয়া তুলিবার কাজে বিশেষ করিয়া নিযুক্ত হয়, সেখানেই তার তরংকর পতন। কারণ, ইহার প্রলোভন এত অভান্ত প্রকাণ্ড রূপে প্রবল যে, আমাদের ধর্মবৃদ্ধি তার কাছে অভিভূত হইয়া পড়ে এবং স্বাজ্ঞাতা ও স্বাদেশিকতা প্রভূতি বড়ো বড়ো নামের বর্ম পড়িয়া নিজেরই শক্তির বিরুদ্ধে দাড়াইয়া লড়াই করে। ইহাতে আজ্জাতের সর্বত্র এক জাতির সঙ্গে অন্ত জাতির সংল্ক মুর্বলের দিকে দলন-বন্ধনের থারা ভারগ্রন্ত এবং প্রবলের দিকে হিংপ্রভার অন্তহীন প্রতিযোগিতার উদ্ধৃত হইয়া উঠিতেছে; সকল দেশে যুদ্ধ ও যুদ্ধের উদ্যোগ নিত্য হইয়া উঠিয়াছে এবং পোলিটকাল মহামারীর বাহন যে রাষ্ট্রনীতি তাহা নিষ্ঠ্রতা ও প্রবঞ্জনায় অন্তরে অন্তরে কল্বিত হইতে থাকিল।

তথাপি এই আশা করি, মুরোপের এত দিনের তপস্তার ফল আঞ বস্তলোতের ভীষণ দল্বের মধ্যে পড়িয়া পায়ের তলার ধূলা হইয়া যাইবে না। আজিকার দিনের প্রচণ্ড সংকটের বিপাকে মুরোপ আর-কোনো-একটা নৃতন প্রণালী, আর-একটা নৃতন রাষ্ট্রনৈতিক ব্যবস্থা খুঁজিয়া

স্বাধিকারপ্রমন্তঃ

বেড়াইতেছে। কিন্তু বার্ষার মৃত্যুর পাঠশালায় শিক্ষালাভের পরে
যুরোপকে আত্ম না হয় তো আর-এক দিন এ কথা মানিতেই হইবে
যে, কেবল কার্যপ্রণালীর পিরামিড-নির্মাণের প্রতি আত্মা রাখা অন্ধ
পৌডলিকতা; ভাহাকে এ কথা বুঝিতে হইবে, বাহিরের প্রণালীকে
নয়. অন্তরের সভাকে পাওয়া চাই; এ কথা বুঝিতে হইবে যে,
ক্রমাগভই বাসনা-হভাগ্নির হব্য সংগ্রহ করিতে থাকিলে এক দিন
অগদ্ব্যাপী অগ্নিকাণ্ড না ঘটিয়া থাকিতে পারে না। এক দিন আগিয়া
উঠিয়া যুরোপকে ভার লুক্কভা এবং উন্মন্ত অহংকারের সীমা বাধিয়া
দিতে হইবে; ভার পরে দে আবিকার করিতে পারিবে যে, উপকরশই
যে সভ্য ভাহা নয়, অমৃভই সভ্য।

ইবার অন্ধতার নুরোপের মহন্ত্ব অনীকার করিলে চলিবে লা। তার বানস্রিবেশ, তার জলবান্ত্ব, তার জাতিসমবার, এমন তাবে ঘটিয়াছে বে, সহজেই তার ইতিহাস শক্তি সৌল্লই এবং মাত্রমাপরতার সম্পদশালী হইয়া উঠিয়াছে। সেখানকার প্রকৃতিতে কঠোরতা এবং মৃত্তার এমন একটি সামঞ্জ্য আছে যে, তাহা এক দিকে মানবের সমগ্র শক্তিকে মুক্তে আহ্লান করিয়া আনে, আর-এক দিকে তাহার চিন্তকে অভিত্ত করিয়া নিশ্চেই অদৃষ্টবাদে দীক্ষিত করে না। এক দিকে তাহা মুরোপের সন্তানদের চিন্তে এমন তেজের উল্লেক করিয়াছে যে, তাহাদের উল্লম ও সাহস কোবান আলন দাবির কোনো সীমা স্বীকার করিতে চার না; অপর দিকে তাহাদের বুদ্ধিতে অপ্রমাদ, তাহাদের করনাবৃত্তিতে অস্থ্যমান, তাহাদের সকল বচনায় পরিমিতি এবং তাহাদের জীবনের লক্ষে।র মধ্যে বান্তবতাবোধের সঞ্চার করিয়াছে। তাহারা একে একে বিশের গৃচ রহ্জসকল বাহির করিতেছে, তাহাকে মাপিয়া ওজন করিয়া আয়ত করিতেছে; তাহারা প্রকৃতির মধ্যে অন্তর্বন্তর যে-একটি ঐক্যতন্ত্ব আবিকার করিয়াছে তাহা ধ্যানযোগে বা তর্কের বলে নর— তাহা

বাহিরের পর্দা ছিন্ন করিয়া, বৈচিত্রোর প্রাচীর ভেদ করিয়া। ভাহারা নিজের শক্তিতে রুদ্ধ দার উদ্ঘাটিত করিয়া প্রকৃতির মহাশক্তিভাণ্ডারের মধ্যে আসিয়া উত্তীর্ণ হইয়াছে এবং লুক হত্তে সেই ভাণ্ডার সুঠন করিতেছে।

निष्कत्र এই मक्ति मच्या यूर्तारित्र पछ चछाछ वाष्ट्रियाद विषयाहे, কোপায় যে ভার নানভা ভাছা দে বিচার করে না। বাহুপ্রকৃতির क्रिश रिय (मर्टम चिकियां व वृहर वा श्रीहर्ख रिम (मर्टम रियम या सूर्य हिस्स তাহার কাছে অভিভূত হইয়া আতাবিশ্বত হয়, তেমনি মানুষ নিজকত वस्रमक्षत्र এवः वाक् उठनात चाििविश्रमाता काट्य निष्य याद्याविष्ठे হইয়া পরান্ত হইতে থাকে। বাহিরের বিশালতার ভারে অন্তরের সামঞ্জ नष्टे इहेटि इहेटि এक निन माशूर्यंत्र ममृद्धि छन्नः कत श्रामात्र यरिश धुनाम्न नुहोहेश পড়ে। রোম এক দিন আপন সামাভোর विश्रमां वादारे वाशनि विस्वन रहेशाहिन। वसद व्यविशिष्ठ वृह्ख्व काष्ट्र जाव गठा य প্रতिमिन भवाकृत हहे ए हिन, टाहा रम निष्य यानिएक भारत नाहै। यथह मिन ग्रिक्षि छिन त्राष्ट्रेशाभारत পরতন্ত্র, অপ্যানিত। কিন্তু, সেই পরাদীন জাতির একজন অখ্যাতনামা অকিঞ্চন যে সভ্যের সম্পদ উদ্যাটিত করিয়া দিল ভাছাই ভো শুপাকার वस्त्रकार्य दे जेपात क्यमान कविन। विन्नि देवन त्यागरक अहे क्षाह्रेकू माख चढ़न क्याह्या नियाहिल (य, 'बानन बाबादिक कृमि बानन धरनत रुद्य वर्षा कतिया कारना।' এই कथाहेक्ट ए विवीद हे छिहार न्डन यूग चानिन।

দরিদ্রের কথার আপনার উপর মান্তবের শ্রদ্ধা জন্মিল, আত্মাকে লাভ করিবার জন্ত সে বাহির হইল। বাহিরে ভাহার বাধা বিভর, তব্ নিজের সঙ্গে লড়াই করিতে করিতে অমৃতলোকের দিব্য সম্পদ অর্জন করিবার জন্ত সে অগ্রসর হইতেছিল। এমন সময়ে ভাহার ভপস্তা ভঙ্গ

স্বাধিকারপ্রমন্ত:

করিবার জন্ধ বাহিরের দিক হইতে আবার আসিল প্রলোভন। বাহিরের জগৎকে তার হাতে তৃলিয়া দিবার জন্ত বিজ্ঞান তার সমূথে আসিয়া দাড়াইল। যুরোপ আবার আত্মার চেয়ে আপন বস্তুসংগ্রহকে বড়ো করিয়া দেখিতে লাগিল। দেখিতে দেখিতে বস্তু চারি দিকে বাড়িয়া চলিল।

কিন্তু, ইহাই অসতা। বেনন করিয়া, বে নাম দিয়াই এই বাহিরকে
মহীয়ান করিয়া তুলি-না কেন, ইহা আমাদিগকে রক্ষা করিতে পারিবে
না। ইহা ক্রমাগতই সন্দেহ, দর্বা, প্রতিদ্বন্দিতা, প্রতারণা, অদ্ধ অহংকার
এবং অবশেবে অপঘাতমৃত্যুর মধ্যে মানুষকে লইয়া বাইবেই; কেননা
মানুষের পক্ষে সকলের চেয়ে বড়ো সত্য এই যে: তদেতৎ প্রেয়ো
বিতাং অন্তর্গুরং যদয়মাস্মা। অন্তর্গুর এই-বে আস্মা, বাহিরের সকল
বিত্তের চেয়ে ইহা প্রিয়।

যুরোপে ইতিহাস এক দিন নৃতন করিয়া আপনাকে যে স্টেকরিয়াছিল, কোনো নৃতন কার্যপ্রণালী, কোনো নৃতন রাইতদ্রের মধ্যে ভাষার মৃলভিত্তি ছিল না। মামুবের আত্মা অন্ত সব-কিছুর চেয়ে সভা, এই ভর্টি ভাষার মনকে স্পর্ল করিবা মাত্র ভাষার স্ক্রমীলিক সকল দিকে জাগিয়া উঠিল। অন্তকার ভীষণ হুদিনে যুরোপকে এই কথাই আর-একবার সরণ করিতে হুইবে। নহিলে একটার পর আর-একটা মৃত্যুবাণ ভাষাকে বাজিতে থাকিবে।

আর, আমরা আজ এই মৃত্যুশেলবিদ্ধ পশ্চিমের কাছ হইতে স্বাধীনতা ভিন্য করিবার জন্ত ছুটাছুটি করিয়া আসিয়াছি। কিন্তু, এই মুমূর্ আনাদিগকে কী দিতে পারে ? পূর্বে এক রক্ষের রাষ্ট্রভন্ত ছিল, ভাছার বদলে আর-এক রক্ষের রাষ্ট্রভন্ত ? কিন্তু মান্ত্র্য কি কোনো সভাকার বড়ো জিনিস একের হাভ হইতে অন্তের হাতে তুলিয়া লইতে পারে ? মান্ত্র্য যে-কোনো সভাসম্পদ লয় ভাছা মনের ভিভরেই লয়, বাহিরে

कामासुत

ना। जिकात मात्न चामत्र। चाथीन इहेर ना — किट्रू एउटे ना। चाथीनजा चक्रदत्र मामकी।

যুরোপ কেন আমাদিগকে মুক্তি দিতে পারে না ? যেহেতু তাহার নিজের মন মুক্তি পায় নাই। তার লোভের অন্ত কোধায় ? যে হাত দিয়া সে কোনো সত্যবস্ত দিতে পারে লোভে তার সে হাতকে বাঁধিয়া রাখিয়াছে— সত্য করিয়া তার দিবার সাধ্যই নাই, সে যে রিপুর দাস। যে মুক্ত সেই মুক্তি দান করে।

যদি সে বিষয়বৃদ্ধির পরামর্শ পাইয়া আমাদিগকে কিছু দিতে আসে তবে সে নিজের দানকে নিজে কেবলই খণ্ডিত করিবে। এক হাত দিয়া যত দিবে আর-এক হাত দিয়া তার চেয়ে বেশি হরণ করিবে। স্বার্থের দানকে পরীকা করিয়া লইবার বেলা দেখিব তাহাতে এত ছিদ্র যে, সে আমাদিগকে ভাসাইয়া রাখিবে কি, তাহাকে ভাসাইয়া রাখাই শক্ত।

তাই এই কথা বলি, বাহিরের দিক হইতে স্বাধীনতা পাওয়। যায়, এমন ভূল যদি মনে আঁকড়িয়া ধরি তবে বড়ো ছাথের মধ্যেই সে ভূল ভাঙিবে। ত্যাগের জন্ত প্রস্তুত হইতে পারি নাই বলিয়াই অন্তরে বাহিরে আমাদের বন্ধন। যে হাত দিতে পারে সেই হাতই নিতে পারে। আপনার দেশকে আমরা অতি সামান্তই দিতেছি, সেইজন্তই আপনার দেশকে পাই নাই। বাহিরের একজন আমার দেশকে হাতে ভূলিয়া দিলেই তবে তাহাকে পাইব, এ কথা যে বলে সে লোক দান পাইলেও দান রাখিতে পারিবে না। আপন লোককে ছাথ দিই, অপমান করি, অবজ্ঞা করি, বঞ্চনা করি, বিশ্বাস করি না—সেইজন্তই আপন পর হইয়াছে, বাহিরের কোনো আক্ষিক কারণ হইতে নয়।

মিহুদি যখন পরাধীন ছিল তখন রোমের হাত হইতে দক্ষিণাশ্বরূপ ভাহারা শাধীনতা পায় নাই। পরে এমন ঘটিয়াছে যে, মিহুদি দেশছাড়া

या विकाय टामसः

হট্যা বিদেশে ছড়াইরা পড়িল। তাহার রাষ্ট্রও নাই, রাষ্ট্রতন্ত্রও নাই।
কিন্তু তাহার ইতিহাসে এইটেই সকলের চেয়ে অকতর কথা নর। ইহার
চেয়ে অনেক বড়ো কথা এই যে, তাহার কাছ হইতে প্রাণের বীজ
উড়িয়া আসিয়া য়ুরোপকে নৃতন মহুছুত্ব দান করিয়াছে। সে যাহা
দিয়াছে তাহাতেই তাহার সার্থকতা। যাহা হারাইয়াছে, যাহা পার
নাই, সেটা সত্ত্বেও সে বড়ো, ইতিহাসে তাহার প্রমাণ হইয়াছে।

বাহিরের পরিমাণে মামুবের পরিমাণ নছে, এ কথা আমরা বার বার ভূলি কিন্তু তবু ইহা বার বার মনে করিতে হইবে। চীনদেশকে বুরোপ অন্তবলে পরান্ত করিয়া তাহাকে বিব খাওয়াইয়াছে, সেটা বড়ো কথা নয়। কিন্তু বড়ো কথা এই যে, ভারত এক দিন বিনা অন্তবলে চীনকে অমৃত পান করাইয়াছিল। ভারত আজ যদি সমুদ্রের তলায় ভূবিয়া যায় তবু বাহা সে দান করিয়াছে তাহার জোরেই সে মামুবের চিত্তলোকে রহিল। বাহা সে ভিকা করিয়াছিল, চুরি করিয়াছিল, ভূপাকার করিয়াছিল, তাহার জোরে নয়।

তপজার বলে আমরা সেই দানের অধিকার পাইব, ভিক্লার অধিকার নয়, এ কথা বেন কোনো প্রশোভনে না ভূলি। মাম্ব বেছেতু মাম্ব এই ছেতু বল্পর ধারা সে বাঁচে না। সভাের ধারাই সে বাঁচে। এই সভাই ভাহার বে: ভমেব বিদিছাভিমৃত্যুমেভি, নালঃ পছা বিশ্বতে অয়নায়: তাঁহাকে আনিয়াই মাম্ব মৃত্যুকে অভিক্রম করে, ভাহার উদ্ধারের অল্প কোনো উপায় নাই। এই সভাকে দান করিবার অল্প আমাদের উপর আহ্বান আছে। মণ্টেপ্তার ভাক পুব বড়ো ভাক, আজ এই কথা বলিয়া ভারতের সভা হইতে সভায়, সংবাদপত্ত হইতে সংবাদপত্তে ঘোষণা চলিভেছে। কিছু এই ভিক্লার ভাকে আমরা মাম্ব হইব না। আমাদের পিতামহেরা অমরলাক হইতে আমাদের আহ্বান করিভেছেন, বলিভেছেন, 'ভোময়া যে অমৃতের পুত্ত

এই কথা জানো এবং এই কথা জানাও; মৃত্যুছারাচ্ছর পৃথিবীকে এই সত্য দান করো যে, কোনো কর্মপ্রশালীতে নয়, রাষ্ট্রভন্তে নয়, বাণিজ্য-ব্যবস্থায় নয়, যুদ্ধ-অন্তের নিদারুণভায় নয়—

> ত্যেব বিদিশ্বাতিমৃত্যুমেতি। নান্তঃ পন্থা বিশ্বতে অমনায়॥

याच ३७२८

বাতায়নিকের পত্র

এক দিকে আমাদের বিশ্বজ্ঞগৎ, আর-এক দিকে আমাদের কর্মসংসার।
সংসারটাকে নিয়ে আমাদের যত ভাবনা, জগৎটাকে নিয়ে আমাদের
কোনো দায় নেই। এইজন্তে জগতের সঙ্গে আমাদের অহেতৃক
আত্মীয়তার সম্মটাকে যতটা পারি আড়াল করে রাখতে হয়, নইলে
সংসারের ভাগে মনোযোগের কমতি প'ড়ে কাজের ক্ষতি হয়। তাই
আমাদের আপিস থেকে বিশ্বকে বারো মাস ঠেকিয়ে রাখতে রাখতে
এমনি হয় যে, দরকার পড়লেও আর তার উদ্দেশ পাওয়া যায় না।

দরকার পড়েও। কেননা বিশ্বটা সভা। সভাের সঙ্গে কাজের সহর নাও বদি থাকে, তবু অন্ত সহর আছেই। দেই সহরকে অন্তমনক হয়ে অস্বীকার করলেও তাকে উড়িয়ে দেওয়া যায় না। অবশেষে কর্মে ক্লান্তি আসে, দিনের আলাে মান হয় সংসারের বন্ধ আয়তনের মধ্যে গুমট অসহা হয়ে উঠতে থাকে। তখন মন তার হিসাবের পাকা গাড়া বন্ধ ক'রে বলে ওঠে, 'বিশ্বকে আমার চাই, নইলে আর বাৈচি নে।'

কিন্তু নিকটের সব দরজাগুলোর তালায় মরচে পড়ে গেছে, চাবি আর খোলে না। রেলভাড়া ক'রে দুরে যেতে হয়। আপিসের ছাদটার উপরেই এবং তার আশেপাশেই যে আকাশ নীল, যে ধরণী ভামল, যে জলের ধারা মুখরিত, তাকেই দেখবার জভে ছুটে যেতে হয় এটোয়া কাটোয়া ছোটোনাগপুরে।

এত কথা হঠাৎ আমার মনে উদয় হল কেন বলি। তোমরা স্বাই জান, প্রাকালে এক সময়ে আমি সম্পূর্ণ বেকার ছিলুম। অর্থাৎ আমার প্রধান সম্বন্ধ ছিল বিশ্বজগতের সঙ্গে। তার পরে কিছু কাল থেকে সেই আমার প্রথম বয়সের সমস্ত অক্নত কর্মের বকেয়া শোধে লেগে

গিয়েছিল্ম। অর্থাৎ এখনকার প্রধান সম্বন্ধ হল সংসারের সঙ্গে। অর্থাচ তথনকার সঙ্গে এখনকার দিনের যে এত বড়ো একটা বিচ্ছেদ ঘটেছে, কাজ করতে করতে তা ভূলে গিয়েছিল্ম। এই ভোলবার ক্ষমতাই হচ্ছে মনের বিশেষ ক্ষমতা। সে ছুনোকোয় পা দেয় না; সে যথন একটা নৌকোয় পাকে তখন অন্ত নৌকোটাকে পিছনে বেঁধে রাখে:

এমন সময় আমায় শরীর অসুস্থ হল। সংসারের কাছ পেকে
কিছু দিনের মতো ছুটি মিলল। দোতলা ঘরের পুব দিকের প্রাস্থে
খোলা জানলার ধারে একটা লম্বা কেদারায় ঠেস দিয়ে বসা গেল।
ছুটো দিন না যেতেই দেখা গেল, অনেক দ্রে এসে পড়েছি, রেলভাড়া
দিয়েও এত দ্রে আসা যায় না।

যথন আমেরিকার যাই, জাপানে যাই, ভ্রমণের কণায় ভ'রে ভ'রে তোমাদের চিঠি লিখে পাঠাই। পথ-খরচাটার সমান ওজনের গৌরব তাদের দিতে হয়। কিন্তু এই-যে আমার নিথর্চার যাত্রা কাজের পার থেকে অকাজের পারে, তারও ভ্রমণর্ডান্ত লেখা চলে— মাঝে মাঝে লিখব। মুশকিল এই যে, কাজের মধ্যে মধ্যে অবকাশ মেলে, কিন্তু প্রো অবকাশের মধ্যে অবকাশ বড়ো ছুর্ল্ভ। আমো একটা কণা এই যে, আমার এই নিথর্চার ভ্রমণর্ডান্ত বিনা-কড়ি দামের উপযুক্ত নেহাত হাল্ক। হওয়া উচিত— লেখনীর পক্ষে সেই হাল্কা চাল ইচ্ছা করলেই হয় না, কারণ লেখনী স্বভাবতই গজেক্সগামিনী।

জগৎটাকে কেন্দ্রো অভ্যাসের বেড়ার পারে ঠেলে রেথে অবশেষে ক্রমে আমার ধারণা হয়েছিল, আমি খুব কাজের লোক। এই ধারণাটা জন্মালেই মনে হয়, আমি অভ্যন্ত দরকারি, আমাকে না হলে চলে না। মান্থকে বিনা মাইনের খাটিয়ে নেবার জন্তে প্রকৃতির হাতে যে-সমস্ত উপায় আছে এই অহংকারটা সকলের সেরা। টাকা নিয়ে যারা কাজ করে ভারা সেই টাকার পরিমাণেই কাজ করে, সেটা একটা বাধা

বাতায়নিকের পত্র

পরিমাণ; কাজেই তাদের ছুটি মেলে, বরাদ ছুটির বেশি কাজ করাকে তারা লোকসান ব'লে গণ্য করে। কিন্তু অহংকারের তাগিদে যারা কাজ করে তাদের আর ছুটি নেই; লোকসানকেও তারা লোকসান জ্ঞান করে না।

খামাকে নইলে চলে না, এই কথা মনে করে এত দিন ভারি ব্যক্ত হয়ে কাজ করা গেছে, চোধের পলক ফেলতে সাহস হয় নি। ভাজার বলেছে, 'এইখানেই বাস্ করো, একটু খামো।' আমি বলেছি, 'আমি থামলে চলে কই ?' ঠিক এমন সময়ে চাকা ভেঙে আমার রথ এই জানলাটার সামনে এসে থামল। এখানে দীড়িয়ে অনেক দিন পরে ঐ মহাকাশের দিকে তাকালুম। সেখানে দেখি মহাকালের রথযাঞায় লক্ষ লক্ষ অগ্নিচক্র গৃরতে ঘূরতে চলেছে; না উড়ছে ধুলো, না উঠছে শন্ধ, না পথের গায়ে একটুও চিক্ষ পড়ছে। ঐ রবের চলার সঙ্গে বাধা হয়ে বিশ্বের সমস্ত চলা অহরহ চলেছে। এক যুহুর্তে আমার খেন চটক ভেঙে গেল। মনে হল স্পষ্ট দেখতে পেলুম, আমাকে না হলেও চলে। কালের ঐ নিংশন্দ রথচক্র কারো অভাবে, কারো শৈথিল্যে, কোখাও এক ভিল বা এক পল বেংধ যাবে, এনন লক্ষণ তো দেখি নে। 'আমি-নইলে-চলে-না'র দেশ থেকে 'আমি-নইলে-চলে'র দেশে ধাঁ করে এসে পৌচেছি, কেবলমাত্র ঐ ভেম্বের থেকে এই জানলার ধারটুকুতে এসে।

কিন্তু কথাটাকে এত সহজে মেনে নিতে পারব না। মুখে যদি বা মানি, মন মানে না। আমি থাকলেও যা আমি গেলেও তা, এইটেই যদি সতা হবে তবে আমার অহংকার এক মুহূর্তের অক্তেও বিশ্বে কোথাও স্থান পেলে কী করে ? তার টি কৈ থাকবার জোর কিসের উপরে ? দেশকাল ফুড়ে আয়োজনের তো অস্তু নেই, তবু এত এখর্থের মধ্যে আমাকে কেউ বরখান্ত করতে পারলে না। আমাকে না হলে

চলে ना তার প্রত্যক প্রমাণ এই যে আমি আছি।

আমি যে আছি সেই থাকার মৃলাই হচ্ছে অহংকার। এই মৃল্য যত কণ নিজের মধ্যে পাছি তত কন নিজেকে টি কিয়ে রাখবার সমস্ত দায়, সমস্ত হংখ অনবরত বহন করে চলেছি। সেইজ্ল বৌদ্ধরা বলেছে, এই অহংকারটাকে বিসর্জন করলেই টি কৈ থাকার মৃল মেরে দেওয়া হয়, কেননা তখন আর টি কৈ থাকার মজুরি পোষায় না।

ষাই হোক, এই মৃল্য তো কোনো-একটা ভাণ্ডার পেকে জোগানো হয়েছে। অর্থাৎ আমি থাকি এরই গরজ কোনো-এক জারগার আছে; সেই গরজ অমুসারেই আমাকে মূল্য দেওয়া হয়েছে। আমি পাকি এই ইচ্ছার আমুচর্য সমস্ত বিশ্ব করছে, বিশ্বের সমস্ত অণুপরমাণু। সেই পরম-ইচ্ছার গৌরবই আমার অহংকারে বিকশিত। সেই ইচ্ছার গৌরবই অলিফ্স আমি বিশের কিছুর চেয়েই পরিমাণ ও মূল্যে কম নই।

এই ইচ্ছাকে মানুষ ছই রকম ভাবে দেখেছে। কেউ বলেছে এ হচ্ছে শক্তিময়ের খেয়াল, কেউ বলেছে এ হচ্ছে আনন্দময়ের আনন্দ। আর যারা বলেছে এ হচ্ছে মায়া অর্থাৎ যা নেই ভারই থাকা, ভাদের কথা ছেড়ে দিলুম।

আমার থাকাট। শক্তির প্রকাশ না প্রীতির প্রকাশ, এইটে যে যেমন মনে করে সে সেই ভাবে জীবনের লক্ষ্যকে স্থির করে। শক্তিতে আমাদের যে বৃল্য দের তার এক চেহারা, আর প্রীতিতে আমাদের যে মূল্য দের তার চেহারা সম্পূর্ণ আলানা। শক্তির জগতে আমার অহংকারের যে দিকে গতি প্রীতির জগতে আমার অহংকারের গতি ঠিক তার উল্টো দিকে।

শক্তিকে মাপা যায়; ভার সংখ্যা, ভার ওজন, ভার বেগ সমস্তেরই আয়তন গণিতের অঙ্কের মধ্যে ধরা পড়ে। ভাই যারা শক্তিকেই চরম

বাভায়নিকের পত্র

ব'লে জানে তারা আয়তনে বড়ো হতে চায়। টাকার সংখ্যা, লোকের সংখ্যা, উপকরণের সংখ্যা, সমস্তকেই তারা কেবল বছগুণিত করতে থাকে।

এই অন্তেই সিদ্ধিলাভের কামনায় এরা অন্তের অর্থ, অন্তের প্রাণ, অন্তের অধিকারকে বলি দেয়। শক্তিপুজার প্রধান অঙ্গ বলিদান। সেই বলির রক্তে পৃথিবী ভেসে যাছে।

বস্ততন্ত্রের প্রধান লক্ষণই হচ্ছে তার বাফ প্রকাশের পরিমাপ্যতা—
অর্থাৎ তার সসীমতা। মান্তবের ইতিহাসে যত-কিছু দেওয়ানি এবং
ফৌজনারি মামলা তার অধিকাংশই এই সীমানার চৌহদ্দি নিয়ে।
পরিমাণের দিকে নিজের সীমানা অত্যন্ত বাড়াতে গেলেই পরিমাণের
দিকে অন্তের সীমানা কাড়তে হয়। অতএব শক্তির অহংকার যেহেত্
আয়তন-বিভারেরই অহংকার সেইজন্তে এই দিকে দাড়িয়ে খুব লখা
দ্রবীন কবলেও লড়াইয়ের রক্তসমুদ্র পেরিয়ে শান্তির কৃল কোবাও
দেখতে পাওয়া যায় না।

কিন্ধ এই-যে বস্তুতান্ত্ৰিক বিশ্ব, এই-যে শক্তির ক্ষেত্র, এর আন্নতনের অন্ধণ্ডলো যোগ দিতে দিতে হঠাৎ এক জারগায় দেখি তেরিজ্ঞটা একটানা বেড়ে চলবার দিকেই ছুটছে না। বেড়ে চলবার তত্ত্বের মধ্যে হঠাৎ উচোট খেয়ে দেখা যায় অ্যমার তত্ত্ব পথ আগলে। দেখি কেবলই গতি নয়, যতিও আছে। ছন্দের এই অমোঘ নিয়মকে শক্তি যখন আন্ধ অহংকারে অভিক্রম করতে যায় তথনি ভার আত্মনাত ঘটে। মানুবের ইভিহাসে এইরকম বার বার দেখা যাছে। সেইজন্তে মানুব বলেছে: অভি দর্শে হভা লক্ষা। সেইজন্তে ব্যাবিলনের অভ্যুদ্ধত গৌধচুড়ার পতনবার্তা এখনো মানুব ক্ষরণ করে।

তবেই দেখছি, শক্তিতন্ত, যার বাছপ্রকাশ আয়তনে, সেটাই চরম তত্ত এবং পরম তত্ত্ব নর। বিশের তাল মেলাবার বেলায় আপনাকে তার

পানিয়ে দিতে হয়। সেই সংযমের সিংহ্লারই হচ্ছে কল্যাণের সিংহ্লার। এই কল্যাণের মূল্য আয়তন নিয়ে নয়, বহুলতা নিয়ে নয়। যে এঁকে অস্তরে জেনেছে সে ছিল্ল কন্থায় লজ্জা পায় না, সে রাজমুক্ট ধুলোয় লুটিয়ে দিয়ে পথে বেরিয়ে পড়তে পারে।

শক্তিতত্ত্ব থেকে স্থানতত্ত্ব এসে পৌছিয়েই বুঝতে পারি, ভূল জায়গায় এত দিন এত নৈবেল্প জুগিয়েছি। বলির পশুর রক্তে যে শক্তি ফুলে উঠল সে কেবল ফেটে মরবার জন্মেই। তার পিছনে যতই সৈশু, যতই কামান লাগাই-না কেন, রণতরীর পরিধি যতই বৃদ্ধির দিকে নিয়ে চলি, লুঠের ভাগকে যতই বিপুল করে ভূলতে থাকি, অঙ্কের জ্লোরে মিধ্যাকে সত্য করা যাবে না, শেষকালে ঐ অতি বড়ো অঙ্কেরই চাপে নিজের বস্তার নীচে নিজে গুড়িয়ে মরতে হবে।

যাজবল্ধ্য যখন জিনিসপত্র বুঝিয়ে-স্থানিয়ে দিয়ে এই অন্ধ-ক্ষার রাজ্যে মৈত্রেয়ীকে প্রতিষ্ঠিত করে বিদায় নিচ্ছিলেন, তথনই মৈত্রেয়ী বলেছিলেন, যেনাহং নামৃতা স্থাম্ কিমহং তেন কুর্যাম্! বহু, বহু, বহু— সব বহুকে জুড়েও, অঙ্কের পর অন্ধ যোগ ক'রে ক'রেও তবু তো অমৃতে গিয়ে পৌছনো যায় না। শব্দকে কেবলই অত্যন্ত বাড়িয়ে দিয়ে এবং চড়িয়ে দিয়ে যে জিনিসটা পাওয়া যায় সেটা হল হংকার; আর শব্দকে স্বর দিয়ে, লয় দিয়ে, সংযত সম্পূর্ণতা দান করলে যে জিনিসটা পাওয়া যায় সেইটেই হল সংগীত। ঐ হংকারটা হল শক্তি, এর পরিমাণ পাওয়া যায়; আর সংগীতটা হল অমৃত, হাতে বহুরে ওকে কোষাও মাপবার জো নেই।

এই অমৃতের ক্ষেত্রে মান্থবের অহংকারের স্রোত নিজের উণ্টো দিকে, উংসর্জনের দিকে। মান্থব আপনার দিকে কেবলই সমস্তকে টানতে টানতে প্রকাণ্ডতা লাভ করে, কিন্তু আপনাকে সমস্তর দিকে উৎসর্গ করতে করতে সে সামগ্রস্থ লাভ করে। এই সামগ্রস্থেই

বাভায়নিকের পত্র

শাস্তি। কোনো বাহ্ন ব্যবস্থাকে বিস্তীর্ণতর করার বারা, শক্তিমানের সঙ্গে শক্তিমানকে জোড়া দিয়ে পুঞ্জীভূত করার বারা, কথনোই সেই শাস্তি পাওয়া যাবে না যে শাস্তি সত্যে প্রতিষ্ঠিত, যে শাস্তি অলোভে, যে শাস্তি ক্যায়।

প্রশ্ন ত্রের স্থার সন্তার পর্যস্কাটি কোর সভার মধ্যে। শক্তিময়ের শক্তিতে না আনন্দময়ের আনন্দে?

শক্তিকেই যদি সেই সত্য ব'লে বরণ করি তা হলে বিরোধকেও চরম ও চিরস্তন ব'লে মানতেই হবে। যুরোপের অনেক আধুনিক লেখক সেই কথাই স্পধাপুর্বক প্রচার করছেন। তাঁরা বলছেন, শাস্তির ধর্ম. প্রেমের ধর্ম, ত্র্বলের আত্মরক্ষা করবার ক্রত্রিম তুর্গ; বিশ্বের বিধান এই তুর্গকে থাতির করে না, শেষ পর্যন্ত শক্তিরই করে হয়— অতএব তীরু ধর্মভাবুকের দল যাকে অধর্ম ব'লে নিক্ষা করে, সেই অধর্মই কৃতার্থতার দিকে মানুষকে নিয়ে যায়।

অন্ত দল সে কথা সম্পূর্ণ অস্থীকার করে না; সমস্ত মেনে নিয়েই তারা বলে—

> অধর্মেণৈধতে তাবৎ ততো ভদ্রাণি পশ্যতি। ততঃ সপত্মান্ অয়তি সমূলস্ত বিনশ্রতি।

ঐশর্থগর্বেও মামুষের মন বাহিরের দিকে বিক্লিপ্ত হয়, আবার দারিদ্রোর ছঃথে ও অপমানেও মামুষের সমস্ত লোলুপ প্রবৃত্তি বাইরের দিকে ঝুঁকে পড়ে। এই ছই অবস্থাতেই মামুষ সকল দেবতার উপরে সেই শক্তিকে আসন দিতে লজ্জিত হয় না, যে কুর শক্তির দক্ষিণহন্তে অভ্যায়ের এবং বামহন্তে ছলনার অন্ত । প্রতাপত্মরামন্ত ছুরোপের পলিটিক্স্ এই শক্তিপুজা। এইজন্ত সেখানকার ভিপ্লোমেসি কেবলই প্রকাশতাকে এড়িয়ে চলতে চায়; অর্থাৎ সেখানে শক্তি যে মুর্তি ধারণ করেছে সে সম্পূর্ণ উলঙ্গ মুর্তি নয়; কিছ তার লেলিছান রসনার উলঙ্গতা

কোপাও ঢাকা নেই। ঐ দেখো পীস্-কন্ফারেন্সের সভাক্তেত্ত তা লক্লক্ করছে।

অপর পক্ষে একদা আমাদের দেশে রাষ্ট্রীয় উচ্ছুখলতার সময় ভীত পীড়িত প্রজা আপন কবিদের মুখ দিয়ে শক্তিরই শুবগান করিয়েছে। কবিকয়ণচন্ত্রী, অয়দামজল, মনসার ভাসান, প্রকৃতপক্ষে অধর্মেরই জয়গান। সেই কাব্যে অয়ায়কারিণী ছলনাময়ী নির্চ্র শক্তির হাতে শিব পরাভ্ত। অপচ অডুত ব্যাপার এই যে, এই পরাভবগানকেই মঙ্গলগান নাম দেওয়া হল।

আজকের দিনেও দেখি আমাদের দেশে সেই হাওয়া উঠেছে।
আমরা ধর্মের নাম করেই এক দল লোক বলছি, ধর্মভীরুতাও ভীরুতা।
বলছি, যারা বীর, অস্তায় তাদের পক্ষে অস্তায় নয়। তাই দেখি
সাংসারিকতায় যারা রুতার এবং সাংসারিকতায় যারা অকুতার্থ, ছুইয়েরই
অব এক আয়গায় এসে মেলে। ধর্মকে উভয়েই বাধা বলে আনে, সেই
বাধা গায়ের জোরে অভিক্রম করতে চায়। কিন্তু গায়ের জোরই
পৃথিবীতে সব চেয়ে বড়ো জোর নয়।

এই বড়ো হৃ:সময়ে কামনা করি, শক্তির বীভৎসতাকে কিছুতে আমরা ভয়ও করব না, ভক্তিও করব না; তাকে উপেক্ষা করব, অবজ্ঞা করব। সেই মনুষ্যান্ত্রের অভিমান আমাদের হোক, যে অভিমানে মানুষ এই সূল বস্তুজগতের প্রবল প্রকাণ্ডতার মাঝখানে দাঁড়িয়ে মাথা ভূলে বলতে পারে, আমার সম্পদ এখানে নয়; বলতে পারে, শৃথালে আমি বন্দী হই নে, আঘাতে আমি আহত হই নে, মৃত্যুতে আমি মরি নে; বলতে পারে, যেনাহং নামৃতঃ ভাম্ কিমহং তেন কুর্যাম্। আমাদের পিতামহেরা বলে গেছেন: এতদমৃতমভয়ং শান্ত উপাসীত। যিনি অমৃত, যিনি অভয় তাঁকে উপাসনা করে শান্ত হও। তাঁদের উপদেশকে আমরা মাথায় লই, এবং মৃত্যু ও সকল ভয়ের অতীত যে শান্তি সেই শান্তিতে প্রতিষ্ঠা লাভ করি।

বাভায়নিকের পত্র

2

কারো উঠোন চবে দেওয়া আমাদের ভাষার চুড়ান্ত শান্তি বলে গণ্য।
কেননা উঠোনে মাহ্ম্য সেই বৃহৎ সম্পদকে আপন করেছে ষেটাকে বলে
কাঁক। বাহিরে এই কাঁক ছুর্লভ নর, কিন্তু সেই বাহিরের জিনিসকে
ভিতরের ক'রে, আপনার ক'রে না তুললে তাকে পেয়েও না পাওয়া
হয়। উঠোনে ফাকটাকে মাহ্ম্য নিজের ঘরের জিনিস করে তোলে;
ঐথানে স্থেরে আলো তার ঘরের আপনার আলো হয়ে দেখা দেয়,
ঐথানে তার ঘরের ছেলে আকাশের চাদকে হাততালি দিয়ে তাকে।
কাজেই উঠোনকেও যদি বেকার না রেখে তাকে ফসলের থেত বানিয়ে
তোলা যায় তা হলে যে বিশ্ব মাহ্ম্যের আপন ঘরের বিশ্ব, তারই বাসা
ভেঙে দেওয়া হয়।

সত্যকার ধনী ও দরিদ্রের মধ্যে প্রভেদ এই বে, ধনী এই কাঁকটাকে বড়ো করে বাথতে পারে। যে-সমস্ত জিনিসপত্র দিয়ে ধনী আপনার ঘর বোঝাই করে তার দাম পূব বেশি, কিন্তু যে কাঁকটা দিয়ে তার আঙিনা হয় প্রশস্ত, তার বাগান হয় বিস্তীর্ণ সেইটেই হচ্ছে সব চেয়ে দামি। সদাগরের দোকানঘর জিনিসপত্রে ঠাসা; সেখানে কাঁক রাখবার শক্তি তার নেই। দোকানে সদাগর রূপণ, সেখানে লক্ষপতি হয়েও সে দরিদ্র। কিন্তু সেই সদাগরের বাসের বাড়িতে ঘরগুলো লম্বায় চওড়ায় উচুতে সকল দিকেই প্রয়োজনকে ধিকার ক'রে কাঁকটাকেই বেশি আদর দিয়েছে, আর বাগানের তো কথাই নেই। এইখানেই সদাগর ধনী।

শুধু কেবল জায়গার ফাকা নয়, সময়ের ফাকাও বহুমূল্য। ধনী তার অনেক টাকা দিয়ে এই অবকাশ কিনতে পার। তার ঐশর্যের প্রধান লক্ষণ এই যে, লম্বা লম্বা সময় সে ফেলে রাখতে পারে। হঠাৎ কেউ তার সময়ের উঠোন চমতে পারে না।

আর-একটা কাঁকা যেটা সব চেয়ে দামি সে হচ্ছে মনের কাঁকা।
বা-কিছু নিয়ে মন চিন্তা করতে বাধ্য হয়, কিছুতেই ছাড় পায় না,
তাকেই বলে ছুল্ডিন্তা। গরিবের চিন্তা, হতভাগার চিন্তা মনকে একেবারে
আঁকড়ে থাকে; অশবগাছের শিকড়গুলো ভাঙা মন্দিরকে যে রকম
আঁকড়ে ধরে। ছ:খ জিনিসটা আমাদের চৈতন্তের ফাঁক বুজিয়ে দেয়।
শরীরের ক্ষম্থ অবস্থা তাকেই বলে যেটা হচ্ছে শারীর চৈতন্তের ফাঁকা
ময়দান। কিন্তু হোক দেখি বাঁ পায়ের ক'ড়ে আঙুলের গাঁটের প্রান্তে
বাতের বেদনা, অমনি শারীর চৈতন্তের ফাঁক বুজে যায়, সমন্ত চৈতন্ত

স্থানের ফাঁকা না পেলে যেমন ভালো করে বাঁচা যায় না, তেমনি সময়ের ফাঁকা, চিস্তার ফাঁকা না পেলে মন বড়ো করে ভাবতে পারে না; সত্য তার কাছে ছোটো হয়ে যায়। সেই ছোটো-সত্য মিট্মিটে আলোর মতো ভয়কে প্রশ্রেষ দেয়, দৃষ্টিকে প্রভারণা করে এবং মান্থবের ব্যবহারের ক্ষেত্রকৈ সংকীর্ণ করে রাখে।

আজকের দিনে ভারতবাসী হয়ে নিজের সকলের চেয়ে বড়ো দৌর্ভাগ্য অহভব করছি এই জানলার কাছটাতে এসে। আমাদের ভাগ্যে জানলার ফাঁক গেছে বুজে; জীবনের এ কোণে, ও কোণে একট্র-আধটু যা ছুটির পোড়ো জায়গা ছিল তা কাটাগাছে ভরে গেল।

প্রাচীন ভারতে একটা জিনিস প্রচুর ছিল, সেটাকে আমরা খুব মহামূল্য বলেই জানি, সে হচ্ছে সভ্যকে খুব বড়ো করে ধ্যান করবার এবং উপলব্ধি করবার মতো মনের উদার অবকাশ। ভারতবর্ষ এক দিন স্থ্য এবং হৃংখ, লাভ এবং অলাভের উপরকার সব চেম্নে বড়ো কাঁকায় দাঁড়িয়ে সেই সভ্যকেই স্থাপন্ত করে দেখছিল, যং লব্ধনা চাপরং লাভং মন্ততে নাধিকং ভতঃ।

किन्न व्याक्षरकत्र मिर्ग वात्रव्यर्थित राष्ट्रे शास्त्र युद्धा व्यवकामित नहे

বাতায়নিকের পত্র

হল। আজকের দিনে ভারতবাসীর আর ছুটি নেই; তার মনের অস্তরতম ছুটির উৎসটি শুকিয়ে শুকিয়ে মরে গেল, বেদনায় তার সমস্থ চৈতগ্রকে আছের করে দিরেছে।

তাই আজ যখনই এই বাতায়নে এসে বসেছি অমনি দেখি, আমাদের আঙিনা থেকে উঠছে হ্র্লের কায়া; সেই হ্র্লের কায়ায় আমাদের উত্তর থেকে দক্ষিণ পূর্ব থেকে পশ্চিম, সমস্ত অবকাশ একেবারে পরিপূর্ণ। আজকের দিনে হ্র্লে যত ভয়ংকর হ্র্লে, জগতের ইতিহাসে এমন আর কোনো দিনই ছিল না।

বিজ্ঞানের ক্বপায় বাহুবল আজ নিদারুণ কুর্জয়। পালোয়ান আজ ত্বল স্থল আকাশ সর্বত্রই সিংহনাদে তাল ঠুকে বেড়াচেছ। আকাশ এক দিন মানুবের হিংলাকে আপন সীমানায় চুকতে দেয় নি । মানুবের কুরতা আজ সেই শ্রুকেও অধিকার করেছে। সমুদ্রের তলা থেকে আরম্ভ করে বায়ুমগুলের প্রান্ত পর্যন্ত সব জায়গাতেই বিদীর্ণ হৃদয়ের রক্ত বয়ে চলল।

এমন অবস্থায়, যথন সবলের সঙ্গে তুর্বলের বৈষম্য এত অত্যন্ত বেশি তথনো যদি দেখা যার, এত বড়ো বলবানেরও ভীরুতা ঘূচল না, তা হলে সেই ভীরুতার কারণটা ভালো করে ভেবে দেখতে হবে। ভেবে দেখা দরকার এইজন্তে যে, যুরোপে আজকের যে শান্তিস্থাপনের চেষ্টা হচ্ছে সেই শান্তি টে ক্সই হবে কি না সেটা বিচার করতে হলে এই সমস্ত বলিষ্ঠদের মনস্তত্ত্ব বুঝে দেখা চাই।

যুদ্ধ যখন প্রবল বেগে চলছিল, যখন ছারের আশ্বা জিতের আশার চেয়ে কম ছিল না, তখন সেই দিধাগ্রস্ত অবস্থায় সন্ধির শঠভঙ্গ, অস্তাদি-প্রয়োগে বিধিবিরুদ্ধতা, নিরস্ত্র শক্রদের প্রতি বায়ুর্থ থেকে অস্তবর্ষণ প্রভৃতি কাওকে এ পক 'ক্রাইম' অর্থাৎ অপরাধ বলে অভিযোগ করে-ছিলেন। মাহ্র্য ক্রাইম কখন করে ? যখন সে ধর্মের গরজের চেম্বে

আর-কোনো একটা গরজকে প্রবল বলে মনে করে। যুদ্ধে জয়লাভের গরজটাকেই অর্মনি স্থায়াচরণের গরজের চেয়ে আশু গুরুতর বোধ করেছিল। এ পক্ষ যথন সেজত্যে আঘাত পাচ্ছিলেন তথন বলছিলেন, জর্মনির পক্ষে কাজটা একেবারেই ভালো হচ্ছে না; ছোক-না যুদ্ধ, তাই বলে কি আইন নেই, ধর্ম নেই ? আর, যথন বিজিত প্রদেশে অর্মনি লঘু পাপে গুরু দণ্ড দিতে দয়াবোধ করে নি তথন আশু প্রয়োজনের দিক থেকে জর্মনির পক্ষে তার কারণ নিশ্চয়ই ছিল। কিন্তু এ পক্ষে বলেছিল, আশু প্রয়োজন-সাধনাটাই কি মামুবের চরম মহুয়ন্ত্ব ? সভ্যতার কি একটা দায়িত্ব নেই ? সেই দায়ত্বরক্ষার চেয়ে যারা উপস্থিত কাজ-উদ্ধারকেই বড়ো মনে করে তারা কি সভাসমাজে স্থান পেতে পারে ?

ধর্মের দিক থেকে এ-সকল কথার একেবারে জবাব নেই। শুনে আমাদের মনে হয়েছিল, যুদ্ধের অগ্নিতে এবার বুঝি কলিযুগের সমস্ত পাপ দগ্ধ হয়ে গেল; এত দিন পরে মান্ত্রের দশা ফিরবে, কেননা তার মন ফিরছে। মন না ফিরলে কেবলমাত্র অবস্থা বা বাবস্থা -পরিবর্তনে কখনোই কোনো ফল পাওয়া যায় না।

কিন্তু আমাদের তথন হিসাবে একটা ভূল হয়েছিল। আমাদের দেশে শাশানবৈরাগ্যকে লোকে সন্দেহের চক্ষে দেখে। তার কারণ, প্রিয়ক্তনের আশু মৃত্যুতে মন যথন ত্বল তখনকার বৈরাগ্যে বিশ্বাস নেই, সবল মনের বৈরাগ্যই বৈরাগ্য। তেমনি যুদ্ধফলের অনিশ্চয়তায় মন যথন ত্বল তখনকার ধর্মবাক্যকে বোলো আনা বিশ্বাস করা যায় না।

যুদ্ধে এ পক্ষের জিত হল। এখন কী করলে পৃথিবীতে শাস্তির ভিত পাকা হয় তাই নিয়ে পঞ্চায়েত বলে গেছে। কথা-কাটাকাটি, প্রস্তাব-চালাচালি, রাজ্য-ভাগাভাগি চলছে। এই কারখানাঘর থেকে কী আকার এবং কী শক্তি নিয়ে কোন্ যন্ত্র বেরবে তা ঠিক বুঝতে পারছি নে।

বাতায়নিকের পত্র

আর-কিছু না বৃঝি একটা কথা ক্রমেই স্পষ্ট হয়ে আগছে; এত আগুনেও কলিযুগের অন্ত্যেষ্টিসৎকার হল না, মন-বদল হয় নি। কলিযুগের সেই সিংহাসনটা আল কোন্থানে ? লোভের উপরে। পেতে
চাই, রাখতে চাই, কোনোমতেই কোথাও একটুও কিছু ছাড়তে চাই
নে। সেইজন্তেই অভিবড়ো বলিষ্ঠের তয়, কী জানি যদি দৈবাৎ
এখন বা অদুর কালেও একটুখানি লোকসান হয়। যেখানে লোকসান
কোনোমতেই সইবে না সেখানে আইনের দোহাই, ধর্মের দোহাই
মিথ্যে। সেখানে অস্তায়কে কর্তব্য ব'লে আপনাকে ভোলাতে একটুও
সময় লাগে না; সেখানে দোবের বিচার দোবের পরিমাণের দিক থেকে
নয়, আইনের দিক থেকে নয়, নিজের লোভের দিক থেকে।

এই ভরংকর লোভের দিনে সবলকে সবল যখন ভর করতে থাকে, তখন উচ্চতানের ধর্মের দোহাই দিয়ে রফারফির কথা হতে থাকে; তখন আইনের মধ্যে কোনো ছিত্র কোনো জারগার যাতে একটুও না থাকতে পারে সেই চেষ্টা হয়। কিন্তু ত্র্বলকে যখন সেই সময়েই সেই লোভেরই তাড়ার সবল এতটুকু পরিমাণেও ভর করে, তখন শাসনের উত্তেজনা কোনো দোহাই মানতে চার না; তখন আইনের মধ্যে বড়ো বড়ো ছিত্র খনন করা হয়।

প্রবলের ভয়ে এবং ছ্বলের ভয়ে মন্ত একটা ভফাভ আছে। ছ্বল ভয় পায় সে বাধা পাবে, আর প্রবল ভয় পায় সে বাধা পাবে। সকলেই জানেন, কিছুকাল থেকে পাশ্চাভা দেশে Yellow Peril বা পীতসংকট নাম নিয়ে একটা আভয় দেখা দিয়েছে। এই আভয়ের মূল কথাটা এই য়ে, প্রবলের লোভ সন্দেহ করছে পাছে আর কোথাও থেকে সেই লোভ কোনো-এক দিন প্রবল বাধা পায়। বাধা পাবার সম্ভাবনা কিসে ? য়ি আর-কোনো জাভি এই প্রবলদেরই মভো সকল বিষয়ে বড়ো হয়ে ওঠে। ভাদের মভো বড়ো হওয়া একটা সংকট— এইটে নিবারণ

করবার জত্যে অস্তদের চেপে ছোটো করে রাখা দবকার। সমস্ত পাশ্চাত্য জগৎ আজ এই নীতি নিয়ে বাকি জগতের সঙ্গে কারবার করছে। এই নীতিতে নিরম্ভর যে ভয় জাগিয়ে রাখে তাতে শাস্তি টিকতে পারে না।

জগদ্বিখ্যাত ফরাসী লেখক আনাতোল ফ্রাঁস লিখছেন—

It does not, however, appear at first sight that the Yellow Peril at which European economists are terrified is to be compared to the White Peril suspended over Asia. The Chinese do not send to Paris, Berlin, and St. Petersburg missionaries to teach Christians the Fung-Chui, and sow disorder in European affairs. A Chinese expenditionary force did not land in Quiberon Bay to demand of the Government of the Republic extra-territoriality, i. e., the right of trying by a tribunal of mandarins cases pending between Chinese and Europeans. Admiral Togo did not come and bombard Brest Roads with a dozen battleships, for the purpose of improving Japanese trade in France..... He did not burn Verseilles in the name of a higher civilisation. The army of the Great Asiatic Powers did not carry away to Tokio and Peking the Louvre paintings and the silver service of the Elysee.

No indeed! Monsieur Edmond Thery himself admits that the yellow men are not sufficiently civilised to imitate the whites so faithfully. Nor does he foresee that they will ever rise to so high a moral culture. How could it be possible for them to possess our virtues? They are not Christians. But men entitled to speak consider that the Yellow Peril is none the less to be dreaded for all that it is economic. Japan and China, organised by Japan, threaten us in all the markets of Europe, with a competition fright-

বাতায়নিকের পত্র

ful, monstrous, enormous, and deformed, the mere idea of which causes the hair of the economists to stand on end.

অর্থাৎ লোভ কোথাও বাধা পেতে চায় না। সেইজ্বন্তে যে নীচে আছে তাকে চিরকালই নীচে চেপে রাখতে চায়, এবং যে প্রবল হয়ে ওঠবার লক্ষণ দেখাছে তাকে অকল্যাণ বলেই গণ্য করে।

যত কণ এই লোভ আছে তত কণ জগতে শান্তি আনে পীস্ক্লারেন্দের এমন সাধ্য নেই। কলে অনেক জিনিস তৈরি হচ্ছে কিন্তু কলে-তৈরি শান্তিকে বিশ্বাস করি নে। কমিক-ধনিকদের মধ্যে যে অশান্তি তারও কারণ লোভ, এক রাজ্য - অন্ত রাজ্যের মধ্যে যে অশান্তি তারও কারণ লোভ, আবার রাজ্যাও প্রজার মধ্যে যে অশান্তি তারও কারণ লোভ, আবার রাজ্যাও প্রজার মধ্যে যে অশান্তি তারও কারণ লোভ। তাই শেষকালে দাঁড়ায় এই, লোভে পাপ, পাপে মৃত্যু।

এমন অবস্থায় সবলপন্ধীয়েরা যথন আপোষনিপান্তির যোগে শান্তিকামনা করে তথন তারা নিজেদের পারে পাকা বাঁধ বেঁধে এবং অন্তদের
পারে পাকা খাদ কেটে লোভের শ্রোভটাকে নিজেদের দিক থেকে অন্ত
দিকে সরিয়ে দেয়। বস্থাজরাকে এমন জারগায় পরস্পর বখরা করে
নিতে চায় যে জারগাটা যথেষ্ট নরম, অনায়াসেই যেখানে দাত বসে,
এবং ছিঁড়তে গিয়ে নথে যদি আঘাত লাগে নথ তার শোধ তুলতে
পারে। কিন্ত জোর করে বলা যায় এমন ভাবে চিয়দিন চলবে না;
ভাগ সমান হবে না, লোভের কুধা সব জায়গায় সমান করে ভরবে না,
পাপের ছিদ্র নানা জায়গায় থেকে যাবে; হঠাৎ এক দিন ভরাড়বি
হবে।

বিধাতা আমাদের একটা দিকে নিশ্চিস্ত করেছেন, ঐ বলের দিকটার আমাদের রাস্তা একেবারে শেষ ফাঁকটুকু পর্যস্ত বন্ধ; যে আশা রাস্তা না পেলেও উড়ে চলে সেই আশাবও ভানা কাটা পড়েছে। আমাদের জন্তে কেবল একটা বড়ো পথ আছে, সে হচ্ছে ছ্:থের উপরে যাবার

পথ। রিপু আমাদের বাইরে থেকে আঘাত দিছে দিক, তাকে আমরা অন্তরে আশ্রয় দেব না। যারা মারে তাদের চেয়ে আমরা যখন বড়ো হতে পারব তখন আমাদের মার-খাওয়া ধন্ত হবে। সেই বড়ো হবার পথ না লড়াই করা, না দরখান্ত লেখা।

অপ ধীরা অমৃতত্বং বিদিত্বা ধ্রুবম্ অধ্রুবেধিহ ন প্রার্থয়ন্তে॥

9

অত্যের সঙ্গে কথা কওয়া এবং অত্যের সঙ্গে চিঠি লেখার ব্যবস্থা আছে সংসার জুড়ে। আর নিজের সঙ্গে পেটা কেবল এই বাভায়ন-টুকুতে। কিন্তু নিজের মধ্যে কার সঙ্গে কে কথা কয় ?

একটা উপমা দেওয়া যাক। মাটির জ্বলের থানিকটা স্থা হয়ে মেঘ হয়ে আকাশে উড়ে যায়। সেথান থেকে সেই নির্মল দ্রত্বের সংগীত এবং উদার বেগ নিয়ে ধারায় ধারায় প্নবার সে মাটির জ্বলে ফিরে আগতে থাকে।

এই জলেরই মতো মামুষের মনের একটা ভাগ সংসারের উর্ধের আকাশের দিকে উড়ে যায়, সেই আকাশচারী মনটা মাঝে মাঝে আবার যদি এই ভূচর মনের সঙ্গে মিলতে পারে তবে তাতেই পূর্ণতা ঘটে।

কিন্তু এমন-সকল মক্সপ্রেদেশ আছে যেখানে প্রায় সমস্ত বংসর ধরেই অনার্টি। বাল্প হয়ে বা উপরে চলে গেল বর্ষণ হয়ে তা আর ধরায় নেমে আসে না। নীচের মনের সঙ্গে উপরের মনের আর মিলন হয় না। সেখানে খাল-কাটা জলে কাজ চলে যায়; কিন্তু সেখানে আকাশের সঙ্গে মাটির শুভসংগ্যের সংগীত এবং শুভাধ্বনি কোথায় ৽ সেখানে বর্ষণমুখরিত রসের উৎসব হল না। সেখানে মনের মধ্যে চিরবিরছের একটা শুজ্তা রয়ে গেল।

বাতায়নিকের পত্র

এ তো গেল অনাবৃষ্টির কথা। এ ছাড়া মাঝে মাঝে কাদাবৃষ্টি রক্তবৃষ্টি প্রভৃতি নানা উৎপাতের কথা শোনা যায়। আকাশের বিশুদ্ধতা যখন চলে যায়, বাতাস যখন পৃথিবীর নানা আবর্জনায় পূর্ণ হয়ে থাকে, তখনই এইসব কাণ্ড ঘটে। তখন আকাশের বাণীও নির্মল হয়ে পৃথিবীকে পবিত্র করে না। পৃথিবীরই পাপ পৃথিবীতে ফিরে আসতে থাকে।

আজ্বের দিনে সেই ছুর্যোগ ঘটেছে। পৃথিবীর পাপের ধৃলিতে আকাশের বর্ষণও আবিল হয়ে নামছে। নির্মল ধারায় পুণ্যসানের জন্তে আনক দিনের যে প্রতীক্ষা তাও আজ বারে বারে ব্যর্থ হল। মনের মধ্যে কাদা লাগছে এবং রক্তের চিহ্ন এসে পড়ছে; বার বার কত আর মূছব।

রক্তকলম্বিত পৃথিবী থেকে ঐ-যে আজ একটা শান্থির দরবার উঠেছে, উর্ধ্ব-আকাশের নির্মণ নিঃশব্দতা তার বেস্থারকে ধুয়ে দিতে পারছে না।

শান্তি ? শান্তির দরবার সভ্য সভাই কে করতে পারে ? ভাগের জন্মে যে প্রস্তত। ভোগেরই জ্বন্সে, লাভেরই জ্বন্তে যাদের দশ আঙুল অজগর সাপের দশটা লেজের মতো কিল্বিল্ করছে ভারা শান্তি চার বটে, কিন্তু সে কাঁকি দিয়ে, দাম দিয়ে নয়। যে শান্তিতে পৃথিবীর সমন্ত কীরসর বাটি চেটে নিরাপদে খাওয়া যেতে পারে সেই শান্তি।

ত্রগাক্রমে পৃথিবীর এই ক্ষীরসরের বড়ো বড়ো ভাগুগুলো প্রায় আছে ত্বলদের জিল্পায়। এইজন্ত যে ত্যাগন্দীলতায় সত্যকার শাস্তি সেই ত্যাগের ইচ্ছা প্রবলদের মনে কিছুতেই সহজ হতে পারছে না। যেখানে শক্ত পাহারা সেখানে লোভ দমন করতে বেশি চেষ্টা করতে হয় না। সেখানে মাহ্ব সংঘত হয় এবং নিজেকে ধ্ব ভালো ছেলে বলেই মনে করে। কিন্তু আলগা পাহারা যেখানে সেখানে ভয়ও থাকে না, লজ্জাও

চলে যায়। এমন-সব জায়গা আছে যেখানে ভালো ছেলে বলে নিজের পরিচয় দিলে লাভ আছে; কিন্তু চুর্বলের সঙ্গে যেখানে কায়বার সেখানে বেচারা প্রবল পক্ষের ভালো হওয়া সম্পূর্ণ নিঃয়ার্থ ব'লেই যে কত কঠিন তার দৃষ্টাস্তের অভাব নেই। বিখ্যাত ফরাসী লেখক আনাতোল ফ্রাসের লেখা থেকে একটা জায়গা উদ্ধৃত করি। তিনি চীনদেশের সঙ্গে যুরোপের সম্বন্ধ-আলোচনা উপলক্ষে লিখছেন—

In our own times, the Christian acquired the habit of sending jointly or separately into that vast Empire, whenever order was disturbed, soldiers who restored it by means of theft, rape, pillage, murder, and incendiarism, and of proceeding at short intervals with the pacific penetration of the country with rifles and guns. The poorly armed Chinese either defend themselves badly or not at all, and so they are massacred with delightful facility..... In 1901, order having been disturbed at Peking, the troops of the five Great Powers, under the command of a German Field-Marshal, restored it by the customary means. Having in this fashion covered themselves with millitary glory, the five Powers signed one of the innumerable treaties by which they guarantee the integrity of the very China whose provinces they divide among themselves.

পীকিনে যে ভাঙচুর লুটপাট ও উৎপাত হয়েছিল মামুষের ছঃখ এবং অপমানের পক্ষে সে বড়ো কম নয়, কিন্তু সে সম্বন্ধে লজ্জা পাওয়া এবং লজ্জা দেওয়ার পরিমাণ আধুনিক য়ুরোপীয় য়ুদ্ধটিত আলোচনার তুলনায় কতই অণুপরিমাণমাত্র তা সকলেই জানেন। এর থেকে স্পষ্ট দেখা যায়, ভালো হওয়ার যে কঠিন আদর্শ মামুষের মমুয়াত্তকে উর্ধে ধারণ ক'রে রাখে ছ্র্বলের সংসর্গে সেইটে নেমে যায়। মামুষ নিজের অগোচরে নিজের সক্ষে একটা সন্ধিপত্র লেখাপড়া করে নেয়; বলে, ভালোমনার

বাভায়নিকের পত্র

বিচার নিয়ে নিজের সঙ্গে নিজের যে-একটা নিরস্তর লড়াই চলছে অমুকঅমুক চৌহদির মধ্যে সেটাকে যথেষ্ট পরিমাণ টিল দেওয়া যেতে পারে।
ভারতবর্ষে আমরাও এ কাজ করেছি; শুদ্রকে ব্রাহ্মণ এত ছুর্বল করেছিল
যে তার সহস্কে ব্রাহ্মণের না ছিল লজ্জা, না ছিল ভয়। আমাদের
সংহিতাগুলি আলোচনা করলে এ কথা ধরা পড়বে। দেশ জুড়ে আজ
তার যে ফল ফলেছে তা বোঝবার শক্তি পর্যন্ত চলে গেছে, ছুর্গতি এত
গভীর।

যে ছুবল, সবলের পক্ষে সে তেমনি ভয়ংকর, হাভির পক্ষে যেমন চোরাবালি। এই বালি বাধা দিতে পারে না ব'লেই সম্মুখের দিকে অগ্রসর করে না, কেবলই নীচের দিকে টেনে নেয়। শক্তির আয়তন যত প্রকাণ্ড, তার ভার যতই বেশি, তার প্রতি অশক্তির নীচের দিকের টান ততই ভয়ংকর। যে মাটি বাধা দেয় না তাকে পদাঘাত যত জোরেই করবে, পদের পক্ষে ততই বিপদ ঘটবে।

বে জায়গায় হাওয়া হালকা সেই জায়গাই হচ্ছে ঝড়ের কেন্দ্র।
এইজন্তে যুরোপের বড়ো বড়ো ঝড়ের আসল জন্মস্থান এশিয়া, আফ্রিকা।
এখানে বাধা কম, ঐথানে ভায়পরতার যুরোপীয় আদর্শ থাড়া রাথবার
প্রেরণা হুর্বল। এবং আশ্চর্য এই যে, সেই ভায়পরতার আদর্শ যে নেমে
চলেছে, বলদর্পে মামুষ সেটা বুঝতেই পারে না। এইটেই হচ্ছে হুর্গতির
পরাকার্টা।

এই অসাড়তা, এই অন্ধতা এত দূর পর্যন্ত যায় যে, এক-এক সময়ে তার কাও দেখে বড়ো ছংখেও হাসি আসে। ছুরোপের স্ক'ড়িখানা থেকে পোলিটিকাল মদ থেয়ে মাভাল হয়েছে এমন একদল যুবক আমাদের দেশে আছে। তারা নিজেদের মধ্যে খুনোখুনি করে। তাই দেখে অনেকবার এই কথাই ভেবেছি, মাছুষের স্বদেশী পাপের ভো অভাব নেই, এর উপরে যারা বিদেশী পাপের আমদানি করছে তারা

আমাদের কলুবের ভার আরো ছুর্বহ করে তুলছে। এমন সমরে আমাদের বাংলাদেশের ভৃতপূর্ব শাসনকর্তা এই-সমস্ত পোলিটিক্যাল হত্যাকাণ্ড উপলক্ষ্য করে ২লে বসলেন, খুন করা সম্বন্ধ বাংলাদেশের ধর্মবৃদ্ধি যুরোপের থেকে একেবারে স্বতন্ত্র। তিনি বলেন, বাঙালি আনে, খুন করা আর-কিছুই নয়, মাছ্যকে এক লোক থেকে আর-এক লোকে চালান করে দেওয়া মাত্র।' যে পাশ্চাত্যদের কাছে বাঙালি ছাত্র এই-সমস্ত অপকর্ম শিখেছে অবশেষে তাঁদেরই কাছ থেকে এই বিচার! পলিটিক্সের হাটে তাঁরা মাছ্যমের প্রাণ যে কিরকম ভয়ংকর সন্তা করে তুলেছেন, সেটা বোধ হয় অভাাসবশত নিজে তেমন করে দেখেন না, বাইরের লোকে যেমন দেখতে পায়। এই-সব পলিটিক্স্-বিলাসীদের কি কোনো বিশেষ মনস্তত্ব নেই ? তাঁদের সেই মনস্তত্বের শিক্ষাটাই আজ্ব সমস্ত পৃথিবীময় খুন ছড়িয়ে চলেছে, এ কথা তাঁরাও ভূললেন ?

পরা আমাদের থেকে আলাদা, একেবারে ভিতরের দিক থেকে আলাদা, এই কথা যারা বলে তারা এরা-ওরার সম্বন্ধকে গোড়া ঘেঁষে কলুষিত করে। এদের সম্বন্ধ যে নিয়ম ওদের সম্বন্ধ সে নিয়ম চলতেই পারে না ব'লে তারা নিজের ধর্মবৃদ্ধিকে ঠাওা রাখে; অল্লামের মধ্যে, নিষ্ট্রতার মধ্যে যতটুকু চক্লুজ্জা এবং অম্বন্ধি আছে সেটুকু তারা মেরে রাখতে চায়। যত দিন ধরে প্রাচ্যদের সম্বন্ধ পাশ্চাত্যদের সম্বন্ধ হয়েছে তত দিন থেকেই এইসব বৃলির উৎপত্তি। গায়ের জ্লোরে যাদের প্রতি অল্লায় করা সহজ, তাদের সম্বন্ধ অল্লায় করতে পাছে মনের জ্লোরেও কোণাও বাধে, সেইজ্লেক্তে এরা সে রাজ্যাটুকুও সাফ রাখতে চায়।

> >>>> श्रृणोत्म दृष्टिम द्योल প্রতি লক্ষ লোকে '> अःम লোকের পুনের অভিযোগে বিচার হরেছিল। >>>> धृमीत्म বাংলাদেশে প্রতি লক্ষ লোকে '>৮ অংশ লোকের পুনের চার্জে বিচার হরেছিল। হাতের কাছে বই না থাকাতে সম্পূর্ণ তালিকা দিতে পারলাম না।

বাভায়নিকের পত্র

আমি পূর্বেই বলেছি, ছুর্বলের সঙ্গে ব্যবহারে আমাদের বিচারবৃদ্ধি
নই হয়— নিজেদের এক আদর্শে বিচার করি, অক্তদের অক্ত আদর্শে।
নিজেদের ছাত্রেরা যখন গোলমাল করে তখন সেটাকে শ্লেহপূর্বক বলি
যৌবনোচিত চাঞ্চল্য, অক্তদের ছাত্ররাও যখন মাঝে মাঝে অস্থির হরে
ওঠে সেটাকে চোখ রাঙিয়ে বলি নই।মি। পরজাতিবিধেবের লেশমাত্র
লক্ষণে ভয়ংকর রাগ হয় যখন সেটা দেখি ছ্র্বলের তরফে, আর নিজের
তরফে তার সাতগুণ বেশি থাকলেও তার এত রক্মের সংগত কারণ
পাওয়া যায় বে, সেটার প্রতি শ্লেছই জন্মায়। আবার আনাতোল
ফ্রান্সের বারস্থ হচ্ছি। তার কারণ, চিন্ত তার স্বন্ধ, কল্পনা তার দীপ্যমান,
এবং যেটা অসংগত সেটা তার কোত্রকদৃষ্টিতে মূহুর্তে ধরা পড়ে;
পররাজ্যশাসনের বালাই তার কোনো দিন ঘটে নি। চীনেদের কথাই
চল্ছে—

They are polite and ceremonious, but are reproached with cherishing feeble sentiments of affections for Europeans. The grievances we have against them are greatly of the order of those which Mr. Du Chaillu cherished towards his Gorilla. Mr. Du Chaillu, while in a forest, brought down with his rifle the mother of a Gorilla. In its death the brute was still pressing its young to its bosom. He tore it from its embrace, and dragged it with him in a cage across Africa, for the purpose of selling it in Europe. Now, the young animal gave him just cause for complaint. It was unsociable, and actually starved itself to death. "I was powerless," says Mr. Du Chaillu, "to correct its evil nature."

তাই বলছি, সবলের সব চেয়ে বড়ো বিপদ হচ্ছে হুর্বলের কাছে।
ছুর্বল তার ধর্মবৃদ্ধি এমন করে অপহরণ করে যে, সবল তা দেখতেই পার
না, বুঝতেই পারে না। আজকের দিনে এই বিপদটাই পৃথিবীতে সব

চেম্বে বেড়ে উঠছে। কেননা হঠাৎ বাহুবলের অভিবৃদ্ধি ঘটেছে। ছুর্বলকে শাসন করা ক্রমেই নিরতিশয় অবাধ হয়ে আগছে। এই শাসন বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে এতই আটঘাট-বাঁধা যে এর জ্ঞালে যে বেচারা পড়েছে কোথাও কোনো কালে এতটুকু কাঁক দিয়ে একটুথানি বেরবার ভার আশা নেই। তবুও কিছুতেই আশ মিটছে না, কেননা লোভ যে ভীরু, সে অভিবড়ো শক্তিমানকেও নিশ্চিন্ত হতে দেয় না। শক্তিমান তাই বসে বসে এই ঠাওরাছে যে শাসনের ইক্রু-কলে এমনি ক্ষে পাঁচে দিতে হবে যে, নালিশ জ্ঞানাতে মামুষের সাহস হবে না, গাক্ষ্য দিতে ভয় পাবে, ঘরের কোণেও চেঁচিয়ে কাঁদলে অপরাধ হবে। কিছ শাসনকে এত বেশি সহজ্ঞ করে ফেলে যারা, নিজের মন্ত্রমুত্তের তহবিল ভেঙে এই অভিসহজ্ঞ শাসনের মূল্য ভাদের জ্ঞাগাতে হবে। প্রতিদিন এই-যে তহবিল ভেঙে চলা এর ফলটা প্রতিদিন নানা আকারে নিজের ঘরেই দেখা দেবে। এখনো দেখা দিছে কিছ ভার হিসাব কেউ মিলিয়ে দেখছে না।

এই তো প্রবল পক্ষ সহয়ে বক্তবা। আমাদের পক্ষে এসব কথা বেশি করে আলোচনা করতে বড়ো লজ্জা বোধ হয়, কেননা বাইরে থেকে এর আকারটা উপদেশের মতো, কিন্তু এর ভিতরের চেহারাটা মার থেয়ে কাল্লারই রূপান্তর। এক দিকে ভয়, আর-এক দিকে কাল্লা, ছুর্বলের এইটেই হচ্ছে সকলের চেয়ে বড়ো লজ্জা। প্রবলের সঙ্গে লড়াই করবার শক্তি আমাদের নেই কিন্তু নিজের সঙ্গে লড়াই আমাদের করতেই হবে। আর যাই করি, ভয় আমরা করব না, এবং কথা বলা যদি বন্ধ করে দেয় ভবে সমুদ্রের এ পার থেকে ও পার পর্যন্ত নাকি স্করে কাল্লা আমরা ভুলব না।

इ: (थंद्र चा छन यथन खत्म छथन किवन छाद्र छात्महे ख'ल मद्रव चाद्र छाद्र चात्माहे। कात्मा कात्महे मागाव ना, এहे। हत्महे गव हित्य

বাভায়নিকের পত্র

বড়ো লোকসান। সেই আলোটাতে মোহ-আঁবার বৃচ্ক, একবার ভালো করে চেরে দেখো। নিজের মনকে একবার জিজাসা করো, ঐ বীভংস শক্তিমান মামুবটাকে বত বড়ো দেখাছে সে কি সতিই তত বড়ো। বাইরে থেকে সে ভাঙচুর করতে পারে, কিছ ভিতর থেকে মামুবের জীবনের সম্পদ লেশমাত্র যোগ করে দিয়ে বাবার সাধ্য ওর আছে ? ও সন্ধি করতে পারে, কিছ শক্তি দান করতে পারে কি ? ও অভিভূত করতে পারে, কিছ শক্তি দান করতে পারে কি ? আল প্রায় ছ হাজার বছর আগে সামান্ত একদল জালজীবীর অখ্যাত এক গুরুকে প্রবল রোমসাত্রাজ্যের একজন শাসনকর্তা চোরের সঙ্গে সমান দওকার্তে বিধে মেরেছিল। সে দিন সেই শাসনকর্তার ভোজের অরে কোনো ব্যশ্তনের ক্রিট হয় নি এবং সে আপন রাজপালকে আরামেই যুমতে গিয়েছিল। সে দিন বাইরে থেকে বড়ো দেখিয়েছিল কাকে ? আর আল ? সেদিন সেই মশানে বেদনা এবং মৃত্যু এবং ভয়, আর য়াজপ্রাসাদে ভোগ এবং সমারেছ। আর আল ? আমরা কার কাছে মাধা নত করব ? কলৈ দেখায় ছবিবা বিধেম ?

8

বাংলার মঙ্গলকাব্যগুলির বিষরটা হচ্ছে, এক দেবতাকে তার সিংহাসন থেকে খেদিরে দিয়ে আর-এক দেবতার অভ্যুদয়। সহজেই এই কথা মনে হয় যে, ছই দেবতার মধ্যে যদি কিছু নিম্নে প্রতিযোগিতা থাকে তা হলে সেটা ধর্মনীতিগত আদর্শেরই তারতম্য নিয়ে। যদি মামুবের ধর্মবৃদ্ধিকে নৃতন দেবতা পুরাতন দেবতার চেয়ে বেশি ভৃত্তি দিতে পারেন তা হলেই তাঁকে বরণ করবার সংগত কারণ পাওয়া যায়।

किन्न अथारन मिथि अरक्वार्त्रहे छेल्छ। अक कारन भूक्वरमयका

>0

ষিনি ছিলেন তাঁর বিশেষ কোনো উপদ্রব ছিল না। খামকা মেরেদেবতা জোর করে এসে বারনা ধরলেন, আমার পুজো চাই। অর্থাৎ 'যে জারগার আমার প্রথম নেই, সে জারগা আমি দখল করবই।' তোমার দলিল কী ? গারের জোর। কী উপারে দখল করবে। যে উপারেই হোক। তার পরে যে-সকল উপার দেখা গেল মারুবের সদ্বৃদ্ধিতে তাকে সম্পার বলে না। কিন্তু পরিণামে এই-সকল উপারেরই জর হল। ছলনা অন্তার এবং নিষ্ঠ্রতা কেবল যে মন্দির দখল করল তা নর, কবিদের দিয়ে মন্দিরা বাজিয়ে চামর ছলিয়ে আপন জয়গান গাইয়ে নিলে। লজ্জিত কবিরা কৈফিয়ত দেবার ছলে মাধা চুলকিয়ে বললেন, 'কী করব, আমার উপর স্বপ্নে আদেশ হয়েছে।' এই স্বপ্ন এক দিন আমাদের সমস্ত দেশের উপর তর করেছিল।

সেদিনকার ইতিহাস স্পষ্ট নয়। ইতিহাসের যে-একটা আবছায়া দেখতে পাচ্ছি সেটা এই রকম— বাংলা সাহিত্য যখন তার অব্যক্ত কারণসমূদ্রের ভিতর থেকে প্রবালদীপের মতো প্রথম মাথা ভূলে দেখা দিলে তখন বৌদ্ধর্ম জীর্ণ হয়ে, বিদীর্ণ হয়ে, টুকরো টুকরে। হয়ে নানা প্রকার বিক্রতিতে পরিণত হচ্ছে। স্বপ্নে যেমন এক থেকে আর হয়, তেমনি কর্ফেই বৃদ্ধ তখন লিব হয়ে দাড়িয়েছিলেন। লিব ত্যাগী, লিব ভিক্স, লিব বেদবিক্রছ, লিব সর্বসাধারণের। বৈদিক দক্ষের সঙ্গে এই লিবের বিরোধের কর্ধ। কবিকরণ এবং অয়দামললের গোড়াতেই প্রকাশিত আছে। লিবও দেখি বৃদ্ধের মতো নির্বাণম্ভির পক্ষে; প্রকাশেই তাঁর আনন্দ।

কিন্তু এই শান্তির দেবতা, ত্যাগের দেবতা টিকল না। মুগোপেও আধুনিক শক্তিপৃত্তক বলছেন, যিশুর মতো অমন গরিবের দেবতা, নিরীহ দেবতা. অমন নেহাত ফিকে রক্তের দেবতা নিয়ে আমাদের চলবে না। আমাদের এমন দেবতা চাই জোর করে যে কেড়ে নিতে পারে; যেমন

বাভায়নিকের পত্র

ক'রে হোক যে নিজেকে জাছির করতে গিরে না মানে বাধা, না পার ব্যথা, না করে লজা।' কিন্ত রুরোপে এই-যে বুলি উঠেছে সে কাদের পানসভার বুলি ? যারা জিতেছে, যারা লুটেছে, পৃথিবীটাকে টুকরো টুকরো ক'রে যারা ভাদের মদের চাট বানিয়ে খাছে।

আমাদের দেশের মঙ্গলগানের আসরেও ঐ বুলিই উঠেছিল। কিন্তু
এ বুলি কোন্থান থেকে উঠল ? যাদের অন্ন নেই, বন্তু নেই, আশ্রয়
নেই, সম্মান নেই, সেই হতভাগাদের স্বপ্নের থেকে। তারা স্বপ্ন দেখল।
কথন ? যথন—

নারায়ণ, পরাশর, এড়াইল দামোদর,
উপনীত কুচট্যানগরে।
তৈল বিনা কৈলু স্নান. করিলু উদকপান,
শিশু কাঁদে ওদনের তরে।
আশ্রম প্রবি-আড়া, নৈবেল্প শালুক পোড়া,
পূজা কৈন্তু কুমুদ প্রস্তনে।
কুধাতয় পরিশ্রমে, নিজা যাই সেই ধামে,
চণ্ডী দেখা দিলেন স্থপনে ॥

(मिनिकांत्र मिक्तित चन्न चन्नमाख, मिच्नित्र मृन क्षा छत्र भित्रिक्षरमत्र गर्था।

শোলা গেছে, ইতিহাসের গান অমিঞাক্ষরে হয় না, এর চরণে চরণে মিল। সেই পাঁচ শো বছর পৃথের এক চরণের সঙ্গে আক্ষপাঁচ শো বছর পরের এক চরণের চমৎকার মিল শোনা যাচ্ছে না কি ? যুরোপের শক্তিপুত্রক আত্ম বুক কুলিয়ে বড়ো সমারোহেই শক্তির পুত্রো করছেন—মদে তার ছই চক্ষ্ অবাক্সলের মতো টক্টক্ করছে, ঝাড়া শাণিত, বলির পশু গুঁপে বাধা। তারা কেউ কেউ বলছেন 'আমরা যিশুকে মানি নে'; আবার কেউ কেউ ভারতচক্ষের মতো গোঁজামিলন দিয়ে বলছেন,

যিওর সঙ্গে শক্তির সঙ্গে ভেদ করে দেওয়া ঠিক নয়, অর্ধনারীশ্বর মূর্তিতে কুজনকেই সমান মানবার ময় আছে। অর্ধাৎ, এক দল মদ খাচ্ছেন রাজাসনে ব'সে, আর-এক দল প্ল্পিটে চ'ড়ে।

আর আমরাও বলছি, শিবকে মানব না। শিবকে মানা কাপুরুষতা।
আমরা চণ্ডীর মঙ্গল গাইতে বসেছি। কিন্তু সে মঙ্গলগান স্থপলন্ধ।
কুধা-ভন্ন-পরিশ্রমের স্বপ্ন। জন্নীর চণ্ডীপূজান্ধ আর পরাজিতের চণ্ডীগানে
এই ভন্ধাত।

चर्त्रराज्ये रा चामारमत हाजीगारनत चामि अवः चरत्रराज्ये य जात्र चक्र ठात्र श्रमान की ? के त्रार्था-ना न्यार्थत मना, जात्र स्वी स्वत्रात वात्रमाञ्चा अकवात (भारना। किंड, इन की। हर्टा थामरथबानि भक्ति विना कांद्रा छाटक अयन-এक हो चां छि नित्नन एष, चर्द चांद्र होका धरत ना। किनिक्रतारकत मरक अहे मार्गाक नाध यथन नड़ाई कत्रन, তখন খামকা স্বয়ং হতুমান এসে তার পক্ষ নিয়ে কলিকের গৈন্তকে किनिया नाधिया এकाकात्र करत मिला। এक्टि वर्ल मेख्नित यथ, कुशा এবং ভয়ের বরপুত্র। হঠাৎ একটা কিছু হবে। তাই সেই অতি-অমুত হঠাতের আশায় আমরা দলে দলে উচ্চৈ:ম্বরে 'মা মা' ক'রে চণ্ডী-गान क्र एक (मर्ग गिष्टि। मिट्टे ठ छी छात्र चाछात्र यान ना : च्य विश्वाद খাতিরে সত্যমিপ্যায় সে ভেদ করে না ; সে যেন-ভেন প্রকারে ছোটোকে वर्षा. मित्रक्रिक धनी, व्ययक्रक मिकियान करत्र मित्र। जात्र व्यक्ति (यात्र) हवात पत्रकात (नहे, चखरत्र पातिष्ठा पूत्र कत्रवात श्राक्षन हरव ना : रिशानि या रियमनভाবि चाहि चामञ्चरत राथानि ভाকে ভেমनि ভাবেই রাগা চলবে। কেবল করফোড়ে তারস্বরে বলতে হবে— या, या, या।

ষথন মোগলপাঠানের বস্তা দেশের উপর ভেঙে পড়ল, তথন সংসারের যে বাহ্ম রূপ মানুষ প্রবল করে দেখতে পেলে সেটা শক্তিরই

বাতায়নিকের পত্র

রূপ। সেখানে ধর্মের হিসাব পাওয়া যায় না, সেখানে শিবের পরিচয়
আছের হয়ে যায়। মাছুব যদি তথনো সমন্ত হুঃখ এবং পরাভবের মাঝখানে দাঁড়িরে বলতে পারে 'আমি সব সহ্য করব তবুও কিছুতেই একে
দেবতা বলে মানতে পারব না', তা হলেই মাছুবের জিত হয়। চাঁদসদাগর কিছা ধনপতির বিজ্রোহের মধ্যে কিছু দূর পর্যন্ত মাছুবের সেই
পরিচয় পাওয়া গিয়েছিল। মারের পর মার খেয়েছে কিছু ভজিকে ঠিক
জায়গা থেকে নড়তে দেয় নি। মিধ্যা এবং অক্সায় চার দিক থেকে
তাদের আক্রমণ করলে; চঙী বললেন, ভয়ে অভিত্ত ক'রে, ছঃখে
জর্জর ক'রে, ক্তিতে ছ্র্বল ক'য়ে, 'মারের চোটে মেরুদণ্ড ভেঙে দিয়ে
তোমাদের কাছ থেকে জায় ক'রে আমার প্রা আদায় করবই।'
নইলে গ 'নইলে আমার প্রেম্ভিক যায়।' ধর্মের প্রেম্ভিকর জন্তে চঙীর
খেয়াল নেই, তাঁর প্রেম্ভিক হচ্ছে ক্মভার প্রেম্ভিক। অভএব মারের পর
মার, মারের পর মার।

অবশেষে হুংখের যথন চূড়ান্ত হল, তথন শিবকে সরিয়ে রেখে শক্তির কাছে আধমরা সদাগর মাথা হেঁট কবলে। শক্তি তাদের এত দিন যে এত হুংখ দিয়েছিল সে হুংখে তেমন অপমান নেই যেমন অপমান শেষ-কালে এই মাথা হেঁট ক'রে। যে আত্মা অভয়, যে আত্মা অমর, সে আপন প্রতিষ্ঠা থেকে নেমে এসে ভয়কে মৃত্যুকে দেবতা ব'লে, আপনার চেয়ে বড়ো ব'লে মানলে। এইখানেই শক্তির সকলের চেয়ে বীভৎস পরিচয় পাওয়া গেল।

আমরা আজ য়বোপের দেবতাকে মপ্রে প্রে। করতে বসেছি, এইটেতেই মুরোপের কাছে আমাদের সব চেয়ে পরাভব হয়েছে। যদি গে আমাদের আঘাত করতে চায় করুক, আমরা সহু করব, কিন্তু তাই বলে প্রে। করব গুলে চলবে না; কেননা প্রে। করতে হবে ধর্মরাজকে। গে হংগ দেবে, দিক গে। কিন্তু, হারিয়ে দেবে গুকিছুতে না। মরার

বাড়া গাল নেই; কিন্তু মরেও অমর হওয়া যায় এই কথা যদি কিছুতে ভূলিয়ে দেয়, তা হলে তার চেয়ে সর্বনেশে মৃত্যু আর নেই। মহান্তং বিভূম্ আত্মানং মত্বা ধীরো ন শোচতি।

মানুষের ইতিহাসের রথ আজ যত বড়ো ধারু। থেরেছে এমন আর কোনো দিনই খায় নি। তার কারণ আধুনিক ইতিহাসের রথটা কলের গাড়ি, বছ কৌশলে ওর লোহার রাস্তা বাধা. আর এক-একটা এঞ্জিনের পিছনে গাড়ির শ্রেণী প্রকাণ্ড লম্বা হয়ে বাধা পড়েছে। তার পরে ওর পথ চলেছে জগৎ জুড়ে, নানা জায়গায় নানা পথে কাটাকাটি। কাজেই কলে কলে যদি একবার সংঘাত বাধল, যদি পরস্পরকে বাঁচিয়ে চলতে না পারল, তা হলে সেই হুর্যোগে ভাঙচুরের পরিমাণ অতি ভয়ানক হয়ে ওঠে এবং পৃথিবীর এক প্রান্ত থেকে আর-এক প্রান্ত পর্যন্ত ধরণর করে কাঁপতে থাকে।

এই কলের গাড়ির সংঘাত এবারে থ্ব প্রবল ধারায় ঘটেছে; কি মাল কি সওয়ারি নাস্তানাবৃদ হয়ে গেল। তাই চারি দিকে প্রশ্ন উঠেছে, এ কী হল, কেমন করে হল, কী করলে ভবিয়াতে এমন আর না হতে পারে ?

गासूरवत्र हेिहारम এहे श्रम এवং विहात यथन छैठि পড়েছে छथन আমাদেরও কি ভাবতে হবে না ? তথন, अधूहे कि পরের নামে নালিশ করব ? নিজের দায়িত্বের কথা শ্বরণ করব না ?

আমি পূর্বেও আভাস দিয়েছি, এখনও বলছি, ছুর্বলের দায়িত্ব বড়ো ভয়ানক। বাতাসে যেখানে যা-কিছু ব্যাধির বীজ ভাসছে ছুর্বল তাকেই আতিখ্য দান ক'রে তাকে নিজের জীবন দিয়ে জিইয়ে রাখে। ভীক

বাভায়নিকের পত্র

কেবল ভরের কারণকে বাড়িরে চলে, অবনত কেবল অপমানকে সৃষ্টি করে।

চোখে যেখানে আমরা দেখতে পাই নে সেখানে আমাদের ব্যথা পৌছয় না; মাটির উপর বে-সব পোকামাকড় আছে ভাদের আমরা অবাধে মাড়িয়ে চলি, কিন্তু যদি সামনে একটা পাখি এসে পড়ে ভার উপরে পা ফেলতে সহজে পারি নে। পাথির সম্বন্ধে যে বিচার করি পিণড়ের সম্বন্ধে সে বিচার করি নে।

অতএব মাসুবের প্রধান কর্তব্য, তাকে এমনটি হতে হবে বাতে তাকে
মানুষ বলে স্পষ্ট দেখতে পাওয়া যায়। এ কর্তব্য কেবল তার নিজের
ক্ষবিধের জ্বত্যে নয়, পরের দায়িজের জ্বত্যেও। মানুষ মানুষকে মাড়িয়ে
যাবে এটা, যে লোক মাড়ায় এবং যাকে মাড়ানো হয় কারও পক্ষে
কল্যাণের নয়। আপনাকে যে খব করে সে যে কেবল নিজেকেই
কমিয়ে রাখে তা নয়, মোটের উপর সমন্ত মানুষ্বের মূল্য সে হাস করে।
কেননা, যেখানেই আমরা মানুষকে বড়ো দেখি সেখানেই আপনাকে
বড়ো বলে চিনতে পারি; এই পরিচয় যত সত্য হয় নিজেকে বড়ো
রাখবার চেষ্টা মানুষ্বের পক্ষে তত সহজ্ঞ হয়।

প্রত্যেক মামুষের যে দেশে মূল্য আছে সমস্ত ভাতি সে দেশে আপনিই বড়ো হয়। সেখানে মামুষ বড়ো করে বাঁচবার জন্তে নিজের চেটা পূর্ণমাঞায় প্রয়োগ করে, এবং বাধা পেলে শেষ পর্যন্ত লড়াই করতে খাকে। সে মামুষ বারই সামনে আছক তার চোঝে সে পড়বেই, কাজেই ব্যবহারের বেলায় তার সঙ্গে ভেবেচিক্তে ব্যবহার করতেই হবে। তাকে বিচার করবার সময় কেবলমাঞ্জ বিচারকের নিজের বিচারবৃদ্ধির উপরেই যে ভরসা তা নয়, যথোচিত বিচার পাবার দাবি তার নিজের মধ্যেই অত্যক্ত প্রত্যক্ষ।

चल्यव य जालि উन्नलिन भर्ष (वर्ष हर्लाइ लान बक्हें। नक्ष अर्

বে, ক্রমণই সে জাতির প্রত্যেক বিভাগের এবং প্রত্যেক ব্যক্তির অকিঞ্চিৎকরতা চলে যাছে। যথাসম্ভব তাদের সকলেই মহয়তের প্রোগোরব দাবি করবার অধিকার পাছে। এইজভোই সেখানে মাহ্বব ভাবছে, কী করলে সেখানকার প্রত্যেকেই ভদ্র বাসায় বাস করবে, ভাজোচিত শিক্ষা পাবে, ভালো খাবে, ভালো পরবে, রোগের হাত পেকে বাঁচবে, এবং যথেষ্ট অবকাশ ও স্বাভন্ত্য লাভ করবে।

কিন্তু, আমাদের দেশে কী হয়েছে ? আমরা বিশেষ শিক্ষা দীক্ষা ও ব্যবস্থার বারা সমাজের অধিকাংশ লোককেই খাটো করে রেখেছি। তারা যে খাটো এটা কোনো তর্ক বা বিচারের উপরে নির্ভর করে না, এটাকে বিধিমতে সংস্থারগত করে তুলেছি। এমনি হয়েছে যে, যাকে ছোটো করেছি সে নিজে হাত জোড় করে বলছে, 'আমি ছোটো।' সমাজে তাদের অধিকারকে বড়োর সমতুলা করতে চেষ্টা করলে তারাই সব চেয়ে বেশি আপন্তি করে।

এমনি করে অপমানকে স্বীকার করে নেবার শিক্ষা ও অভ্যাস সমাজ্যের স্তরে স্তরে নানা আকারে বিধিবদ্ধ হয়ে আছে। যারা নীচে পড়ে আছে সংখ্যায় তারাই বেশি; তাদের জীবনযাত্রার আদর্শ সকল বিষয়েই হীন হলেও উপরের লোককে সেটা বাজে না। বরঞ্চ তাদের চালচলন যদি উপরের আদর্শ অবলম্বন করতে যায়, তা হলে স্টোতে বিরক্তি বোধ হয়।

তার পরে এই-সব চির-অপমানে-দীক্ষিত মামুষগুলো যথন মানব-সভার স্বভাবতই জোর-গলার সন্মান দাবি করতে না পারে, যথন তারা এত সংকৃচিত হয়ে থাকে যে বিদেশী উদ্ধৃত ভাবে তাদের অবজ্ঞা করতে অস্তরে বাহিরে বাধা বোধ না করে, তথন সেটাকে কি আমাদের নিজেবই কৃতকর্ম বলে গ্রহণ করব না ?

वामन्ना निष्वता गमाष्य य चन्नान्नरक चार्छवारहे विधिविधारन (वैर्ध

বাভায়নিকের পত্র

চিরস্থায়ী করে রেখেছি সেই অস্তার যথন পলিটিক্সের ক্ষেত্রে অক্তের হাত দিয়ে আমাদের উপর ফিরে আসে, তথন সেটার সম্বন্ধে সর্বভোভাবে আপত্তি করবার জোর আমাদের কোঝায় ?

জোর করি সেই বিদেশীরই ধর্ম্ছির দোহাই দিরে। সে দোহাইরে

কি লজ্জা বেড়ে ওঠে না! এ কথা বলতে কি মাধা হেঁট হরে যায় না
যে 'সমাজে অ'মাদের আদর্শকে আমরা ছোটো করে রাখব, আর
পলিটিয়ে ভোমাদের আদর্শকে ভোমরা উচু করে রাখো' ? 'আমরা
দাসত্বের সমস্ত বিধি সমাজের মধ্যে বিচিত্র আকারে প্রবল করে রাখব
আর তোমরা ভোমাদের উদার্যের দ্বারা প্রভুত্বের সমান অধিকার
আমাদের হাতে নিজে তুলে দেবে: যেখানে আমাদের এলেকা সেখানে
ধর্মের নামে আমরা অতি কঠোর রুপশতা করব, কিন্তু যেখানে ভোমাদের
এলেকা সেখানে দেই ধর্মের দোহাই দিয়ে অপর্যাপ্ত বদান্ততার জল্জে
ভোমাদের কাছে দরবার করতে পাকব' এমন কথা বলি কোন্ মুখে?
আর যদি আমাদের দরবার মঞ্র হয় ? যদি আমরা আমাদের
দেশের লোককে প্রতাহ অপ্যান করতে কুন্তিত না নই, অপ্চ
বিদেশের লোক এলে আপন ধর্মবৃদ্ধিতে সেই অপ্যানিভদের স্ম্মানিভ
করে. তা হলে ভিতরে বাহিরেই কি আমাদের পরাভব সম্পূর্ণ
হয় না ?

আজকের দিনে যে কারণে ছোক হু:খ এবং অপমানের বেদনা
নিরতিশন্ন প্রবল হয়ে উঠেছে: এই উপলক্ষে আমাদের মনে একটা কথা
আশা করবার আছে, সেটা হছে এই যে, ধর্মবৃদ্ধিতে যখন অক্ত পক্ষের
পরাভব হছে তখন সেইখানে আমরা এদের উপরে উঠব। তা হলে
এদের হাতের আঘাতে আমাদের গৌরব-হানি করবে না বরং বাড়াবে।
কিন্তু সেখানেও কি আমরা বলব, 'ধর্মবৃদ্ধিতে ভোমরা আমাদের চেয়ে
বড়ো হয়ে থাকো, নিজেদের সম্বন্ধে আমরা যে রকম ব্যবহার করবার

আশা করি নে আমাদের সম্বন্ধে তোমরা সেই রক্ম ব্যবহারই করো'? অর্থাৎ, 'চিরদিনই নিজের বাবস্থায় আমরা নিজেদের খাটো করে রাখি, আর চিরদিনই তোমরা নিজগুণে আমাদের বড়ো করে তোলো।' সমন্ত বরাতই অস্তের উপরে, আর নিজের উপরে একটুও নয়? এত অপ্রন্ধা নিজেকে, আর এতই প্রন্ধা অন্তকে? বাহুবলগত অধমতার চেয়ে এই ধর্মবৃদ্ধিগত অধমতা কি আরো বেশি নিক্ট নয়?

অন্ন কাল হল একটা আলোচন। আমি স্বকর্ণে শুনেছি, তার সিদ্ধান্ত এই যে, পরস্পরের মধ্যে পাকা দেওয়ালের ব্যবধান পাকা সন্ত্বেও এক চালের নীচে হিন্দু মুসলমান আহার করতে পারবে না, এমন কি সেই আহারে হিন্দু-মুসলমানের নিষিদ্ধ কোনো আহার্য যদি নাও পাকে। যাঁরা এ কথা বলতে কিছুমাত্র সংকোচ বোধ করেন না, হিন্দু-মুসলমানের বিরোধের সময় তাঁরাই সন্দেহ করেন যে বিদেশী কর্তৃপক্ষেরা এই বিরোধ ঘটাবার মূলে। এই সন্দেহ যখন করেন তখন ধর্মবিচারে তাঁরা বিদেশীকে দণ্ডনীয় মনে করেন। এর একমাত্র কারণ, ধর্মের দাবি নিজ্কের উপরে তাদের যতটা বিদেশীর উপরে তার চেয়ে অনেক বেশি। স্থদেশে মামুষে ব্যবধানকে আমরা ছংসহক্রপে পাকা করে রাধব সেইটেই ধর্ম, কিন্তু বিদেশী সেই ব্যবধানকে কোনো কারণেই কোনো মতেই নিজ্কের ব্যবহারে লাগালে সেটা অধর্ম। আত্মপক্ষে ছ্র্বলতাকে স্পষ্টি করব ধর্মের নামে, বিক্লদ্ধণক্ষে সেই ছ্র্বলতাকে ব্যবহার করলেই সেটাকে অক্সায় বলব।

যদি জিজ্ঞাসাঁ করা যায়, পাকা দেওয়ালের অপর পারে যেখানে মুসলমান খাছে দেওয়ালের এ পারে সেখানে হিন্দু কেন খেতে পারে না, তা হলে এ প্রশ্নের উত্তর দেওয়াই আবশুক হবে না। হিন্দুর পক্ষে এ প্রশ্নে বৃদ্ধি খাটানো নিষেধ এবং সেই নিষেধটা বৃদ্ধিমান জীবের পক্ষেক্ত অন্তুত ও লজ্জাকর তা মনে উদয় হবার শক্তি পর্যন্ত চলে গেছে।

বাতায়নিকের পত্র

সমাজের বিধানে নিজের বারো-আনা ব্যবহারের কোনোপ্রকার সংগত কারণ নির্দেশ করতে আমরা বাধ্য নই, যেমন বাধ্য নয় গাছপালা কীটপতল পশুপন্দী। পলিটিয়ে বিদেশীর সঙ্গে কারবারে আমরা প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করতে শিথেছি, সে কেত্রে সকল রকম বিধিবিধানের একটা বৃদ্ধিগত জবাবদিহি আছে ব'লে মানতে অভ্যাস করছি; কিছু সমাজে পরস্পরের সঙ্গে ব্যবহার, যার উপরে পরস্পরের গুরুতর অ্থহুংখ শুভাশুভ প্রভাহ নির্ভর করে, সে সম্বন্ধে বৃদ্ধির কোনো কৈফিয়ত, নেওয়া চলে, এ কথা আমরা ভাবতেও একেবারে ভূলে গেছি।

এমনি ক'রে যে দেশে ধর্মবৃদ্ধিতে এবং কর্মবৃদ্ধিতে মানুষ নিজেকে দাসান্দাস করে রেখেছে সে দেশে কর্তৃত্বের অধিকার চাইবার সভাকার জোর মানুষের নিজের মধ্যে থাকতেই পারে না। সে দেশে এই-সকল অধিকারের জভ্যে পরের বদান্তভার উপরে নির্ভর করতে হয়।

কিন্তু আমি পূর্বেই বলেছি, মান্তব যেখানে নিজেকে নিছে অত্যক্ত চোটো এবং অপমানিত ক'রে রাখে সেখানে তার কোনো দাবি বভাবত কারও মনে গিয়ে পৌছর না। সেইজন্তে তাদের সঙ্গে যেশকল প্রবলের ব্যবহার চলে সেই প্রবলদের প্রতিদিন হুর্গতি ঘটতে থাকে। মান্ত্রের সঙ্গে আচরণের আদর্শ তাদের না নেমে গিয়ে থাকতে পারে না। ক্রমশই তাদের পক্ষে অন্তায় ঔদ্ধত্য এবং নির্ভূরতা যাভাবিক হয়ে উঠতে থাকে। নিজের ইক্তাকে অন্তের প্রতি প্রয়োগ করা তাদের পক্ষে একান্ত সহজ হওয়াতেই মানবন্ধাণীনতার প্রতি প্রস্থানিকের অগোচরেই তাদের মনে শিধিল হয়ে আসে। ক্ষমতা বতই অবাধ হয় ক্ষমতা ততই মান্ত্রেক নীচের দিকে নিয়ে যায়। এইজন্তে ক্ষমতাকে যথেটিত পরিমাণে বাধা দেবার শক্তি যার মধ্যে নেই তার হুর্বলতা সমস্ত মান্ত্রেই শক্ত। আমাদের সমাজ মান্ত্রের ভিতর থেকে সেই

বাধা দূর করবার একটা অতি ভয়ংকর এবং অতি প্রকৃতি যয়। এই য়য়
এক দিকে বিধান-অকাহিনী দিয়ে আমাদের চার দিকে বেড়ে ধরেছে;
আর-এক দিকে, যে বৃদ্ধি, যে যুক্তি দারা আমরা এর সঙ্গে লড়াই করে
মুক্তিলাভ করতে পারত্ম সেই বৃদ্ধিকে, সেই যুক্তিকে একেবারে নির্মূল
করে কেটে দিয়েছে। তার পরে অন্ত দিকে অতি লঘু ক্রটির জন্তে অতি
শুক্ত দশু। খাওয়া শোওয়া ওঠা বসার তৃদ্ধতম অলন সম্বদ্ধে শান্তি
অতি কঠোর। এক দিকে মুচতার ভারে অন্ত দিকে ভয়ের শাসনে
মাহ্মকে অভিভূত করে জীবনযাত্রার অভিকৃত্র খ্টিনাটি সম্বদ্ধেও তার
আভিকৃতি ও সাধীনতাকে বিলুপ্ত করে দেওয়া হয়েছে। তার পরে
তার পরে ভিক্ষা, ভিক্ষা না মিললে কারা। এই ভিক্ষা যদি অতি সহজেই
মেলে, আর এই কারা যদি অতি সহজেই থামে, তা হলে সকল প্রকার
মারের চেয়ে, অপমানের চেয়ে সে আমাদের বড়ো হুর্গতির কারণ হবে।
নিজেকে আমরা নিজে ছোটো করে রাখব, আর অন্তে আমাদের বড়ো
অধিকার দিয়ে প্রশ্রম দেবে, এই অভিশাপ বিধাতা আমাদের দেবেন না
ব'লেই আমাদের এত হুংখের পর হুংধ।

জাহাজের থোলের ভিতর্টায় যথন জল বোঝাই হয়েছে তথনই জাহাজের বাইরেকার জলের মার সাংঘাতিক হয়ে ওঠে। ভিতরকার জলেটা তেমন দৃশুমান নয়, তার চালচলন তেমন প্রচণ্ড নয়; সে মারে ভারের হারা, আঘাতের হারা নয়, এইজল্যে বাইরের চেউয়ের চড়-চাপড়ের উপরেই লোবারোপ করে তৃত্তি লাভ করা যেতে পারে। কিন্তু হয় ময়তে হবে নয় এক দিন এই স্বর্দ্ধি মাধায় আসবে যে, আসল ময়ণ ঐ ভিতরকার জলের মধ্যে, ওটাকে যত শীঘ্র পারা যায় সেঁচে কেলতেই হবে। কাজটা যদি হংসাধাও হয় তরু এ কবা মনে রাখা চাই যে, সমুদ্র সেঁচে ফেলা সহজ নয়, তার চেয়ে সহজ খোলের জল দেঁচে ফেলা। এ কবা মনে রাখতে হবে, বাইরে বাধাবিয় বিরুদ্ধতা

বাভায়নিকের পত্র

চিরদিনই থাকবে, থাকলে ভালো বই মন্দা নয়, কিন্তু অন্তরে বাধা থাকলেই বাইরের বাধা ভয়ংকর হয়ে ওঠে। এইজন্তে ভিক্ষার দিকে না তাকিমে সাধনার দিকে তাকাতে হবে; তাতে অপমানও বাবে, ফলও পাব।

वाशां ३०२६

শক্তিপূজা

বাতায়নিকের পত্রে আমি শক্তিপূজার যে আলোচনা করেছি সে সম্বন্ধে সাময়িক-পত্রে একাধিক লোকে প্রতিবাদ লিখেছেন।

আমাদের দেশে শিব এবং শক্তির শ্বরূপ সম্বন্ধে ছটি ধারা দেখতে পাই। তার মধ্যে একটিকে শাস্ত্রিক এবং আর-একটিকে লৌকিক বলা যেতে পারে। শাস্ত্রিক শিব যতী, বৈরাগী। লৌকিক শিব উন্মন্ত, উচ্চুছাল। বাং মঙ্গলকাব্যে এই লৌকিক শিবেরই বর্ণনা দেখতে পাই। এমন কি, রাজ্যভার কবি ভারতচন্দ্রের অরদামঙ্গলে শিবের যে চরিত্র বর্ণিত সে আর্যসমাজ্যশ্বত নয়।

শক্তির বে শান্ত্রিক ও দার্শনিক ব্যাখ্যা দেওয়া যায় আমি তা স্বীকার করে নিচ্ছি। কিন্তু বাংলা মঙ্গলকাব্যে শক্তির যে স্বরূপ বর্ণিত হয়েছে সে লৌকিক, এবং তার ভাব অক্সরূপ। সংসারে যারা পীড়িত, যারা পরাজিত, অবচ এই পীড়া ও পরাজ্বরের যারা কোনো ধর্মসংগত কারণ দেখতে পাচ্ছে না, তারা স্বেচ্ছাচারিণী নিষ্ঠ্র শক্তির অক্সায় ক্রোধকেই সকল হৃংখের কারণ ব'লে ধরে নিয়েছে— এবং সেই ইবাপরায়ণা শক্তিকে শুবের দ্বারা, পূজার দ্বারা, শান্ত করবার আশাই এই-সকল মঙ্গলকাব্যের প্রেরণা।

প্রচণ্ড দেবতার যথেচ্চাচারের বিভীষিকা মানবজাতির প্রথম পূজার মূলে দেবতে পাওয়া যায়। তার কারণ মানুষ তথনো বিশ্বের মূলে বিশ্বনির্মকে দেবতে পায় নি এবং তখন সে সর্বদাই ভয়বিপদের দায়া বেষ্টিত। তথন শক্তিমানের আকস্মিক ঐশ্বলাভ সর্বদাই চোখে পড়ছে, এবং আকস্মিকতারই প্রভাব মানবসমাজে সব চেয়ে উগ্রভাবে দৃশ্রমান।

य गगरत कविकद्म १- छ । जनगमन निधिष्ठ इरम्र ए गगरत

শক্তিপৃত্ত

মান্থবের আকস্মিক উপানপতন বিস্ময়কর রূপে প্রকাশিত হত। তথন
চার দিকেই শক্তির সঙ্গে শক্তির সংঘাত চলছে, এবং কার ভাগ্যে
কোন্দিন যে কী আছে তা কেউ বলতে পারছে না। যে বাক্তি
শক্তিমানকে ঠিকমতো শুব করতে জানে, যে ব্যক্তি সত্যমিধ্যা ভায়অভায় বিচার করে না, তার সমৃদ্বিলাভের দৃষ্টাশ্ত তথন সর্বত্র প্রত্যক্ষ।
চণ্ডীশক্তিকে প্রসন্ন করে তাকে নিজের ব্যক্তিগত ইইলাভের অনুক্ল
করা তথন অন্তত এক শ্রেণীর ধর্মসাধনার প্রধান অঙ্গ ছিল; তথনকার
ধনীমানীরাই বিশেষত এই শ্রেণীভ্কে ছিল, কেননা তথনকার শক্তির ঝড়
তাদের উচ্চ চুড়ার উপরেই বিশেষ করে আঘাত করত।

শাস্ত্রে দেবতার যে শ্বরূপ বর্ণিত হয়েছে সেইটেই যে আদিম এবং লৌকিকটাই যে আধুনিক, এ কথা বিশিষ্ট প্রমাণ ব্যতীত মানঃ যায় না। আমার বিশ্বাস, অনার্যদের দেবতাকে একদিন আর্যভাবের ছারা শোধন ক'রে স্বীকার ক'রে নেবার সময় ভারতবর্ষে উপস্থিত হয়েছিল। সেই সময়ে যে-সব দেবতা ভারতবর্ষের সাধুসমাজে প্রবেশ করেছিল তাদের চরিত্রে অসংগতি একেবারে দূর হতে পারে নি; তাদের মধ্যে আজও আর্য অনার্য ছুই ধারা মিশ্রিত হয়ে আছে এবং লৌকিক ব্যবহারে সেই অনার্যধারারই প্রবলতা অধিক।

খৃদ্ধর্মের বিকাশেও আমরা এই জিনিগটি দেখতে পাই। রিহুদির জিহোবা এক কালে মুখ্যত রিহুদিজাতিরই পক্ষপাতী দেবতা ছিলেন। তিনি কিরকম নির্ভূর স্বাপরায়ণ ও বলিপ্রিয় দেবতা ছিলেন তা ওল্ড্র্টেটামেণ্ট্, পড়লেই বোঝা যায়। সেই দেবতা ক্রমণ রিহুদি সাধুঋবিদের বাণীতে এবং অবশেষে বিশুখ্নের উপদেশে সর্বমানবের প্রেমের দেবতা হয়ে প্রকাশ পেরেছেন। কিন্তু, তাঁর মধ্যে আজও যে ত্ই বিক্রজাব জড়িয়ে আছে তা লৌকিক ব্যবহারে স্পষ্ট দেখতে পাই। আজও তিনি যুদ্ধের দেবতা, ভাগাভাগির দেবতা, সাম্প্রদায়িক দেবতা। অধুস্টানের

প্রতি খৃদ্যানের অবজ্ঞা ও অবিচার তাঁর নামের জোরে যত সজীব হয়ে।
আছে এমন আর-কিছুতে নয়।

আমাদের দেশে সাধারণত শাক্তধর্মসাধনা এবং বৈক্ষবধর্মসাধনার মধ্যে ছই স্বতন্ত্র ভাব প্রাধান্ত লাভ করেছে। এক সাধনায় পশুবলি এবং মাংসভোজন, অন্ত সাধনায় অহিংসা ও নিরামিষ আহার— এটা নিভাক্ত নির্বাক নয়। বিশেষ শাস্ত্রে এই পশু এবং অপরাপর মকারের যে ব্যাখ্যাই থাক্, সাধারণ ব্যবহারে ভা প্রচলিত নেই। এই জন্তেই 'শক্তি' শব্দের সাধারণ যে অর্থ, যে অর্থ নানা চিক্তে অমুষ্ঠানে ও ভাবে শক্তিপুজার মধ্যে ওতপ্রোত এবং বাংলাদেশের মঙ্গলকাব্যে যে অর্থ প্রচারিত হয়েছে আমি সেই অর্থই আমার রচনায় গ্রহণ করেছি।

একটি কথা মনে রাখতে হবে, দন্মার উপাক্ত দেবতা শক্তি, ঠগীর উপাক্ত দেবতা শক্তি, কাপালিকের উপাক্ত দেবতা শক্তি। আরো একটি ভাববার কথা আছে, পশুবলি বা নিজের রক্তপাত, এমন কি, নরবলি শীকার ক'রে মানত দেবার প্রথা শক্তিপৃজায় প্রচলিত। মিধ্যা মামলায় জয় থেকে শুরু করে জ্ঞাতিশক্তর বিনাশ কামনা পর্যন্ত সকল প্রকার প্রার্থনাই শক্তিপৃজার স্থান পায়। এক দিকে দেবচরিজের হিংশ্রতা, অপর দিকে মামুষের ধর্মবিচারহীন ফলকামনা, এই ছুইয়ের যোগ যে পৃজায় আছে, তার চেয়ে বড়ো শক্তিপৃজার কথা কোনো বিশেষ শাল্পে নিগুচ আছে কি না সেটা আমার আলোচ্য ছিল না। শক্তিপৃজার যে অর্থ লৌকিক বিশ্বাসের সলে জড়িত সে অর্থকে অসংগত বলা যায় না; কারণ লোকপ্রচলিত কাহিনী এবং রূপকচিছে সেই অর্থই প্রবল এবং সভা ও বর্বর সকল দেশে সকল ভাবেই শক্তিপৃজা চলছে— অন্তাহ অসত্য সে পৃজায় লজ্জিত নয়, লোভ তার লক্ষ্য, এবং হিংসা তার প্রোপচার। এই লোভ মন্দ নয়, ভালোই; হিংশ্রশক্তি মন্থ্যুত্বের পক্ষে অত্যাবশ্রক— এমন সকল তর্ক শক্তিপৃজক মুরোপে স্পর্ধার সঙ্গে চলছে,

अक्रिश्व

যুরোপের ছাত্রস্থাপে আমাদের মধ্যেও চলছে— নে সহদ্ধে আমার ষা বলবার অন্তন্ত্র বলেছি; এখানে এইটুকু বক্তন্ত যে, সাধারণ লোকের মনে শক্তিপুজার সঙ্গে একটি উলগ নিদার্রণতার ভাব, নিজের উদ্দেশ্ত-সাধনের জন্ত বলপূর্বক ক্রেলকে বলি দেবার ভাব সংগত হয়ে আছে, বাভায়নিকের পত্তে আমি ভারই উল্লেখ করেছি।

কিছ তবু এ কথা স্বীকার করা উচিত যে, কোনো ধর্মসাধনার উচ্চ অর্থ যদি দেশের কোনো বিশেষ শাস্ত্র বা সাধকের মধ্যে ক্থিত বা জীবিত থাকে তবে তাকে সন্থান করা কর্তব্য। এমন কি, ভূরিপরিমিত প্রচলিত ব্যবহারের চেয়েও তাকে বড়ো বলে জানা চাই। ধর্মকে পরিমাণের ধারা বিচার না ক'রে তার উৎকর্ষের ধারা বিচার করাই শ্রেষ। স্বর্মপাস্ত ধর্মস্ত ভ্রায়তে মহতো ভ্রাং।

कार्डिक २०२७

শिकात यिनन

এ কথা মানতেই হবে যে, আজকের দিনে পৃথিবীতে পশ্চিমের লোক
জন্মী হয়েছে। পৃথিবীকে তারা কামধেমুর মতো দোহন করছে, তাদের
পাত্র ছাপিয়ে গেল। আমরা বাইরে দাঁড়িয়ে হাঁ করে তাকিয়ে আছি;
দিন দিন দেখছি, আমাদের ভোগে অরের ভাগ কম পড়ে যাছে। কুধার
ভাপ বাড়তে থাকলে ক্রোধের তাপও বেড়ে ওঠে; মনে মনে ভাবি, যে
মামুষটা খাছে ওটাকে একবার স্থযোগমতো পেলে হয়। কিছ ওটাকে
পাব কি, এ'ই আমাদের পেয়ে বসেছে; স্থযোগ এ পর্যন্ত ওরই হাতে
আছে, আমাদের হাতে এসে পৌছয় নি।

কিন্তু কেন এসে পৌছয় নি ? বিশ্বকে ভোগ করবার অধিকার ওরা কেন পেয়েছে ? নিশ্চয়ই সে কোনো একটা সত্যের জোরে। আমরা কোনো উপায়ে দল বেঁধে বাইরে থেকে ওদের ধোরাক বন্ধ ক'রে নিজের খোরাক বরাদ্দ করব, কথাটা এতই সোজা নয়। ডাইভারটার মাধায় বাজি দিলেই যে এঞ্জনটা তখনি আমার বশে চলবে, এ কথা মনে করা ভূল। বস্তুত, ডাইভারের মূতি ধরে ওখানে একটা বিল্পা এঞ্জন চালাচ্ছে। অতএব, শুধু আমার রাগের আগুনে এঞ্জন চলবে না; বিল্পাটা দখল করা চাই, তা হলেই সত্যের বর পাব।

মনে করো, এক বাপের ছই ছেলে। বাপ শ্বয়ং মোটর হাঁকিয়ে চলেন। তাঁর ভাবখানা এই, ছেলেদের মধ্যে মোটর চালাতে যে শিখবে মোটর তারই হবে। ওর মধ্যে একটি চালাক ছেলে আছে, তার কৌত্হলের অন্ত নেই। সে তর তর করে দেখে, গাড়ি চলে কী ক'রে। অন্ত জেলেটি ভালোমামুব, সে ভক্তিভরে বাপের পারের দিকে এক দৃষ্টে তাকিরে পাকে; তাঁর ছই হাত মোটরের হাল যে কোন্ দিকে কেমন

শিক্ষার মিলন

করে ঘোরাছে তার দিকেও ধেরাল নেই। চালাক ছেলেটি মোটরের কলকারধানা প্রোপ্রি শিথে নিলে এবং এক দিন গ্রাড়িঝানা নিজের ছাতে বাগিয়ে নিয়ে উধ্বস্থিরে বাশি বাজিয়ে দৌড় মারলে। গাড়ি চালাবার শথ দিন রাত এমনি তাকে পেয়ে বদল যে, বাপ আছেন কি নেই গে হুলই তার রইল না। তাই ব'লেই তার বাপ যে তাকে তলব ক'য়ে গালে চড় মেরে তার গাড়িটা কেড়ে নিলেন তা নয়; তিনি স্বয়ং যে রবের রখী তার ছেলেও যে দেই রথেরই রখী, এতে তিনি প্রসন্ন হলেন। ভালোমস্ম্ব ছেলে দেখলে, ভায়াটি তার পাকা ফদলের খেত লওডও করে তার মধ্যে দিমে ছুপুরে হাওয়াগাড়ি চালিয়ে বেড়াছের; তাকে রোখে কার গাধ্য, তার সামনে দাড়িয়ে বাপের দোহাই পাড়লে 'মরণং প্রথ'। তখনো সে বাপের পায়ের দিকে তাকিয়ে রইল আর বললে, 'আমার আর-কিছুতে দরকার নেই।'

কিন্তু, দরকার নেই ব'লে কোনো সভ্যকার দরকারকে যে মান্ত্র্য থাটো করেছে তাকে ছঃখ পেতেই হবে। প্রত্যেক দরকারেরই একটা মর্যাদা আছে, সেইটুকুর মধ্যে তাকে মানলে তবেই ছাড়পত্র পাওয়া যায়। দরকারকে অবজ্ঞা করলে তার কাছে চিরঋণী হয়ে হৃদ দিতে দিতে জীবন কেটে যায়। তাকে ঠিক পরিমাণে মেনে তবে আমরা মৃক্তিপাই। পরীক্ষকের হাত থেকে নিদ্ধতি পাবার সব চেয়ে প্রশন্ত রাজ্ঞা হচ্ছে পরীক্ষায় পাশ করা।

বিষের একটা বাইরের দিক আছে, সেই দিকে সে মন্ত একটা কল।
সে দিকে তার বাধা নিয়মের এক চুল এদিক-ওদিক হবার জাে নেই।
এই বিরাট বস্তবিশ্ব আমাদের নানা রক্ষমে বাধা দেয়; কুঁড়েমি ক'রে বা
মুর্থতা ক'রে যে তাকে এড়াতে গেছে বাধাকে সে ফাঁকি দিতে পারে নি,
নিজেকেই ফাঁকি দিয়েছে; অপর পক্ষে বস্তর নিয়ম যে শিখেছে তথু
যে বস্তর বাধা তার কেটেছে তা নয়, বস্ত স্বয়ং তার সহার হয়েছে—

বস্তবিষের তুর্গম পথে তুটে চলবার বিষ্ঠা তার হাতে, সকল জারগার সকলের আগে গিয়ে সে পৌছতে পারে ব'লে বিশ্বভোজের প্রথম ভাগটা পড়ে তারই পাতে। আর, পথ হাঁটতে হাঁটতে যাদের বেলা ব্য়ে যায় তারা গিয়ে দেখে যে, তাদের ভাগ্যে হয় অতি সামান্তই বাকি নয় সমস্তই ফাঁকি।

এমন অবস্থায়, পশ্চিমের লোক যে-বিজ্ঞার জ্ঞোরে বিশ্ব জ্ঞায় করেছে সেই বিজ্ঞাকে গাল পাড়তে থাকলে হ:খ কমবে না, কেবল অপরাধ বাড়বে। কেননা, বিজ্ঞা যে সত্য। কিন্তু এ কথা যদি বল, শুধু তো বিজ্ঞা নয়, বিজ্ঞার সঙ্গে শয়তানিও আছে, তা হলে বলতে হবে, ঐ শয়তানির যোগেই ওদের মরণ। কেননা, শয়তানি সত্য নয়।

জন্তবা আহার পায় বাঁচে, আঘাত পায় মরে, যেটাকে পায় সেটাকেই
বিনা তর্কে মেনে নেয়। কিন্তু, মাফুবের সব চেয়ে বড়ো স্বভাব হচ্ছে
মেনে না নেওয়। জন্তবা বিদ্রোহী নয়, মায়ুষ বিদ্রোহী। বাইরে থেকে
যা ঘটে, যাতে তার নিজের কোনো হাত নেই, কোনো সায় সেই, সেই
ঘটনাকে মায়ুষ একেবারে চূড়ান্ত ব'লে শীকার করে নি ব'লেই ছীবের
ইতিহাসে সে আজ এত বড়ো গৌরবের পদ দখল করে বসেছে। আসল
কথা, মায়ুষ একেবারেই ভালোমায়ুষ নয়। ইতিহাসের আদিকাল থেকে
মায়ুষ একেবারেই ভালোমায়ুষ নয়। ইতিহাসের আদিকাল থেকে
মায়ুষ বলেছে, বিশ্বঘটনার উপরে সে কর্তৃত্ব করবে। কেমন করে করবে ?
না, ঘটনার পিছনে যে প্রেরণা আছে, যার থেকে ঘটনাগুলো বেরিয়ে
এসেছে, তারই সলে কোনোমতে যদি রফা করতে বা তাকে বাধ্য করতে
পারে তা হলেই সে আর ঘটনার দলে থাকবে না, ঘটয়িতার দলে গিয়ে
ভতি হবে। সাধনা আরম্ভ করলে মন্ত্রন্ত নিয়ে। গোড়ায় তার
বিশ্বাস ছিল, জগতে যা-কিছু ঘটছে এ-সমন্তই একটা অমূত আত্বশক্তির
জোবে, অতএব তারও যদি জাত্বশক্তি থাকে তবেই শক্তির সঙ্গে শক্তির
বোগে সে কর্তৃত্ব লাভ করতে পারে।

শিক্ষার মিলন

নেই জাছ্মত্রের সাধনার মান্তব বে চেষ্টা গুল্ল করেছিল আজ বিজ্ঞানের সাধনার ভার সেই চেষ্টার পরিণতি। এই চেষ্টার মূল কথাটা হচ্ছে— মানব না, মানাব। অভএব, বারা এই চেষ্টার সিদ্ধি লাভ করেছে তারাই বাহিরের বিশ্বে প্রভূ হয়েছে, দাস নেই। বিশ্বক্রমণ্ডে নিরমের কোণাও একটুও ক্রটি থাকতে পারে না, এই বিশ্বাসটাই বৈজ্ঞানিক বিশ্বাস। এই বিশ্বাসের জ্যারেই জিত হয়। পশ্চিমের লোকে এই বৈজ্ঞানিক বিশ্বাসে ভর করে নিরমকে চেপে ধরেছে, আর তারা বাহিরের জগতের সকল সংকট তরে যাচ্ছে। এখনো যারা বিশ্বব্যাপারে জাতুকে অশ্বীকার করতে ভর পার এবং দায়ে ঠেকলে জাতুর শরণাপর হবার জন্মে যাদের মন ঝোকে, বাহিরের বিশ্বে ভারা সকল দিকেই মার থেয়ে মরছে, তারা আর কর্ত্ত্ব পেল না।

পূর্বদেশে আমরা যে সময়ে রোগ হলে ভূতের ওঝাকে ভাকছি, দৈশ্ত হলে গ্রহণান্তির জন্যে দৈবজ্ঞের বাবে দৌছছি, বসস্তমারীকে ঠেকিয়ে রাখবার ভার দিছি শীতলা দেবীর 'পরে, আর শক্রকে মারবার জন্তে নারণ উচাটন -মন্ত্র আওড়াতে বসেছি, ঠিক সেই সময়ে পশ্চিম মহাদেশে ভল্টেয়ারকে একজন মেয়ে জিজ্ঞাসা করেছিলেন, 'শুনেছি না কি, মন্ত্র-গুণে পালকে পাল ভেড়া মেরে ফেলা যায়; সে কি সতা !' ভল্টেয়ার ভবাব দিয়েছিলেন 'নিশ্চরই মেরে ফেলা যায়, কিন্তু ভার সঙ্গে যথোচিত পরিমাণে সেঁকো বিষ থাক। চাই।' মুরোপের কোনো কোপে-কানাচে জাহ্মদ্রের 'পরে বিশ্বাস কিছুমাত্র নেই, এমন কথা বলা যায় না, কিন্তু এ সম্বন্ধে সেঁকো বিষটার শুতি বিশ্বাস সেখানে শ্রায় সর্ববাদীসম্বত। এই-ভত্তেই ওরা ইচ্ছা করলেই মারতে পারে, আর আমরা ইচ্ছে না করলেও মরতে পারি।

আজ এ কথা বর্গা বাহুলা যে, বিশ্বশক্তি হচ্ছে ক্রটিবিহীন বিশ্ব-নিয়মেরই রূপ; আমাদের নিয়ন্ত্রিত বৃদ্ধি এই নিয়ন্ত্রিত অজিকে উপলব্ধি

করে। বৃদ্ধির নিয়মের সঙ্গে এই বিশ্বের নিয়মের সামঞ্জয় আছে, এইজন্তে এই নিয়মের 'পরে অধিকার আমাদের প্রত্যেকের নিজের মধ্যেই নিছিত— এই কথা জেনে তবেই আমরা আত্মশক্তির উপর নিংশেষে ভর দিয়ে দাঁড়াতে পেরেছি। বিশ্বব্যাপারে যে মার্হ্র আকস্মিকতাকে মানে সে নিজেকে মানতে সাহস করে না, সে যখনতখন যাকে-তাকে মেনে বসে; শরণাগত হবার জন্তে সে একেবারে ব্যাকুল। মাত্ম্য যখন ভাবে, বিশ্বব্যাপারে তার নিজের বৃদ্ধি খাটে না, তখন সে আর সন্ধান করতে চায় না, প্রশ্ন করতে চায় না, তখন সে বাইরের দিকে কর্তাকে খুঁজে বেড়ায়; এইজন্তে বাইরের দিকে সকলেরই কাছে সে ঠকছে, প্লিসের দারোগা থেকে ম্যালেরিয়ার মশা পর্যন্ত। বৃদ্ধির ভীক্রতাই হচ্ছে শক্তিহীনতার প্রধান আড্ডা।

পশ্চিমদেশে পোলিটিকাল স্বাতস্ক্রের যথার্থ বিকাশ হতে আরম্ভ হয়েছে কথন থেকে ? অর্থাৎ, কথন থেকে দেশের সকল লোক এই কথা বুঝেছে যে, রাষ্ট্রনিয়ম ব্যক্তিবিশেষের বা সম্প্রদায়বিশেষের থেয়ালের জিনিস নয়, সেই নিয়মের সঙ্গে তাদের প্রত্যেকের সম্বতির সম্বন্ধ আছে ? যথন থেকে বিজ্ঞানের আলোচনায় তাদের মনকে ভয়মুক্ত করেছে। যথন থেকে তারা জেনেছে, সেই নিয়মই সত্য যে নিয়ম ব্যক্তিবিশেষের কল্পনার হারা বিক্রত হয় না, থেয়ালের থারা বিচলিত হয় না। বিপ্লকায় রাশিয়া স্থদীর্ঘ কাল রাজার গোলামি করে এসেছে, তার ছাথের আর অন্ত ছিল না। তার প্রধান কারণ, সেখানকার অধিকাংশ প্রজাই সকল বিষয়েই দৈবকেই মেনেছে, নিজের বৃদ্ধিকে মানে নি। আদ্র যদি বা তার রাজা গেল, কাথের উপরে তথনি আর-এক উৎপাত চড়ে বসে তাকে রক্তসমুদ্র সাঁৎরিয়ে নিয়ে ছুভিক্রের মক্রভাভায় আথমরাকরে পৌছিয়ে দিলে। এর কারণ স্বরাজের প্রতিষ্ঠা বাহিয়ে নয়, যে-আলুবৃদ্ধির প্রতি আত্বা আল্বাল্ডির প্রথান অবলম্বন সেই আল্বার উপরে।

- শিক্ষার মিলন

আমি এক দিন একটি গ্রামের উন্নতি করতে গিরেছিলুম। গ্রামের লোকদের জিজ্ঞাসা করলুম, 'সেদিন ভোদের পাড়াম আগুন লাগল, একখানা চালাও বাঁচাতে পারলি নে কেন ?' তারা বললে, 'কপাল !' আমি বললেম, 'কপাল নয় রে, কুয়োর অভাব। পাড়ায় একখানা কুয়ো দিস নে কেন ?' তারা তখনই বললে, 'আজে, কর্তার ইচ্ছে হলেই হয়।' যাদের ঘরে আগুন লাগাবার বেলায় থাকে দৈব, তাদেরই জল দান করবার ভার কোনো-একটি কর্তার। স্মতরাং, যে ক'রে হোক এরা একটা কর্তা পেলে বেঁচে যায়। তাই, এদের কপালে আর-সকল অভাবই থাকে, কিছু কোনো কালেই কর্তার অভাব হয় না।

विश्वतात्वा (मवला चामात्मत्र श्वताक मित्र वत्म चाह्म। वर्षा९. वित्यंत्र नित्रगरक छिनि गांधांत्रराय नित्रग करत्र मिरत्रहान । এই नित्रगरक নিজের হাতে গ্রহণ করার দ্বারা আমরা প্রত্যেকে যে কর্তৃত্ব পেতে পারি তার পেকে কেবলমাত্র আমাদের মোহ আমাদের বঞ্চিত করতে পারে, चाद-(कछ ना, चाद-किहुएल ना। এইक्टल चामारमद्र छेपनियः এই (एवणा मध्यक वरमह्म : याषाज्यारणार्थान् वामधार भाषणीणाः गगाणाः। चर्षार, चर्षद्र विधान छिनि या करत्रह्म तम विधान यथा छत्, তাতে খামখেয়ালি এতটুকুও নেই, এবং সে বিধান শাখত কালের, व्याक अक तक्य काम अक तक्य नम्। अन्न यात्न इत्क, व्यर्वतात्का छात्र विधान তिनि চिद्रकारमद्र खर्ज भाका करत्र मिर्ह्मा । এ ना इरम याञ्चरक वित्रकाल जात चौंवलध्दा हर्य हुर्वल हर्य बाकरक हक; কেবলই এ-ভয়ে ও-ভয়ে সে-ভয়ে পেয়াদার ঘূষ জুগিয়ে ফভুর হতে रुठ, किन्न छात्र পেরাদার ছন্মবেশধারী মিশ্যা বিভীবিকার হাত (परक चार्यापत्र वैक्टियर्ह य-मिन मिन एक छोत्र विषदारका चार्यापत्र यत्राष्यत्र मिन ; जात्रहे महा व्यापानवाणी हत्हः याषाज्यात्जार्थान् वानशर भाषणीणाः गमाणाः। जिनि चन काम (परक चन कारमञ्

কালান্তর 🗼

অন্ত অর্থের যে বিধান করেছেন, তা যথাতথ। তিনি তার সূর্য চক্র প্রছ নক্ষত্রে এই কথা লিখে দিয়েছেন, 'বল্লরাজ্যে আমাকে না হলেও তোমার চলতৈ, ওখান থেকে আমি আড়ালে দাঁড়ালুম; এক দিকে রইল আমার বিশ্বের নিয়ম, আর-এক দিকে রইল তোমার বৃদ্ধির নিয়ম, এই হুরের যোগে তুমি বড়ো হও; অয় হোক তোমার; এ রাজ্য তোমারই হোক, এর ধন তোমার, অন্ত তোমারই।' এই বিধিদন্ত স্বরাজ যে গ্রহণ করেছে অন্ত সকল রকম স্বরাজ সে পাবে, আর পেরে রক্ষা করতে পারবে।

কিন্তু, নিজের বৃদ্ধিবিভাগে যে লোক কর্তাভন্ধা, পোলিটিকাল বিভাগেও কর্তাভন্ধা হওয়া ছাড়া তার আর গতি নেই। বিধাতা স্বয়ং যেখানে কর্তৃত্ব দাবি করেন না সেখানেও যারা কর্তা জ্টিয়ে বলে, যেখানে সম্মান দেন সেখানেও যারা আত্মাবমাননা করে, তাদের স্বরাজে রাজার পর রাজার আমদানি হবে, কেবল ছোট্ট ঐ 'স্ব'টুকুকে বাঁচানোই দায় হবে।

মান্নবের বৃদ্ধিকে ভ্তের উপদ্রব এবং অন্তুতের শাসন থেকে মৃক্তিদেবার ভার যে পেরেছে, তার বাসাটা পূর্বেই হোক আর পশ্চিমেই হোক, তাকে ওস্তাদ বলে করুল করতে হবে। দেবভার অধিকার আধ্যাত্মিক মহলে, আর দৈত্যের অধিকার বিশ্বের আধিভৌতিক মহলে। দৈত্য বলছি আমি বিশ্বের সেই শক্তিরূপকে যা স্থানকত্র নিয়ে আকাশে আকাশে তালে তালে চক্রে চক্রে লাঠিম ঘুরিয়ে বেড়ায়। সেই আধিভৌতিক রাজ্যের প্রধান বিভাটা আল শুক্রাচার্যের হাতে। সেই বিভাটার নাম সঞ্জীবনীবিভা। সেই বিভার জোরে সম্যক্রপে জীবনরকা হয়, জীবনপোবণ হয়, জীবনের সকল প্রকার ছ্র্গতি দ্র হতে থাকে; অরের অভাব, বত্রের অভাব, আহ্যের অভাব মোচন হয়; জড়ের অভ্যান্চার, জঙ্কর অভ্যাচার, মান্থবের অভ্যাচার থেকে এই বিভাই রক্ষা করে।

ু শিক্ষার মিলন

এই বিস্তা যথাতথ বিধির বিষ্তা, এ যখন আমাদের বৃত্তির সঙ্গে মিলবে তথনই স্বাভন্তালাভের গোড়াপন্তন হবে— অন্ত উপায় নেই।

এই শিকা (बदक अहेजात अको। मृष्टी ए पिछता याक। हिन्द्र कूर्या (थरक मूगनभारन जन जूनरन जारज जन जनविज करत्र। এটা विषम गूमकिलात कथा। एकनना, পবিত্রতা হল আধাাত্মিক রাজ্যের আর क्रांत्र छन्छ। इन वख्रारकात्र। यमि वना रघठ, यूननयानरक चुना क्रवाम यन व्यविद्य इम्र छ। इत्म (म क्था (वाया) (यछ; क्वनमा, त्मिष्ठी वाधाविक महत्वत्र कथा। किन्न भूगनमानित्र घड़ात्र मरशा व्यविद्यंखा আছে বললে তর্কের সীমানাগত জিনিসকে তর্কের সীমানার বাইরে নিয়ে शिर्य दुष्कित्क काँकि (मध्या इया शिक्त-हेक्न्याग्धेर्व्र धार्यकिक हिन्दू है। ब दल दि, चागरल एटे। चाम्राज्यद्वत्र कथा। किन्न चाम्राज्यद्वत्र कारना चशास्त्र रा भविज्ञान विहात स्नरे। देश्यान्त्र हाज वनर्व, वाहित्नि किएक यात्मत्र अहा (नहे वाशावित्कत्र त्नाहाहे निष्य कात्मत्र जुलिएय काक क्यारिक इया । এ कराविंग अरक्वारिय छारला नय, कायन यारमद वाहरद (धरक जूनिया काक चामात कदरल इस हिदमिनहे वाहरद পেকে তাদের কাজ করাতে হয়; নিজের থেকে কাজ করার শক্তি ारित्र बारक ना, ञ्चत्राः कर्छ। ना इत्न जातित्र ठत्नहे ना। चाद-এकि क्षा. এই जून यथन मराजात महाया कद्रात यात्र एथरना रम मजारक ठाना प्रिया 'यूमनयात्नत घड़ा हिन्तूत कूरवात कन व्यनिकात करत' ना द'ल (यह वना इम्र 'अभवित कर्त्र' छथनहे नडानिर्वाम नमस প्र नक करा इम्र। क्लाना, क्लाना क्लिनिंग व्यवदिकात करत कि ना करत्र मिठी खामानगारनक। एन ऋरम हिन्तूत्र चछा, मूनममाराज घछा; श्नित कृत्यात्र कन, यूगनयात्नत कृत्यात्र कन; श्निल्लाकात्र चात्रा, यूगनयानभाषात्र चाचा- यथानित्रत्य ७ यटबहे भत्रियात् कुनना करत পরীকা করে দেখা চাই। পবিত্রভাষ্টিভ দোব অন্তরের কিন্তু স্বাস্থ্যষ্টিভ

मिय वाहेद्रत्र. चल्जव वाहेद्र (पटक लात्र खिलकात्र हाम। चाहालस शिंगारव चए। পরিষ্কার রাখার নিয়ম বৈজ্ঞানিক নিয়ম, তা মুসলমানের পক্ষেও যেমন হিন্দুর পক্ষেও তেমনি; সেটা যাতে উভয় পক্ষে সমান গ্রহণ ক'রে উভয়ের কুয়ো উভয়েই বাবহার করতে পারে, সেইটেই চেষ্টার বিষয়। কিন্তু বাহ্যবস্তুকে অপরিষ্ঠার না বলে অপবিত্র বলার করে রাখা হয়। এটা কি কাজ সারার পক্ষেও ভালো রাস্তা ? এক দিকে वृद्धिक युद्ध दिर्थ चात्र- এक निर्क मिट्ट यूं छात्र माहाया निर्वे याँ कि पिर्य काक ठामारना, এটা कि कारना উচ্চ অधिकार्त्रत्र পथ? ठामिङ य তার দিকে অবৃদ্ধি, আর চালক যে তার দিকে অগত্য এই ভুরের সন্মিলনে কি কোনো কল্যাণ হতে পারে ? এই রকম বুদ্ধিগত काशूक्षका (धरक मिन्टक दै! हावात खरका चायामित यरक इरव खकाठार्यंत्र घरत्। तम चत्र পन्ठियञ्चाति व'ला यनि थायका व'ला विम 'ও घत्रहे। व्यविख', তা হলে যে বিছা। বাহিরের নিয়মের কথা শেখায় তার থেকে বঞ্চিত হব, আর যে বিল্ঞা অন্তরের পবিত্রভার কথা বলে ভাকেও ছোটো করা ছবে।

এই প্রসঙ্গে একটা তর্ক ওঠবার আশহা আছে। এ কথা অনেকে বলবেন, পশ্চিমদেশ যথন বুনো ছিল, পশুচর্ম প'রে মৃগয়া করত, তখন কি আমরা নিজের দেশকে অর জোগাই নি, বল্ধ জোগাই নি ? ওয়া যখন দলে দলে সমুদ্রের এ-পারে ও-পারে দহ্যাবৃত্তি করে বেড়াত, আমরা কি তখন স্বরাজশাসনবিধি আবিহ্বার করি নি ? নিশ্চয় করেছি। কিন্তু কারণটা কী ? আর তো কিছুই নয়, বস্তুবিছ্যা ও নিয়মতন্ত্ব ওরা ষতটা শিখেছিল আমরা তার চেয়ে বেশি শিখেছিলেম। পশুচর্ম পরতে যে বিছা লাগে তাঁত বুনতে তার চেয়ে অনেক বেশি বিদ্বার দরকার; পশু মেরে থেতে যে বিছা খাটাতে হয় চায করে থেতে তার চেয়ে

শিক্ষার মিলন

অনেক বেশি বিদ্যা লাগে। দম্যবৃত্তিতে যে বিদ্যা রাজ্য- চালনে ও পালনে তার চেয়ে অনেক বেশি। আজ আমাদের পরস্পারের অবস্থাটা যদি একেবারে উল্টে গিয়ে থাকে, তার মধ্যে দৈবের কোনো ফাঁকি নেই। কলিজের রাজাকে পথে ভাগিয়ে দিয়ে বনের ব্যাধকে আজ সিংহাসনে যে চড়িয়ে দিয়েছে সে তো কোনো দৈব নয়, সে ঐ বিদ্যা। অতএব আমাদের সঙ্গে ওদের প্রতিষোগিতার জোর কোনো বাহ্য ক্রিয়াকলাপে কমবে না; ওদের বিদ্যাকে আমাদের বিদ্যা করতে পারলে তবেই ওদের সামলানো যাবে। এ কথার একমাত্রে অর্থ, আমাদের সর্বপ্রধান সমস্যা শিক্ষাসমস্যা। অতএব, শুক্রাচার্যের আশ্রমে আমাদের বিদ্যা

এই পর্যন্ত এগিয়ে একটা কথার এগে মন ঠেকে যার। সামনে এই প্রশ্নটা দেখা দেয়, 'সব মানলেম, কিন্তু পশ্চিমের যে শক্তিরূপ দেখে এলে তাতে কি তৃপ্তি পেরেছ ?' না. পাই নি। সেখানে ভোগের চেহারা দেখেছি, আনজ্যের না। অনবচ্ছির সাত মাস আমেরিকায় ঐখর্যের দানবপুরীতে ছিলেম। দানব মল্ল অবে বলছি নে, ইংরাজ্ঞিতে বলতে হলে হয়তো বলতেম, টাইট্যানিক ওয়েল্প্। অর্থাৎ, যে ঐখর্যের শক্তি প্রবল, আয়তন বিপুল। হোটেলের জানলার কাছে রোজ ত্রিশ্পাতিশতলা বাড়ির জকুটির সামনে বসে থাক্তেম আর মনে মনে বলতেম, লগ্নী হলেন এক, আর কুবের হল আর— অনেক ভফাত। লগ্নীর অস্তরের কথাটি হচ্ছে কল্যাণ, সেই কল্যাণের হারা ধন শ্রীলাভ করে। সুবেরের অন্তরের কথাটি হচ্ছে সংগ্রহ, সেই সংগ্রহের হারা ধন বহলত লাভ করে। বহলতের কোনো চরম অর্থ নেই। হুই ছ্ওণে চার, চার তৃগুণে আট, আট ছ্ওণে বোলো, অন্তর্থলো ব্যাঙের মতো লাফিয়ে চলে— সেই লাক্ষের পাল্লা কেবলই লখা হতে থাকে। এই নিরপ্তর উল্লন্খনের ঝোঁকের মাঝখানে যে প'ড়ে গেছে ভার রোধ চেপে

যার, রক্ত গরম হয়ে ওঠে, বাহাছরির মন্ততার সে ভাঁ হয়ে যার। আর, যে লোক বাইরে বসে আছে তার যে কত বড়ো পীড়া এইখানে তার একটা উপমা দিই।

এক দিন আশ্বিনের ভরা নদীতে আমি বজরার জানলায় বলে ছিলেম, সেদিন পূর্ণিমার সন্ধা। অদ্রে ডাঙার উপরে এক গহনার নৌকোর ভোজপুরি মাল্লার দল উৎকট উৎসাহে আয়বিনাদনের কাজে লেগে গিয়েছিল। তাদের করেও হাতে ছিল মাদল, কারও হাতে করতাল। তাদের কঠে হ্বের আভাসমাত্র ছিল না, কিন্তু বাহতে শক্তি ছিল সেকথা কার সাধ্য অস্বীকার করে? খচমচ শক্তে তালের নাচন ক্রমেই দ্ন চৌদ্ন লয়ে চড়তে লাগল। রাত এগারোটা হয়, তুপুর বাজে, ভরা থামতেই চায় না। কেননা, থামবার কোনোই সংগত কারণ নেই। সঙ্গে যান থাকত তা হলে সমও থাকত। কিন্তু অরাজক তালের গতি আছে, শান্তি নেই; উত্তেজনা আছে, পরিতৃপ্তি নেই। সেই তালমাতালের দল প্রতি ক্রণেই ভাবছিল, ভরপুর মজা হচ্ছে। আমি ছিলেম তাওবের বাইরে; আমিই বুঝছিলেম, গানহীন তালের দৌরাল্যা বড়ো অসহা।

তেমনি ক'রেই আট্লান্টিকের ও পারে ইটপাধরের জন্মলে ব'সে
আমার মন প্রতিদিনই পীড়িত হয়ে বলেছে, তালের খচমচর অন্ত নেই,
কিন্তু ত্বর কোথার ! আরো চাই, আরো চাই, আরো চাই— এ বাণীতে
তো হুটির ত্বর লাগেনা। তাই সে দিন সেই ভ্রক্টিকুটিল অপ্রভেদী
ঐশর্ষের সামনে দাঁড়িয়ে ধনমানহীন ভারতের একটি সন্তান প্রতিদিন
ধিকারের সঙ্গে বলেছে, ততঃ কিম্!

এ কথা বারবার বলেছি, আবার বলি, আমি বৈরাগ্যের নাম ক'রে শৃক্ত ঝুলির সমর্থন করি নে। আমি এই বলি, অন্তরে গান ব'লে সভাটি যদি ভরপুর থাকে তবে তার সাধনায় ত্বর তাল বসের সংয্মরকা করে,

শিক্ষার মিলন

বাহিরের বৈরাগ্য অন্তরের পূর্ণতার সাক্ষ্য দেয়। কোলাহলের উদ্ধ্যল নেশার সংযমের কোনো বালাই নেই। অন্তরে প্রেম ব'লে সভ্যটি যদি থাকে তবে তার সাধনার ভোগকে হতে হয় সংযত, সেবাকে হতে হয় থাটি। এই সাধনার সভীত্ব থাকা চাই। এই সভীত্বের যে বৈরাগ্য অর্থাৎ সংযম সেই হল প্রকৃত বৈরাগ্য। অরপূর্ণার সঙ্গে বৈরাগির বে মিলন সেই হল প্রকৃত মিলন।

ষধন জাপানে ছিলেম তখন প্রাচীন জাপানের যে রূপ সেখানে দেখেছি সে আমাকে গভীর কৃপ্তি দিয়েছে। কেননা, অথহীন বহলতা তার বাহন নয়। প্রাচীন জাপান আপন রংপদ্মের মাঝখানে স্থান্তরকে পেয়েছিল। তার সমন্ত বেশভ্ষা, কর্ম, খেলা, তার বাসা, আসবাব, তার শিষ্টাচার, ধর্মামুচান, সমস্তই একটি মূল ভাবের হারা অধিকৃত হয়ে সেই এককে, সেই স্থান্তরকে বৈচিত্রোর মধ্যে প্রকাশ করেছে। একান্ত রিক্তভাও নির্বাক, একান্ত বহুলভাও তেমনি। প্রাচীন জাপানের যে জিনিস্টি আমার চোখে পড়েছিল তা রিক্তভাও নয়, বহুলভাও নয়, তা পূর্ণতা। এই পূর্ণতাই মামুষের হৃদয়কে আতিথ্য দান করে; সে ডেকে আনে, সে ভাড়িয়ে দেয় না। আধুনিক জাপানকেও এর পাশাপাশি দেখেছি। সেধানে ভোজপুরি মায়ার দল আড্ডা করেছে; তালের ষে প্রচণ্ড খচমচ উঠেছে স্থানেরর সঙ্গে তার মিল হল না, পূর্ণিমাকে তা বাঙ্গাকরতে লাগল।

পূর্বে যা বলেছি তার থেকে এ কথা স্বাই বৃথবেন যে, আমি বলি নে রেলওয়ে টেলিগ্রাফ কল কারখানার কোনোই প্রয়োজন নেই। আমি বলি, প্রয়োজন আছে কিছু তার বাণী নেই; বিশ্বের কোনো স্থরে সে সায় দেয় না, হৃদয়ের কোনো ভাকে সে সাড়া দেয় না। মামুবের ষেখানে অভাব সেইখানে তৈরি হয় তার উপক্রণ, মামুবের ষেখানে পূর্বতা সেইখানে প্রকাশ হয় তার অমৃতরূপ। এই অভাবের দিকে উপক্রণের

মহলে মাহ্নবের ঈর্বা বিদ্বেষ; এইখানে ভার প্রাচীর, ভার পাহারা; এইখানে সে আপনাকে বাড়ায়, পরকে ভাড়ায়; স্থতরাং এইখানেই ভার লড়াই। যেখানে ভার অমৃত— যেখানে মাহ্নব, বস্তুকে নয়, আত্মাকে প্রকাশ করে, সেখানে সকলকে সে ডেকে আনে; সেখানে ভাগের দ্বারা ভোজের ক্ষয় হয় না; স্থতরাং সেইখানেই শান্তি।

युर्वाभ यथन विकारने ठावि मिर्ग विस्थेत त्रष्ट्यनिक्टरनेत मध्या थुना नागन ज्थन य मिएक ठाग्न मिह मिएक एप वांधा निग्रम। निग्रज এই দেখার অভ্যাদে তার এই বিশ্বাস্টা ঢিলে হয়ে এসেছে যে, অন্তরঙ্গ মিল আছে। নিয়মকে কাজে খাটিয়ে আমরা ফল পাই, কিন্তু कन পাওয়ার চেয়েও মামুষের একটা বড়ো লাভ আছে। চা-বাগানের भगारनकात्र कूनिएनत 'পर्तत एव निश्चम हानना करत्र एम निश्चम यपि भाका रुप्त जो रूटन ठारप्रत कन्टनद भरक काटन नार्ग। किन्न, वन्न मधरक ম্যানেজারের তো পাকা নিয়ম নেই। তার বেলায় নিয়মের কথাই ওঠে ना। े कात्रगाठाएक ठारम् त चाम (नरे, नाम चार्छ। कूनित निम्नमेठा चारिटलेलिक विश्वनित्रयात मटल, मिहेक्टल एमहे। हा-वाभारम् थारहे। किन्छ, यिन अयन शांत्रणा इस (य. जे दक्कु जांत्र में जा कार्तना विद्रार्धे मरजांत्र चक्र नम्न, তा श्राम राष्ट्रिक भारताम मानवादक एक स्मिर्म स्मिता क्रमाक তো আমরা আত্মীয় ব'লে বরণ করতে পারি নে; ভা হলে কলের वाहेरत्र किছू यिन ना थारक তरव चामारमत्र य चांचा! चांची ग्ररक शिरक त्य मैं। ए। ये का वा क्या कि विकार के विकार मिट्न वहे चाचारक क्वनहे मित्रिय मित्रिय खत्र खरू चात्र खात्रभा वाथल ना। একবোঁকা আধাাত্মিক বুভিতে আমরা দারিদ্রো ভুবলতার कांक हाय পড़िছ, जात खताहे कि अक्रबाँका जाबिएकोिक हारम এक পায়ে वाक्तिय यश्याद्वत गार्थक जात्र यथा शिष्य भी ठ छ १

শিক্ষার মিলন

विषय गटक याराय अभिकर्या ठा-वागारनय गारिकावित गचक তাদের সঙ্গে যে-সে লোকের পেরে ওঠা শক্ত। অদকতার বিষ্ঠাটা এরা আয়ন্ত করে নিয়েছে। ভালোমানুষ লোক তাদের সন্ধানপর আড়কাঠির হাতে ঠকে যায়, ধরা দিলে ফেরবার পথ পায় না। কেননা ভালোমানুষ लाक्त्र निष्यात्वाथ (नहें, राथान विद्यान कत्रवात नम्र क्रिक महेंशानहें আগেভাগে সে विश्वाम করে বসে আছে— তা সে বৃহম্পতিবারের বার-्वला (हाक, त्रकाम दात्र जाविक (हाक, डिकिटनत मानान हाक, जात्र ठा-वाशात्मव व्याप्काठि हाक। किन्न, এই নেহাত ভালোমামুবেরও এक है। ब्यायशा व्याद्य एये निष्ठायद्र छे भद्रकाद : भिश्रास मि प्रिष्ठ स वन्छ পात्र, 'गांड कत्म चामि एयन हा-वागात्नव मात्विकाव ना हहे, ভগবান, আমার 'পরে এই দয়া করো।' অপচ, এই অনবচিহ্ন চা-বাগানের ম্যানেজার-সম্প্রদায় নিধুত ক'রে উপকার করতে জানে। खान তাদের কুলির বস্তি কেমন করে ঠিক ষেন কাঁচিছাটা সোজা लाहेरन পরিপাটি করে বানিয়ে দিতে হয়; দাওয়াইখানা ডাক্তারখানা श्वेवाकार्त्रत य रावका करत्र रम पूर পत्रिभाष्टि। अस्तर अहे निर्माक्ष्यिक श्रवावश्राय निष्कतम् यूनका इत्र, श्रञ्जतम् উপकात्र इत् शाद्र, किन्न নাপ্তি ততঃ স্থলেশঃ সত্যং।

কেউ না মনে করেন, আমি কেবলমাত্র পশ্চিমের সঙ্গে পূর্বের সম্বন্ধ নিয়েই এই কথাটা বলছি। বাত্রিকভাকে অস্তরে বাহিরে বড়ো ক'রে ভূলে পশ্চিমসমাজে মানবস্থন্ধের বিলিপ্টতা ঘটেছে। কেননা, ক্লু দিয়ে আটা, আঠা দিয়ে আড়ার বন্ধনকেই ভাবনায় এবং চেপ্টায় প্রধান ক'রে ভূললে অস্তরতম যে আজ্মিক বন্ধনে মামুব স্বভঃপ্রায়িত আকর্ষণে পরস্পার গভীরভাবে মিলে যায় সেই স্পৃষ্টিশক্তিসম্পন্ন বন্ধন শিবিল হতে থাকে। অবচ, মামুবকে কলের নিয়মে বাবার আশ্চর্য সক্ষলতা আছে; তাতে প্রায়েব্য রাশীকৃত হয়, বিশ্ব ক্লুড়ে হাট বসে, মেব ভেদ করে

কোঠাবাড়ি ওঠে। এ দিকে সমাজবাগারে শিক্ষা বল, আরোগ্য বল, জীবিকার অযোগসাধন বল, নানাপ্রকার হিভকর্মেও মায়বের বোলো আনা জিত হয়। কেননা, পূর্বেই বলেছি, বিশ্বের বাহিরের দিকে এই কল জিনিসটা সত্য। সেইজ্বল্যে এই যান্ত্রিকভায় যাদের মন পেকে যায় ফললাভের দিকে ভাদের লোভের অন্ত বাকে না। লোভ যতই বাড়তে ধাকে, মায়ুবতে মায়ুষ খাটো করতে ভতই আর দ্বিধা করে না।

কিন্তু, লোভ তো একটা তত্ত্ব নয়, লোভ হচ্ছে রিপু। রিপুর কর্ম নয় সৃষ্টি করা। তাই, ফললাভের লোভ যখন কোনো সভাতার অস্করে প্রধান আসন গ্রহণ করে তখন সেই সভাতায় মামুষের আত্মিক যোগ বিশিষ্ট হতে থাকে। সেই সভাতা যতই ধনলাভ করে, বরলাভ করে, স্থবিধাস্থাোগের যতই বিন্তার করতে থাকে, মামুষের আত্মিক সভাকে ততই সে মুর্বল করে।

একা মামুষ ভয়ংকর নির্থক; কেননা, একার মধ্যে ঐকা নেই।
বহুকে নিয়ে যে এক সেই হল সভা এক। বহুকি বিদ্ধির যে
সেই লক্ষীছাড়া এক ঐকা থেকে বিচ্ছির এক। ছবি এক লাইনে হয় না,
সে হয় নানা লাইনের ঐকা: ছবির মধ্যে প্রভাক লাইনিট ছোটো
বড়ো সমস্ত লাইনের আত্মীয়। এই আত্মীয়ভার সামঞ্জে ছবি হল স্টি।
এঞ্জিনিয়র সাহেব নীল রঙের মোমগামার উপর বাড়ির প্লান আঁকেন,
ভাকে ছবি বলি নে; কেননা, সেখানে লাইনের সঙ্গে লাইনের অন্তরের
আত্মিক সম্বন্ধ নয়, বাহির মহলের ব্যবহারিক সম্বন্ধ। ভাই ছবি হল
স্কেন, প্ল্যান হল নির্মাণ।

তেমনি ফললাভের লোভে ব্যবসায়িকভাই যদি মাহুষের মধ্যে প্রবল হয়ে ওঠে তবে মানবসমাজ প্রকাণ্ড প্ল্যান হয়ে উঠতে থাকে, ছবির আর কিছু বাকি থাকে না। তথন মাহুষের মধ্যে আত্মিক সম্বন্ধ থাটো হতে থাকে। তথন ধন হয় সমাজের রথ, ধনী হয় সমাজের র্থী, আর

শিক্ষার মিলন

শক্ত বাধনে বাধা মান্ত্ৰগুলো হয় রখের বাহন। গড় গড় শক্তে এই রখটা এগিরে চগাকেই মান্ত্র বলে গভাভার উন্নতি। তা হোক, কিছ এই কুবেরের রখগাঞায় মান্ত্রের আনন্দ নেই, কেননা, কুবেরের পরের পরের মান্ত্রের অন্তরের ভক্তি নেই। ভক্তি নেই ব'লেই মান্ত্রের বাধন দড়ির বাধন হয়, নাড়ীর বাধন হয় না। দড়ির বাধনের ঐক্যকে মান্ত্র্য গরিবে না, বিজ্ঞাহী হয়। পশ্চিমদেশে আন্ধ সামান্ত্রিক বিজ্ঞাহ কালো হয়ে ঘনিয়ে এসেছে, এ কথা অস্পাই। ভারত আচারের বন্ধনে যেখানে মান্ত্র্যকে এক করতে চেরেছে সেখানে সেই ঐক্যে সমান্ত্রকে নির্দ্রাক করেছে; মুরোপে ব্যবহারের বন্ধনে যেখানে মান্ত্রকে এক করতে চেরেছে সেখানে সেই ঐক্যে সমান্ত্রকে এক করতে চেরেছে সেখানে সেই ঐক্যে সমান্ত্রকে নির্দ্রাক নেরেছে। কেননা, আচারই হোক আর ব্যবহারই হোক, তারা তো তন্ত্ব নয়; তাই ভারা মান্ত্রের আত্মাকে বাদ দিয়ে সকল ব্যবহা করে।

তত্ত্ব কাকে বলে ? যিও বলেছেন, 'আমি আর আমার পিতা এক।' এ হল তত্ত্ব। পিতার সঙ্গে আমার যে একা সেই হল সতা একা, ম্যানেজারের সঙ্গে কুলির যে একা সে সতা একা নর।

চরম ভন্ত আছে উপনিবদে—

छेनावाक्रियर गर्वः यर किश्न खगलाः खगर। एक लाख्यन जूबीया या गृथः क्ष्मियनम् ॥

পশ্চিমসভ্যতার অন্তরাসনে লোভ রাজা হয়ে বসেছে, পূর্বেই তার নিন্দা করেছি। কিছ, নিন্দাটা কিসের ? ঈশোপনিবদে ভত্তবন্ধপে এরই উত্তরটি দেওরা হয়েছে। অবি বলেছেন, মা গৃধা, লোভ কোরো না। কেন করব না ? বেছেছু লোভে সভ্যকে মেলে না। নাইবা নিলল, আমি ভোগ করতে চাই। ভোগ কোরো না, এ কথা ভো বলা হছে না। ভূজীখাং, ভোগই করবে; কিছ সভ্যকে ছেড়ে আনন্দকে ভোগ করবার পছা নেই। তা হলে সভ্যটা কী ? সভ্য

হচ্ছে এই 'ঈশাবান্তমিদং সর্বং', 'সংসারে যা-কিছু চলছে সমস্ত ঈশারের বারা আছের। যা-কিছু চলছে সেইটেই যদি চরম সত্য হ ত, তার বাইরে আর কিছুই না থাকত, তা হলে চলমান বস্তকে যথাসাধ্য সংগ্রহ করাই মাছ্যের সব চেয়ে বড়ো সাধনা হত। তা হলে লোভই মান্ত্যকে সব চেয়ে বড়ো চরিভার্থতা দিত। কিন্তু, ঈশ সমস্ত পূর্ণ করে রয়েছেন, এইটেই যথন শেষ কথা তথন আত্মার বারা এই সত্যকে ভোগ করাই হবে পরম সাধনা; আর, তেন ত্যক্তেন ভুজীথাঃ, ত্যাগের বারাই এই ভোগের সাধন হবে, লোভের বারা নয়। সাত মাস ধরে আমেরিকার আকাশের বক্ষোবিদারী ঐশ্বর্যপ্রীতে বসে এই সাধনার উল্টো পথে চলা দেখে এলেম। সেখানে 'বং কিঞ্চ জগত্যাং জগং' সেটাই মস্ত হয়ে প্রকাশ পাছে, আর 'ঈশাবান্তমিদং সর্বং' সেইটেই ভলারের ঘন ধূলার আছের। এইজন্তেই সেখানে 'ভুজীথাঃ' এই বিধানের পালন সত্যকে নিয়ে নয়, ধনকে নিয়ে; ত্যাগকে নিয়ে নয়, লোভকে নিয়ে।

ঐক্য দান করে সত্য, ভেদবৃদ্ধি ঘটার ধন। তা ছাড়া সে অন্তরাত্মাকে
শৃস্ত বাখে। সেইজ্বস্তে পূর্ণতাকে বাইরের দিক থেকে ছিনিয়ে নিতে
ইচ্ছা করে, স্থতরাং কেবল সংখ্যাবৃদ্ধির দিকে দিনরাত উর্ধ্বশাসে দৌড়তে
হয়, 'আরো' 'আরো' হাঁকতে হাঁকতে হাঁপাতে হাঁপাতে নামভার
কোঠার কোঠার আকাজ্ঞার ঘোড়দৌড় করাতে করাতে ঘূর্ণি লাগে;
ভূলেই যেতে হয়, অন্ত যা-কিছু পাই আনন্দ পাচ্ছি নে।

তা হলে চরিতার্থতা কোধার ? তার উত্তর এক দিন ভারতবর্ধের ধবিরা দিয়েছেন। তারা বলেন, চরিতার্ধতা পরম একের মধ্যে। গাছ থেকে আপেল পড়ে— একটা, ছটো, তিনটে, চারটে। আপেল-পড়ার অস্তবিহীন সংখ্যাগণনার মধ্যেই আপেল-পড়ার সত্যকে পাওয়া বায়, এ কথা বে বলে প্রত্যেক সংখ্যার কাছে এসে তাকে তার মন ধাকা দিয়ে বলবে, ততঃ কিম্! তার দৌড়ও থামবে না, তার প্রশ্নের উত্তরও

শিক্ষার মিলন

মিলবে না। কিন্তু অসংখ্য আপেল পড়া যেমনি একটি আকর্ষণভত্তে এসে ঠেকে অমনি বুদ্ধি খুশি হয়ে বলে ওঠে, বাস্, হয়েছে।

এই তো গেল আপেল-পড়ার সভা। মামুষের সভাটা কোথায়? সেন্সস্রিপোর্টে? এক ছুই ভিন চার পাচে? মামুষের স্ক্রপ প্রকাশ কি অস্কুহীন সংখ্যায়? এই প্রকাশের ভত্তটি উপনিষৎ বলেছেন—

> যন্ত সর্বাণি ভূতানি আত্মগ্রহান্তপশ্রতি। সর্বভূতেরু চাত্মানং ন ততো বিজ্ঞপ্সতে।

যিনি সর্বভূতকে আপনারই মতো দেখেন এবং আত্মাকে সর্বভূতের মধ্যে দেখেন তিনি প্রক্রর থাকেন না। আপনাকে আপনাতেই বে বছ করে দেখেন তিনি প্রক্রর থাকেন না। আপনাকে আপনাতেই বে বছ করে দেখাকে লুপ্ত; আপনাকে সকলের মধ্যে যে উপলব্ধি করে সেই হয় প্রকাশিত। মহাক্তত্বের এই প্রকাশ ও প্রচ্ছেরতার একটা মন্ত দৃষ্টান্ত ইতিহাসে আছে। বুদ্ধদেব মৈত্রীবৃদ্ধিতে সকল মামুষকে এক দেখেছিলেন, তাঁর সেই ঐক্যতত্ব চীনকে অমৃত দান করেছিল। আর, বে বশিক লোভের প্রেরণায় চীনে এল এই ঐক্যতত্ত্বকে সে মানলে না; সে অকৃত্তিতিন্তি চীনকে মৃত্দান করেছে, কামান দিয়ে ঠেসে ঠেসে তাকে আফিম গিলিয়েছে। মামুষ কিসে প্রকাশ পেয়েছে আর কিসে প্রক্রর হয়েছে, এর চেয়ে স্পষ্ট ক'রে ইতিহাসে আর-কর্যনো দেখা যায় নি।

আমি আনি, আজকের দিনে আমাদের দেশে অনেকেই বলে উঠবেন, ওই কণাটাই তো আমরা বারবার বলে আসছি। ভেদবৃদ্ধিটা যাদের এত উত্তা, বিশ্বটাকে তাল পাকিয়ে পাকিয়ে এক-এক গ্রাসে গেলবার জভ্যে যাদের লোভ এত বড়ো হা করেছে, তাদের সঙ্গে আমাদের কোনো কারবার চলতে পারে না। কেননা ওরা আধ্যাত্মিক নয়, আমরা আধ্যাত্মিক। ওরা অবিভাকেই মানে, আমরা বিভাকে। এমন অবস্থায় ওদের সমস্ত শিক্ষাণীকা বিষের মভো পরিহার করা চাই।

এক দিকে এটাও ভেদবৃদ্ধির কথা, অপর দিকে এটা সাধারণ বিষয়বৃদ্ধির কথাও নয়। ভারতবর্ষ এই মোহকে সমর্থন করেন নি। ভাই মহা বলেছেন—

> न छरेषछानि भकारस गःनियस गरानया। विषयसम् श्रक्षानि यथा स्वातन निष्णभः॥

বিষয়ের সেবা ত্যাগের ছারা তেমন করে সংযমন হয় না, বিষয়ে নিযুক্ত থেকৈ জ্ঞানের ছারা নিত্য-নিত্য যেমন করে হয়। এর কারণ, বিষয়ের দায় আধিতোতিক বিশ্বের দায়, সে দায়কে ফাঁকি দিয়ে আধ্যাত্মিকের কোঠায় ওঠা যায় না; তাকে বিশুদ্ধরূপে পূর্ণ করে তবে উঠতে হয়। তাই উপনিষং বলেছেন: অবিভয়া মৃত্যুং তীর্ত্য বিভয়াম্তমলুতে। অবিভার পথ দিয়ে মৃত্যু থেকে বাঁচতে হবে, তার পরে বিভার তীর্বে অমৃতলাভ হবে। শুক্রাচার্য এই মৃত্যু থেকে বাঁচাবার বিভা নিয়ে আছেন, তাই অমৃতলোকের ছাত্র কচকেও এই বিভা শেখবার জভ্যে দৈত্য-পাঠশালার খাতায় নাম লেখাতে হয়েছিল।

আত্মিক সাধনার একটা অঙ্গ হচ্ছে অড়বিখের অত্যাচার থেকে আত্মাকে মৃক্ত করা। পশ্চিম-মহাদেশের লোকেরা সাধনার সেই দিকটার ভার নিয়েছে। এইটে হচ্ছে সাধনার সব-নিচেকার ভিত, কিছু এটা পাকা করতে না পারলে অবিকাংশ মামুষের অধিকাংশ শক্তিই পেটের দায়ে অড়ের গোলামি করতে ব্যস্ত থাকবে। পশ্চিম তাই হাতের আন্তিন গুটিয়ে খন্তা কোদাল নিয়ে এমনি ক'রে মাটির দিকে মুঁকে পড়েছে যে উপর-পানে মাথা ভোলবার ফুর্সত তার নেই বললেই হয়। এই পাকা ভিতের উপর উপর-তলা যথন উঠবে তথনই হাওয়া-আলোর বারা ভক্ত তাদের বাসাটি হবে বাধাহীন। তত্ত্বানের ক্লেক্তে আমাদের জ্ঞানীরা বলেছেন, না-জানাই বন্ধনের কারণ, জানাতেই মৃক্তি।

শিক্ষার মিলন

বস্তুবিশেও সেই একই কথা। এখানকার নির্মতন্ত্বকে যে না জানে সেই বৃদ্ধ হয়, যে জানে সেই মৃতিলাভ করে। তাই বিষয়রাজ্যে আমরা বে বাহ্ বন্ধনা করনা করি সেও মারা; এই মারা থেকে নিরুতি দের বিজ্ঞানে। পশ্চিম-মহাদেশ বাহ্ববিশ্বে মারামৃত্তির সাধনা করছে; সেই সাধনা কুধা তৃষ্ণা শীত গ্রীম্ম রোগ দৈক্তের মূল খুঁজে বের ক'রে সেইখানে লাগাছে যা; এই হচ্ছে মৃত্যুর মার থেকে মাহুষকে রক্ষা করবার চেষ্টা। আর, পূর্বমহাদেশ অন্তর্গ্রার যে সাধনা করেছে সেই হচ্ছে অমৃতের অধিকার লাভ করবার উপার। অত্তরে, পূর্বপশ্চিমের চিন্ত যদি বিজির হয় তা হলে উওরেই বার্থ হবে; তাই পূর্বপশ্চিমের মিলনমন্ত্র উপনিবৎ দিয়ে গেছেন। বলেছেন—

বিস্তাং চাবিস্তাং চ ষশুদ্বেদোভয়ং সহ। অবিস্থা মৃত্যুং তীমা বিস্থামৃতমন্তে॥

যং কিঞ্চ অগতাং অগং, এইখানে বিজ্ঞানকে চাই; ঈশাবাশ্রমিদং সবং, এইখানে তত্ত্বজানকে চাই। এই উভয়কে মেলাবার কথা যখন খবি বলেছেন তথন পূর্বপণ্ডিমকে মিলতে হবে। এই মিলনের অভাবে পূর্বদেশ দৈল্পণিডিত, সে নিজীব; আর পশ্চিম অশান্তির ছারা ক্রে, সে নিরানন্দ

এই ঐক্যতন্ত্ব সম্বন্ধ আমার কথা ভূল বোঝবার আশকা আছে।
ত ই যে কথাটা একবার আভাসে বলেছি সেইটে আর-একবার স্পষ্ট বলা
ভালো। একাকার হওয়া এক হওয়া নয়়। ষারা শতন্ত্র তারাই এক
হতে পারে। পৃথিবীতে যারা পরজাতির শাতন্ত্রা লোপ করে তারাই
সর্বজাতির ঐক্য লোপ করে। ইম্পীরিয়ালিজ্ম্ ইচ্ছে অজগর সাপের
ঐক্যনীতি; গিলে খাওয়াকেই সে এক করা ব'লে প্রচার করে। পূর্বে
আমি বলেছি, আধিভৌতিককে আধাাত্মিক যদি আত্মসাৎ করে বসে
তা হলে সেটাকে সমন্বন্ন বলা চলে না; পরস্পরের শ্ব-ক্ষেত্রে উভয়ে

कालासुत

শতর পাকলে তবেই সময়য় সতা হয়। তেমনি মাছুব বেখানে
শতর সেখানে তার স্বাতয়া শীকার করলে তবেই মাছুব বেখানে এক
সেখানে তার স্তা একা পাওয়া যায়। সেদিনকার মহাবুদ্ধের পর
য়ুরোপ যখন শান্তির জ্বতো ব্যাকুল হয়ে উঠল তখন থেকে সেখানে
কেবলই ছোটো ছোটো জাতির শাতয়োর দাবি প্রবল হয়ে উঠছে।
য়িদ আজ নব্যুগের আরম্ভ হয়ে থাকে তা হলে এই য়ুগে অতিকায় এয়য়,
অতিকায় সাম্রাজ্ঞা, সংঘবদ্ধনের সমস্ত অতিশয়তা টুকরো টুকরো হয়ে
ভেঙে যাবে। সত্যকার শাতয়োর উপর সত্যকার ঐকারের প্রতিষ্ঠা
হবে। যারা নব্যুগের সাধক ঐকারের সাধনার জ্বতোই তাদের শাতয়োর
সাধনা করতে হবে; আর তাদের মনে রাখতে হবে, এই সাধনায়
জ্বাতিবিশেবের মুক্তি নয়, নিখিল মানবের মুক্তি।

যারা অন্তকে আপনার মতো জেনেছে, ন ততো বিজ্পুপ্রতে, তারাই প্রকাশ পেয়েছে— এই তত্ত্তি কি মাহুবের প্র্থিতেই লেখা আছে ? মাহুবের সমস্ত ইতিহাসই কি এই তত্ত্বের নিরন্তর অভিবাজি নয় ? ইতিহাসের গোড়'তেই দেখি, মাহুবের দল পর্বতসমুদ্রের এক-একটি বেড়ার মধ্যে এক মহুরেছে। মাহুব যথন একত্র হয় তথন যদি এক হতে না পারে তা হলেই সে সভ্য হতে বঞ্চিত হয়। একত্রিত মহুল্যদলের মধ্যে যারা যত্ত্বংশের মাতাল বীরদের মতো কেব্লই হানাহানি করেছে, কেউ কাউকে বিশাস করে নি, পরস্পরকে বঞ্চিত করতে গিয়েছে, তারা কোন্ কালে লোপ পেয়েছে। আর, যারা এক আত্মাকে আপনাদের সকলের মধ্যে দেখতে চেয়েছিল তারাই মহাজাতিরপে প্রকাশ পেয়েছে।

বিজ্ঞানের কল্যাণে জলে স্থলে আকাশে আজ এত পথ খুলেছে, এত রথ ছুটেছে যে, ভূগোলের বেড়া আজ আর বেড়া নেই। আজ, কেবল নানা ব্যক্তি নয়, নানা জাতি কাছাকাছি এগে জুটল; অমনি মানুবের

শিকার মিলন

সত্যের সমস্তা বড়ো হরে দেখা দিল। বৈজ্ঞানিক শক্তি বাদের একত্র করেছে ভাদের এক করবে কে ! মাছবের যোগ যদি সংযোগ হল তো ভালোই, নইলে সে ছুর্বোগ। সেই মহাছুর্রোগ আজ ঘটেছে। একত্র হবার বাহুশক্তি হু-হু ক'রে এগোল, এক করবার আত্তর শক্তি পিছিয়ে পড়ে রইল। ঠিক যেন গাড়িটা ছুটেছে এঞ্জনের জ্ঞারে, বেচারা ড্রাইভারটা 'আরে আরে, হাঁ হাঁ' করতে করতে তার পিছন পিছন দৌড়েছে, কিছুতে নাগাল পাছে না। অথচ, এক দল লোক এঞ্জিনের প্রচণ্ড বেগ দেখে আনন্দ করে বললে, 'গাবাস, একেই তো বলে উন্নতি!' এ দিকে, আমরা পূর্বদেশের ভালোমাছ্যুয়, যারা বীরমন্দ গ্যানে পায়ে হেঁটে চলি, ওদের ঐ উন্নতির ধাক্কা আজও সামলে উঠতে পারছিনে। কেননা, যারা কাছেও আনে, তক্কাতেও থাকে, তারা যদি চঞ্চল পদার্থ ছয় তা ছলে পদে পদে ঠকাঠক ধাক্কা দিতে থাকে। এই ধাক্কার মিলন স্থেকর নয়, অবস্থাবিশেষে কল্যাণকর হতেও পারে।

যাই হোক, এর চেরে স্পষ্ট আজ আর কিছুই নয় যে, জাতিতে ভাতিতে একত্র হছে অবচ মিলছে না। এরই বিষম বেদনায় সমস্ত পৃথিবী পীড়িত। এত ছংখেও ছংখের প্রতিকার হয় না কেন ? তার কারণ এই বে, গঞ্জীর ভিতরে বারা এক হতে শিখেছিল গঞ্জীর বাইরে তারা এক হতে শেখে নি।

মানুষ সাময়িক ও স্থানিক কারণে গণ্ডীর মধ্যে সভ্যকে পার ব'লেই সভ্যের পূজা ছেড়ে গণ্ডীর পূজা ধরে; দেবভার চেয়ে পাঞাকে মানে; রাজাকে ভোলে, দারোগাকে কিছুতে ভূলতে পারে না। পৃথিবীতে নেশন গড়ে উঠল সভ্যের জোরে; কিন্তু ক্লাশনালিজ্ম সভ্য নয়, অবচ সেই জাভীয় গণ্ডীদেবভার পূজার অনুষ্ঠানে চারি দিক থেকে নরবলির কোগান চলতে লাগল। যত দিন বিদেশী বলি ভুটত তত দিন কোনো

कथा छिन ना ; इठां९ ১৯১৪ थुम्हार्स भवन्भवरक वनि स्वांत्र करन चत्र यक्षमानरमत्र मरशा होनाहोनि भर् एराम। जन्न ८४८क ७८मत्र मरन गत्मिर जागरा चात्र रून, 'এक्टि कि वर्ष रहेरिषवा ? এ य चत्र भन्न किंदूरे विठात करत ना। व यथन এक मिन পूर्वमित वक-श्रामत কোমল অংশ বেছে তাতে দাঁত বিসম্বেছিল এবং 'ভিক্ যথা ইকু থায়, ধরি ধরি চিবায় সমন্ত'— তখন মহাপ্রসাদের ভোজ পুব জমেছিল, मक्त मक्त्र यमगख्ठात्र अवविधि हिल ना। आक गाथात्र हाल मिर्त्र अरमत क्षि क्षे ज्ञान्त , 'अत्र भूका ज्ञानात्मत्र वः त्म महत्व ना।' युद्ध यथन পুরোদমে চলছিল তথন সকলেই ভাবছিল, যুদ্ধ মিটলেই অফল্যাণ मिटेर्व। यथन मिटेन ७थन प्रथा रान, पूर्व फिर्व राष्ट्रे युष्के हो अरगर्छ সন্ধিপত্রের মুখোষ প'রে। কিন্ধিক্যাকাণ্ডে যার প্রকাণ্ড লেজটা দেখে লেজটার উপর যোড়কে যোড়কে সন্ধিপত্তের স্নেছসিক্ত কাগজ ভড়ানো চলেছে। বোঝা যাচ্ছে, এটাতে আগুন যখন ধরুবে তখন কারও घरत्रत्र ठान चात्र वाकि थाकरव ना। পশ্চিমের মনীধী লোকেরা ভীত हरम नमहिन रय, रय हुर्व कि एथरक दूर्घनात्र छेर পखि এङ मात्रित्र পत्रिस তার নাড়ী বেশ তাজা আছে। এই ছুর্ছরেই নাম স্থাশনালিজ্ম, (मर्भित गर्वक्रीन चाण्डक्षित्रछ।। এ इन दिशू, अकाछरखत छेल्छ। मिक, वर्षा वापनात मिक्होर के अब होन। किंद्र. कालिए कालिए আজ একত্র হয়েছে, এই কথাটা ধখন অস্বীকার করবার জো নেই, এত বড়ো সভ্যের উপর যথন কোনো একটামাত্র প্রবল জাতি আপন गाञाकात्रथ চालिय मिरत ठाकात्र जनात्र এरक धूरना क'रत मिरज भारत ना, ज्थन এর সঙ্গে সভা বাবহার করতেই হবে। ज्थन ঐ विপ্টাকে अब यावशान चानल मक्निव याला कन्हे मृाजब छिन्नयागिए बाद वादा म कुक्रक्व वाधिता मिर्व ।

শিকার মিলন

বর্তমান যুগের সাধনার সঙ্গেই বর্তমান যুগের শিক্ষার সংগতি হওয়া চাই। রাব্রীর গঙী-দেবতার বারা পূঞারি তারা শিক্ষার ভিতর দিরে নানা ছুতোর জাতীর আরম্ভরিতার চর্চা করাকে কর্তব্য মনে করে। জর্মনি একদা শিক্ষাবাবস্থাকে তার রাব্রীনৈতিক ভেদবৃদ্ধির ক্রীতদাসী করেছিল ব'লে পশ্চিমের অক্সান্ত নেশন তার নিন্দা করেছে। পশ্চিমের কোম্ বড়ো নেশন্ এ কাজ করে নি ? আসল কথা, জর্মনি সকল বিভাগেই বৈজ্ঞানিক রীতিকে অক্সান্ত সকল ভাতির চেয়ে বেশি আয়ন্ত করেছে; সেইজ্লস্তে পাকা নিরমের জোরে শিক্ষাবিধিকে নিয়ে স্বাজ্ঞাতোর ভিমে তা দেবার ইনক্যবেটার বন্ত্র সে বানিয়েছিল। তার থেকে যে বাজ্যা জ্বেছিল দেখা গেছে অক্সদেশী বাজ্যার চেয়ে তার দম অনেক বেশি। কিন্তু তার প্রতিপক্ষ পক্ষীদের ভিমেতেও তা দিয়েছিল সে দিককার শিক্ষাবিধি। আর, আজ ওদের অধিকাংশ খবরের কাগজ্ঞের প্রধান কাজ্ঞা কী ? জাতীয় আয়ন্তরিতার কুশল কামনা করে প্রতিদিন অসত্যপীরের সিরি মানা।

বাজাত্যের অহমিকা থেকে মৃত্তিদান করার শিক্ষাই আজকের
দিনের প্রধান শিক্ষা। কেননা, কালকের দিনের ইতিহাস সর্বজ্ঞাতিক
সহযোগিতার অধ্যার আরম্ভ করবে। বে-সকল রিপু, যে-সকল চিন্তার
অভ্যাস ও আচারপদ্ধতি এর প্রতিকৃল তা আগামীকালের জন্তে
আমাদের অবোগ্য ক'রে তুলবে। স্বদেশের গৌরবর্দ্ধি আমার মনে
আছে, কিন্তু আমি একান্ত আগ্রহে ইচ্ছা করি যে, সেই বৃদ্ধি যেন কথনো
আমাকে এ কথা না ভোলায় যে, এক দিন আমার দেশে সাধকেরা যে
মন্ত্র প্রচার করেছিলেন সে হচ্ছে ভেদবৃদ্ধি দৃর করবার মন্ত্র। তনতে
পাচ্ছি সমৃত্তের ও পারে মাহ্ব আজ আপনাকে এই প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করছে,
'আমাদের কোন্ শিক্ষা, কোন্ চিন্তা, কোন্ কর্মের মধ্যে মোহ প্রচ্ছর
হরে ছিল যার জন্তে আমাদের আজ এমন নিদারণ শোক ?' তার উত্তর
আমাদের দেশ থেকেই দেশে দেশান্তরে পৌছুক যে, 'মাহুবের একছকে

ভোমরা সাধনা থেকে দুরে রেখেছিলে, সেইটেই মোহ, এবং ভার থেকেই শোক।'

> যশিন্ সর্বাণি ভূতানি আহৈয়বাভূদ্ বিজ্ঞানত:। তত্ত্র কে! মোহ: ক: শোক একত্বমমুপশ্রত:॥

আমরা শুনতে পাচ্ছি সমৃত্তের ও পারে মানুষ ব্যাকুল হরে বলছে, 'শান্তি চাই।' এই কথা তাদের জানাতে হবে, শান্তি সেখানেই যেখানে মঙ্গল, মঙ্গল সেখানেই যেখানে ঐকা। এই জন্ত পিতামহেরা বলেছেন: শান্তং শিবমবৈতম্। অবৈতই শান্ত, কেননা অবৈতই শিব। অদেশের গৌরববুদ্ধি আমার মনে আছে, সেইজন্তে এই সম্ভাবনার কল্পনাতেও আমার লজ্ঞা হর যে, অতীত যুগের যে আবর্জনাভার সরিয়ে ফেলবার জন্তে আজ রুদ্রদেবতার হকুম এসে পৌচেছে এবং পশ্চিমদেশ সেই হকুমে জাগতে শুরু করেছে, আমরা পাছে অদেশে সেই আবর্জনার পীঠ স্থাপন ক'রে আজ যুগাস্তরের প্রভাবেও তামসী পূজাবিধি হারা তার অর্চনা করবার আয়োজন করতে থাকি। যিনি শান্ত, যিনি শিব, যিনি সর্বজাতিক মানবের পরমাশ্রয় অবৈত, তাঁরই ধানমন্ত্র কি আমাদের ঘরে নেই ? সেই ধ্যানমন্ত্রের সহযোগেই কি নব্যুগের প্রথম প্রভাতরশ্মি মানুবের মনে সনাতন সত্যের উদ্বোধন এনে দেবে না প্

এইজন্তেই আমাদের দেশের বিশ্বানিকেতন পূর্বপশ্চিমের
মিলননিকেতন ক'রে তুলতে হবে, এই আমার অস্তরের কামনা।
বিষয়লাতের ক্ষেত্রে মাস্থবের বিরোধ মেটে নি. সহজে মিটতেও চার
না। সত্যলাতের ক্ষেত্রে মিলনের বাধা নেই। যে গৃহস্থ কেবলমাত্র
আপন পরিবারকে নিয়েই থাকে, আতিথ্য করতে যার স্কুপণতা, সে
দীনাত্মা। তথু গৃহস্বের কেন, প্রত্যেক দেশেরই কেবল নিজের
ভোজনশালা নিয়ে চলবে না, তার অতিধিশালা চাই বেখানে বিশ্বকে
অভার্থনা ক'রে সে বঞ্চ হবে। শিক্ষাক্ষেত্রেই তার প্রধান অতিধিশালা।

শিক্ষার মিলন

তুর্লাগা ভারতবর্ষে বর্তমান কালে শিক্ষার যত-কিছু সরকারি ব্যবস্থা।
আছে তার পনেরো-আনা অংশই পরের কাছে বিজ্ঞাভিক্ষার ব্যবস্থা।
ভিক্ষা যার রক্তি, আতিখ্য করে না ব'লে লজ্জা করাও তার ঘুচে যায়।
সেইজভেই ব্রিশ্বের আতিখ্য করে না ব'লে ভারতীয় আধুনিক শিক্ষালয়ের
লজ্জা নেই। সে বলে, 'আমি ভিথারি, আমার কাছে আতিখ্যের
প্রত্যাশা কারও নেই।' কে বলে নেই ? আমি তো তনেছি পশ্চিমদেশ
বারষার কিছ্কাসা করছে, 'ভারতের বাণী কই ?' তার পর সে বখন
আধুনিক ভারতের ঘারে এসে কান পাতে তখন বলে, 'এ তো সব
আমারই বাণীর ক্ষীণ প্রতিধ্বনি, যেন ব্যক্ষের মতো শোনাছে।' তাই তো
দেখি, আধুনিক ভারত যখন ম্যাক্স্মৃলরের পাঠশালা থেকে বাছির
হয়েই আর্যসভ্যতার দন্ত করতে থাকে তখন তার মধ্যে পশ্চিম গড়ের
বাগ্রের কড়িমধ্যম লাগে, আর পশ্চিমকে যখন সে প্রবল বিক্রারের
সঙ্গের প্রত্যাখ্যান করে তখনো তার মধ্যে সেই পশ্চিমরাগেরই
ভারসপ্তকের নিথাদ ভীত্র হয়ে বাজে।

আমার প্রার্থনা এই যে, ভারত আত্ত সমস্ত পূর্বভূভাগের হয়ে সভ্যসাধনার অতিধিশালা প্রতিটা করুক। তার ধনসম্পদ নেই জানি,
কিন্তু তার সাধনসম্পদ আছে: সেই সম্পদের জোরে সে বিশকে
নিমন্ত্রণ করবে এবং তার পরিবর্তে সে বিশ্বের সর্বত্র নিমন্ত্রণের
অধিকার পাবে। দেউড়িতে নয়, বিশ্বের ভিতর-মহলে তার আসন
পড়বে। কিন্তু আমি বলি, এই মানসম্মানের কথা এও বাহিরের,
এ'কেও উপেক্ষা করা চলে। এই কথাই বলবার কথা যে, সভ্যকে
চাই অস্তরে উপলব্ধি করতে এবং সভাকে চাই বাহিরে প্রকাশ করতে—
কোনো স্থবিধার জন্তে নয়, সম্মানের জন্তে নয়, মান্তবের আত্মাকে
তার প্রচ্ছেরতা থেকে মৃক্তি দেবার জন্তে। মান্তবের সেই প্রকাশভবৃত্তি
আমাদের শিক্ষার মধ্যে প্রচার করতে হবে, কর্মের মধ্যে প্রচলিত করতে

হবে, তা হলেই সকল মান্তুষের সন্মান করে আমরা সন্মানিত হব— নব্যুগের উদ্বোধন করে আমরা জরামুক্ত হব। আমাদের শিক্ষালয়ের সেই শিক্ষামন্ত্রটি এই—

> যস্ত সর্বাণি ভূতানি আত্মতারামুপশুতি। সর্বভূতেরু চাত্মানং ন ততো বিজ্ঞপ সতে॥

चाम ४८२४

সত্যের আহ্বান

পরাসক্ত কীট বা আন্ত পরের রস রক্ত শোবণ করে বাঁচে, থান্তকে নিজের শক্তিতে নিজ দেহের উপকরণে পরিণত করবার দেহমন্ত্র তাদের বিকল হয়ে যান্তঃ, এমনি করে শক্তিকে অলস করবার পাপে প্রাণিশ্যাকে এই-সকল জীবের অংগতেন ঘটে। মান্ত্র্যের ইতিহাসেও এই কথা থাটে। কিন্তু পরাসক্ত মান্ত্র্য বলতে কেবল যে পরের প্রতি অভ্তাবে আসক্ত মান্ত্র্যকেই বোঝান্ত্র তা নর। চিরদিন যা চলে আসছে তার সঙ্গে যে আপনাকে জুড়ে রেখে দেন্ন, প্রচলিতের স্রোতের টানে যে হালছাড়া তাবে আত্মসমর্পণ করে, সেও পরাসক্ত। কেননা বাহির আমাদের অন্তরের পক্ষে পর; সে যথন কেবল অভ্যাসের তাগিদে আমাদের চালিয়ে নিম্নে যান্ন তখন আমাদের পরাসক্ত অন্তর নিক্ষণ হয়ে ওঠে এবং মান্ত্র্যের পরে অসাধাসাধন করবার যে ভার আছে সে সিদ্ধ হয় না।

এই হিসাবে জন্ধনা এ জগতে পরাসক্ত। তারা প্রচলিতের ধারার গা-ভাসান দিরে চলে। তারা প্রাকৃতিক নির্বাচনের শাসনে বাঁচে মরে, এগোর বা পিছোর। এইজন্তেই তাদের অন্তঃকরণটা বাড়তে পারলনা, বেঁটে হরে রইল। লক্ষ্ লক্ষ বৎসর ধরে মৌষাছি যে চাক তৈরি করে আসছে সেই চাক তৈরি করার একটানা ঝোঁক কিছুতেই সে কাটিয়ে বেরতে পারছে না। এতে ক'রে তাদের চাক নির্গৃত-মতো তৈরি হচ্ছে; কিন্তু তাদের অন্তঃকরণ এই চিরাভ্যাসের গণ্ডীর মধ্যে বছ হয়ে আছে, সে আপনাকে নানা দিকে মেলে দিতে পারছে না। এই-শক্স জীবের সম্বন্ধ প্রকৃতির যেন সাছসের অভাব দেখতে পাই। সে এদের নিজের জাঁচলে চেকে চালার; পাছে নিজে চলতে গেলে বিপদ বাধিরে বসে এই তরে এদের অন্তরের চলংশক্তিকে ছেটে রেখে দিয়েছে।

किन एष्टिक जीव कीव तहना- भरीकां स मासूर यह मन कि हैं। पूर अकि। गार्ग (मथर ज পा अया याय। जिनि जात जवः कर्नि । कि नि । ना। বাহিরে প্রাণীটিকে সর্বপ্রকারে বিবন্ধ নির্ম্ম ছুর্বল করে এর षशःकत्रगरक (ছएए मिख्या इल। এই মুক্তি পাख्यात चानन्म रा वर्ल উঠল, 'আমি অসাধ্য সাধন করব।' অর্থাৎ, 'যা চিরদিন হয়ে আসছে তाই যে চিরদিন হতে থাকবে সে আমি সইব না, যা হয় না তাও হবে।' সেইজন্তে মানুষ তার প্রথম যুগে যখন চার দিকে অতিকায় खहराद विकृष्ठे नथनरखद यावाथारन পড়ে গেল তখन गে ছবিণের মতো পালাতে চাইল না, কচ্চপের মতো লুকোতে চাইল না, সে অসাধ্যসাধন क्तरल — ठक्यकि পाध्त (कर्षे (कर्षे जीयगज्त नयमस्यत स्थि क्रिका যেহের জন্তদের নখদন্ত তাদের বাহিরের দান, এইজন্তে প্রাকৃতিক নির্বাচনের 'পরেই এই নথদন্তের পরিবর্তন বা উন্নতি নির্ভর করে। কিন্তু মামুষের নখদন্ত তার অন্তঃকরণের স্ষ্টি; এইজন্তে সেই পাপরের वर्नाफनक्त्र 'পরেই সে ভর করে রইল না, ভার সমস্ত ছাতিয়ার পাপরের কোঠ থেকে লোহার কোঠায় এলে পৌছল। এতে প্রমাণ হয়, মাছুষের অভঃকরণ সন্ধান করছে; যা তার চারি দিকে আছে তাতেই সে আসক্ত रुप्त (नरे, या जात शांजित कार्ष (नरे जांक शांजित जनांत जान्छ। পাপর আছে তার সামনে, তাতে সে সম্ভ নয়; লোহা আছে মাটির নীচে, সেখানে গিয়ে সে ধাকা দেয়। পাণরকে ঘষে-মেজে ভার পেকে হাতিয়ার তৈরি করা সহজ; কিন্তু তাতেও তার মন উঠল না, লোহাকে वाछ्यन गनिया, हाकु फिएक निष्टिया, है। एक छाना है करत्र या गव एक्स नाशा एक जारक है जाभनाव गन किया जरूग ज करत जून हा। यासूर वत्र चरु:कद्रावद धर्महे हाइ এहे, जाननाटक थांदिय क्वन व जाद मकन्छ। তা নয়, তার আনন্দ; গে কেবলই উপরিতল থেকে গভীরতলে পৌছতে ठाय, প্রত্যক্ষ থেকে অপ্রত্যকে, সহজ থেকে কঠিনে, পরাসজি থেকে

সভ্যের আহ্বান

আয়ুক্তৃত্বে, প্রবৃত্তির ভাড়না থেকে বিচারের ব্যবস্থার। এমনি করে সে করা হরেছে। কিন্তু কোনো এক দল নামুব বদি বলে 'এই পাধরের ফলা আমাদের বাপ-পিভামহের ফলা, এছাড়া আর যা-কিছু করতে যাব ভাতে আমাদের আত নই হবে', তা হলে একেবারে ভাদের মমুন্তব্বের মূলে ঘা লাগে; তা হলে থাকে ভারা আভরক্ষা বলে ভা হতে পারে, কিন্তু ভাদের সব চেরে যে বড়ো আভ মমুন্তআভ সেইখানে ভাদের কৌলীন্ত মারা যার। আজও যারা সেই পাধরের ফলার বেশি এগোর নি মামুব ভাদের আভে ঠেলেছে, ভারা বনে জকলে লুকিয়ে লুকিয়ে রেড়ায়। ভারা বহিরবস্থার কাছে পরাসন্তা, ভারা প্রচলিতের জিন-লাগামের টানে চোঝে ঠুলি লাগিয়ে চলে; ভারা অন্তরের স্বরাজ পায় নি, বাহিরের স্বরাজের অধিকার থেকে ভাই ভারা অন্ত। এ কথা ভারা আনেই না যে, মাগুবকে আপনার শক্তিতে অসাধ্যসাধন করতে হবে; যা হয়েছে ভার মধ্যে সে বন্ধ থাকবে না, যা হয় নি ভার দিকে সে এগোবে— ভাল ঠুকে বৃক ফুলিয়ে নয়, অন্তঃকরণের সাধনার বলে, আয়ুলক্তির উদ্বোধনে।

আন্ধ ত্রিশ বংসর হয়ে গেল, যথন 'সাধনা' কাগন্তে আমি
লিখছিলুম তথন আমার দেশের লোককে এই কথাই বলবার চেষ্টা
করেছি। তথন ইংরেজি-শেখা ভারতবর্ধ পরের কাছে অধিকার-ভিকার
কালে বিষম ব্যন্ত ছিল। তথন বারে বারে আমি কেবল একটি কথা
বোঝাবার প্রয়াস পেয়েছি যে, মান্ত্র্যকে অধিকার চেয়ে নিতে হবে না,
অধিকার শৃষ্টি করতে হবে। কেননা মান্ত্র প্রধানত অন্তরের জীব,
অন্তরেই সে কর্তা; বাহিরের লাভে অন্তরে লোকসান ঘটে। আমি
বলেছিলেম, অধিকারবঞ্চিত হবার হৃঃখভার আমাদের পক্ষে তেমন
বোঝা নয় যেমন বোঝা আমাদের মাধার উপরে 'আবেদন আর
নিবেদনের থালা'। তার পরে যথন আমার হাতে 'বল্পর্শন' এসেছিল

তथन वक्रविভारেশ र दूबि-भानारनात्र भरक गयश वाश्नारमभ উভना। यरनत्र क्षांटिक वाढानि मिनि गारिकमें दिव काश्य वर्जन क'रव वाचारे मिरनव मनागत्रापत्र माञ्डोत्क रेवरमिक छिश्चिए वाष्ट्रित्र जूरनिकन। त्यरङ् हेरदाख-गत्रकादात 'भदत चिचियान छिल এहे वज्जवर्जन यूल, रमहेष्वरक रगरे मिन এरे कथा वलाए राम्निन 'এर वार्य'। এর প্রত্যক লক্ষ্য ইংরেজ, ভারতবাসী উপলক্ষ্য; এর মুখ্য উত্তেজনা দেশের লোকের প্রতি প্रেম नम्न, विषमी लाकित्र श्रिक द्वांग। तम मिन प्रताम लाकित्य श्रे कथा राज जावधान कदवाद पद्रकाद हिन एय. छात्रा है १८ देख एवं चार् विठा वाहरत्रत घटेना, मिन य चार्ट्स विठाहे चामारमत्र छिछरद्रत कथा। এই ভিতরের কথাটাই হচ্ছে চিরসত্য, আর বাইরের ব্যাপারটা মায়া। মায়াকে ভত কণ অভান্ত বড়ো দেখায় যত কণ, বাগেই হোক বা অমুরাগেই হোক, বাইরের দিক থেকে তার প্রতি সমস্ত মনপ্রাণ দিয়ে তাকিয়ে থাকি। তেড়ে গিয়ে তার পায়ে দাঁত বদিয়ে দেওয়া দেও একটা তীব্র আসক্তি, আর ভক্তিতে তার পা অড়িয়ে ধরা সেও **তবিবচ**; তাকে চাই নে বললেও তার ধ্যানে আমাদের সমস্ত হানয় त्रक्टवर्ग हरत्र एटर्र, चाद ठाहे वनल ला क्या है नहे। यात्रा किनिन्हा व्यक्षकादित मर्छा ; वाहेर्द्रत निक (पर्क कलिंद्र गाफि ठानिस्त्र छार्क चिकिय कद्रात्व भावि त्न, जात्क कन मिर्द्य धूर्य स्मन्द हाहरेन गार्छ' ममूज তেরো ननी छिक्रिय यार्व। मछा खालाद मर्छा, छात्र निश्राष्ट्री जनवा माज प्रथा यात्र, मात्रा तिहै। এই जान्ति ने नाम्य वर्गिष्ट्रन,—

अञ्चयभाष्ट धर्मण खांबर् यहरा ख्यार।

ভর হচ্ছে মনের নান্তিকতা, তাকে না'এর দিক থেকে নিকেশ করা যায় না; উপস্থিতমতো তার একটা কারণ গেলেও রক্তবীঞ্জের মতো আর-একটা কারণরূপে সে জন্ম নের। ধর্ম হচ্ছে সত্যা, সে মনের আন্তিকতা; তার অল্পনাত্র আবির্ভাবে হাঁ প্রকাণ্ড না'কে একেবারে মূলে *

সভ্যের আহ্বান

গিনে অভিত্ত করে। ভারতে ইংরেজের আবির্ভাব -নামক ব্যাপারটি বছরপী; আজ সেইংরেজের মৃতিতে, কাল সে অক্ত বিদেশীর মৃতিতে এবং তার পরদিন সে নিজের দেশী লোকের মৃতিতে নিদারুল হয়ে দেখা দেবে। এই পরভন্ততাকে ধহর্বাণ হাতে বাইরে থেকে তাড়া করলে সে আপনার খোলম বদলাতে বদলাতে আমাদের হর্মান করে ভূলবে। কিন্তু, আমার দেশ আছে এইটি হল সত্য; এইটিকে পাওয়ার বারা বাহিরের মায়া আপনি নিরম্ভ হয়।

আমার দেশ আছে, এই আন্তিকতার একটি সাধনা আছে। দেশে জনপ্রহণ করেছি বলেই দেশ আমার, এ হচ্ছে সেই-সব প্রাণার কথা যারা বিশ্বের বাহ্ন বাাপার সম্বন্ধে পরাসক্ত। কিন্তু, যেহেতু মাহ্নবের যথার্থ শ্বরূপ হচ্ছে তার আত্মশক্তিসম্পর অন্তরপ্রকৃতিতে, এইজন্ত বে দেশকে মাহ্য আপনার জ্ঞানে বৃদ্ধিতে প্রেমে কর্মে স্বস্টি করে তোলে সেই দেশই তার খদেশ। ১৯০৫ খৃষ্টান্দে আমি বাঙালিকে ডেকে এই কথা বলেছিলেম যে, 'আত্মশক্তির হারা তিতরের দিক থেকে দেশকে স্বস্টি করো, কারণ স্বান্টর হারাই উপলব্ধি সত্য হর।' বিশ্বকর্মা আপনস্বান্টতে আপনাকেই লাভ করেন। দেশকে পাওয়ার মানে হচ্ছে দেশের মধ্যে আপনার আত্মাকেই ব্যাপক করে উপলব্ধি করা। আপনার চিন্তার হারা, কর্মের হারা, সেবার হারা দেশকে যথন নিজে গড়ে তুলভে থাকি তথনই আত্মাকে দেশের মধ্যে সত্য করে দেখতে পাই। মাহ্নবের দেশ মাহ্নবের চিন্তের স্বান্টি, এইজন্তেই দেশের মধ্যে মাহনের আত্মার প্রকাশ।

যে দেশে জন্মছি কী উপায়ে সেই দেশকৈ সম্পূৰ্ণ আমার আপন করে তুলতে হবে, বহু কাল পূর্বে 'ষদেনী সমাজ' নামক প্রবন্ধে তার বিভারিত আলোচনা করেছি। সেই আলোচনাতে যে-কোনো ফটি থাকুক, এই কথাটি জোরের সজে বলা হয়েছে যে, দেশকৈ জন্ম করে নিতে

cat

হবে পরের হাত থেকে নয়, নিজের নৈয়য়্য থেকে, ওদাসীয় থেকে দেশের যে-কোনো উরতি-সাধনের জভো যে উপলক্ষে আমরা ইংরেজ-রাজসরকারের ছারস্থ হয়েছি সেই উপলক্ষেই আমাদের নৈয়য়্যকে নিবিজ্তর করে তুলেছি মাত্র। কারণ, ইংরেজ-রাজসরকারের কীর্তি আমাদের কীর্তি নয়; এইজয় বাহিরের দিক থেকে সেই কীর্তিতে আমাদের যতই উপকার হোক, ভিতরের দিক থেকে তার ছারা আমাদের দেশকে আমরা হারাই, অর্থাৎ আত্মার মূল্যে সফলতা পাই। যাজ্ঞবন্ধ্য বলেছেন—

ন বা অরে পুত্রত কামায় পুত্র: প্রিয়ো ভবতি। আত্মনম্ভ কামায় পুত্র: প্রিয়ো ভবতি।

দেশ সম্বন্ধেও এই কথা খাটে। দেশ আমারই আত্মা, এইজন্তই দেশ আমার প্রিয়— এ কথা যখন জানি তখন দেশের স্প্রিকার্যে পরের মুখাপেকা করা সন্থই হয় না।

আমি সেদিন দেশকে যে কথা বলবার চেটা করেছিলেম সে বিশেষকিছু নতুন কথা নয় এবং তার মধ্যে এমন কিছু ছিল না ষাতে
খাদেহিতিয়ার কানে সেটা কটু শোনায়। কিন্ধ, আর-কারও মনে না
থাকতে পারে, আমার স্পষ্টই মনে আছে যে, আমার এই-সকল কথায়
দেশের লোক বিষম কুছ হয়ে উঠেছিল। যায়া কটুভাষা-ব্যবসায়ী
সাহিত্যিক গুণ্ডা আমি তাদের কথা বলছি নে, কিন্ধ গণ্যমান্ত এবং
শিষ্টশাল্ব ব্যক্তিরাও আমার সম্বন্ধে থৈর্ঘ রক্ষা করতে পারেন নি।
এর ছটি মাত্র কারণ— প্রথম ক্রোধ, দিতীয় লোভ। ক্রোধের ভৃপ্তিসাধন হছে এক রক্মের ভোগস্থা; সেদিন এই ভোগস্থার
মাৎলামিতে আমাদের বাধা অতি অলই ছিল— আমরা মনের আনক্ষে
কাপড় পুড়িয়ে বেড়াক্কি, পিকেট করছি, যায়া আমাদের পথে চলছিল
না তাদের পথে কাঁটা দিক্কি এবং ভাষার আমাদের কোনো আফ্র

সভ্যের আহ্বান

गत्न कांच कराल भार ना किन ? क्विन चिन्द्र वात्व थर्ठ करा তো উদ্দেশ্যশাধনের সমুপায় নয়।' তার অবাবে সেই জাপানিকে व्यागात्र वन्तर्छ हरत्रिष्ट्रन एय, উদ্দেশ্रगाथन्त्र क्याहाहे यथन व्यागापन्त्र মনে উচ্ছল থাকে তথন মামুৰ স্বভাবতই আত্মসংযম ক'রে নিজের সকল यख ठात्र मश्रदक উদ्দেশ माधन कि इा फिर् छे ठे छ। पार्क छथन निक्ति थत्र कर्त्र (मिडेल इंटि चार्यापत्र वाद्या बार्क ना। याहे रहाक, रम मिन ठिक रय मगरत्र वांडानि किছू कारनत ब्यन्त ब्या ब्या कि ञ्चर जारा विरम्य विष्न भाष्ट्रिम ना, ममञ्जू रयन এक हा चार्म्य चरश्च गटा বाধ इচ्ছिन, मिहे नगरत्र जारक चन्न পरित्र कर्या वनट शिरत्र थायि छात्र कार्यत्र ভाष्ट्रन इरहिल्य। छा ছाড़ा चार्त्रा এकि कथा ছিল, সে হচ্ছে লোভ। ইতিহাসে সকল জাতি ছুর্গম পথ দিয়ে ছুর্গভ बिनिम (পয়েছে, আমরা তার চেয়ে অনেক সম্ভায় পাব— হাত-জোড়-क्रवा ভित्क्रत्र घात्रा नम्न, চোখ-রাভানো ভিক্কের ছারা পাব, এই ফন্দির चानत्म (मिन प्रमं (यए इन। हे दब्ध पाकानमात्र सार्क वर्ण reduced price sale, मिन एवन ভাগ্যের হাটে বাডালির কপালে (পानिष्ठिकान गात्नद्र त्रक्य गन्धा मात्यद्र सोद्यम পएए छिन। यात्र गश्न क्य, महात्र नाम (मानवा याख म এত বেশি धूमि इस अर्ठ स, गानिहा (य की चात्र जात्र की चवन्न। जात्र (थांक तात्थ ना, चात्र (य वाकि गत्मर প্রকাশ করে ভাকে ভেড়ে মারতে যায়। মোট কথা, সে দিনও चायाम्य नका हिन, शान हिन धे वाहेरवय यात्राहा निया जाहे তখনকার কালের একজন নেতা বলেছিলেন, 'আযার এক হাত ইংরেজ नत्रकारतत हैं हिटल, चात्र-এक हाल जात्र भारत।' चर्चार कारमा हालहे

বাকি ছিল না দেশের জন্ত। তৎকালে এবং তার পরবর্তীকালে এই ছিল হরতো অনেকের একেবারে ঘুচে গেছে, এক দলের ছুই হাতই ছয়তো উঠেছে সরকারের টুটিতে, আর-এক দলের ছুই হাতই ছয়তো নেমেছে সরকারের পায়ে, কিন্তু মায়া থেকে মৃক্তিসাধনের পক্ষে ছুইই হচ্ছে বাইরের পথ। হয় ইংরেজ সরকারের দক্ষিণে নয় ইংরেজ সরকারের বামে পোড়া মন ঘুরে বেড়াছে; তার হা'ই বল আর না'ই বল, ছুইই হচ্ছে ইংরেজকে নিয়ে।

সে দিন চারি দিক থেকে বাংলাদেশের হৃদয়াবেগের উপরেই কেবল তাগিদ এসেছে। কিন্তু শুধু হৃদয়াবেগ আগুনের মতো আলানি বস্তকে খরচ করে, ছাই করে ফেলে— সে তো স্পষ্ট করে না। মাসুষের অন্তঃকরণ থৈর্বের সঙ্গে, নৈপুণাের সঙ্গে, দৃংদৃষ্টির সঙ্গে এই আগুনে কঠিন উপাদানকে গলিয়ে আপনার প্রয়োজনের সামগ্রীকে গড়ে তুলতে থাকে। দেশের সেই অন্তঃকরণকে সে দিন ভাগানাে হল না, সেইজস্তে এত বড়ো একটা হৃদয়াবেগ থেকে কোনাে একটা স্থায়ী ব্যবস্থা গড়ে উঠতে পারল না

এমনটা যে হল তার কারণ বাইরে নেই, তার কারণ আছে আমাদের
নিজ্নেই ভিতরে। অনেক দিন খেকেই আমাদের ধর্মে কর্মে এক দিকে
আছে হৃদয়াবেগ, আর-এক দিকে আছে অভ্যন্ত আচার। আমাদের
অন্ত:করণ অনেক দিন থেকে কোনো কাল্ল করে নি; তাকে ভয়ে ভয়ে
চেপে রাখা হয়েছে। এইজ্বতে যখন আমাদের কাছ থেকে কোনো
কাল্ল আদার করার দরকার পড়ে তখন তাড়াতাড়ি হৃদয়াবেগের উপর
বরাত দিতে হয় এবং নানারক্ম আছ্মন্ত- আউড়িয়ে মনকে মুগ্ধ করবার
প্রয়োজন ঘটে। অর্থাৎ সমস্ত দেশ কুড়ে এমন একটা অবস্থা উৎপাদন
করা হয় যেটা অন্ত:করণের কাল্ল করার পক্ষে বিষম প্রতিকৃল।

चन्नः कत्रावत क्ष्णांत्र (य क्षण मि एक जित्क क्षाता कि कूछि वृत्रव

সভ্যের আহ্বান

করা যার না। কোনোমতে বখন প্রণ করতে চাই তখন মোহকে সহার করতে ইছো হয়, তখন অক্ষমের লোভ আলাদিনের প্রদীপের গুজব ভনলেই একেবারে লাফিরে ওঠে। এ কথা সকলকেই একবাক্যে স্বীকার করতে হবে যে, আলাদিনের প্রদীপের মতো এমন আর্কর্য স্থিবিধার জিনিস আর নেই, কেবল ওর একটি মাত্র অস্থবিধা এই বে ও জিনিস কোথাও পাওয়া যার না। কিছু পাওয়া যে যার না, এ কথা খ্ব জোরের সঙ্গে সে মাসুষ কিছুতেই বলতে পারে না যার লোভ বেশি অবচ যার সামর্থ্য কম। এইজন্তে তার উল্লম তখনি প্রোদমে জেগে ওঠে যখন তাকে কেউ আলাদিনের প্রদীপের আশ্বাস দিরে থাকে। সেই আশ্বাসকে হরণ করতে গেলে সে এমনি চীৎকার করতে থাকে যেন তার সর্বস্থান্ত করা হল।

সেই বঙ্গবিভাগের উভেজনার দিনে এক দল যুবক রাষ্ট্রবিপ্পবের ধারা দেশে যুগান্তর আনবার উত্তোগ করেছিলেন। আর যাই হোক, এই প্রলয়হুতাশনে তাঁরা নিজেকে আহুতি দিয়েছিলেন, এইজন্তে তাঁরা কেবল আমাদের দেশে কেন সকল দেশেই সকলেরই নমন্ত। তাঁদের নিজলতাও আত্মার দীপ্তিতে সমুজ্জল। তাঁরা পরম ত্যাগে, পরম ছাবে আজ একটা কথা স্পষ্ট জেনেছেন যে, রাষ্ট্র বথন তৈরি নেই তথন রাষ্ট্রবিপ্রবের চেষ্টা করা পথ ছেড়ে অপথে চলা; পথের চেয়ে অপথ মাপে ছোটো, কিন্তু সেটাকে অনুসরণ করতে গেলে লক্ষ্যে পেছিনো যায় না, মাঝের থেকে পাছুটোকে কাঁটায় কাঁটায় ছিয়বিচ্ছির করা হয়। যে জিনিসও জোটে না। সেদিনকার সেই ছাসাহসিক যুবকেরা ভেবেছিলেন, সমন্ত দেশের হয়ে তাঁরা কয়জন আত্মোৎসর্গ ধারা রাষ্ট্রবিপ্লব ঘটাবেন; তাঁলের পক্ষে এটা সর্বনাশ, কিন্তু দেশের পক্ষে এটা সন্তা। সমন্ত দেশের অন্তঃকরণ থেকে সমন্ত দেশের উদ্ধার জেগে ওঠে, তার

कारना अक्टो चः न (थरक नम्र। दिनयारन काम्हें क्रांग गाष्ट्रित मृना এবং সৌষ্ঠব যেমনি পাক্, সে তার নিজের সঙ্গে সংযুক্ত পার্ড ক্লাস গাড়িকে কোনোমতেই এগিয়ে যেতে পারে না। আমার মনে হয় তাঁরা আজ वूरवर्षिन, मम्बा प्रभ व'ला এकि किनिम ममस प्रभाव लाकित्र एष्टि; এই স্ষ্টি তার সমস্ত হৃদয়বৃত্তি বৃদ্ধিবৃত্তি ইচ্ছাশক্তির প্রকাশে। এ হচ্ছে यোগनक धन, व्यर्था९ य याशित बात्रा मासूरयत नकन वृत्ति व्यापन कृष्टित यरश जः इंछ इरम क्रथनां छ करत्र। (थानिं विकास याग वा इकनियक যোগ পূর্ণ যোগ নয়, সর্বশক্তির যোগ চাই। অন্ত দেশের ইতিহাস যথন नका करत्र पिथि ७थन (भानिष्ठिकान (घाषाहोटक नकरनत्र चार्ग पिथि, यत्न यत्न ठिक कदि के ह्र्ल्लनहोत्रहे होत्न मयस स्वां कि विशिष्ठ हिल्ह । তথন হিসাব করে দেখি নে— এর পিছনে দেশ বলে যে গাড়িটা আছে সেটা চলবার যোগ্য গাড়ি, তার এক চাকার সঙ্গে আর-এক চাকার সামপ্রস্তা আছে, তার এক অংশের সঙ্গে আর-এক অংশের ভালোরকম জোড় মেলানো আছে। এই গাড়িট তৈরি করে তুলতে শুধু আগুন এবং হাতুড়ি-করাত এবং কলকজা লেগেছে তা নয়, এর মধ্যে অনেক पिरिने व्यानक लिएके व्यानक हिन्छा, व्यानक गार्थना, व्यानक छा। ग আছে। আরো এমন দেশ আমরা দেখেছি, সে বাহত স্বাধীন কিন্তু পোলিটিকাল বাহনটি যখন তাকে টানতে থাকে তখন তার ঝড়ঝড় थए, थए, भरक পाড़ाর ঘুম ছুটে যায়, ঝাঁকানির চোটে সওয়ারির বুকে পিঠে খিল ধরতে পাকে, পথ চলতে চলতে দশবার করে সে ভেঙে ভেঙে পড়ে, দড়িদড়া দিয়ে তাকে বাঁধতে বাঁধতে দিন কাবার হয়ে यात्र। তবু ভালো হোক আর নন্দ হোক, স্কু আলগা হোক আর চাকা वाँका हाक, এ गाष्ट्रिश्व गाष्ट्रि। किन्न य क्रिनिम हो चरत वाहेरत्र मान्त विकर्त्रा हरम चार्टि, यात्र मरशा नमर्थाठा क्विन (य निर्हे छ। नम्न, या বিক্ষণতায় ভবা, তাকে উপস্থিতমতো ক্রোধ হোক বা লোভ হোক

সভ্যের আহ্বান '

কোনো-একটা প্রবৃত্তির বাস্থ বন্ধনে বেঁবে হেঁই হেঁই শব্দে টান দিলে কিছু কণের জন্তে তাকে নড়ানো যায়, কিন্তু একে কি দেশদেবতার রখ-যাত্রা বলে ? এই প্রবৃত্তির বন্ধন এবং টান কি টে কসই জিনিস ? অতএব বোড়াটাকে আন্তাবলে রেখে আপাতত এই গড়াপেটার কাজটাই কি সব চেয়ে দরকার নয় ? যমের কাঁসি-বিভাগের সিংহ্বার থেকে বাংলা-দেশের যে-সব যুবক বরে ফিরে এসেছেন তাঁদের লেখা প'ড়ে, কবা তনে আমার মনে হয় তাঁরা এই কবাই ভাবছেন। তাঁরা বলছেন, সকলের আগে আমাদের যোগদাধন চাই, দেশের সমস্ত চিত্তবৃত্তির সন্মিলন ও পরিপূর্ণতা -সাধনের যোগ। বাইরের দিক বেকে কোনো অন্ধ বাধ্যতা বারা এ হতেই পারে না, ভিতরের দিক থেকে জানালোকিত চিন্তে আত্রোপলন্ধি বারাই এ সন্তব। যা-কিছুতে সমস্ত দেশের অন্তঃকরণ উদ্বোধিত হয় না, অভিভূত হয়, এ কাজের পক্ষে তা অন্তরায়।

নিজের সৃষ্টিশক্তির ধারা দেশকে নিজের করে তোলবার যে আহ্বান সে ধৃব একটা বড়ো আহ্বান। লে কোনো-একটা বাহু অন্থর্চানের জন্তে তাগিদ দেওয়া নয়। কারণ, পূর্বেই বলেছি, মান্নুব তো মৌমাছির মতো কেবল একই মাপে মৌচাক গড়ে না, মাকড়বার মতো নিরস্তর একই প্যাটার্নে জাল বোনে না; তার সকলের চেয়ে বড়ো শক্তি হচ্ছে তার অন্তঃকরণে— সেই অন্তঃকরণের কাছে তার পূরো দাবি, জড় অভ্যাসপরতার কাছে নয়। যদি কোনো লোভে পড়ে তাকে আল্ল বলি 'তুমি চিস্তা কোরো না, কর্ম করো', তা হলে যে-মোহে আমাদের দেশ মরেছে সেই মোহকে প্রশ্রের দেওয়া হবে। এত কাল ধরে আমরা অন্ধুশাসনের কাছে, প্রধার কাছে, মানবমনের সর্বোচ্চ অধিকার অর্থাৎ বিচারের অধিকার বিকিরে দিয়ে নিশ্চিম্ভ হয়ে, অলস হয়ে বসে আছি। বলেছি, 'আমরা সমৃত্রপারে যাব না, কেননা মন্ত্রতে তার নিবেধ; মৃসলমানের পাশে বসে খাব না, কেননা শাস্ত্র তার বিরোধী।' অর্থাৎ, যে প্রণালীতে চললে

মাছবের মন ব'লে জিনিসের কোনোই দরকার হয় না, বা কেবলমাত্র
চিন্তাহীন অন্ত্যাসনিষ্ঠতার কাজ, আমাদের সংসার্থাত্রার পনেরে আনা
কাজই সেই প্রণালীতে চালিত। যে মাহ্র্য সকল বিষয়েই দাসের প্রতিনির্ভর করে চলে তার যে রকম পঙ্গুতা, যারা বাহ্ন আচারের দারাই
নিরত চালিত তাদেরও সেই রকম। কেননা পূর্বেই বলেছি, অন্তরের
মাহ্র্যই প্রভু, সে যখন একাজভাবে বাহ্ন প্রধার পরাসক্ত জীব হয়ে ওঠে
তখন তার ছুর্গতির সীমা থাকে না। আচারে চালিত মাহ্র্য কলের
পূত্ল, বাখ্যতার চরম সাধনায় সে উত্তীর্ণ হয়েছে। পরতন্ত্রতার কারখানাঘরে সে তৈরি; এইজন্তে এক চালকের হাতে তাকে সমর্পণ করতে হয়। পদার্থবিজ্ঞার যাকে ইনর্লিয়া বলে, যে মাহ্র্য তারই একাল্থ সাধনাকে পবিত্রতা
ব'লে অভিমান করে তার স্থাবরতাও যেমন জঙ্গমতাও তেমন, উভয়েই
তার নিজ্ঞের কর্তৃত্ব নেই। অন্তঃকরণের যে জড়ত্ব সর্বপ্রকার দাসজ্যের
কারণ, তার থেকে মুক্তি দেবার উপার চোখে-ঠুলি-দেওয়া বাধ্যতাও নয়,
কলের পুতুলের মতো বাহ্যায়ন্তানও নয়।

বঙ্গবিভাগের আন্দোলনের পরে এবার দেশে যে আন্দোলন উপস্থিত হয়েছে তার পরিমাণ আরো অনেক বড়ো; সমন্ত ভারতবর্ষ ফুড়ে তার প্রভাব। বছ দিন ধরে আমাদের পোলিটিকাল নেতারা ইংরেজি-পড়া দলের বাইরে ফিরে তাকান নি, কেননা তাঁদের দেশ ছিল ইংরেজি-ভাষার বাল্প-ইতিহাস-পড়া একটা প্রাথিপত দেশ। সে দেশ ইংরেজি ভাষার বাল্প-রিচত একটা মরীচিকা, তাতে বার্ক, মাড্সৌন ম্যাট্সীনি গারিবাল্ভির অল্পন্থ মূর্তি ভেসে বেড়াত। তার মধ্যে প্রকৃত আত্মত্যাগ বা দেশের মামুবের প্রতি বর্ধার্থ দরদ দেখা যার নি। এমন সময়ে মহাত্মা গান্ধি এসে দাঁড়ালেন ভারতের বহুকোটি গরিবের ত্বারে— তাদেরই আপন বেশে, এবং তাদের সঙ্গে করা কইলেন তাদের আপন ভাষার। এ

সভ্যের আহ্বান

এको। गलाकात जिनिम, अत्र मर्था श्रीपत्र कारना निजत तिहै। अहेजरस डांट्क (र यहाचा नाम प्रथम ह्राइ ७ डांव गडा नाम। ट्वनना, ভারতের এত মামুষকে আপনার আত্মীর করে আর কে দেখেছে? আত্মার মধ্যে যে শক্তির ভাণ্ডার আছে তা পুলে যায় সত্যের স্পর্শমাত্রে। , সত্যকার প্রেম ভারতবাসীর বহু দিনের ক্রম্ভ ছারে যে-মুহুর্তে এসে मैं। ज़िला ज्यनि छ। थूल राज। कावल यति जात्र कार्यना दहेन ना, অর্থাৎ সত্যের স্পর্শে সভ্য জেগে উঠল। চাতুরি বারা যে রাষ্ট্রনীতি ठानिक इत्र (म नीकि वक्ता, चानक मिन (बाक अहे निकांत्र चार्यापत्र मत्रकात्र हिन। गट्यात्र त्य की भक्ति, यहाचात्र कन्गात्भ वाच या व्यापता প্রতাক্ষ দেখেছি; কিন্তু চাতুরি হচ্ছে ভীক্ষ ও ছুর্বলের সহজ ধর্ম, সেটাকে ছিন্ন করতে হলে তার চামড়া কেটে ছিন্ন করতে হয়। সেইজন্তে चाक्रक प्रतिनेश्व (परभन्न चरनक विक्र लाटक है यहा ग्रान्न कि होरिक छ निष्यम् अति विविकान क्रिया विवास अक्षे जानन हात्न वर्षे गामिन करत्र निष्ठ ठान। यिथा। त्र जीर्न डाएमत्र यन এই कथा है। कि हुए हे त्रार्छ পারে না যে, প্রেমের দারা দেশের হৃদরে এই-যে প্রেম উদ্বেশিত হরেছে **এটা একটা অবাস্তর বিষয় নয়— এইটেই মুক্তি, এইটেই দেশের** वाननारक नाख्या; हेश्टब्रक मिटन वाहि कि तिहे ध्व यद्या रम क्याब कारना कामगारे (नरे। उरे क्या रून चलकान, এरे रुष्ट हैं। क्लामा ना' अत्र मक्ष अ छर्क क्राइ यात्र ना, क्निना छर्क क्रावाब मद्रकाद्रहे बाटक ना।

প্রেমের ভাকে তারতবর্ষের হৃদয়ের এই-যে আশ্চর্য উদ্বোধন, এর
কিছু ত্বর সমুস্রপারে আমার কানে গিয়ে পৌচেছিল। তথন বড়ো
আনন্দে এই কথা আমার মনে হয়েছিল যে, এইবার এই উদ্বোধনের
দরবারে আমাদের সকলেরই ভাক পড়বে, ভারতবাসীর চিত্তে শক্তির
যে বিচিত্র রূপ প্রছর আছে সমন্তই প্রকাশিত হবে। কারণ, আমি

একেই আযার দেশের যুক্তি বলি; প্রকাশই হচ্ছে যুক্তি। ভারতবর্ষে এক দিন বুদ্ধদেব সর্বভূতের প্রতি মৈত্রীমন্ত্র নিজের সত্যসাধনার ভিতর पिरा श्रिकान करत्रिहिलन; जात्र कन श्राहिन এই यে, गिरे गर्जात প্রেরণায় ভারতের মহুয়ত্ব শিল্পকলায় বিজ্ঞানে ঐশর্যে পরিব্যক্ত হলে উঠেছিল। রাষ্ট্রশাদনের দিক থেকে সে দিনও ভারত বারে বারে এক হবার ক্ষণিক প্রেয়াসের পর বারে বারে বিচ্ছিন্ন হয়ে যাচ্ছিল; কিন্তু ভার চিত্ত স্থান্তি থেকে, অপ্রকাশ থেকে মুক্তিলাভ করেছিল। এই মুক্তির জোর এত যে, সে আপনাকে দেশের কোনো কুদ্র সীমায় বছ করে वाचरक भारत नि, সমুদ্রমক্পারেও যে দ্রদেশকে সে স্পর্শ করেছে ভারই চিত্তের ঐশ্বর্যকে উদ্বাটন করেছে। আঞ্চকের দিনের কোনো ৰণিক, कारना रिनिक এ काक कर्राफ भारत नि ; छात्रा भृषिवीरक राषानिह म्लर्भ करत्रष्ट रमहेथारनहे विरत्नाथ श्रीष्ठा এवः चल्यान चाणिरस्रष्ट, সেইখানেই বিশ্বপ্রকৃতির শ্রী নষ্ট করে দিয়েছে। কেন ? কেননা লোভ गठा नम्न, (প্रमेरे गठा। এইজন্ত প্রেম যখন মুক্তি দেশ্ব সে একেবারে ভিতরের দিক থেকে। কিন্তু লোভ যখন স্বাতম্ভ্রের জ্বন্তে চেষ্টা করে তথন সে অবর্দন্তির দারা নিজের উদ্দেশ্য সাধন করতে অস্থির হয়ে গরিবদের আমরা ত্যাগছ:খ শ্বীকার করতে বাধ্য করেছি প্রেমের ছারা नम्न, वाहेद्र (थटक नाना व्यकाद्र ठान निष्म। जात्र कात्रन, लाज जन गगरत्रत गर्था এक है। विष्मिय गःकीर्ग कननार छत्र ८० है। करत्र ; त्थारमत्र य कन मि এक नित्नत्र नत्र, खन्न नित्नत्र खन्न नत्र, मि करनत्र नार्बक्छ। व्यापनात्र मरशह।

এত দিন পরে আমার দেশে সেই আনন্দময় মুক্তির হাওয়া বইছে, এইটেই ভামি কলনা করে এসেছিল্ম। এসে একটা জিনিস দেখে আমি হতাশ হয়েছি। দেখছি, দেশের মনের উপর বিষম একটা চাপ।

সত্যের আহ্বান

বাইরে থেকে কিসের একটা ভাড়নার স্বাইকে এক কথা বলাভে, এক কাজ করাভে ভরংকর ভাগিদ দিয়েছে।

আমি যখন প্রশ্ন করতে যাই, বিচার করতে যাই, আমার হিতৈবীরা ব্যাকুল হরে আমার মুখ চাপা দিরে বলেন, 'আজ তুমি কিছু বোলো না।' দেশের হাওয়ায় আজ প্রবল একটা উৎপীড়ন আছে— সে লাঠি-সড়কির উৎপীড়ন নয়, তার চেয়ে ভয়ংকয়, সে অলক্ষ্য উংপীড়ন। বর্তমান প্রচেষ্টা সম্বন্ধে থাদের মনে কিছুমাত্র সংশয় আছে তারা সেই সংশয় অতি ভয়ে ভয়ে, অতি সাবধানে প্রকাশ করলেও পরমূহুর্তেই তার বিক্লছে একটা শাসন ভিতরে ভিতরে উক্লত হয়ে ওঠে। কোনো একটি ধবরের কাগজে এক দিন কাপড় পোড়ানোর সম্বন্ধে অতি মৃহমক্ষ মধুর কঠে একট্রখানি আপত্তির আভাসমাত্র প্রকাশ পেয়েছিল; সম্পাদক বলেন, তার পরদিনই পাঠকমগুলীর চাঞ্চল্য তাকে চঞ্চল করে তুললে। যে আগনে কাপড় পুড়েছে সেই আগনে তাঁর কাগজ পুড়তে কত কণ? দেখতে পাছি, এক পক্ষের লোক অত্যন্ত ব্যন্ত, আর-এক পক্ষের লোক অত্যন্ত ব্যন্ত, করে চাপা দিতে হবে। বিস্তাকেও। কেবল বাধ্যতাকে আঁকড়ে ধরে থাকতে হবে। কার কাছে বাধ্যতা ? মস্তের কাছে, অরুবিখাসের কাছে।

কেন বাধ্যতা ? আবার সেই রিপুর কথা এসে পড়ে, সেই লোভ।
অতি সম্বর অতিকুর্গত ধন অতি সস্তার পাবার একটা আখাস দেশের
সামনে জাগছে। এ যেন সরাাসীর মন্ত্রশক্তিতে সোনা ফলাবার আখাস।
এই আখাসের প্রলোভনে মামুব নিজের বিচারবৃদ্ধি অনায়াসে জলাঞ্জলি
দিতে পারে এবং অক্ত যারা জলাঞ্জলি দিতে রাজি হর না তাদের 'পরে
বিবম কুদ্ধ হয়ে ওঠে। বাহিরের স্বাতন্ত্র্যের নামে মামুবের অন্তরের
স্বাতন্ত্র্যেকে এই রক্মে বিলুপ্ত করা সহজ হয়। সক্লের চেয়ে আক্লেপের
বিবয় এই যে, সকলেই যে এই আখাসে সম্পূর্ণ বিশ্বাস স্থাপন করে তা নর

किन्न जात्रा वरन, এই প্রলোভনে দেশের এক দল লোককে দিয়ে একটা বিশেষ উদ্দেশ্য সাধন করিয়ে নেওয়া ষেতে পারে। 'সভাষেৰ জয়তে नानृजम्' এটা যে ভারতের কথা সে ভারত এঁদের মতে স্বরাজ পেতেই পারে ना। আরো মৃশকিল এই যে, যে লাভের দাবি করা হচ্ছে তার একটা নাম দেওয়া হয়েছে, কিছু সংজ্ঞা দেওয়া হয় নি। ভয়ের কারপটা चन्ना है हिल रा रायन चिक जारक इस्त्र ५८५, लाखित विषयो चन्ना है হলে তারও প্রবলতা বেড়ে যায়— কেননা তার মধ্যে কল্পনার কোনো याथा पारक ना এवः প্রত্যেক লোকেই তাকে সম্পূর্ণ নিজের মনের মতো क'रत्र गए निष्ठ भारत। विकामा बात्रा তাকে চেপে ধরতে গেলে त्र এक वाषांन (थरक वाद-এक वाषांत्र विक महस्व गा जाका पिया। এमनि करत এक मिरक लाएजत ककाठारक व्यनिमिष्टेजात शाता অত্যম্ভ বড়ো করে তোলা হয়েছে, অন্ত দিকে তার প্রাপ্তির সাধনাকে मगरत्र এवः উপায়ে অত্যন্ত সংকীর্ণভাবে নির্দিষ্ট করে দেওয়া হয়েছে। এমনভাবে লোকের মনকে মোহাবিষ্ট করে তার পরে যখন তাকে বলা रुप्त 'তোমার বুদ্ধিবিতা। প্রশ্নবিচার সমস্ত দাও ছাই করে, কেবল থাক্ ভোমার বাধ্যতা', তথন সে রাজি হতে বিলম্ব করে না। কিন্তু কোনো-একটা বাহাাসুষ্ঠানের ধারা অদূরবতী কোনো-একটা বিশেষ মাসের विष्येष তादिएथ खदाक लाज हर्द, এ कथा यथन चिक महत्कहे प्राप्यद अधिकाः न लाक विना छ र्क श्रीकात्र करत्र नित्न এवः गमा हाएछ नकन দিলে এবং অন্তের বুদ্ধির স্বাধীনতা হরণ করতে উন্তত হল, তথন সেটাই कि এक है। विषय ভाবনার कथा इन ना ? এই ভূতকেই ঝাড়াবার खर् कि चामत्रा धवात्र (बीक कित नि ? किंह, चत्रः छूछहे यपि धवा इत्त्र रितथा रित्र का इरलाई रहा विभरित्र खात्र भीमा बहेन ना।

মহাত্মা তাঁর সত্যপ্রেমের বারা ভারতের হৃদম জয় করেছেন, সেখানে

সভ্যের আহ্বান

আমরা সকলেই তাঁর কাছে হার মানি। এই সভ্যের শক্তিকে আমরা প্রত্যক্ষ করনুম এজন্ত আজ আমরা কতার্ব। চিরহন সভ্যকে আমরা প্রতিত পড়ি, কথার বলি, বে কণে তাকে আমরা সামনে দেখি সে আমাদের প্রাক্ষণ। বহু দিনে অকলাৎ আমাদের এই প্রযোগ ঘটে। কন্প্রেস আমরা প্রতিদিন গড়তে পারি, প্রতিদিন ভাঙতে পারি, ভারতের প্রদেশে প্রদেশে ইংরেজি ভাষার পোলিটিকাল বফুতা দিয়ে বেড়ানোও আমাদের সম্পূর্ণ সাধ্যায়ন্ত, কিন্তু সভাপ্রেমের যে সোনার কাঠিতে শত বৎসরের স্বপ্ত চিন্ত জোগে ওঠে সে তো আমাদের পাড়ার ভাকরার দোকানে গড়াতে পারি নে। খার হাতে এই ত্র্লভ জিনিস দেখলুম তাঁকে আমরা প্রশাম করি।

কিন্ধ, সত্যকে প্রত্যক্ষ করা সন্ত্রেও সত্যের প্রতি আমাদের নিষ্ঠা যদি দৃঢ় না হয় তা হলে ফল হল কী । প্রেমের সত্যকে প্রেমের দিকে যেমন মানি, বুদ্ধির সত্যকে বুদ্ধির দিকে তেমনি আমাদের মানতে হবে। কন্প্রেস প্রভৃতি কোনো রকম বাহাছ্ষ্ঠানে দেশের হৃদয় জাগে নি, মহং অস্তরের অক্টরেম প্রেমের স্পর্লে জাগল। আন্তরিক সত্যের এই প্রভাব যথন আমরা আজ এমন স্পষ্ট দেখতে পাচ্ছি, তখন স্বরাজলাভের বেগাতেই কি সেই সত্যকে আর আমরা বিশ্বাস করব না । উদ্বোধনের পালায় যাকে মানলুম, অফুঠানের পালায় তাকে বিসর্জন দিয়ে বসব ।

মনে করে।, আমি বীণার ওতাদ খৃতিছি। পূর্বে পশ্চিমে আমি
নানা লোককে পরীক্ষা করে দেখলুম, কিন্তু হৃদয়ের তৃপ্তি হল না। তারা
শক্ষ করে খ্ব, তারা কৌশল জানে বিস্তর, তারা রোজগার করে বথেই,
কিন্তু তাদের বাহাছুরিতে মনে প্রশংসা জাগে, প্রেম জাগে না। অবশেষে
হঠাৎ একজনকে খুঁজে পাওয়া গেল, তিনি তার তারে ছটি-চারটি মীড়
লাগাবা মাত্র অন্তরের আনন্দ-উৎসের মুখে এত দিন যে পাধর চাপা
ছিল সেটা যেন এক মুহুর্তে গেল গ'লে। এর কারণ কী ? এই ওস্তাদের

यत्न (य चानसम्बी मेक्टि चाह्न (म এकि जिन्न) त्र चानन व्यानमिथा (बदक व्यक्ति महदक्षे अन्द्र अन्द्र व्यानमिथादक व्यानिस তোলে। वाभि বুঝে निल्म, उँ। क ওন্তাদ বলে মানলুম। তার পর আমার पत्रकाव रुन এकि वीन। टेलिंब क्वारना। किन्न, এই वीना-टेलिंब বিষ্ণায় যে সভ্যের দরকার সে আর-এক জাতের সভ্য। ভার মধ্যে অনেক চিন্তা, অনেক শিকা, অনেক বস্তুতত্ত্ব, অনেক মাপজোখ, অনেক व्यथानगात्र। रमथारन व्यागात अञ्चान यनि व्यागात नित्रम व्यवशात প্रक्रि मया क'रत्र इंडां र व'ला वरमन 'वावा, वीवा छित्र कत्रार्छ विखत्र चारमाक्यत्नत्र मन्नकात्र, रम जूमि পেরে উঠবে না, जूमि বরঞ্চ এই কাঠির গায়ে একটা তার বেঁধে ঝংকার দাও, তা হলে অমুক মাসের অমুক তারিখে, এই কাঠিই বীণা হয়ে বাজতে থাকবে', তবে সে কথা খাটবে না। আসলে আমার গুরুর উচিত নয় আমার অক্ষমতার প্রতি দয়া করা। এ कथा छात्र वनारे ठारे, 'এ-मव किनिम मश्कार अवर मखात्र मात्रा यात्र ना।' जिनिहे जा वामामित्र म्लंडे वृक्षित्र मित्वन त्य, वीनात्र এकि यांज छात्र नम्न, এর উপকরণ বিস্তর, এর রচনাপ্রণালী স্ক্র, নিয়মে একটুমাত্র ক্রটি হলে বেহুর বাজবে, অতএব জ্ঞানের ভত্তকে ও নিয়মকে विठात्रপूर्वक मयएक भाजन कद्रां इत्य। मिल्यं क्रायंत्र गाजीवा (थरक गाफ़ा त्वत्र कदा এই इन अञ्चामित्र वीना-वाकारना— এই विश्वास প্রেম যে কত বড়ো সত্য জিনিস সেই কথাটা আমরা মহাত্মাজির কাছ (षदक विश्व करत्र निश्च निश्च वरमिष्ठ, এ मयद्भ छात्र প্রতি আমাদের अहा चक्ध थाक्। किछ, खत्राख गए छानवात्र एए दहविवृठ, छात्र তেমনি তথ্যাসুসন্ধান এবং বিচারবৃদ্ধি চাই। তাতে থারা অর্থশান্তবিৎ डींट्नित्र डावटक हत्व, यञ्चकद्विद डींट्नित्र थांहेटक हत्व, निकाकद्विद वाष्ट्रेष्ठविर गक्नदिष्टे शांत्न এवः कर्ष नागर्छ हत्। वर्षाद प्रत्नव

সত্যের আহ্বান

অন্ত:করণকে সকল দিক থেকে পূর্ণ উন্তনে কাগতে হবে। তাতে দেশের লোকের জিজ্ঞানার্তি যেন সর্বদানির্মল ও নিরভিত্ত থাকে, কোনো গৃঢ় বা প্রকাশ্র শাসনের ঘারা সকলের বৃদ্ধিকে যেন ভীক্ব এবং নিশ্চেষ্ট করে ভোলা না হয়। এই-যে দেশের বিচিত্র শক্তিকে তলব দেওয়া এবং তাকে নিজের নিজের কাজে লাগানো, এ পারে কে? সকল ডাকে তো দেশ সাড়া দেয় না, পূর্বে তো বারম্বার তার পরীকা হয়ে গেছে। দেশের সকল শক্তিকে দেশের স্টেকার্যে আজ পর্যন্ত কেউ যোগযুক্ত করতে পারেন নি ব'লেই তো এত দিন আমাদের সময় বয়ে গেল। তাই এত কাল অপেকা করে আছি, দেশের লোককে ডাক দেবার বার সত্য অধিকার আছে তিনিই সকলকে সকলের আত্মশক্তিতে নিযুক্ত করে দেবেন। এক দিন ভারতের তপোবনে আমাদের দীক্ষাণ্ডক তার সত্যজ্ঞানের অধিকারে দেশের সমস্ত ব্রক্ষচারীদের ভেকে বলেছিলেন—

যথাপ: প্রবভায়তি যথা মাসা অহর্জরম্।

এবং মাং ব্রহ্মচারিশো ধাত আয়ন্ত সর্বতঃ স্বাহা 🛚

জলসকল যেমন নিমদেশে গমন করে, মাসসকল যেমন সংবৎসরের দিকে ধাবিত হয়, তেমনি সকল দিক বেকে ব্রহ্মচারিগণ আমার নিকটে আত্মন, আহা। সেদিনকার সেই সত্যদীক্ষার ফল আজও জগতে অমর হয়ে আছে এবং তার আহ্বান এখনও বিশ্বের কানে বাজে। আজ আমাদের কর্মগুরু তেমনি করেই দেশের সমস্ত কর্মশুক্তিকে কেন আহ্বান করবেন না ! কেন বলবেন না 'আয়ৢয় সর্বতঃ বাহা, তারা সকল দিক বেকে আহ্বা ! দেশের সকল শক্তির জাগরণেই দেশের জাগরণ, এবং সেই সর্বতোভাবে জাগরণেই মুক্তি। মহান্মাজির কঠে বিধাতা ভাকবার শক্তি দিয়েছেন, কেননা তার মধ্যে সভ্য আছে; অতএব এই তো ছিল আমাদের শুক্ত অবসর। কিন্তু তিনি ভাক দিলেন একটিমাত্র সংকীর্ণ ক্ষেত্র। তিনি বললেন, 'কেবলমাত্র সকলে মিলে স্থতো কাটো, কাপড়

(वाता।' 'এই ডाक कि मिट 'चात्रस गर्वछः चाहा' ? এই ডाक कि সংকীর্ণ জীবনযাত্রায় ডাক দিলেন তথন লক লক মৌমাছি সেই আহ্বানে कर्यत्र ऋविशात्र कर्छा निष्करक क्रीव करत्र मिरल ; আপनारक धर्व क्रात्र बात्रा अहे-एव जाएतत्र बाबाजाग এতে जात्रा मुख्यित উल्हो भएव राम। य पिट्नंत्र अधिकाश्म लाक कार्ना अलाखरन वा अञ्चान्त अक्षांत्र निष्मत्र मेक्कित्र क्रीवेष गांधन करण कूछिल इम्र ना, लापित विमिष्मा प তাদের নিজের অন্তরের মধ্যেই। চরকা কাটা এক দিকে অত্যন্ত महस्र, (महस्राज्य मकन मासूर्यत्र भएक छ। मस्रा महस्यत् छ।क মান্তবের নয়, সহজ্বের ডাক মৌমাছির। মান্তবের কাছে তার চূড়ান্ত শক্তির দাবি করলে তবেই সে আত্মপ্রকাশের এখর্য উদ্ঘাটিত করতে भारत। स्नाही विस्थि निष्मात्र मिक् छाकिया मासूरवद अखिक गःकीर्व करत्र তাকে वन मिवात हिंहा करत्रिन, म्लाहीत सन हम नि; এথেন্ মামুষের সকল শক্তিকে উন্মুক্ত ক'রে তাকে পূর্বতা দিতে চেয়েছিল, এপেন্সের জয় হয়েছে — তার সেই জয়পতাকা আজও যানব-সভ্যতার শিখরচূড়ায় উড়ছে। মুরোপে সৈনিকাবাসে কারখানামরে यानवमक्तित क्रीवचनाधन कत्रष्ट् ना कि ? लाष्ट्रित वर्ष, छेष्मश्राधरनत्र थालित, याञ्चरवत्र यञ्चषाचरक गःकीर्ग करत्र हिंरहे निष्क् ना कि ? चात्र এইজভেই कि युद्राशीय गया क वाक नित्रानम घनी कुछ हरव छेठ हि ना ? वर्षा कल्वत्र बात्राख माञ्चरक ছোটো कत्रा यात्र, ছোটো कल्वत्र बात्राख क्रा यात्र। এक्टिन्त्र दात्रां क्रा यात्र, हत्रकात्र दात्रां । हत्रका यिथान चार्छाविक रमथान रम काला छेन्छन करत्र ना, नत्रक छेन्छन त्र करत्र ; मानवयरनत्र रेविति । उपशब्द हत्रका रयशास्त्र वालाविक नत्र रमशास्त्र , চরকার হতা কাটার চেয়ে यन काটা বার অনেকধানি। यन जिनिमें। ञ्चात्र (हर्म क्य यूनावान नव।

সভ্যের আহ্বান

একটি কথা উঠেছে এই বে, ভারতে শতকরা আশিক্সন লোক চাব করে এবং তারা বছরে ছর মাস বেকার থাকে, তাদের হুতা কাটতে উৎসাহিত করবার জন্তে কিছু কাল সকল ভদ্রলোকেরই চরকা ধরা দরকার। প্রথম আবশুক হচ্ছে বথোচিত উপারে তথ্যামুসদ্ধান ধারা এই কথাটি প্রতিপর করা। অর্থাৎ, কী পরিমাণ চাবা কত দিন পরিমাণ বেকার থাকে। যথন চাব বদ্ধ তথন চাবারা কোনো উপারে যে পরিমাণ জীবিকা অর্জন করে, হুতা কাটার ধারা ভার চেয়ে বেশি অর্জন করবে কি না। চাব ব্যতিরেকে জীবিকার একটিমান্ত উপারের ধারা সমস্ত ক্ষাণকে বদ্ধ করা দেশের কল্যাণের পক্ষে উচিত কি না, সে সম্বন্ধেও সন্দেহ আছে। কিছু মূল কথা এই যে, কারও মুখের কথার কোনো অমুমানমাত্তের উপর নির্ভর ক'রে আমরা সর্বজনীন কোনো পছা অবলঘন করতে পারব না; আমরা বিশ্বাস্থোগ্য প্রণানীতে তথ্যামুসদ্ধান দাবি করি। তার পরে উপারের যথাযোগ্যতা সম্বন্ধে বিহার করা সম্ভবপর।

আমাকে কেউ কেউ বলেছেন, দেশের চিন্তপক্তিকে আমরা তো
চিরদিনের অন্তে সংকীর্ণ করতে চাই নে, কেবল অতি অন্ন কালের অন্তে।
কেনই বা অন্ন কালের অস্তে! যেছেতু এই অন্ন কালের মধ্যে এই উপারে
আমরা স্বরাজ পাব! তার যুক্তি কোপার! স্বরাজ তো কেবল নিজের
কাপড় নিজে জোগানো নয়। স্বরাজ তো একমাত্র আমাদের বল্পস্কলতার
উপর প্রতিষ্ঠিত নয়। তার যথার্থ ভিত্তি আমাদের মনের উপর, সেই মন
তার বহুধাশক্তির ঘারা এবং সেই আয়্মশক্তির উপর আহ্বা ঘারা স্বরাজ
কৃষ্টি করতে থাকে। এই স্বরাজকৃষ্টি কোনো দেশেই তো শেব হর
নি; সকল দেশেই কোনো না কোনো অংশে লোভ বা মোহের
প্ররোচনার বন্ধনদশা থেকে গেছে। কিন্ত, সেই বন্ধনদশার কারণ
মান্থবের চিত্তে। গে-সকল দেশে নিরক্তর এই চিত্তের উপর দাবি করা

28

चायारतत्र रतरभे अन्य हिटल विकारभेत छे भरते चत्राक मैं। एं। एं। एं। एं। कां कर्य कांना वांक किया, वांक कन नय, खान চরকা কেটে আমরা পাব, এর যুক্তি কোথায় ? যুক্তির পরিবর্তে উক্তি তো কোনোমতেই চলবে না। মান্তুষের মুখে যদি আমরা দৈববাণী खना चात्रक कति, जा हत्न चार्यात्मत्र तित्य राष्ट्राकात्र त्रकत्यत्र यात्राचाक উপসর্গ আছে এই দৈববাণী যে তারই মধ্যে অন্ততম এবং প্রবল্তম হয়ে উঠবে। একবার যদি দেখা যায় যে, দৈববাণী ছাড়া আর-কিছুতেই चार्यापद (पर्न नए ना. जा इटन चाक श्रीक्राक्रानद गद्रक गकारन ্সক্যায় দৈববাণী বানাতে হবে, অন্ত সকল রকম বাণীই নিরম্ভ হয়ে যাবে। रियथान युक्तित्र व्यक्षिकात्र राथान উक्ति मिरत्र यामित्र रखानार् हर्व, ভাদের পক্ষে. যেখানে আত্মার অধিকার সেখানে কোনো না কোনো कर्डात्र चामन পড़रवरे। छात्रा खत्राख्वत्र भाषा क्टि वरम चाह्न, वाशाय क्रम एटम क्राटना क्रम इटन ना। এ क्था मान्छि, वामारम्ब प्राप्त देववानी, देवव खेषध, वाक्ष व्यालाद्य देवविक्या, এ-मरवद्र खेखाद थूवह বেশি: किन्न ग्रिकेट अहे आयामित्र मिट्न अत्राद्धित छिछ्ने केत्र छ इटन मिरवागीय चागटन विटम्स करत्र वृद्धित्र वागीटक भाका करत्र वनारछ हरव। रकनना, व्यागात्र পূর্বের প্রবন্ধে বলেছি, দৈব স্বয়ং আধিভৌতিক वाष्ट्रा वृद्धित त्राष्ट्राण्डितक करत्रह्न। जारे चाष्ट्र वार्यत्र विषय जात्रारे खत्राक भारत এवः তাকে त्रका कत्रत्व भारति यात्रा व्याख्यक्रित कारत चाचाकर्ज्यं द्वा देव क्रिक्टिक क्रिक्ट भारत, यात्रा त्रहे शोत्रवरक क्लात्ना (माट्स क्लात्ना त्याट्स भरत्रत्र भर्मानल क्वरल हाम ना। अहे-त्य আজ বস্তাভাবে লজাকাতরা মাতৃভূমির প্রাক্তে রাশীকৃত ক'রে কাপড় (পাড়ানো চলছে, কোন্ বাণীতে দেশের কাছে আৰু ভার ভাগিদ वागरह ? रम कि जे रिनवरागीरण नम्न शामण वावहान वा वर्जन

সভ্যের আহ্বান

न्याभारत व्यर्गाञ्चिक छएखूत्र घनिष्ठं र्याग व्याष्ट्र, अ मश्रक्ष राहे छएखूत्र ভাষাতেই দেশের সঙ্গে কথা কইতে হবে; বুদ্ধির ভাষা মাগ্র করা यिन वह निन (धरक मिट्नें चार्चा) निवस्क हम, जरव चात्र-नव हिए निरम क्षे चन ड्यारम्ब मरमहे महाहे क्रवा हरन। क्निना क्षे चनछा महे व्यायात्मत्र भत्क (गाष्ट्रां गलम, original sin। (गरे गलम्होत्रहे था जिंद्र, (महे गमनदिक्हे व्यव्यय निष्य चाक घाषण। क्या हरत्रह. 'বিদেশী কাপড় অপবিত্র, অভএব ভাকে দগ্ধ করো।' অর্থশান্তকে वश्किल करत्र लात्र कात्रभात्र धर्मभात्रक ब्लात्र करत्र हित्न व्याना इल। व्यवित कथाहै। धर्मास्त्रित कथा, व्यर्थत नित्रस्यत छेशस्त्रत कथा। মিধ্যাকে বর্জন করতে হবে কেন, মিধ্যা অপবিত্র কেন, তার ছারা व्यागारमत्र, श्रायम निष्क इत्र ना वा न्ष्ठे इत्र व'लाहे य छ। नत्र। হোক বা না হোক, তার ঘারা আমাদের আত্মা মলিন হয়। অতএব এ কেত্রে অর্থশান্ত বা রাষ্ট্রশান্তের কথা খাটে না, এখানে ধর্মশান্তেরই वागी व्यवन। किन्न, काराना कालफ लवा वा ना-लवाब यका यनि कारना जून पारक जरव रमहा व्यर्काखन वा चाद्याजस्वन वा रमोन्सर्व-তত্ত্বের ভূল, এটা ধর্মতত্ত্বের ভূল নয়। এর উত্তরে কেউ কেউ বলেন, य जूल (महम्दान द्वःथ जानम्न कद्र (महेटिहे जर्म। जामि जान ऐखदा এই विन, जूनमात्वि इ:४ चाह्य— चित्रायि द जून दाखा यात्राप इम्न, ভिত दांका इम्न, मारका-निर्माण এमन गमम घरहे ख তার উপর রেলগাড়ি চললে ভয়ংকর চুর্ঘটনা অবশুভাবী। কিছ, এই ভূলের সংশোধন ধর্মশাল্লের মতে হয় না। অর্থাৎ, ছেলেরা यে बाजाय जित्यारमिंद्रिय जून कर्य, ज्ञानिक व'रन राहे बाजा नहे करत्र ७ जूरनत्र गश्याधन इत्र ना ; जिस्तायिष्टित्रहे गछा नित्रय रगहे थाতाक गरमाधन कदाल हत्। किन मामोद्रमभाष्ट्रद मन এ कथा फेंट्रेट भारत रम, जूरमत्र बाजारक व्यभवित्र यमि ना विन जा इरम अत्रा

जून क जून वरन गंगा कदरव ना। जा यिन मजा इस, जा इरन जा नि काक (ছড়ে সকল প্রকার উপায়ে এই চিন্তগত দোষকে সংশোধন कर्रा हर्त, जर्नरे এ ছেলেরা মানুষ হতে পান্বে। কাপড় পোড়ানোর छ्कूम चांक चांगामित 'পर्त अरम्ह । रमहे छ्कूमरक ह्कूम व'रम चामि মানতে পারব না; তার প্রথম কারণ হচ্ছে এই যে, চোখ বুজে ভ্রুম यानात्र विषय विপश्चि (परक मिन्टक উद्धात कत्वात्र करू चार्यामत्र লড়তে হবে-- এক ত্রুম থেকে আর-এক ত্রুমে তাকে ঘুরিয়ে ত্রুম-সমুদ্রের সাত ঘাটে তাকে জল খাইয়ে মারতে পারব না। विভীগ কৰা इट्छ এই यে, यে काপড़ পোড়ানোর আয়োজন চলছে সে আমার काপড़ नम्न, रञ्जल दिनवामीदित यथा यादित वाक कालफ़ निर्दे व कालफ তাদেরই। ও কাপড় আমি পোড়াবার কে ? यनि তারা বলে 'পোড়াও', তা হলে অন্তত আত্মবাতীর 'পরেই আত্মহত্যার ভার দেওয়া হয়, তাকে বধ করবার ভার আমাদের উপর পড়ে না। যে মাহুষ ত্যাগ করছে তার অনেক কাপড় আছে আর যাকে জ্বোর করে ত্যাগর্থ ভোগ कदािक कालएद चर्छात तम घरत्र वाद इट्ड लाद्र ना। এगन उद्रा क्षवर्षे खित्र व्यात्र निरुख পाপकानन इत्र ना। वात्र दात्र वरन् हि. व्यावात्र वनव, वाञ्च करनत लाएं चामत्रा मनरक (थाप्तारं भावत ना। (य कलित्र मोत्राच्या ममस्र পृथिवी भी फिल महाचाकि महे कलित मक्ष निष्ठ कर्त्रा होन, अथारन धामद्रा छात्र मरन। किन्न, य याह्यू इ मस्रमुद्ध चक्क वांभाजा चांगामित मिलने जकन देवल ७ चन्यानित गृतन, তাকে नहां करत्र এ नफ़ारे कत्र ए भात्रव ना। किनना छात्रहे महन चागारित अथान नेषारे, जारक जाणारिज भारतन जरवरे चागरा चहार বাহিরে স্বরাজ পাব।

বাপড় পোড়াতে আমি রাজি আছি, কিন্তু কোনো উক্তির তাড়নায় নয়। বিশেষজ্ঞ ব্যক্তিরা যথেষ্ঠ সময় নিয়ে যথোচিত উপায়ে প্রমাণ

সত্যের আহ্বান

সংগ্রহ করন এবং স্বযুক্তি ধারা আমাদের বৃঝিরে দিন যে, কাপড় পরা সম্বন্ধে আমাদের দেশ অর্থ নৈতিক যে অপরাধ করেছে অর্থ নৈতিক কোন্ বাবদ্বার ধারা তার প্রতিকার হতে পারে। বিনা প্রমাণে বিনা যুক্তিতে কেমন করে নিশ্চিত বলব যে. বিশেষ একটা কাপড় প'রে আমরা আর্থিক যে অপরাধ করেছি কাপড়টাকে পুড়িয়ে সেই অপরাধের মূলটাকে আরো বিভারিত করে দিচ্ছি নে, ম্যাঞ্চেন্টারের ফাঁস তাতে পরিণামে ও পরিমাণে আরো কঠিন হয়ে উঠবে না ? এ তর্ক আমি বিশেষজ্ঞভাবে উত্থাপিত করছি নে, কেননা আমি বিশেষজ্ঞ নই, আমি জিল্লাম্বভাবেই করিছি। বিশেষজ্ঞ যা বলেন তাই যে বেদবাক্য আমি তা বলি নে। কিন্তু স্থবিধা এই যে, বেদবাকোর ছলে তাঁরা কথা বলেন না। প্রকাশ্ত

তারতের আজকের এই উদ্বোধন সমস্ত পৃথিবীর উদ্বোধনের অন্ধ।

একটি মহাযুদ্ধের তুর্যধানিতে আজ বুগারস্তের বার খুলেছে। মহাভারতে
পড়েছি, আত্মপ্রকাশের পূর্ববর্তী কাল হচ্ছে অজ্ঞাতবাসের কাল।

কিছু কাল থেকে পৃথিবীতে মামুস যে পরস্পর কিরকম ঘনিষ্ঠ হয়ে
এসেছে সে কথাটা স্পষ্ট হওয়া সত্তেও অজ্ঞাত ছিল। অর্থাৎ, ঘটনাটা
বাইরে ছিল, আমাদের মনে প্রবেশ করে নি। যুদ্ধের আঘাতে
এক মুহুর্তে সমস্ত পৃথিবীর মামুষ যথন বিচলিত হয়ে উঠল, তথন এই
কথাটা আর লুকোনো রইল না। হঠাৎ এক দিনে আধুনিক সভ্যতা
অর্থাৎ পাশ্রভা সভ্যতার ভিত কেপে উঠল। বোঝা গেল, এই কেঁপে
ওঠার কারণটা স্থানিক নয় এবং ক্ষণিক নয়— এর কারণ সমস্ত পৃথিবী
জুড়ে। মামুষের সঙ্গে মাপ্রবের যে সম্বন্ধ এক মহাদেশ থেকে আর-এক
মহাদেশে বার্থে, তার মধ্যে সত্যের সামক্ষম্ব যত ক্ষণ না ঘটবে তত ক্ষণ
এই কারণের নির্ত্তি হবে না। এখন থেকে যে-কোনো জাত নিজের

घटेरव, मि किছू তেই भास्ति भारत ना। এখन थ्वरक खार्छाक मिर्भरक নিজের জন্তে যে চিস্তা করতে হবে তার দে চিস্তার কেত্র হবে कारकाषा। চিखের এই বিশ্বমুখী বৃত্তির চর্চা করাই বর্তমান যুগের निकात गाथना। किছू मिन (बरक धामता मिश्र क भाष्टि, छात्रछ-वाष्ट्रभागत्न এक हो। गूननी छित्र भित्रवर्छन इरक्छ। এই পরিবর্তনের মূলে আছে ভারতরাষ্ট্রসমস্থাকে বিশ্বসমস্থার অন্তর্গত করে দেখবার চেষ্টা। যুদ্ व्यायात्मत्र यत्नत्र मायत्न तथत्क এक हो। भर्म। इंटिए मिर्ग्ने एक या वित्यत्र चार्व नग्न छ। य चामारित निष्कत चार्यत विरत्नाधी এই कथारक मासूब, পুषित्र পাতায় নয়, ব্যবহারের ক্তেতে আজ দেখতে পাছে; এবং দে व्यक्ति, राथान चम्राप्त चाहि राथान वाम चिरिकात वामराव गठा অধিকার থাকে না। বাহ্ন অধিকারকে খর্ব ক'রেও যদি সভা অধিকার পাওয়া যায় তবে সেটাতে লাভ ছাড়া লোকসান নেই। মান্তবের মধ্যে **बर्ट-ए** बक्टा वृद्धित वित्रां भित्रवर्जन घटेए. जात छिख मःकीर्ग (बर्क ভূমার দিকে যাচ্ছে, তারই হাত এই ভারতরাষ্ট্রনীতি-পরিবর্তনের মধ্যে कांक कद्राठ चाद्रस्त कर्द्राह । এद गर्धा गर्षष्ठ चमण्र्गेठा ७ প्राज्ञ वाधा चाहि— यार्थवृद्धि ७७वृद्धिक भरा भरा चाक्रमण करावहे— छाहे व'ला এ कथा यत्न कदा चञ्चात्र (ए. এই खखदूषि मण्णूर्ग कनहेंछ। এवः यार्ववृद्धि मन्भूर्व चक्रजिम। चामात এই বাট বংসরের অভিজ্ঞতায় একটি কথা জেনেছি যে, কপটতার মতো ছংসাধা অভএব ছুর্লভ জিনিস व्यात (नहे। थाँ। कि कर्षे मासूच हर्ष्ट् क्ष्यवा (माक, व्यक्ति व्यक्तार তার আবির্ভাব ঘটে। আসল কথা, সকল মামুষের মধ্যেই কম বেশি পরিমাণে চারিত্র্যের হৈধ আছে। আমাদের বৃদ্ধির মধ্যে লজিকের যে कन পাতা ভাতে छ्टे विद्यांधी भमार्थिक ध्वादना क्रिन व'लाहे ভालाब गद्य यथन ययक्त पाथि जथन जाफ़ालाफि ठिक करत्र निहे, अत्र यरशा

সভ্যের আহ্বান

ভালোটাই চাত্রি। আঞ্চলের দিনে পৃথিবীতে সর্বজনীন বে-সকল প্রচেটা চলছে ভার মধ্যে পদে পদে মান্থবের এই চারিত্র্যের বৈধ দেখা যাবে। সে অবস্থার ভাকে বদি ভার অভীভযুগের দিক থেকে বিচার করি ভা হলে ভার স্বার্থবৃদ্ধিকে মনে করব থাটি; কারণ, ভার অভীভের নীতি ছিল ভেদবৃদ্ধির নীতি। কিন্তু ভাকে বদি আমাদের আগামীকালের দিক থেকে বিচার করি ভা হলে ব্যব শুভবৃদ্ধিটাই খাটি। কেননা ভাবী যুগের একটা প্রেরণা এসেছে মান্ত্র্যকে সংযুক্ত করবার জন্তে। যে বৃদ্ধি সকলকে সংযুক্ত করে সেই হচ্ছে শুভবৃদ্ধি। এই বে লীগ অফ নেশন্স -প্রভিষ্ঠা বা ভারতশাসনসংশ্বার, এ-সব হচ্ছে ভাবী যুগ সম্বন্ধে পশ্চিমদেশের বাণী। এ বাণী সভাকে যদি বা সম্পূর্ণ প্রকাশ না করে এর চেটা হচ্ছে সেই সভ্যের অভিমুখে।

আজ এই বিশ্বচিত্ত-উদ্বোধনের প্রভাতে আমাদের দেশে জাতীয় কোনো প্রচেষ্টার মধ্যে বদি বিশ্বের সর্বজনীন কোনো বাণী না পাকে তা হলে তাতে আমাদের দীনতা প্রকাশ করবে। আমি বলছি নে, আমাদের আশু প্রয়োজনের বা-কিছু কাজ আছে তা আমরা ছেড়ে দেব। সকালবেলার পাথি যখন জাগে তখন কেবলমাত্র আহার-অ্যবেশে তার সমস্ত জাগরণ নিযুক্ত পাকে না, আকাশের আহ্বানে তার ছই অক্লান্ত পাখা সায় দেয় এবং আলোকের আনন্দে তার কঠে গান জেগে ওঠে। আজ সর্বমানবের চিত্ত আমাদের চিত্তে তার ভাক পাঠিয়েছে; আমাদের চিত্ত আমাদের ভাবায় তার সাড়া দিক, কেননা ভাকের বোগ্য সাড়া দেওয়ার ক্মতাই হচ্ছে প্রাণশক্তির লক্ষণ। একদা যখন পরমুখাশেকী পলিটিক্সে সংসক্ত ছিলুম, তখন আমরা কেবলই পরের অপরাথের তালিকা আউড়ে পরকে তার কর্তব্যক্রটি শ্বরণ করিয়েছি; আজ যখন আমরা পরপরায়ণতা থেকে আমাদের পলিটিক্স কে ছিল্ল করতে চাই, আজও সেই পরের অপরাথ-জপের হারাই আমাদের বর্জননীতির

কালাম্বর

পোষণপালন করতে চাচ্ছি। তাতে উত্তরোভর আমাদের যে মনোভাব व्यवन रुख डेर्राइ म चामापित्र हिष्डित चाकार्य त्रक्तवर्ग धूरना डेडिस् वृष्ट ष्म १८ (परक चार्यापित विद्यारक चात्र करत्र त्राथए । अवृष्टित क्षच চরিভার্থতার দিকে আমাদের উদ্ভেদ্ধনা সে কেবলই বাড়িয়ে ভুলছে। সমস্ত বিশ্বের শঙ্গে যোগযুক্ত ভারতের বিরাট রূপ চোথে না পড়াতে আমাদের কর্মে ও চিস্তায় ভারতের যে পরিচয় আমরা দিতে व्यवृष्ठ रुखि ए चि चि हाते।, जात मीश्रि निरे; म चामापित्र वावनामनुक्तिक्टे श्रिथान करत्र जूनए । এই दुक्ति कथरना कारना वर्षा किनिगदक एष्ठि कदत्र नि। व्याक निक्यम्प्य এই राजगाम्ब्रिक অতিক্রম করে শুভবুদ্ধি জাগিয়ে তোলবার জন্মে একটা আকাজ্ঞা এবং উভ্তম দেখা দিয়েছে। সেখানে কত লোক দেখেছি যারা এই সংকল্পকে यत्नत्र यत्था नित्र चाक मन्नामी। चर्वा यात्रा चाकारतात्र वाथन क्टि अत्कात्र नाथनात्र चत्रहाणा हत्त्र त्वित्रह्ह, यात्रा नित्कत्र चस्रद्र यासूर्यत्र ভিতরকার অধৈতকে দেখেছে। সেই-সব সন্ন্যাসীকে ইংরেজের মধ্যে অনেক দেখেছি; তাঁরা তাঁদের স্বজাতির আত্মন্তরিতা থেকে হুর্বলকে রক্ষা করবার সাধনায় স্বজ্ঞাতির কাছ থেকে আঘাত ও অপমান স্বীকার क्द्रिक कुछिक इन नि। त्रिहे द्रक्य मद्रामी (मर्थिছ ख्रांस्म, र्ययन রোমাঁ। রলাঁ— তিনি তাঁর দেশের লোকের ঘারা বজিত। সেই রক্ম नज्ञानी चामि युद्रारिनद चरिनकाकुछ चथाछ मिर्मद खास्ड मिरथि । দেখেছি য়ুরোপের কত ছাত্রের মধ্যে; সর্বমানবের ঐক্যসাধনায় তাদের মুখচ্চবি দীপ্যমান। ভারা ভাবী যুগের মহিমার বর্তমান যুগের সমস্ত আঘাত ধৈর্যের সঙ্গে বহন করতে চায়, সমস্ত অপমান বীর্যের সঙ্গে ক্ষমা क्रवा होता। चात्र चामताहै कि क्विन, रयमन 'शक्का चारतिन्छाः' তেমনি করে আজ এই শুভদিনের প্রভাতে কেবল পরের অপরাধ স্মরণ कत्रव, এবং আমাদের ভাতীয় স্ষ্টিকার্য একটা কলছের উপর প্রতিষ্ঠিত

সত্যের আহ্বান

করতে পাকব ? আমরা কি এই প্রভাতে সেই ওভবুদ্ধিদাতাকে স্বরণ করব না, য একঃ, যিনি এক ; অবর্ণঃ, যিনি বর্ণহীন, যাঁর মধ্যে সাদা কালো নেই ; বছধাশক্তিযোগাৎ বর্ণাননেকান্ নিহিতার্থো দধাতি, যিনি বছধা শক্তির যোগে অনেক বর্ণের লোকের অন্ত তাদের অন্তনিহিত প্রয়োজন বিধান করেছেন— আর তাঁরই কাছে কি প্রার্থনা করব না, 'স নো বৃদ্ধ্যা ওভয়া সংযুবজু, তিনি আমাদের সকলকে ওভবুদ্ধি দারা সংযুক্ত কর্মন' ?

কাতিক ১৩২৮

मयग्रा

যে ছাত্রেরা বিশ্ববিভালয়ের প্রবেশিকা-পরীকায় বলে ভাদের गংখ্যা দশ-বিশ হাজার হয়ে পাকে, কিন্তু তাদের সকলেরই পক্ষে একই क्षम्, এक कालीए अकरे चक्रत्व हाभागा। त्ररे अकरे व्यक्तिय अकरे সভ্য উত্তর দিতে পারলে তবে ছাত্রেরা বিশ্ববিষ্ণালয়ে উত্তীর্ণ হয়ে পদবী পায়। এইজ্বন্তে পার্ঘবর্তী পরীকার্থীর কাছ থেকে উত্তর চুরি করেও কাজ চলে। কিন্তু বিধাতার পরীক্ষার নিয়ম এত সহজ্ঞ নয়। এক-এক জাতির কাছে তিনি এক-একটি স্বতম্ব সমস্তা পাঠিয়েছেন। সেই সমস্তার সত্য মীমাংসা তারা নিজে উদ্ভাবন করলে তবেই তারা তাঁর विश्वविष्ठानस्य स्थान भारव ७ यान भारव। ভারতকেও ভিনি একটি विभिष्ठ गम्छ। पिरम्रह्म, य उपिन ना छात्र गछ। मौमारमा इरव छछ पिन ভারতের ছু:খ কিছুতেই শাস্ত হবে না। আমরা চাতুরি খাটিয়ে युद्राप्तित भरीकाभख (भरक উछद्र চूद्रि कद्रि। এक मिन वाकांत्र मर्छा क्द्रिव्य गाहि-गादा नक्न, चाक्टक दुष्टिगात्नद गटा कद्रिह ভाषाद किছू वनन घिटिय। भन्नीकक वाद्य वाद्य छात्र भाष्य नीन प्रिक्रम मिस्र एय গোল গোল চিহ্ন কাটছেন ভার স্ব-ক্টাকেও একত্র যোগ করতে গেলে বিয়োগান্ত হয়ে ওঠে।

বায়্যগুলে ঝড় জিনিসটাকে আমরা ছুর্যোগ বলেই জানি। সে যেন রাগী আকাশটার কিল চড় লাখি ঘ্যোর আকারে আসতে থাকে। এই প্রহারটা তো হল একটা লক্ষণ। কিসের লক্ষণ প্রাসল কথা, যে বায়ুন্তরগুলো পাশাপাশি আছে, যে প্রতিবেশীদের মধ্যে মিল থাকা উচিত ছিল, তাদের মধ্যে ভেদ ঘটেছে। এক অংশের বড়ো বেশি গৌরব, আর-এক অংশের বড়ো বেশি লাঘৰ হয়েছে। এ তো সহু হয় না, তাই ইক্রদেবের বন্ধ্র গড়গুড় করে ওঠে, প্রনদেবের

ভেঁপু হ-ছ করে হংকার দিতে থাকে। যত কণ প্রতিবেশীদের মধ্যে সাম্যসাধন না হয়, হাওয়ায় হাওয়ায় পঙ্জিভেদ ঘুচে না যায়, তত কণ শান্তি হয় না, তত কণ দেবতার রাগ মেটে না। যাদের মধ্যে পরস্পর মিলে চলবার সম্বন্ধ, তাদের মধ্যে ভেদ ঘটলেই তুমুল কাণ্ড বেধে যায়। তথন ঐ-যে অরণ্যটার গান্তীর্য নষ্ট হয়ে যায়, ঐ-যে সমুদ্রটা পাগলামি করতে থাকে, তাদের দোষ দিয়ে বা তাদের বাতে শান্তিশতক আউড়িয়ে কোনো ফল নেই। কান পেতে শুনে নাও, সর্গে মর্তে এই রব উঠল 'ভেদ ঘটেছে, ভেদ ঘটেছে'।

এই হাওয়ার মধ্যে যে কথা, মামুষের মধ্যেও তাই। বাইরে থেকে যারা কাছাকাছি, ভিতরের থেকে তাদের যদি ভেদ ঘটল, তা হলে ঐ ভেদটাই হল মূল বিপদ। যত কণ সেটা আছে তত কণ ইক্রদেবের বক্সকে, উনপঞ্চাশ পবনের চপেটাঘাতকে, বৈধ বা অবৈধ আন্দোলনের যারা দমন করবার চেষ্টা ক'রে ঝড়ের আন্দোলন কিছুতেই থামানো যার না।

আমরা যখন বলি স্বাধীনতা চাই, তখন কী চাই সেটা তেবে দেখা চাই। মামুষ যেখানে সম্পূৰ্ণ একলা সেইখানে সে সম্পূৰ্ণ স্বাধীন। সেখানে তার কারও সঙ্গে কোনো সম্বন্ধ নেই, কারও কাছে কোনো দায়িত্ব নেই, কারও প্রতি কোনো নির্ভর নেই, সেখানে তার স্বাতস্ত্র্যে লেশমাত্র হস্তক্ষেপ করবার কোনো মামুষই নেই। কিন্তু মামুষ এ স্বাধীনতা কেবল যে চায় না তা নয়, পেলে বিষম হৃংখ বোধ করে। রবিন্সন কুসো তার জনহীন দ্বীপে যতখন একেবারে একলা ছিল ততখন সে একেবারে স্বাধীন ছিল। যখনই ফ্রাইডে এল তখনই তার সেই একান্ত স্বাধীনতা চলে গেল। তখন ফ্রাইডের সঙ্গে তার একটা পরস্পার-সম্বন্ধ বেধে গেল। সম্বন্ধ মাত্রেই স্বধীনতা। এমন কি প্রভূত্তার স্বন্ধে প্রভূত্তার স্বধীন। কিন্তু রবিন্সন কুসো ফ্রাইডের

गत्क পরস্পর-দায়িছে জড়িত হয়েও নিজের স্বাধীনতার ক্ষতিজনিত ছু:খ क्न वाथ करत्र नि ? क्निना, जारमत्र मश्चात्र याथा (जरमत्र वाथा हिन ना। मश्वक्तत्र मरशा एक चारम कावात्र ? रयथान चित्राम चारम, ভয় আসে, যেখানে উভয়ে উভয়কে ঠকিয়ে জিততে চায়, যেখানে **উভয়ের সঙ্গে উভয়ের বাবহারে সহজ্ঞভাব থাকে না। ফ্রাইডে যদি** হিংস্র বর্বর অবিশ্বাসী হত, তা হলে তার সম্বন্ধে রবিন্সন কুসোর श्वाधीनका नष्टे इक। यात्र महत्र व्यागात मद्यक्तत्र भूर्नका त्नहे, व्यर्वाद यात्र প্রতি আমি উদাসীন, সে আমাকে টেনে রাখে না, কিন্তু তাই ব'লেই যে তারই সম্পর্কে আমি স্বাধীনতার যথাধ আনন্দ ভোগ করি তা নয়। যার সঙ্গে আমার সম্বন্ধের পূর্বতা, যে আমার পরম বন্ধু, স্থভরাং যে আমাকে বাঁধে, আমার চিত্ত তারই সম্বান্ধর মধ্যে স্বাধীনতা পায়, কোনো বাধা পায় না। যে স্বাধীনতা সম্বন্ধহীনতায় সেটা নেভিস্চক, সেই मुञ्जाबुनक चारीनजाम बाक्यरक भीषा मित्र। এর কারণ হচ্ছে, অসমদ মানুষ সত্য নয়; অন্তের সঙ্গে, সকলের সঙ্গে সম্বন্ধের ভিতর দিয়েই সে निष्कत्र मछाछा উপमिक्ति करत्र। এই मछाछा-উপमिक्तित्र वाशाम्र व्यर्थाৎ সম্বন্ধের ভেদে, অসম্পূর্ণতায়, বিক্ষতিতেই তার স্বাধীনতার বাধা। কেননা ইতিস্চক স্বাধীনতাই মামুষের ষ্পার্থ স্বাধীনতা। মামুষের গাইস্ক্রের यरिश वा द्रांटकाद यरिश विशव वारिश कथन १ ना, यथन शरू न्या महक मश्रक्तित्र विभर्षत्र घटि। यथन ভाইদের মধ্যে সন্দেহ বা দিখা বা লোভ প্রবেশ ক'রে তাদের সম্বন্ধকে পীড়িত করতে থাকে তথন তারা পরস্পরের মধ্যে বাধা পায়, কেবলই ঠোকর থেয়ে থেয়ে পড়ে, ভাদের जीवनयाजात श्रवाह भरि भरि श्रिष्टिहरू हरम क्र हरम एठि। उथन পরিবারে বিপ্লব ঘটে। রাষ্ট্রবিপ্লবও সম্বন্ধভেদের বিপ্লব। কারণ, সম্বন-(छातरे ज्या छि, त्ररे ज्या छिए रहे त्राशीन छात्र कि। जा या एतत्र धर्म-गाथनाट्छ कान् मूक्टिक मूक्ति वर्ण? य मूक्ति छ चहःकात्र पूत्र

करत्र मिरत्र विरम्बत्र मरक हिस्छत्र भूर्व रयांग माथन करत्र। छात्र कात्रव, विष्यत्र गट्य यार्गरे याञ्च गठा— এইखस्त्र मिरे गट्यात्र यसारे याञ्च यवार्थ वाधीने जा भाषा । व्यायवा এकान्छ वाधीने जाव मृज्य जारे न ; व्यागत्रा एवन पृष्ठित्र नित्र नयस्त्र পत्रिशृर्गजात्क ठारे, जात्करे वनि मुक्ति। यथन मिथ्न बाधीनठा हाई ७४न निछिश्हक शाधीनछा हाई (न, **७** बन (मर्भेत्र गक्न (मार्कित्र गर्भ गयक्षरक यथागञ्चर गठा ७ वाथा-युक्क कद्राक्त ठाई। मिठा इम्र (ज्याद्र काद्रण पूत्र कर्द्र निरम्न : किन्न म কারণ ভিতরেও থাকতে পারে, বাইরেও থাকতে পারে। আমরা পশ্চিমের ইতিহাসে পড়েছি, সেখানকার লোকেরা 'স্বাধীনতা চাই' ব'লে প্রায় মাঝে মাঝে কোলাহল তুলেছে। আমরাও সেই কোলাহলের অমুকরণ করি, আমারও বলি 'আমরা স্বাধীনতা চাই'। আমাদের এই क्षां ि म्लाहे करत्र वृक्षण्ड इत्व त्य, शूर्त्राल यथन रलएइ 'श्वाधीनजा हाहे' তথন বিশেষ অবস্থায় বিশেষ কারণে তার সমাজদেহের মধে। ভেদের द्वः य घटिहिन ; সমাজবর্তী লোকদের মধ্যে কোনো না কোনো বিষয়ে, कारना ना कारना चाकारत मश्रक्षत विष्ठिम वा विक्रिक घरहे हिन-সেইটেকে দূর করার দারাই তারা মুক্তি পেয়েছে। আমরাও যখন বলি 'याथीनका ठाई', जथन ভाবতে হবে কোন্ ভেদটা আমাদের ছ:খ-व्यक्नारित्र कार्रा ; नहेर्न साधीन्छ। अस्टा क्वन हेछिहारात्र वृत्रि-क्रां वावहात्र करत्र कारना कन हरव ना। यात्रा एकरक निरुक्तरमञ् यरशा हेव्हा क'रत्र পোষণ করে, ভারা স্বাধীনভা চায় এ কথার কোনো व्यर्थ हे (नहे। (म रक्यन इम्न ना, याष्ट्रविष्ठ रम्हिन र्य, जिनि स्रायीत यूथ (मथएक ठान ना, मसानएमद्र मृद्र द्राथएक ठान, खिक्दिनेशीएमद्र महन् মেলামেশ। করতে চান না, কিন্তু বড়োবউন্নের হাত খেকে ঘরকর্ন। निष्कत्र शटल क्ट्रिज निर्ल होन।

यूरतारभव कारना कारना प्रत्य प्रथिष्ठि, वाष्ट्रेविश्व घ'रहे छाव

(षटक त्राष्ट्रेवावशांत्र উদ্ভाবন হয়েছে। গোড়াকার কথাটা এই বে, তাদের মধ্যে শাসিত ও শাসমিতা এই ছুই দলের মধ্যে ভেদ ঘটেছিল। সে ভেদ জাতিগত ভেদ নয়, শ্রেণীগত ভেদ। সেথানে এক দিকে वाका ७ वाक्यूक्य, जञ्ज नित्य श्रका, यनिष्ठ এक्ट काट्य यास्य छत् তাদের মধ্যে অধিকারের ভেদ অত্যস্ত বেশি হয়ে উঠেছিল। এই-खर्छ তাদের বিপ্লবের একটিমাত্র কাজ ছিল, এই শ্রেণীগত ভেদটাকে वाह्रेरेनिङक (ननाहरम्र करन (तन भाकादक्य (ननाहे करत घृहिस দেওয়া। আজ আবার সেখানে দেখছি, আর-একটা বিপ্লবের ছাওয়া वहेटा। (थाँक कत्राक शिर्म प्रथा याम्र, मिथान वानिकारकरा याना होका थाहाएक चात्र यात्रा मञ्जूति थाहे एक, लाम्बर मरश व्यक्षिकारत्रत्र एक म অভ্যন্ত বেশি। এই ভেদে পীড়া ঘটায়, সেই পীড়ায় বিপ্লব। ধনীরা ভীত হয়ে উঠে ক্মীরা যাতে ভালো বাসস্থান পায়, যাতে ভাদের ছেলেপুলেরা লেখাপড়া শিখতে পারে, যাতে তারা সকল বিষয়ে क्छक्ठा পরিমাণে আরামে পাকে, দয়া ক'রে মাঝে মাঝে সে চেষ্টা করে; কিন্তু তবু ভেদ যে রয়ে গেল; ধনীর অমুগ্রহের ছিটেফোঁটায় সেই (छम তো ঘোচে ना, जारे वाभम्ख मिन्टि हाम्र ना।

वहकान रन, रेशन (४८० এक मन रेश्त्रक व्याप्तिकाम शिर्म वनिक करत । रेशन उद्देश रेश्क नमूजिमात (४८० व्याप्तिकाम रेश्त्रकाम जेमन विखान करति हिन ; এर मान्य बाना नमूर कर मार्मिन जिम स्पार कर्म कर्म का निकास कर्म के मान्य कर्म कि के निकार व्यवन रुखार वक्षन क्या करते हिंद रुम्म रुम्म रुम्म व्यव अर्थान क्रे मक्षेत्र निहास कर्म हिंद रुम्म रुम्म अर्थ अर्थान क्रे

এক দিন ইটালিতে অপ্তিয়ান ছিল রাষ্ট্রের মুড়োয়, আর ইটালিয়ান ছিল লেজায়। অবচ লেজায় মুড়োয় প্রাণের যোগ ছিল না। এই প্রাণহীন বন্ধন ভেদকেই ছঃসহরূপে প্রকাশ করেছিল। ইটালি ভার

(थरक मुक्तिनाछ करत्र गमछात्र गमाशान कर्त्रह ।

তা হলে দেখা বাচে, ভেদের ছংখ থেকে, ভেদের অকল্যাণ থেকে
মৃক্তিই হচ্ছে মৃক্তি। এমন কি, আমাদের দেশের ধর্মসাধনার মৃল কথাটা
হচ্ছে ঐ; তাতে বলে, ভেদবৃদ্ধিতেই অসত্য, সেই ভেদবৃদ্ধি ঘৃচিয়ে
দিলেই সত্যের মধ্যে আমাদের পরিত্রাণ।

কিন্তু পূর্বেই বলেছি, বিধাতার পরীক্ষাশালায় সব পরীক্ষার্থীর একই প্রান্ধ নয়; ভেদ এক রকম নয়। এক পায়ে ঝড়ম, আর-এক পায়ে বৄট, সে এক রকমের ভেদ; এক পা বড়ো, আর-এক পা ছোটো, সে আর-এক রকমের ভেদ; পায়ের ছাড় ভেঙে গিয়ে পায়ের এক অংশের সঙ্গে অন্ত অংশের বিচ্ছেদ, সে অন্ত রকমের ভেদ— এই সব রকম ভেদই স্বাধীনশক্তিযোগে চলাফেরা করায় বাধা দেয়। কিন্তু ভিন্ন ভিন্ন ভেদের প্রতিকার ভিন্ন রকমের। খড়ম-পায়ের কাছ থেকে তার প্রশ্নের উত্তর চুরি করে নিয়ে ভাঙা-পা নিজের ব'লে চালাতে গেলে ভার বিপদ আরো বাড়িয়ে তুলতে পায়ে।

ঐ-বে পূর্বেই বলেছি, একদা ইংরেজ জাতের মধ্যে ভেদের যে ছিন্নতা ছিল সেটাকে একটা রাষ্ট্রনৈতিক শেলাইয়ের কল দিয়ে তারা পাকা করে জুড়েছে। কিন্তু ষেখানে কাপড়টা তৈরিই হয় নি, স্থতোভলো কতক আলাদা হয়ে কতক জটা পাকিয়ে পড়ে আছে, সেখানে রাষ্ট্রনৈতিক শেলাইয়ের কলের কথা ভাবাই চলে না; সেখানে আরো গোড়ায় যেতে হয়, সেখানে সমাজনৈতিক তাঁতে চড়িয়ে বছ স্থতোকে এক অথও কাপড়ে পরিণত করা চাই। তাতে বিলম্ব হবে, কিন্তু শেলাইয়ের কলে কিছুতেই বিলম্ব সারা বায় না।

শিবঠাকুরের তিনটি বধ্ সম্বন্ধে ছড়ার বগছে—

এক কন্তে রাধেন বাড়েন, এক কন্তে ধান,

এক কন্তে না পেধে বাপের বাড়ি যান।

তিন কন্তেরই আহারের সমান প্রয়োজন ছিল কিন্তু বিতীয় কন্তেটি যে সহজ উপায়ে আহার করেছিলেন, বিশেষ কারণে তৃতীয় কন্তের সেটা আয়জাধীন ছিল না; অতএব উদর এবং আহার -সমস্তার পূরণ তিনি অপেকাক্কত বিলম্বিত উপায়ে করতে বাধ্য হয়েছিলেন— বাপের বাড়ি ছুটেছিলেন। প্রথম কন্তের ক্ষানিবৃত্তি সম্বন্ধে প্রার্ভের বিবরণটি অস্পষ্ট। আমার বিশ্বাস, তিনি আয়োজন মাত্র করেছিলেন, আর মধ্যমাটি তার ফলভোগ করে পরিতৃপ্ত হয়েছেন। ইতিহাসে এ রক্ম দৃষ্টাস্ত বিরল নয়। '

আমাদের এই জন্মভূমিটি শিবঠাকুরের মধামা প্রেয়সী নন, সে কথা ধরে নেওয়া যেতে পারে। বহু শতাকী ধ'রে বার বার তার পরিচয় পাওয়া গেল। কাজেই লক্ষাসিদ্ধি সম্বন্ধে মধামার পথটি তাঁর পথ হতেই পারে না। হয় তিনি রাঁধেন নি অথচ ভোজের দাবি করেছেন, শেষে শিবঠাকুরের ধমক থেয়ে সনাতন বাপের বাড়ির দিকে চলতে চলতে বেলা বইয়ে দিয়েছেন; নয়তো রেঁধেছেন, বেড়েছেন, কিন্তু খাবার বেলায় দেখেছেন আর-একজন পাত শৃত্ত করে দিয়েছে। অতএব তাঁর পক্ষে সমস্তা হচ্ছে, যে কারণে এমনটা ঘটে আর যে কারণে তিনি কথায় কথায় শিবঠাকুরকে চটিয়ে তোলেন, সেটা সর্বাত্রে দ্র করে দেওয়া; আবদার করে বললেই হবে না যে 'মেজবউ যেমন করে থাকেছ আমিও ঠিক তেমনি করে খাব'।

আমরা সর্বদাই বলে থাকি, বিদেশী আমাদের রাজা, এই ছু:খ

ঘূচলেই আমাদের সব ছু:খ ঘূচবে। বিদেশী রাজা আমি পছন্দ করি

নে। পেট-জোড়া পিলেও আমার পছন্দসই নর। কিছু অনেক দিন

থেকে দেখছি, পিলেটি আমার সম্মতির অপেকা না ক'রে আপনি এসে
পেট ভূড়ে বসেছে। বছ যদ্ধে অগ্রবের প্রকোষ্ঠে তাকে পালন করলেও

বিপদ, আবার রাগের মাধায় ঘূবি মেরে তাকে ফাটিরে দিলেও

সাংঘাতিক হয়ে ওঠে। বারা অভিজ্ঞ তাঁরা বলেন, 'ভোমাদের আশেপাশে চার দিকেই ম্যালেরিরাবাহিনী ভোবা, সেইগুলো ভরাট না
করলে ভোমার পিলের ভরাট ছুটবে না।' মুশকিলের ব্যাপার এই বে.
পিলের উপরেই আমাদের যভ রাগ, ভোবার উপরে নয়। আমরা বলি,
আমাদের সনাতন ভোবা, ওগুলি যদি লুপ্ত হয় তা হলে ভূতকালের
পবিত্র পদচিক্ষের গভীরতাই লোপ পাবে। সেই গভীরতা বর্তমানের
অবিরল অশ্রধারার কানার কানার পূর্ণ হয় হোক, কিছু আমাদের
লোকালয় চিরদিন যেন ভোবার ভোবার শতধা হয়ে থাকে।

পাঠকেরা অধৈর্য হয়ে বলবেন, 'আর ভূমিকা নয়, এখন আমাদের विट्यं न्या ने विट्यं कि व क्षां विष्युष्ट (विभि महत्र । एत्न मवाहे चक्षद्वा कृत्र वन्तर्वन, ७ (छ) गवारे कारन। এरेक्ट इंदिराशिय भित्रिष्ठ मध्य कार्कायवार् विजा ना व'ला यिन हेन्नम्निया वर्णन, जा हर्ण यरन हम्र डाँरिक रवारणा होका कि पिश्वरा (वाला-चाना गार्थक रुन। चागन क्या, चागता अक नरे, चामारमत्र निरक्रापत्र मर्था एउएमत्र चस्र निर्म। क्षरमरे नरमिन्, एकिहा इ: थ, अटिहे भाभ। एम एकि विस्नीत माक्के हाक चात्र यरानीत गरमहे रहाक। गायमहोरक এकहे। एक विहीन वृहद मिरहन মতো ব্যবহার করতে পারি কখন ? যখন তার সমন্ত অঙ্গপ্রত্যক্তের यरश (वाथनकि ও कर्मनकिव প्रानगठ याग बाक : यथन ठाव পा কাজ করলে হাত তার ফল পায়, হাত কাজ করলে পা তার ফল পায়। कन्नना क्या याक, एष्टिक्ठांत्र एष्टिहाफ़ा ज्ला प्राट्य चाक्रिशात्री अयन একটা অপদার্থ তৈরি হয়েছে যার প্রত্যেক বিভাগের চার দিকে निर्वरिषद रवणा: यात्र जान छार्थ वा छार्थ, जान हार्ज वा हार्ज ভাত্ম-ভাত্রবৌমের সম্পর্ক; বার পামের শিরার রক্ত বুকের কাছে উঠতে शिलारे मार्यानि थिए किएत यात्र , यात्र छर्जनीते। कएए-चार्ड लिन

गद्ध अक পঙ্জিতে काष कर्राङ গেলে প্রায়ন্চিছের দায়িক হয়; বার পায়ে তেল-মালিশের দরকার হলে ভান হাত হর্তাল করে বলে। এই অত্যন্ত নড়বড়ে পদার্থটা অক্ত পাড়ার দেহটার মতো হুষোগ হুবিধা ভোগ করতে পায় না। সে দেখে, অন্ত দেহটা জুতো জামা প'রে লাঠি ছাতা নিয়ে পথে অপথে বুক ফুলিয়ে বেড়ায়। তখন সে ভাবে যে, 'ঐ দেহটার মতো জুতো জামা লাঠি ছাতা জুটলেই আমার সব ছঃখ গুচৰে।' কিন্তু স্মষ্টিকর্তার ভূলের পরে নিজের ভূল যোগ ক'রে দিয়ে সংশোধন চলে না। জুতো পেলেও তার জুতো খদে পড়বে, ছাতি পেলেও তার ছাতি হাওয়ায় দেবে উড়িয়ে, আর মনের মতো লাঠি যদি লে কোনোমতে জোগাড় করতে পারে অন্ত পাড়ার দেহটি সে লাঠি ছিনিয়ে নিয়ে ভার नफ्रए जीवनीनात्र श्रद्यन्ते। क्या ह्या ह्या ज्ञास्य क्रिक निष्ठ এথানে জুতো জামা ছাতি লাঠির অভাবটাই সমস্তা নয়, थागगछ ঐক্যের অভাবটাই সমস্তা। किন্ত বিধাতার উক্ত দেহরূপী विकाशि रहाला व'ला बाक एवं, 'चन्न श्रेष्ठाल व चरेन का व क्या व চাপা থাক্, আপাতত স্বার আগে যদি কোনো গতিকে একটা জামা ब्बागाए करत्र निरम गर्वाक ঢाकरा भात्रि छ। इस्न मिहे ब्बामाहीत बेरका चन्रপ्रकारनम क्रिका चानना-चाननि चर्हे छेठ्ररित।' चाननिर्हे घहेर्त. क्र कथा वना रुष्टि निष्युक काँकि प्रथम। अहे काँकि गर्वतिथ ; रकनना, निषक्ष केंक्टिक याञ्च जात्मावारम, जात्क बाहारे क'त्र प्रभए हो প্রবৃত্তি হয় না।

মনে আছে, আমার বর্গ যথন অল্ল ছিল তথন দেশে ছুই বিরোধী পক্ষের মধ্যে একটা তর্ক প্রায় শোনা যেত, আমরা কি নেশন না নেশন নই। কথাটা সম্পূর্ণ বুরুত্ব তা বলতে পারি নে, কিছু আমরা নেশন নই এ কথা যে মামুষ বলত রাজা হলে তাকে জেলে দিতুম, সমাজপতি হলে তার ধোবা নাপিত বন্ধ কর্তুম। তার প্রতি অহিংশ্রভাব রক্ষা

क्रमा व्यामात्र लक्ष्म कठिन एए। एथन अ ग्रह्म अक्रो वाशा एकं अहे हिन (य, श्रहेकद्गारिक जिन जिन्न जांछ भाभाभाभि न्रावर्ष छत्र छा ভারা এক নেশন, তবে আর কী। তনে ভাবতুম, যাক, ভর নেই। किंड मूर्थ छत्र तिरे वनलाथ चागला छत्र खाटि करे ? कांगित्र चागांभित्क ভার যোজার যখন বলেছিল 'ভয় কী, ছুর্গা ব'লে ঝুলে পড়ো', ভখন লে गायना भाष नि ; रक्नना हुर्गा नमए र दाकि कि बे बूर्ण भए। होए है वानि । ष्ट्रेबर्न्याएवर लाक्रिया त्ननन, वार वामराउ त्ननन, এ कथा (करन তर्कि गावा उक्त करत्र गासना है। की ? करनत्र त्नांस पिथि, चायता तूरम পড़िছ चात्र छात्रा यादित छे भत्र थाए। माफ़ित्र चाहि। वाधिका ठानूनिए कर्त जन এन कनक्छन करब्रिलन। रव হতভাগিনী নারী রাধিকা নম্ন তারও চালুনিটা আছে, কিন্তু তার कनइख्यन इम्र ना, উल्टिंग्डे इम्र। मूल य खाखन बाकारक करनत्र अहे প্রভেদ, সেই কথাটাই ভাববার কথা। স্থই জর্ল্যাতে ভেদ যতগুলোই थाक्, ज्ञित्वि जा निष्टे। त्रथान পরম্পরের মধ্যে রক্তবিমিশ্রণে कारना वाथा (नहें बर्स व। चाठारत वा मश्यारत। अवारन रम वाथा अछ প্রচণ্ড যে, অসবর্ণ বিবাহের আইনগত বিম্ন দূর করবার প্রস্তাব হবা মাত্র हिन्रुगमाञ्चलि উদ্বেগে घर्माक्তकल्बद হয়ে হর্তাল করবার ভয় मिथित्रिছिलन। नकल्बर हित्र भञीत बाबीय्वाय शाता नाषील वय, मृत्थेत क्षाम वम ना। यात्रा निष्कत्तत्र अक महाकाल व'तन कन्नना करतन जारित गर्था राहे नाफ़ीत गिलानत अथ धर्मत भागत जित्रिवितत अख्य यपि व्यवक्रक पारक, छ। इरल छै। एत भिनन कथरनाई खारनद भिनन इरव ना, ञ्रुखदार नकरम এक इस्त्र थान स्वित्रा जास्त्र नर्क रूख পারবে না। তাঁদের প্রাণ্ যে এক প্রাণ নয়। আমার কোনো বছ ভারতের প্রত্যন্তবিভাগে ছিলেন। সেধানে পাঠান দম্মারা মাঝে মাঝে हिन्न्-त्नाकानदम ठ्या हरम खोर्यन करम बारक। अक नाम अरे नकम

গ্রনার আমার বন্ধু কোনো স্থানীর হিন্দুকে জিজানা করেছিলেন, 'সমাজের উপর এবন অভাাচার ভোষরা সন্ধ কর কেন।' সে নিভান্ধ উপেকার সঙ্গে বললে, 'উয়ো ভো বেনিরাকী লড়কী।' 'বেনিরাকী লড়কী' হিন্দু, আর বে বাজি ভার হরণ বাাপারে উনাসীন সেও হিন্দু, উভরের মধ্যে শাস্ত্রগত বোগ থাকতে পারে কিন্ধু প্রাণগত খোগ নেই। সেইজন্তে একের আঘাত অক্সের মর্মে গিয়ে বাজে না। জাভীর ঐক্যের আদিম অর্থ হচ্ছে জন্মগত ঐক্যা, ভার চরম অর্থপ্ত ভাই।

रिषठे। व्यवास्त्रव, रकारनामर्ट्य जात्र छेलरत्र रकारना वर्षा निषित्र लखन कता यात्र ना। याञ्चर यथन मास्त्र পড়ে তখन আপনাকে আপনি काँकि **मिर्सि चार्यनात्र काङ् (पर्रक काक्य উদ্ধाद कत्रवाद (5) कर्द पारक।** विलाख हरत्र मत्न करत्र, निरक्राक वाम हार्छ कैं। कि मिर्ध छान हार्ड नाज कर्ता (यरज्ज भारत। जागामित ताद्वीय जेक) माथनात म्रन जक्ता यस काठीय व्यवास्ववा व्याह्म (म क्या व्यायवा विख्य विख्य मवाहे व्यानि, रम्हेक्टल रम मिक्होरक व्यायदा व्यरगाहरद ८६८४ छात्र छेशर ब चाकार्छात्र रय क्षत्रक्क गए जूनर्छ हाई छात्र यान-यननाहारकई यूव প্রচুর করে গোচর করতে ইচ্ছা করি। কাঁচা ভিতকে মাল মললার বাহুল্য দিয়ে উপস্থিতমতো চাপা দিলেই সে তো পাকা হয়ে ওঠে ना, नत्रक এक मिन रम्हे नाहरमाद्रहे खक्रजारत जिल्जित हुर्रम्छ। जीवनक्रर् मध्यान हरत्र পড়ে। থেলাফতের ঠেকো দেওয়া मिक्किकान পর व्याक्टिक वित्न हिन्तू मूननगात्न विद्राध जाव এक छ छ व्याक मुद्राख । यूटन जून पाकला कारना উপায়েই সুলে সংশোধন হতে পারে না। এ-সব कथा खनल चरेथर्य हरत्र (कड़े (कड़े व'ला खर्छन, चामात्मत्र हात्र मिटक (य विरामी ज्ञीय शक मक्तार चार्ट राहे चामारमय मस्य रहा एक चहारक, चल्य । त्वाय चायात्मत्र नत्र, त्वाय जात्रहे; हेजिशूर्य चायत्रा हिन्सू युगनयान পानाপानि निर्दितार्थरे छ्नूय क्डि, रेजानि रेजानि।—

শাল্তে বলে, কলি শনি ব্যাধি মাছবের ছিত্র থোঁজে; পাপের ছিত্র পেলেই তারা ভিতরে প্রবেশ করে সর্বনাশের পালা আরম্ভ করে দেয়। বিপদটা বাইরের, আর পাপটা আমার, এই কারণে বিপদের প্রতি ক্রোধ ও পাপের প্রতি মমতা করাই হচ্ছে সকল বিপদের সেরা।

बाहात्वत्र (थात्वत्र मत्था काठेन हिन, यन्न मिन या कुकान हिन ना তত দিন সে আহাজ খেয়া দিয়েছে। यावে यावে লোনা জল সেঁচভেও रुप्तिन, किन्न रु इःथे । यत्न वाथवाव यत्न । य दिन कुकान डेर्डन त्य पिन (थ। त्वत्र कावेन त्वर्ष त्वर्ष बाराब-पूर्वि वागत्र रुख्ह । कारश्रन यिन वर्ण 'ये एकार के कुकारने व्रक्ष के किल के कुकान है। कि উচ্চৈ: यद गान পाড़ि, चात्र चायात्र काहेनिए त्ययन हिन एक्यनहे बाक्', তা হলে ঐ कारश्रानद गर्छ। न्हां भारत निरंत्र यार्य ना, छनात्र निरंत्र यादि। जृजीय भक्त यनि व्यामामित्र भक्तभक्त हम का हत्न এह क्वाहा यत्न त्राथर् हर्द, छात्र। छुकानक्रर्भ वायारमत् काहेन रयत्रायर्जद कारक नागरि चारम नि। जात्रा खत्रश्कत (वर्रग हारिश चाड्रम मिर्पे पिरिक प्तरव (कान्थारन वामारमव छन। कांछा। इवनाबारक वाखरवव कथाहै। তারা ডাইনে বাঁরে চাপড় মেরে মেরে শ্বরণ করিয়ে দেবে। বুঝিয়ে দেবে ডাইনের সঙ্গে বাঁষের যার মিল নেই, রসাতলের রাস্তা ছাড়া আর সব রাস্তাই তার পক্ষে বন্ধ। এক কথায় তারা শিরিবের আঠার চেউ नम्र, তারা লবণাম্ব। যত কণ তাদের উপর রাগারাগি করে রুধা মেজাজ थात्राभ ७ गमत्र महे कद्र हि छछ कन यथागर्दच मिर्प्स काहेन वस क्रांत्र कारक मागरम পরিত্রাপের আশা থাকে। বিধাতা যদি আমাদের সঙ্গে কৌতুক করতে চান, বর্তমান তৃতীয় পক্ষের তুফানটাকে আপাতত मिरिय मिर्छ भारतन, किंह जुकारने राष्ट्रां नः भरमा क'रत राष्ट्रांक **(** जां वानिष्य (मर्वन, जां या एवं यर्जा धर्म आ किस्तुव अ व वर्षा भारतात्र छिनि छन्दवन ना। चल्र कार्श्वनरम्त्र कार्छ साहारे

পাড়ছি, যেন তাঁরা কণ্ঠন্বরে ঝড়ের গর্জনের সঙ্গে পালা দিতে গিন্ধে কাটল-মেরামতের কথাটা একেবারে চাপা না দেন।

কাপ্টেনরা বলেন, 'সে দিকে বে আমাদের লক্ষ্য আছে তার একটা প্রমাণ দেখে। যে, যদিও আমরা সনাতনপদ্ম তবু আমরা স্পর্ণদোব সম্বন্ধে দেশের লোকের সংস্থার দূর করতে চাই।' আমি বলি, এছ বাছ। স্পর্শদোব তো আমাদের ভেদবৃদ্ধির একটিমাত্র বাহ্য লক্ষণ। যে সনাতন ভেদবৃদ্ধির বনস্পতি আমাদের পথরোধ করে দাঁড়িয়ে আছে তার থেকে একটি কাঠি ভেঙে নিলেই তো পথ খোলসা হবে না।

আমি পূর্বে অক্সত্র বলেছি, ধর্ম যাদের পৃথক করে তাদের মেলবার দরজায় ভিতর দিক থেকে আগল দেওয়া। কথাটা পরিকার করে বলবার চেটা করি। সকলেই বলে থাকে, ধর্মশব্দের মূল অর্থ হচ্ছে যা আমাদের ধারণ করে। অর্থাৎ, আমাদের যে সকল আশ্রয় ধ্রুব তারা হচ্ছে ধর্মের অধিকারভূক্তা তাদের সম্বন্ধে তর্ক নেই। এই-সকল আশ্রয়র কোনো পরিবর্তন ঘটে না। এদের সঙ্গে ব্যবহারে যদি চঞ্চলতা করি, কথায় কথায় যদি মত বদল ও পথ বদল করতে থাকি, তা হলে বাঁচি নে।

কিন্তু সংসারের এমন একটা বিভাগ আছে বেখানে পরিবর্তন চলছে, বেখানে আক্ষিকের আনাগোনার অন্ত নেই; সেখানে নৃতন নৃতন অবস্থার সম্বন্ধে নৃতন করে বারে বারে আপোব-নিপান্তি না করলে আমরা বাঁচি নে। এই নিত্যপরিবর্তনের কেত্রে গুবকে অগুবের জারগায়, অগুবকে গুবের জারগায় বসাতে গেলে বিপদ ঘটবেই। যে মাটির মধ্যে গাছ শিক্ড চালিয়ে দাঁড়িয়ে থাকে শিক্ডের পক্ষে সেই গুব মাটি খুব ভালো, কিন্তু তাই ব'লে ভালপালাগুলোকেও মাটির মধ্যে পুঁতে ফেলা কল্যাণকর নয়। পৃথিবী নিত্য আমাকে ধারণ করে; পৃথিবী ধর্মের মতো গুব হলেই আমার পক্ষে ভালো, তার নড়চড় হতে থাকলেই

गर्वनाम। वायात्र गाष्टिछे वायात्म बात्रन करतः त्रहे बात्रन वााभाविष्ठात्क यमि अव करत्र कूनि छ। इतन गाफि चामात्रं भरक शृषिवी हरव ना, निष्यदत्र हरव। व्यवशा वृत्य व्यावारक शूरत्रारमा गाष्ट्रि विहरू इत्र वा रयदायल क्द्राल इत्र, नजून शाफि किनएल इत्र वा लाफा क्द्राल इब, कथरना वा गाफ़िएल ह्करल इब, कथरना वा गाफ़ि (बरक रवरब्राएल रुप्त, चात्र गाफिं। कार रुवात्र छाव एतथाएन छात्र (बर्फ नाकिएम পफ्वान পূর্বে বিধান নেবার জন্তে ভাটপাড়ায় সইস পাঠাতে হয় না। ধর্ম যথন वर्ण 'मूननमारनव नरक रेमखी करग', छथन काला छर्क ना करबरे क्वाठी कि यावात्र करत्र निव। वर्षत्र এ क्वाठी चार्यात्र काट्ट यहा-गबूर जब यर जारे निजा। किंद धर्म यथन वर्ग 'मूगनबारनव हिं। अबा जब अहु कत्र वा', छथन चार्याक श्रम कत्र छहे हत्व, त्कन कत्रव ना। अ ক্থাটা আমার কাছে বড়ার জলের মতো অনিত্য, তাকে রাখব কি क्लिय (महोत्र विहात बुक्तिय बात्रा। यमि वन, এ-मय कथा चाथीनविहारत्रत चडौछ, डा इरन भारत्वत्र मयस्य विधारनत्र मायरन माफ़िरत्रहे वनर्छ हरव, विठादित यात्रा विवयक्त यात्रा निविठादि श्रष्ट्र कदत्र छाएम् श्रीक त्महे (मरजात विकात चार्छ पिरता या नः श्राटामत्रार, यिनि चार्यासत्र বৃদ্ধিবৃত্তি প্রেরণ করেন। তারা পাণ্ডাকে দেবতার চেমে বেশি ভয় ও खंडा करत, এयनि करत छात्रा मिवशृष्टात्र चनयान कत्रछ कृष्ठिछ र्य ना।

সংসারের যে ক্ষেত্রটা বৃদ্ধির ক্ষেত্র সেখানে বৃদ্ধির যোগেই মান্তবের সঙ্গেমিলন সম্ভবপর। সেখানে অবৃদ্ধির উৎপাত বিষম বাখা। সে যেন মান্তবের বাসার মধ্যে ভুতুড়ে কাগু। কেন, কী বৃদ্ধান্ত, ব'লে ভূতের কোনো অবাবদিহি নেই। ভূত বাসা তৈরি করে না, বাসা ভাড়া দের না, বাসা ছেড়েও যায় না। এত বড়ো জোর তার কিসের ? না, সে বাস্তব নয়, অথচ আমার ভীক্ষ মন তাকে বাস্তব বলে মেনে

নিয়েছে। প্রকৃত বান্তব যে সে বান্তবের নিয়মে সংযত; যদি বা সে বাড়িভাড়া নাও করুল করে, অন্তত সরকারি ট্যাক্সা দিয়ে থাকে। অবান্তবকে বান্তব বলে মানলে তাকে জ্ঞানের কোনো নিয়মে পাওয়া বায় না। সেইজন্তে কেবল বুক তুর্ত্র করে, গা ছম্ছম্ করে, আর বিনা বিচারে মেনেই চলি। যদি কেউ প্রশ্ন করে 'কেন', অবাব দিতে পারি নে; কেবল পিঠের দিকে বুড়ো আঙুলটা দেখিয়ে দিয়ে বলি, 'ঐ যে!' তার পরেও যদি বলে 'কই যে', তাকে নান্তিক বলে তাড়া করে যাই। মনে ভাবি, গৌয়ারটা বিপদ ঘটালে বুঝি— ভূতকে অবিশাস করলে যদি সে ঘাড় মটকে দেয়! তবুও যদি প্রশ্ন ওঠে 'কেন' তা হলে উত্তরে বলি, 'আর বেখানেই কেন খাটাও এখানে কেন খাটাতে এসে। না বাপ্, মানে মানে বিদায় হও— মরবার পরে তোমাকে পোড়াবে কে সেভাবনাটা ভেবে রেখে দিয়ে৷ '

চিত্তরাজ্যে যেখানে বৃদ্ধিকে মানি সেখানে আমার স্বরাজ; সেখানে আমি নিজেকে মানি, অথচ সেই মানার মধ্যে সর্বদেশের ও চিরকালের মানবচিত্তকে মানা আছে। অবৃদ্ধিকে যেখানে মানি সেখানে এমন একটা স্পষ্টিছাড়া শাসনকে মানি যা না আমার, না সর্বমানবের। স্বতরাং সে একটা কারাপার, সেখানে কেবল আমার মতো ছাত-পা-বাঁধা এক কারায় অবক্রম অকালজরাগ্রন্তদের সঙ্গেই আমার মিল আছে, বাইরের কোটি কোটি স্বাধীন লোকদের সঙ্গে কোনো মিল নেই। বৃহত্তের সঙ্গে এই ভেদ থাকাটাই হচ্ছে বন্ধন। কেননা পূর্বেই বলেছি, ভেদটাই সকল দিক থেকে আমাদের মূল বিপদ ও চরম অমঙ্গল। অবৃদ্ধি হচ্ছে ভেদবৃদ্ধি, কেননা চিত্তরাজ্যে সে আমাদের সকল মানবের থেকে পৃথক করে দের, আমরা একটা অন্তুতের থাঁচায় বসে কয়েকটা শেখানো বৃলি আবৃত্তি করে দিন কাটাই।

जीवनयाजात्र शरम शरमहे चतुष्टिक याना यारमत्र वित्रकारमत्र चन्छात्र,

চিত্রগুরের কোনো-একটা হিসাবের ভূলে হঠাৎ ভারা স্বরাজের স্বর্গে গেলেও তাদের টেকি-লীলার শান্তি হবে না; স্বভরাং পরপদপীড়নের তালে ভালে ভারা মাথা কুটে মরবে, কেবল মাঝে মাঝে পদযুগলের পরিবর্তন হবে— এইমাত্র প্রভেদ।

যব্ৰচালিত বড়ো বড়ো কারখানায় মানুষকে পীড়িত ক'রে যুদ্ধৰৎ करत्र व'ला चामत्रा चाषकाम गर्वमारे ভाक्त कहें कि करत्र पाकि। এर উপায়ে পশ্চিমের সভ্যভাকে গাল পাড়ছি জেনে মনে বিশেষ সাম্বনা পारे। कात्रधानात्र याञ्चरवत्र अयन পत्रुष्ठा रकन घर्छ ? रवरह्यू रमथारन তার বৃদ্ধিকে ইচ্ছাকে কর্মকে একটা বিশেষ সংকীর্ণ ছাঁচে ঢালা হয়, তার পূর্ণ বিকাশ হতে পারে না। কিন্তু লোহা দিয়ে গড়া কলের कात्रथाना है अक्या का कात्रथाना नम्न। विठात्रहीन विधान लाहात्र हिस्म **मक्ड, कल्वत क्रिय गःकीर्ग। यि विश्व वावशालत चिर्व मिर्वेद माग्रामं** विजीविका गर्वना উष्ठि दियं वह यूग श्रद वह क्ला निवनोवीक युक्तिशैन ७ युक्तिविक्ष चाठादित शूनत्रावृष्टि क्राए निम्र खव् রেখেছে সেই দেশভোড়া মানুষ-পেষা জাঁতাকল কি কল হিসাবে কারও চেয়ে খাটো ? বৃদ্ধির স্বাধীনতাকে অশ্রদ্ধা ক'রে এত বড়ো স্থসম্পূর্ণ ञ्चिति विख्नुष्ठ वस्रकर्शत विधिनिष्टिश्त काद्रथाना मासूरवद द्रांखा আর কোনো দিন আর কোথাও উদ্ভাবিত হয়েছে ব'লে আমি তো জানি ति। ठठेकन (थटक एय भारित वस्ता देखति इस्त्र त्वरत्रात्र, खड़्खात्व त्वाया গ্রহণ করবার জন্তেই তার ব্যবহার। মানুষ-পেষা কল থেকে ছাঁটাকাটা (य-गव चिक-ভाলোমামুষ পদার্থের উৎপত্তি হয় ভারাও কেবল বাহিরের বোঝা বইভেই আছে। একটা বোঝা খালাস হতেই আর-একটা বোঝা তাদের অধিকার ক'রে বসে।

প্রাচীন ভারত এক দিন যথন বিধাতার কাছে বর চেয়েছিলেন তথন বলেছিলেন, স নো বুদ্ধা শুভরা সংযুক্ত ু, য একঃ অবর্ণঃ— যিনি এক,

ষিনি বর্ণভেদের অতীত, তিনি আমাদের শুভবৃদ্ধি দারা সংষ্ঠা করন।
তথন ভারত ঐক্য চেয়েছিলেন কিন্তু পোলিটিকাল বা সামাজিক
কলে-গড়া ঐক্যের বিড়ম্বনা চান নি। বৃদ্ধাা শুভরা, শুভবৃদ্ধির দারাই
মিলতে চেয়েছিলেন; অন্ধ বশুভার লম্বা শিকলের দারা নয়, বিচারহীন
বিধানের কঠিন কানমলার দারা নয়।

गःगाद्र चाकचित्कत्र गद्ध याष्ट्रयत्क गर्वनाई नजून कद्र वाकाभणा क्रवा इष्ट । व्यायात्मत्र वृक्षिवृष्टित त्यहे का को हो हे थूव वर्षा काक। वागदा विष्णुष्टिए (मथए পार्ट, वाकिष्यक, विकारन यारक variation बल, আচমকা এলে পড়ে। প্রথমটা সে থাকে একছরে, কিন্তু বিশ্বনিয়ম विषष्टरमञ्ज गर्य यिनिया ভाष्क ग्वात्र करत्र रनन, चष्ठ रा এक नृजन रेविटिखात्र व्यवर्जन करत्र। याष्ट्ररवत्र वास्किगन चौवरन, याष्ट्ररवत्र नयास्य, चाकिषक श्राप्तरे चनाइल এगে পড়ে। তার সঙ্গে যে রকম ব্যবহার क्रतल এই नृতन चागस्कि । ठात मिर्क्त गर्म चुगःगं इत्र, चर्षा । चायारमत वृद्धिक क्रिक ठात्रिक्टक, चायारमत्र काखकानरक, नीष्डि व्यवयानिक ना करत्र, गक्क वृद्धि बात्रारक्टे राहे। गाथन कन्नरक हम। यरन कदा याक, এकना এक किवर विराम প্রয়োজনে রাস্তার মাঝখানে খুটি পুँ তে তাঁর ছাগলটাকে বেঁধে হাট করতে গিয়েছিলেন। হাটের কাজ गात्रा इन, ছागनहोत्र अवहो हत्र मनाि इस रान। উहिन हिन, এই আক্ষিক খুটিটাকে সর্বকালীনের থাতিরে রান্তার মাঝ্থান থেকে উद्वात्र कदा। किन्न উद्धात्र कद्राय क्ष्य , च्युष्टि कर्त्र ना, क्यूना छात्र काख इत्छ या चार्छ छारकहे हाथ वृत्य चाकात्र कता ; वृष्ठिहे करत्र, वा न्তन এगেছে ভার সম্বন্ধে সে বিচারপূর্বক নৃতন ব্যবস্থা করতে পারে। रि पिट्न या चाहि তाक्टि बीकात करा, या हिन তाक्टि भूनः भूनः चावृत्ति कवा, मनाजन পद्धाजि, मा पिट्न पूँ हिंहे। मा मा नाज नरमव प्राप्त वाष्टाव मायथारनरे वृद्य रिना । चवर्यार अक्षिन धामका रकावा स्वरक

একজন ভক্তিগদ্গদ মাত্রৰ এলে তার পায়ে একটু সিঁত্র লেপে ভার উপর একটা যন্দির ভূলে বসল। তার পর থেকে বছর বছর পঞ্জিকাতে वावना प्रथा रमन, एक्रनरक्त कार्डिक-मश्रमीएड व वाक्ति प्रीयद्रीरक এক সের ছাগত্ত্ব ও তিন ভোলা রজত দিয়ে পূজা দের তার সেই পূজা जित्निष्ठिम्मूब्रद्रश। अयनि कर्त्र चतुष्टित्र त्राक्षर्य चाक्षिक शृष्टि गमछरे गनाजन रुख ७८५, लाक्टनाटलंब ब्राखांव हनांब ट्रिय वांवा পড़ে बाकांने। महत्व हरत्र ५८छ । यात्रा निष्ठा वान कांत्रा वर्णन, व्यामत्रा विशालाक वित्नव एष्टि, जञ्च कात्न। जात्नक माज ज्ञासक वामासक (मत्न ना, অভএব রাম্ভা বন্ধ হলেও আমাদের চলে কিন্তু খুটি না বাকলে আমাদের धर्य थारक ना। यात्रा श्रृ निषत्रीरक मान्य ना, এमन कि, यात्रा विष्क ভাৰুক, তারাও বলে, 'আহা একেই তো বলে আখ্যাত্মিকভা; নিজের कीवनयात्वात्र ममञ्जूषाग-व्यविधारे अत्रा माहि कत्रए वाकि, किस माहि (थरक अक्टो युं हि अक हेकि পরিমাণও ওপ ড়াভে চায় না।' সেই সঙ্গে এও বলে, 'আমাদের বিশেষত্ব অক্ত রকমের, অত এব আমরা এদের অমুকরণ করতে চাই নে; কিন্তু এরা যেন হাজার খুটিতে, ধর্মের বেড়াজালে এইরকম বাঁধা হয়ে অভান্ত শান্ত স্মাহিত হয়ে পড়ে থাকে— कात्रन, अप्ति मृत्र (परक (मश्रास्त राष्ट्र) सम्मत् ।'

সৌন্দর্য নিয়ে তর্ক করতে চাই নে। সেটা রুচির কথা। বেমন
ধর্মের নিজের অধিকারে ধর্ম বড়ো, তেমনি স্থন্দরের নিজের অধিকারে
স্থান্দর বড়ো। আমার মতো অর্বাচীনেরা বৃদ্ধির অধিকারের দিক থেকে
প্রান্ধ করবে, এমনতবাে প্র্টি-কন্টকিত পথ দিয়ে কথনা স্থাতন্ত্রাসিদ্ধির
রথ কি এগোতে পারে ? বৃদ্ধির অভিমানে বৃক বেঁধে নব্যতন্ত্রী প্রান্ধ করে
বটে, কিন্তু রাজ্রে তার ঘুম হয় না। যেহেতু গৃহিণীরা স্বস্তারনের
আরোজন ক'রে বলেন, 'ছেলে-প্লে নিয়ে ঘন, কী জানি কোন্ প্রটি
কোন্ দিন বা দৃষ্টি দেয়; তোমরা চুপ ক'রে থাকো-না; কলিকালে প্রটি

নাড়া দেবার মতো ভানপিটে ছেলের তো অভাব নেই।' শুনে আমাদের
মতো নিছক আধুনিকদেরও বুক ধুক্ধুক্ করতে থাকে, কেননা রক্তের
ভিতর থেকে সংস্কারটাকে তো ছেঁকে ফেলতে পারি নে। কাজেই
পরের দিন ভোরবেলাভেই এক সেরের বেশি ছাগছ্য, তিন তোলার
বেশি রজত খরচ ক'রে ইাক ছেড়ে বাঁচি।

এই তো গেল আমাদের সব চেম্নে প্রধান সমস্তা। বে বৃদ্ধির রাভায় কর্মের রাজ্ঞায় মাত্র্য পরস্পরে মিলে সমৃদ্ধির পথে চলতে পারে সেইখানে भूँ हि राए भाकात गम्या ; यारमत मर्या गर्यमा भानारागानात पथ गकन রকমে খোলসা রাখতে হবে তাদের মধ্যে অসংখ্য খুটির বেড়া তুলে পরস্পরের ভেদকে বহুধা ও স্থায়ী করে তোলার সমস্তা; বুছির যোগে ষেখানে সকলের সঙ্গে যুক্ত হতে হবে, অবৃদ্ধির অচল বাধায় সেখানে नकरनत्र नरक हिद्रविष्ट्रित इवाद नयछा ; शृष्टिति निग एडमवृद्धित्र कार्ष्ट ভক্তিভরে বিচার-বিবেককে বলিদান করবার সমস্তা! ভাবুক লোকে এই गमजात गामत में फिर्य इनइन तिय राजन, 'আছा, এখানে ভिक्ति।हे इन वर्षा कथा এवः श्रमत कथा, यूँ विवेष रा छेनेनका। वायामित्र यटा चाधूनिकदा वटन, 'এখान दुषिषेष्टे इन वट्डा कथा, जनद कथा, यूं विदेश ख्यान, ভক্তি होও ख्यान ; किन्न चाहा, गृहिगी यथन चन्छ-আশ্বায় করজোড়ে গলবন্ত হয়ে দেবতার কাছে নিজের ডান হাত বাঁধা রেখে আসেন তার কী অনির্বচনীয় মাধুর্য!' আধুনিক বলে, যেখানে ডান হাত উৎদৰ্গ করা দার্থক, যেখানে ভাতে নেই অন্ধতা, যেখানে তাতে चाह् गार्ग, राथातिर जात्र माधूर्य— किन्न राथाति चन छ-चानका मृष्ठाक्राल, मीनठाक्राल जात्र कूटी करान लाहे माधूर्यक शिल थाएक ত্বন্দর সেখানে পরান্ত, কল্যাণ সেখানে পরাহত।

সামাদের আর-একটি প্রধান সমস্তা হিন্দু-মুসলমান সমস্তা। এই সমস্তার সমাধান এত ছংসাধা, তার কারণ ছই পক্ষই মুখ্যত আপন আপন

ধর্বের দারাই অচলভাবে আপনাদের শীমানির্দেশ করেছে। সেই ধর্মই তাদের মানববিশ্বকে সাদা কালো ছক কেটে অম্পাই ভাবে বিভক্ত করেছে— আত্ম ও পর। সংসারে সর্বত্তই আত্মপরের মধ্যে কিছু পরিমাণে শাভাবিক ভেদ আছে। সেই ভেদের পরিমাণটা অভিমাত্র হলেই তাতে অকল্যাণ হয়। বৃশ্মান জাভীয় লোক পরকে দেখবা মাত্র তাকে নির্বিশেবে বিববাণ দিয়ে মারে। ভার ফল হচ্ছে, পরের সঙ্গে সভ্য মিলনে মান্ত্রেরে যে মহাত্তম পরিম্ফুট হয় বৃশ্মানের ভা হতে পারে নি, সে চৃড়ান্ত বর্বরভার মধ্যে আবদ্ধ হয়ে আছে। এই ভেদের মাত্রা যে জাভির মধ্যে অন্তর্নের দিক থেকে যভই কমে এসেছে সেই জাভি ততই উচ্চান্ত্রণীর মহাত্রাকে উত্তীর্ণ হতে পেরেছে। সে জাভি সকলের সঙ্গে যোগে চিন্তার কর্মের চরিত্রের উৎকর্ম গাধন করতে পেরেছে।

হিন্দু নিজেকে ধর্মপ্রাণ বলে পরিচয় দেয়, মুসলমানও তাই দেয়।
অর্থাৎ ধর্মের বাহিরে উভয়েরই শীবনের অতি অল্ল অংশই অবশিষ্ট থাকে।
এই কারণে এরা নিজ নিজ ধর্ম ছারাই পরস্পরকে ও জগতের অন্ত
সকলকে বর্থাসন্তব দূরে ঠেকিয়ে রাখে। এই-যে দ্রজের ভেদ এরা
নিজেদের চারি দিকে অত্যন্ত মজবুত ক'রে গেঁখে রেখেছে, এতে ক'রে
সকল মান্তবের সঙ্গে সত্যযোগে মন্তব্যুজের যে প্রসার হন্ন তা এদের মধ্যে
বাধাগ্রন্ত হয়েছে। ধর্মপত ভেদবৃদ্ধি সত্যের অসীম অন্ধপ থেকে এদের
সংকীর্ণভাবে বিজ্জির করে রেখেছে। এইজন্তেই মান্তবের সঙ্গে ব্যবহারে
নিত্যসত্যের চেয়ে বাফ্ বিধান, ক্রন্তিম প্রশা, এদের মধ্যে এত প্রবন্ধ হয়ে
উঠেছে।

পূর্বেই বলেছি, মানবজগৎ এই ছুই সম্প্রদায়ের ধর্মের ছারাই আত্ম ও পর এই ছুই ভাগে অভিমাত্রায় বিভক্ত হয়েছে। সেই পর চিরকালই পর হয়ে থাক্, হিন্দুর এই বাবয়া; সেই পর, সেই য়েছ বা অভ্যজ, কোনো কাঁকে ভার ঘরের মধ্যে এসে চুকে না পড়ে, এই ভার ইছা।

মুসলমানের ভরকে ঠিক এর উপেটা। ধর্মগণ্ডীর বহিবর্তী পরকে সে

ধ্ব তীব্রভাবেই পর ব'লে জানে; কিন্তু সেই পরকে, সেই কান্দেরকে
ববাবরকার মতো ঘরে টেনে এনে আটক করতে পারলেই সে ধ্পি।
এদের শাব্রে কোনো একটা খুঁটে-বের-করা শ্লোক কী বলে সেটা কাজের
কথা নয়, কিন্তু লোক-ব্যবহারে এদের এক পক্ষ শত শত বৎসর ধ'রে
ধর্মকে আপন ছুর্মম ছুর্ম ক'রে পরকে দূরে ঠেকিরে আত্মগত হয়ে আছে,
আর অপর পক ধর্মকে আপন বৃ।ই বানিয়ে পরকে আক্রমণ ক'রে ভাকে
ছিনিয়ে এনেছে। এতে ক'রে এদের মনঃপ্রকৃতি তুইরকম ছাঁদের
ভেদবৃদ্ধিতে একেবারে পাকা হয়ে গেছে। বিধির বিধানে এমন ছুই
দল ভারতবর্ষে পাশাপাশি দাঁড়িয়ে প্রধান স্থান অধিকার ক'রে নিয়েছে
— আত্মীয়তার দিক থেকে মুসলমান হিন্দুকে চার না, ভাকে কাফের
বলে ঠেকিয়ে রাথে; আত্মীয়ভার দিক থেকে হিন্দুও মুসলমানকে চার
না, তাকে শ্লেছ্ ব'লে ঠেকিয়ে রাথে।

একটা জারগার ত্ই পক কণে কণে মেলবার চেষ্টা করে, সে হচ্ছে তৃতীর পকের বিরুদ্ধে। লিবঠাকুরের ছড়াটা যদি আজ সম্পূর্ণ পাওরা যেত তা হলে দেখা যেত, ঐ-যে প্রথমা কলাটি রাবেন বাড়েন অবচ থেতে পান না, আর সেই-যে তৃতীরা কলাটি না পেরে বাপের বাড়ি যান, এদের উভরের মধ্যে একটা সন্ধি ছিল— সে হচ্ছে ঐ মধ্যমা কলাটির বিরুদ্ধে। কিন্তু যে দিন মধ্যমা কলা বাপের বাড়ি চলে যেত সে দিন অবশিষ্ট ছই সতিন, এই ছই পোলিটিকাল allyদের মধ্যে চুলোচুলি বেণে উঠত। পদ্মার বড়ের সময়ে দেখেছি কাক ফিঙে উভরেই চরের মাটির উপর চঞ্ছু আটকাবার চেষ্টার একেবারে গায়ে গায়ে হয়ে পাথা বটুপটু করেছে। তাদের এই সাযুজ্য দেখে তাড়াতাড়ি মুন্ধ হবার দরকার নেই। বড়ের সময় বত কণ এদের সন্ধি স্থারী হয়েছে তার চেরে বছদীর্ঘকাল এরা পরম্পরকৈ ঠোকর বেরে

এগেছে। বাংলাদেশে খদেনী-আন্দোলনে ছিন্দুর সঙ্গে মুসলমান মেজে
নি। কেননা, বাংলার অখণ্ড অন্ধকে ব্যন্ধ করার ছঃখটা তাদের কাছে
বান্ধব ছিল না। আজ অসহকার-আন্দোলনে ছিন্দুর সঙ্গে মুসলমান
বোগ দিরেছে, তার কারণ রুম-সাদ্রাজ্যের অখণ্ড অন্ধকে ব্যন্ধীকরণের
ছঃখটা তাদের কাছে বান্ধব। এমনতরো মিলনের উপলক্ষটা কথনোই
চিরন্থারী হতে পারে না। আমরা সত্যতঃ মিলি নি; আমরা এক দল
পূর্বমুখ হরে, অন্ধ দল পশ্চিমমুখ হয়ে কিছু কণ পাশাপাশি পাখা
ঝাপটেছি। আজ সেই পাখার ঝাপট বন্ধ হল, এখন উভর পক্ষের
চঞ্ এক মাটি কামড়ে না খেকে পরস্পারের অভিমুখে সবেগে বিক্ষিপ্ত
হচ্ছে। রাষ্ট্রনৈতিক অধিনেতারা চিন্তা করছেন, আবার কী দিরে এদের
চঞ্ছটোকে ভূলিয়ে রাখা যায়। আসল ভূলটা ররেছে অন্থিতে মজ্জাতে,
তাকে ভোলাবার চেন্টা ক'রে ভাঙা খাবে না। কম্বল চাপা দিয়ে যে
মনে ভাবে, বরকটাকে গরম ক'রে ভোলা গেল, সে এক দিন দেখতে
পায়, ভাতে ক'রে ভার শৈত।টাকে স্থামী করা গেছে।

হিন্দুতে মুসলমানে কেবল যে এই বর্মগত তেল তা নর, তাদের উভরের মধ্যে একটা সামাজিক শক্তির অসমকন্দতা ঘটেছে। মুসলমানের ধর্মসমাজের চিরাগত নির্মের জােরেই তার আপনার মধ্যে একটা নিবিড় ঐক্য জমে উঠেছে, আর হিন্দুর ধর্মসমাজের সনাতন অমুশাসনের প্রভাবেই তার আপনার মধ্যে একটা প্রবল অনৈক্য ব্যাপ্ত হরে পড়েছে। এর ফল এই যে, কােনাে বিশেব প্রয়োজন না থাকলেও হিন্দু নিজেকেই মারে, আর প্রয়োজন থাকলেও হিন্দু অক্তকে মারতে পারে না। আর মুসলমান কােনাে বিশেব প্রয়োজন না ঘটলেও নিজেকে দৃচ ভাবে রকা করে, আর প্রয়োজন ঘটলে অক্তকে বেদম মার দিতে পারে। তার কারণ এ নর, মুসলমানের গারে জাের আছে, হিন্দুর নেই; তার আসল কারণ, তাদের সমাজের জাের আছে, হিন্দুর নেই। এক দল আভান্তরিক

राम रमी, चात्र- धक मम चाछा छत्रिक दूर्रमा वा विकीय। अरमत्र मरश्र गमकक्षात वात्भाव घटत की क'ति? वाठास इत्वात्भव मूत्य गयम উপস্থিত হয় দে দিন गिংহের ভাগটা বিসদৃশ রক্ম বড়ো হয়ে ওঠে, তার কারণটা তার পাবার মধ্যে। গত যুরোপীয় যুদ্ধে যথন সমস্ত है दिख बार्जित मूथ्यी भारत्वर्ग हित्र हिंठिहिन, ज्थन वामामित्र मर्जा ক্ষীণপ্রাণ জাতকেও তারা আদর ক'রে সহায়তার জন্তে ডেকেছিল। ख्यु जारे नम्न, त्यात्र विषमी लात्कत्रख त्यमन मानानदेवत्रात्गा किছू क्रांनत्र कर्छ निकाय विश्वर्थिय क्याम, তেयनि युष्टि एयत करमक ने भरत्र बक्छ-चारु जिया जाराव महरवागी ভाর शेवराव প্রতি ভাদের মনে मार्कित्गात्र अन्यात्र इत्यहिन। यूष्क्रत शकाहे। এन नत्रम इत्य, चात्र छात्र পরেই দেখা দিল জালিয়ান-বাগে দানবলীলা, আর ভার পরে এল কেনিয়ায় সাম্রাজ্যের সিংহ্ছারে ভারতীয়দের জন্তে অধচন্ত্রের ব্যবস্থা। রাগ করি বটে, কিন্তু সভ্য সমকক না হয়ে উঠলে সমককের ব্যবহার পাওয়া যায় না। এই কারণেই মহান্তাজি পুব একটা ঠেলা দিয়ে প্রজাপক্ষের শক্তিটাকে রাজপক্ষের অমুভবযোগ্য ক'রে ভোলবার চেষ্টা कर्त्रिष्ट्रन। উভन्न পক्ष्य या चार्णायनिमिष्ठि ठाँत मका हिन। ना। व्यायदा यि धर्ययत्न दाकाद निःहानत्नं ভृषिकन्न पहार् नाद्रजूय, তা হলে রাজার বাহুবল একটা ভালো রকম রক্ষা করবার জন্যে আপনিই चार्यापद छाक পाएछ। छात्रछर्ग्स हिन्दू यूमनयान छिनित्रछहे পরম্পর রফানিপত্তির কারণ ঘটবে। অসমকক্ষতা থাকলে সে নিপত্তি निम्न इ विপश्चित्र चाकात्र शात्रण कदरय। यद्गनात्र चन - भारनेत्र चिकात्र वरगिष्टिण। जेनरभन्न कथायामात्र छात्र देखिशांग चार्छ। छेनगश्हारत्र

প্রবলতর চতুপদটি তর্কের বিবরটাকে কিরকম অত্যন্ত সরল ক'রে এনেছিল, সে কথা সকলেরই আনা আছে। ভারতবর্ধের কল্যাণ যদি চাই তা হলে হিন্দু-মুসলমানে কেবল যে মিলিত হতে হবে তা নর, সমকক হতে হবে। সেই সমককতা ভাল-ঠোকা পালোয়ানির ব্যক্তিগভ সমককতা নয়, উভয় পক্ষের সামাজিক শক্তির সমককতা।

মালাবারে মোপ্লাতে হিন্তে বে কুৎসিত কাপ্ত ঘটেছিল সেটা ঘটেছিল খিলাকৎ-স্ত্রে হিন্দ্-মুসলমানের সন্ধির ভরা জোরারের মুখেই। যে ছুই পক্ষে বিরোধ ভারা স্থানীর্ঘ কাল থেকেই ধর্মের ব্যবহারকে নিত্যধর্মনীতির বিরুদ্ধে প্রয়োগ করে এসেছে। নমুদ্রি আন্ধণের ধর্ম মুসলমানকে ঘণা করেছে, মোপলা মুসলমানের ধর্ম নমুদ্রি আন্ধণকে অবজ্ঞা করেছে। আজ্ব এই ছুই পক্ষের কন্প্রেসমঞ্চ-ঘটিত লাভ্ভাবের জীর্ণ মসলার ঘারা ভাজাভান্তি অল্ল কয়েক দিনের মধ্যে পুর মজবুত ক'রে পোলিটিকাল সেভু বানাবার চেষ্টা রুখা। অথচ আমরা বারবারই ব'লে আসছি, আমাদের সনাতন ধর্ম যেমন আছে ভেমনিই থাক্, আমরা অবান্তবকে দিরেই বান্তব ফল লাভ করব, ভার পরে ফললাভ হলে আপনিই সমস্ত গলদ সংশোধন হয়ে যাবে। বাজিমাত করে দিয়ে ভার পরে চালের কথা ভাবব; আগে স্বরাট্ হব, ভার পরে মানুষ হব।

মালাবার-উৎপাত সহতে এই তো গেল প্রথম কথা। তার পরে বিতীয় কথা হচ্ছে হিন্দু মুসলমানের অসমকন্ষতা। ডাক্তার মুঞ্জে এই উপদ্রবের বিবরণ আলোচনা ক'রে দক্ষিণের হিন্দুসমাজগুরু শঙ্করাচার্বের কাছে একটি রিপোর্ট্ পাঠিয়েছেন; তাতে বলেছেন—

The Hindus of Malabar are generally speaking mild and docile and have come to entertain such a mortal fear of the Moplas that the moment any such trouble arises, the only way of escape the Hindus can think of, is to run for life leaving their children and womenfolk behind, to take care

of themselves as best as they could, thinking perhaps honestly that if the Moplas attack them without any previous molestation, God, the Almighty and the Omniscient, is there to teach them a lesson and even to take a revenge on their behalf.

ভাক্তার মুঞ্জের এ কথাটির মানে হচ্ছে এই যে, হিন্দু ঐহিককে
ঐহিকের নিয়মে ব্যবহার করতে অভ্যাস করে নি, সে নিভ্যে অনিভ্যে
থিচুড়ি পাকিয়ে বুদ্ধিটাকে দিয়েছে জলে। বৃদ্ধির জায়গায় বিধি, এবং
আত্মশক্তির জায়গায় ভগবানকে দাঁড় করিয়ে দিয়ে এরা আত্মাবমাননায়
স্বায়ং ভগবানের অবমাননা করে ব'লেই হৃংথ পায়, সে কথা মনের
জড়ন্বশতই বোঝে না।

ভাক্তার মুঞ্জের রিপোর্টের আর-একটা অংশে তিনি বলছেন, আট শে। বৎসর আগে মালাবারের হিন্দুরাজা ব্রাহ্মণমন্ত্রীদের পরামর্শে তাঁর রাজ্যে আরবদের বাসস্থাপনের জ্ঞান্তে বিশেষভাবে স্থবিধা করে দিয়েছিলেন। এমন কি, হিন্দুদের মুসলমান করবার কাজে তিনি আরবদের এত দূর প্রশ্রেয় দিয়েছিলেন যে, তাঁর আইন-মতে প্রত্যেক জেলে পরিবার থেকে একজন হিন্দুকে মুসলমান হতেই হ'ত। এর প্রধান কারণ, ধর্মপ্রাণ রাজা ও তাঁর মন্ত্রীরা সমুদ্রযাত্রা ধর্মবিক্লম বলেই মেনে নিয়েছিলেন; তাই মালাবারের সমুদ্রতীরবর্তী রাজ্যরক্ষার ভার সেই-সকল মুসলমানের হাতেই ছিল, সমুদ্রযাত্রার বৈধতা সম্বন্ধে যারা বৃদ্ধিকে মানত, মন্থুকে মানত না। বৃদ্ধিকে না মেনে অবৃদ্ধিকে মানাই যাদের ধর্ম, রাজাসনে বঙ্গেও তারা স্বাধীন হয় না। তারা কর্মের মধ্যাক্ষ্ণকালকও স্থাপ্তির নিশীধরাত্রি বানিয়ে তোলে। এইজন্তেই তাদের—

ঠিক ছপ প'র বেলা ভূতে মারে ঢেলা।

यानावाद्यत्र त्राष्ट्रा এकमा निष्क त्राष्ट्रात्र यूर्थाव याज भ'दत्र चतुष्किरक

রাজাসন ছেড়ে দিরেছিলেন। সেই অবুদ্ধি মালাবারের হিন্দুসিংহাসনে এখনো রাজা আছে; তাই হিন্দু এখনো মার ধার আর উপরের দিকে তাকিরে বলে, ভগবান আছেন। সমস্ত ভারতবর্ষ জুড়ে আমরা অবৃদ্ধিকে রাজা করে দিরে তার কাছে হাত জোড় করে আছি। সেই অবৃদ্ধির রাজত্বকে, সেই বিধাতার বিধিবিক্ষ ভরংকর ফাঁকটাকে, কখনো পাঠান, কখনো মোগল, কখনো ইংরেজ এসে পূর্ণ করে বসছে। বাইরের থেকে এদের মারটাকেই দেখতে পাচ্ছি, কিন্তু এরা হল উপলক্ষ্য। এরা এক-একটা ঢেলা মাত্র, এরা ভূত নয়। আমরা মধ্যাহ্নকালের আলোতেও বৃদ্ধির চোথ বৃজ্জিরে দিয়ে অবৃদ্ধির ভূতকে ডেকে এনেছি, সমস্ত ভারই কর্ম। তাই ঠিক তৃপ্পার বেলায় যখন জাত্রত বিশ্বসংসার চিন্তা করছে, কাজ করছে, তখন পিছন দিক থেকে কেবল আমাদেরই পিঠের উপর—

ठिक इप. भ'त त्वना ভূতে মারে ঢেলা।

আমাদের লড়াই ভ্তের লঙ্গে, আমাদের লড়াই অবৃদ্ধির লঙ্গে, আমাদের লড়াই অবাস্তবের লঙ্গে। সেই আমাদের চারি দিকে ভেদ এনেছে, সেই আমাদের কাঁধের উপর পরবশতাকে চড়িয়ে দিয়েছে, সেই আমাদের এত দ্র অন্ধ করে দিয়েছে যে যথন চীৎকারশকে ঢেলাকে গাল পেড়ে গলা ভাঙছি তথন সেই ভৃতটাকে পরমান্মীয় পরমারাধ্য ব'লে তাকেই আমাদের সমস্ত বাস্তভিটে দেবতা করে ছেড়ে দিয়েছি। ঢেলার দিকে তাকালে আমাদের পরিত্রাণের আশা থাকে না:; কেননা জগতে ঢেলা অসংখ্য, ঢেলা পথে ঘাটে, ঢেলা একটা ফুরোলে হাজারটা আসে— কিন্তু ভৃত একটা। সেই ভৃতটাকে ঝেড়ে ফেলতে পারলে ঢেলাগুলো পায়ে পড়ে থাকে, গায়ে পড়ে না। ভারতবর্ষের সেই প্রাতন প্রার্থনাকে আজ্ব আবার সমস্ত প্রাণমন দিয়ে উচ্চারণ করবার

সময় এসেছে, শুধু কণ্ঠ দিয়ে নয়, চিস্তা দিয়ে, কর্ম দিয়ে, শ্রহা দিয়ে, পরস্পারের প্রতি ব্যবহার দিয়ে: য একঃ অবর্ণঃ, যিনি এক এবং সকল বর্ণভেদের অতীত, স নো বৃদ্ধাা শুভয়া সংযুনজু, তিনিই আমাদের শুভবৃদ্ধি দিয়ে পরস্পর সংযুক্ত করুন।

অগ্রহায়ণ ১৩৩•

সমাধান

সমস্তার দিকে কেউ যদি অঙ্গুল নির্দেশ করে, অমনি দেশের ক্বতী অক্বতী সকলে সেই ব্যক্তিকেই সমাধানের জন্ত দায়িক করে জবাব চেরে বসে। তারা বলে, 'আমরা তো একটা তবু যা হোক কিছু সমাধানে লেগেছি, তুমিও এমনি একটা সমাধান খাড়া করো, দেখা যাক ভোমারই বা কত বড়ো যোগাতা।'

আমি জানি, কোনো ঔষধসত্ত্বে এক বিলাতি ডাক্টার ছিলেন। তাঁর কাছে এক বৃদ্ধ এগে করণ স্বরে যেমনি বলেছে 'জর' অমনি তিনি ব্যস্ত হয়ে তথনি তাকে একটা অভ্যন্ত তিতো জরম্ম রস গিলিয়ে দিলেন; সে লোকটা হাঁপিয়ে উঠল, কিন্তু আপত্তি করবার সময় মাত্র পেল না। সেই সংকটের সময়ে আমি যদি ভাক্টারকে বাধা দিয়ে বলতুম, জর ওর নয়, জর ওর মেয়ের, তা হলে কি ডাক্টার রেগে আমাকে বলতে পারতেন যে 'তবে তৃমিই চিকিৎসা করো-না; আমি ভো তবু যা হয় একটা-কোনো ওবুধ যাকে হয় একজনকে খাইয়েছি, তৃমি তো কেবল ফাঁকা সমালোচনাই করলে'? আমার এইটুকু মাত্র বলবার কথা যে, আসল সমস্তাটা হছে, বাপের জর নয়, মেয়ের জর; অতএব বাপকে ওমুধ খাওয়ালে এ সমস্তার সমাধান হবে না।

কিছ বর্তমান ক্ষেত্রে অবিধার কথাটা এই বে, আমি বেটাকে সমস্তা বলে নির্ণয় করছি, সে আপন সমাধানের ইন্ধিত আপনিই প্রকাশ করছে। অবৃদ্ধির প্রভাবে আমাদের মন ছুর্বল; অবৃদ্ধির প্রভাবে আমরা পরস্পরবিচ্ছিন্ন— শুধু বিচ্ছিন্ন নই, পরস্পরের প্রতি বিক্লছ— অবৃদ্ধির প্রভাবে বাস্তব অগৎকে বাস্তবভাবে গ্রহণ করতে পারি নে ব'লেই জীবনধাত্রায় আমরা প্রতিনিয়ত পরাহত; অবৃদ্ধির প্রভাবে অবৃদ্ধির

প্রতি আস্থা হারিয়ে আন্তরিক স্বাধীনতার উৎসমূপে আমরা দেশজোড়া পরবশতার পাপর চাপিয়ে বসেছি। এইটেই যথন আমাদের সমস্তা তথন এর সমাধান শিক্ষা ছাড়া আর কিছুই হতে পারে না।

वाककान वागत्रा এই এकটा বুनि श्रतिष्ठि, घरत्र यथन वाछन निर्णिष्ठ তখন শিক্ষাদীক্ষা সব ফেলে ব্লেখে সর্বাত্যে আগুন নেবাতে কোমর বেঁধে দাড়ানো চাই— অভএব সকলকেই চরকায় স্থতো কাটতে হবে। আগুন লাগলে আগুন নেবানো চাই, এ কথাটা আমার মতো মামুষের কাছেও कूर्वाध नय। এর মধ্যে কুরুছ ব্যাপার হচ্ছে কোন্টা আগুন সেইটে স্থির कदा, তার পরে স্থির করতে হবে কোন্টা জল। ছাইটাকেই আমরা यि चा खन विन जा इरन जिन का है जिल कुरना ना शिरमे प चा खन নেবাতে পারব না। নিজের চরকার হুতো, নিজের তাঁতের কাপড় আমরা যে ব্যবহার করতে পারছি নে সেটা আগুন নয়, সেটা ছাইয়ের এक हो। चःশ, चर्शा चा छा नद्र हत्र या का। निष्क्र छै। छ हो ना छ पा करन्छ এ আগুন জলতে পাক্ষে। বিদেশী আমাদের রাজা, এটাও আগুন নয়, को हारे; विषिणी के विषाय करामा धारान खनाव, अमन कि यापनी वाका रूलि इ: अन्रुप्त निवृष्टि रूप ना। अयन नम्र ए र्हा वासन **ल**েগেছে, হঠাৎ निविद्य ফেলব। হাজার বছরের উর্ধবলাল যে আগুন **मिनेटिक हार्फ मार्ग खानारिक, चाक यहरस प्र**रठा करि कार्यफ बुनलिहे (म चाछन इ मिरन वन यानरव, এ कथा (यरन निष्ठ भावि नि। আজ তু শো বছর আগে চরকা চলেছিল, ভাতও বন্ধ হয় নি, সেই সঙ্গে चा छन्छ माछ-माछ करत्र खनहिन। राष्ट्र चा छर्नत्र खानानि कार्यहा हरक ধর্মে কর্মে অবৃদ্ধির অন্ধতা।

যেখানে বর্বর অবস্থার মাত্র্য ছাড়া-ছাড়া হয়ে থাকে, সেখানে বনে জঙ্গলে ফলমূল খেয়ে চলে; কিন্ধ যেখানে বহু লোকের সমাবেশে সভ্যভার বিচিত্র উল্লম প্রকাশ পেতে চায়, সেখানে ব্যাপক ক্ষেত্র ফুড়ে

সমাধান

(वर्ष डाला त्रक्य क'रत्र ठाव कत्रा चडा।वज्ञक हरत्र श्रुटा। जक्न वर्षा সভাভারই অরমপের আশ্রয় হচ্ছে ক্রবিক্ষেত্র। কিছু সভাভার একটা वृद्धिक्रि चार्ष्ट, रम रखा चरत्रक रहरत्र वर्ष्टा वहे ह्या है। वा वा विकास गर्वगाशावरणव यत्नव क्वज कर्षण करव विविध ७ विश्वीर्व - ভाবে वृद्धिक ফলিমে তুলতে পারলে, তবেই সে সভ্যতা মনস্বী হয়। কিছ যেখানে অধিকাংশ লোক মৃঢ়ভায় আবিষ্ট হয়ে অন্ধ সংস্থারের নানা বিভীষিকায় नर्वना जिन्न इरम् श्वक भूरमाहिन गन्दकारत्र नद्रकाम चहत्र हुटोहुि ক'বে মরছে সেখানে এমন কোনো সর্বজনীন স্বাধীনভামূলক রাষ্ট্রিক বা সামাজিক ব্যবস্থাতন্ত্র ঘটতেই পারে না যার সাহায্যে অধিকাংশ মাত্র্য निष्कित्र व्यक्षिकाः म स्थाया প্राप्ता (পতে পারে। व्यक्किकात्र पिन আমরা সেই রাষ্ট্রনীতিকেই শ্রেষ্ঠ বলি যার ভিতর দিয়ে সর্বজ্ঞনের স্বাধীন বৃদ্ধি, স্বাধীন শক্তি, নিজেকে প্রকাশ করবার উপায় পায়। কোনো (मर्महे चाक नर्छ छात्र मन्नूर्न चामर्न (मिश्र नि। किन्न चार्मिक सुद्रार्भ चायितिकाम এই चामर्लिन चिच्चित्र श्रमान मिथर भारे। এই श्रमान कथन (परक भाग्नाजारमर्भ रममां कर्द्राष्ट् ? यथन (परक रमथारन खान ও শক্তি - गाथनात्र देव्छानिक मुष्ठि दङ्ग পরিমাণে সর্বসাধারণের মধ্যে वाश हरम्रह । यथन (बरक मःमान्याखान क्वर यासूय निष्यत बुक्रिक স্বীকার করতে সাহস করেছে তথন থেকেই জনসাধারণ রাজা গুরু छए श्रेषा ও चक्र मः कात्र - गंड भाजिविधित्र विषय ठां न कां हित्र छेट रे यू छिन्द्र সর্বপ্রকার বাধা আপন বৃদ্ধির যোগে দূর করতে চেষ্টা করেছে। অন্ধ বাধ্যতা ৰারা চালিত হ্বার চিরাভ্যাস নিম্নে মৃক্তির বিপুল দায়িৰ কোনো कां ि कथाना कारमा करत्र तुक्षराङ्हे भात्र व ना, यहन कता रा पूरत्र त क्षा। इठा९ এक সময়ে যাকে ভারা অলৌকিক শক্তিসম্পন্ন ব'লে विश्वाम करत्र. जांत्र वागीरक मिरवागी व'ला खान जाता क्वकारमद खरम একটা ছ: गाथा गाथन ७ कद्राक भारत, वर्षा ए स वाष्य मिक ठारम निष्यत्र

মধ্যে থাকা উচিত ছিল সেইটাকে বাইরে কোণাও খাড়া করে কোনোএক সময়ে কোনো-একটা কাজ তারা মরিয়া হয়ে চালিয়ে নিতে পারে।
নিত্য ব্যবহারের জন্তে যে আগুন জালাবার কাজটা তাদের নিজের
বুদ্ধির হাতেই থাকা উচিত ছিল কোনো-এক দিন সেই কাজটা কোনো
অমিগিরিয় আক্ষিক উচ্ছাসের সহায়তায় তারা সাধন ক'রে নিতে
পারে। কিন্তু কচিৎ-বিশ্বরিত অমিগিরিয় উপরেই যাদের ঘরের আলো
জালাবায় ভার, নিজেদের বুদ্ধিশক্তির উপরেই যাদের ঘরের আলো
জালাবায় ভার, নিজেদের বুদ্ধিশক্তির উপর নয়, মুক্তির নিত্যোৎসবে
তাদের প্রদীপ জলবে না, এ বিষয়ে সন্দেহমাত্র নেই। অতএব যে
শিক্ষায় চর্চায় তায়া আগুন নিজে জালাতে পারে, নিজে জালানো
অসাধ্য নয় এই ভয়সা লাভ কয়তে পারে, সেই শিক্ষা পাওয়াই ঘরের
অন্ধকার দূর হওয়ার একমাত্র সন্ধুপার।

অমন লোককে জানা আছে যে মাহ্বব জন্ম-বেকার, মজ্জাগত অবসাদে কাজে তার গা লাগে না। পৈত্রিক সম্পত্তি তার পক্ষে পরম বিপত্তি, তাও প্রায় উজাড় হয়ে এল। অর্থ না হলে তার চলে না, কিছ উপার্জনের দারা অর্থসঞ্চয়ের পথ এত দীর্ঘ, এত বদ্ধর যে, সে পথের সামনে বসে বসে পথটাকে হয় করবার দৈব উপান্ধ -চিছায় আধ-বোজা চোখে সর্বদা নিযুক্ত; তাতে কেবল তার চিছাই বেড়ে চলেছে, পথ কমছে না। এমন সময় সয়াাসী এসে বললে, 'তিন মাসের মধ্যেই সহজ্ঞ উপায়ে তোমাকে লক্ষপতি ক'রে দিতে পারি।' এক মুহুর্তে তার জড়তা ছুটে গেল। সেই তিনটে মাস সয়াাসীর কর্থামতো সে ছঃসাধ্য সাধন করতে লাগল। এই জড়পদার্থের মধ্যে সহসা এতটা প্রচুর উল্পম দেখে সকলেই সয়্লাসীর অলোকিক শক্তিতে বিন্দিত হয়ে গেল। কেউ বুঝলে না, এটা সয়াাসীর শক্তির লক্ষণ নয়, ঐ মান্থবটারই অশক্তির লক্ষণ। আত্মশক্তির পথে চলতে যে বৃদ্ধি, বে অধ্যবসায়ের প্রয়োজন, বে মান্থবের তা নেই তাকে অলোকিক শক্তি পথের আভাস দেবা মাত্রই

সমাধান

সে তার অভ্শব্যা থেকে লাফ দিয়ে ওঠে। তা না হলে আমাদের দেশে এত তাগাতাবিজ বিক্রি হবে কেন? যারা রোগতাপ বিপদ-আপদ থেকে রক্ষা পাবার বৃদ্ধিসংগত উপায়ের 'পরে মান।সক অভ্যব-বশত আহা রাখে না, তাগাতাবিজ স্বস্তায়ন তন্ত্রমন্ত্র মানতে তারা প্রভৃত ত্যাগ এবং অজ্বস্র সমন্ন ও চেষ্টা ব্যয় করতে কৃতিত হয় না। এ কথা ভূলে যায় যে, এই তাগাতাবিজ-গ্রন্তদেরই রোগতাপ-বিপদ-আপদের অবসান দেবতা বা অপদেবতা কারও ক্লপাতেই ঘটে না, এই তাগাতাবিজ-গ্রন্তদেরই ঘরে অকল্যাপের উৎস শতধারার চিরদিন উৎসারিত।

যে দেশে বসস্তরোগের কারণটা লোকে বৃদ্ধির দারা জেনেছে এবং সে কারণটা বৃদ্ধির দারা নিবারণ করেছে, সে দেশে বসস্ত মারীরূপ ত্যাগ ক'রে দৌড় মেরেছে। আর যে দেশের মান্তব মা-শীতলাকে বসস্তের কারণ ব'লে ঠিক ক'রে চোখ বুজে বসে থাকে সে দেশে মা-শীতলাও থেকে যান, বসস্তও যাবার নাম করে না। সেখানে মা-শীতলা হচ্ছেন মানসিক পরবশতার একটি প্রতীক, বৃদ্ধির স্বরাজ-চ্যুতির ক্ষর্য লক্ষণ।

আমার কথার একটা মন্ত জ্বাব আছে। সে হচ্ছে এই বে, দেশের এক দল লোক তো বিদ্যাশিক্ষা করেছে। তারা তো পরীক্ষা পাস করবার বেলায় আগতিক নিয়মের নিত্যতা অমোঘতা সম্বন্ধে ব্যাকরপবিশুদ্ধ ইংরেজি ভাষায় সাক্ষ্য দিয়ে ভিগ্রি নিয়ে আসে। কিন্তু আমাদের দেশে এই ভিগ্রিখারীদেরই ব্যবহারে কি আত্মবৃদ্ধির 'পরে, বিশ্ববিধির 'পরে বিশ্বাস সপ্রমাণ হচ্ছে । তারাও কি বৃদ্ধির অন্ধতায় সংসারে সকল রক্ষেরই দৈন্ত বিস্তার করে না !

থীকার করতেই হয়, তাদের অনেকের মধ্যেই বৃদ্ধিস্ভির জোর বড়ো বেশি দেখতে পাই নে; তারাও উদ্ধালভাবে যা-তা খেনে

कामासुत

নিতে প্রস্তত, অন্ধৃত কিতে অন্তুত পথে অকশাৎ চালিত হতে ভারা উন্মুখ হয়ে আছে; আধিভৌতিক ব্যাপারের আধিদৈবিক ব্যাখ্যা করতে তাদের কিছুমাত্র সংকোচ নেই; তারাও নিজের বুদ্ধিবিচারের দায়িত পরের হাতে সমর্পণ করতে লজ্জা বোধ করে না, আরাম বোধ করে।

তার একটা প্রধান কারণ এই যে, মৃঢ়তার বিপুল ভারাকর্ষণ জিনিসটা ভয়ংকর প্রবল। নিজের সতর্ক বৃদ্ধিকে সর্বদা ভাগ্রত রাখতে সচেষ্ট শক্তির প্রয়োজন হয়। যে সমাজ দৈব গুরু ও অপ্রাক্ত প্রভাবের 'পরে আস্থাবান নয়, যে সমাজ বুদ্ধিকে বিশ্বাস করতে শিখেছে, সে সমাজে পরস্পরের উৎসাহে ও সহায়তায় মামুষের মনের শক্তি সহজেই নিরলস থাকে। আমাদের দেশে শিক্ষাপ্রণালীর দোষে একে তো শিক্ষা অগভীর হয়, তার উপরে সেই শিক্ষার ব্যাপ্তি নিরতিশয় সংকীর্ণ। এই-জন্মে সর্বজনের সম্মিলিত মনের শক্তি আমাদের মনকে অগ্রসরতার पित्क, **चाञ्चमक्तित्र** पित्क উन्नूथ करत्र दाथरा भारत ना। तम महस्कहे অলস হয়ে পড়ে এবং প্রচলিত বিশাস ও চিরাগত প্রথার হাতে গা ঢেলে निय् हू छि भाषा। जात्र भर्त चिनिक्जिए तत्र महन चामार त अरखन घर है এই যে, তারা আপন অন্ধ বিশাসে বিনা বিধায় সহজ ঘুম ঘুমোয়, আমরা निष्क्रिक जूनिय चाफिएडव घूम घूरगारे; चामवा कुछर्क क'रव नज्जा নিবারণ করতে চেষ্টা করি, অড়তা বা ভীকৃত্ব -বশত যে কাজ করি তার এक है। इनिপूर्व वा व्यनिপूर्व व्याभा वानिस्त्र निस्त्र मिला गर्दत विषत्र ক'রে দাঁড় করাতে চাই। কিন্তু ওকালতির জোরে ছুর্গ তকে চাপা দেওয়া যায় না।

দেশকে মুক্তি দিতে গেলে দেশকে শিক্ষা দিতে হবে, এ কথাটা হঠাৎ এত অভিরিক্ত মন্ত ব'লে ঠেকে যে, এ'কে আমাদের সমস্তার সমাধান ব'লে মেনে নিতে মন রাজি হয় না।

সমাধান

দেশের মুক্তি কাজটা ধ্ব বড়ো অবচ তার উপায়টা ধ্ব ছোটো হবে,
এ কথা প্রত্যাশা করার ভিতরেই একটা গলদ আছে। এই প্রত্যাশার
মধ্যেই রয়ে গেছে কাঁকির 'পরে বিখাস; বাস্তবের 'পরে নয়, নিজের
শক্তির 'পরে নয়।

অগ্রহায়ণ ১৩৩০

শূদ্রধর্ম

মাহ্ব জীবিকার জন্তে নিজের হুযোগমতো নানা কাজ ক'রে থাকে। সাধারণত সেই কাজের সঙ্গে ধর্মের যোগ নেই, অর্থাৎ তার কর্তব্যকে প্রয়োজনের চেয়ে বেশি মূল্য দেওয়া হয় না।

ভারতবর্ষে এক দিন জীবিকাকে ধর্মের সঙ্গে যুক্ত করা হয়েছিল। ভাতে মামুষকে শাস্ত করে। আপনার জীবিকার ক্ষেত্রকে তার সমস্ত সংকীর্ণতা-সমেত মামুষ সহজে গ্রহণ করতে পারে।

জীবিকানির্বাচন সম্বন্ধে ইচ্ছার দিকে যাদের কোনো বাধা নেই, অধিকাংশ স্থলে ভাগ্যে তাদের বাধা দের। যে মান্ত্র রাজমন্ত্রী হবার স্থপ্ত দেখে, কাজের বেলায় ভাকে রাজার ফরাসের কাজ করতে হয়। এমন অবস্থায় কাজের ভিতরে ভিতরে ভারে বিদ্রোহ থামতে চায় না।

মুশকিল এই যে, রাজসংসারে ফরাসের কাজের প্রয়োজন আছে, কিন্তু রাজমন্ত্রীর পদেরই সম্মান। এমন কি, যে স্থলে তার পদই আছে, কর্ম নেই, সেখানেও সে তার খেতাব নিয়ে মানের দাবি করে। ফরাস এ দিকে খেটে খেটে হয়রান হয় আর মনে মনে ভাবে, তার প্রতি দৈবের অবিচার। পেটের দায়ে অগত্যা দীনতা স্বীকার করে, কিন্তু মেটে না।

ইচ্ছার স্বাধীনতার স্বপক্ষে ভাগ্যও যদি যোগ দিত, সব ফরাসই যদি রাজ্মন্ত্রী হয়ে উঠত, তা হলে মন্ত্রণার কাজ বে ভালো চলত তা নয়, ফরাসের কাজও একেবারেই বন্ধ হয়ে যেত।

দেখা যাচ্ছে, ফরাসের কাজ অত্যাবশ্রক, অবচ ফরাসের পক্ষে তা অসমস্থাবজনক। এমন অবস্থায় বাধ্য হয়ে কাজ করা অপমানকর।

ভারতবর্ষ এই সমস্তার মীমাংসা করেছিল বৃত্তিভেদকে পুরুষামুক্রমে

ज्खशर्म

পাকা ক'বে দিমে। রাজশাসনে যদি পাকা করা হ'ত তা হলে তার
মধ্যে দাসত্বের অবমাননা থাকত এবং ভিতরে ভিতরে বিজ্ঞাহের চেষ্টা
কথনোই থামত না। পাকা হল ধর্মের শাসনে। বলা হল, এক-একটা
আতির এক-একটা কাজ তার ধর্মেরই অল।

ধর্ম আমাদের কাছে ত্যাগ দাবি করে। সেই ত্যাগে আমাদের দৈন্ত নয়, আমাদের গৌরব। ধর্ম আমাদের দেশে ব্রাহ্মণ শুদ্র সকলকেই কিছু না কিছু ত্যাগের পরামর্শ দিয়েছে। ব্রাহ্মণকেও অনেক তোগ-বিলাস ও প্রলোভন পরিত্যাগ করবার উপদেশ দেওয়া হয়েছিল। কিন্তু, তার সঙ্গে ব্রাহ্মণ প্রতুর সন্মান পেয়েছিল। না পেলে সমাজে সে নিজের কাজ করতেই পারত না। শুদ্রও ষথেষ্ঠ ত্যাগ স্বীকার করেছে, কিছু সমাদর পায় নি। তবুও, সে কিছু পাক আর না পাক, ধর্মের খাতিরে হীনতা স্বীকার করার মধ্যেও তার একটা আত্মপ্রসাদ আছে।

বস্তুত জীবিকানির্বাহকে ধর্মের শ্রেণীতে ভূক্ত করা তথনি চলে যথন
নিজের প্রয়োজনের উপরেও সমাজের প্রয়োজন লক্ষ্য থাকে। ব্রাহ্মণ
ভাতে-ভাত থেয়ে, বাহ্ম দৈপ্ত স্থীকার করে নিয়ে, সমাজের আবাাত্মিক
আদর্শকে সমাজের মধ্যে বিশুদ্ধ যদি রাখে তবে তার হারা তার
জীবিকানির্বাহ হলেও সেটা জীবিকানির্বাহের চেয়ে বড়ো, সেটা ধর্ম।
চাবী যদি চাব না করে, তবে এক দিনও সমাজ টেকে না। অতএব
চাবী আপন জীবিকাকে যদি ধর্ম ব'লে স্থীকার করে, তবে কথাটাকে
মিধ্যা বলা যায় না। অথচ এমন মিধ্যা সাম্বনা তাকে কেউ দেয় নি বে,
চাব করার কাজে ব্রাহ্মণের কাজের সঙ্গে সম্মানে সমান। যে-সব কাজে
মাহ্মবের উচ্চতর বৃত্তি খাটে, মানবসমাজে স্থভাবতই তার সন্মান
শারীরিক কাজের চেয়ে বেশি, এ কথা স্ক্র্নাই।

य (मर्थ जी विका-वर्षन क धर्मकर्यत्र मात्रिम करत्र स्मर्थ ना, रम (मर्थ नित्र स्वीत काक वक्ष करण ममारकत्र मर्यनाम मर्छ। चल्जव

সেখানেও অধিকাংশ লোককেই সেই কাজ করতেই হবে। হংবাগের সংকীর্ণতা-বশত সে রকম কাজ করবার লোকের অভাব ঘটে না, তাই সমাজ টিকৈ আছে। আজকাল মাঝে-মাঝে যখন সেখানকার শ্রমজীবীরা সমাজের সেই গরজের কথাটা মাথা নাড়া দিয়ে সমাজের নিম্বর্মা বা পরাসক্ত বা বৃদ্ধিজীবীদের জানান দেয়, তখন সমাজে একটা ভূমিকম্প উপস্থিত হয়। তখন কোথাও বা কড়া রাজশাসন, কোথাও বা তাদের আজি-মঞ্জুরির দ্বারা সমাজরক্ষার চেষ্টা হয়।

আমাদের দেশে বৃত্তিভেদকে ধর্মশাসনের অন্তর্গত করে দেওয়াতে এ রকম অসন্তোষ ও বিপ্লবচেষ্টার গোড়া নষ্ট করে দেওয়া হয়েছে। কিন্তু এতে করে জাতিগত কর্মধারাগুলির উৎকর্ম সাধন হয়েছে কি না ভেবে দেথবার বিষয়।

যে-সকল কাজ বাহু অভ্যাসের নয়, যা বৃদ্ধিমূলক বিশেষ কমভার বারাই সাধিত হতে পারে, তা ব্যক্তিগত না হয়ে বংশগত হতেই পারে না। যদি তাকে বংশে আবদ্ধ করা হয় তা হলে ক্রমেই তার প্রাণ মরে গিয়ে বাইরের ঠাটটাই বড়ো হয়ে ওঠে। ত্রাহ্মণের যে সাধনা আন্তরিক তার জ্বন্তে ব্যক্তিগত শক্তি ও সাধনার দরকার; যেটা কেবলমাত্র আহুর্তানিক সেটা সহজ। আহুর্তানিক আচার বংশাস্কুরুমে চলতে চলতে তার অভ্যাসটা পাকা ও দল্ভটা প্রবল হতে পারে, কিছ তার আসল জিনিসটি মরে যাওয়াতে আচারগুলি অর্থহীন বোঝা হয়ে উঠে জীবনপথের বিল্প ঘটার। উপনয়নপ্রথা এক সময়ে আর্যধিজ্ঞানের পক্ষে সভ্য পদার্থ ছিল: তার শিক্ষা, দীক্ষা, ত্রহ্মচর্থ, গুরুগৃহবাস, সমস্তই তথনকার কালের ভারতবর্যীয় আর্যদের মধ্যে প্রচলিত প্রেষ্ঠ আদর্শগুলিকে গ্রহণ করবার পক্ষে উপযোগী ছিল। কিছু যে-সকল উচ্চ আদর্শ আধ্যাত্মিক, যার জ্বন্তে নিয়ভজ্ঞাগরক চিৎশক্তির দরকার, সে ভো মৃত পদার্থের মতো কঠিন আচারের পৈতৃক শিক্সকের মধ্যে বন্ধ করে রাখবার নয়; সেই-

णुज्रधर्म

অন্তেই স্বভাবতই উপনয়নপ্রথা এখন প্রহুগন হয়ে দাড়িয়েছে। তার কারণ, উপনয়ন যে আদর্শের বাহন ও চিহ্নু সেই আদর্শ ই গেছে সরে। ক্তিয়েরও সেই দশা; কোথায় যে সে তাকে খুঁলে পাওয়া শক্ত। যারা ক্তিয়েরণ ব'লে পরিচিত, জাতকর্ম বিবাহ প্রভৃতি অনুষ্ঠানের সময়েই তারা ক্তিয়ের কতকগুলি পুরাতন আচার পালন করে মাত্র।

এ দিকে শান্তে বলছেন: খবর্থে নিধনং শ্রেয়: পরধর্মো ভয়াবহঃ।
এ কথাটার প্রচলিত অর্থ এই দাঁড়িয়েছে যে, যে বর্ণের শান্ত্রবিহিত যে
ধর্ম তাকে তাই পালন করতে হবে। এ কথা বললেই তার তাৎপর্য
এই দাঁড়ায় যে, ধর্ম-অফুশাসনের যে অংশটুকু অঙ্কভাবে পালন করা চলে
তাই প্রাণপণে পালন করতে হবে— তার কোনো প্রয়েজন থাক্ আর
নাই থাক্, তাতে অকারণে মাছ্ম্যের স্বাধীনতার থর্বতা ঘটে ঘটুক,
তার ক্ষতি হয় হোক। অঙ্ক আচারের অত্যাচার অত্যন্ত বেশি, তার
কাছে ভালোমন্দর আন্তরিক মূল্যবোধ নেই। তাই যে ভচিবায়ুপ্রভ মেয়ে কথায় কথায় সান করতে ছোটে, সে নিজের চেয়ে অনেক ভালো
লোককে বাছ ভচিতার ওজনে ঘণভোজন মনে করতে বিধা বোধ করে
না। বন্ধত তার পক্ষে আন্তরিক সাধনার কঠিনতর প্রয়াস অনাবশুক।
এইজন্তে অহংকার ও অন্তের প্রতি অবজ্ঞায় তার চিত্তের অভচিতা ঘটে।
এই কারণে আধুনিক কালে যার। বৃদ্ধিবিচার জলাঞ্জলি দিয়ে সমাজকর্তাদের মতে স্বর্ধ্য পালন করে তাদের ওছত্য এতই ছংসহ, অপচ
এত নির্বর্থক।

অধচ জাতিগত স্বধর্ম পালন করা থুবই সহজ, যেখানে সেই স্বধর্মের
মধ্যে চিন্তবৃত্তির স্থান নেই। বংশামুক্রমে ইাড়ি তৈরি করা বা ঘানির
পেকে তেল বের করা বা উচ্চতর বর্ণের দাস্তবৃত্তি করা কঠিন নয় , বরং
তাতে মন যতই মরে যায় কাল ততই সহল হয়ে আসে। এই-সকল
হাতের কালেরও নৃতনতর উৎকর্ম সাধন করতে গেলে চিন্ত চাই।

कामासुन

বংশামুক্রমে অধর্ম পালন করতে গিয়ে তার উপষ্ক চিত্তও বাকি পাকে
না, মামুধ কেবল যন্ত্র হরে একই কর্মের প্নরাবৃত্তি করতে থাকে। বাই
হোক, আজ ভারতে বিশুভ্জাবে অধর্মে টিকে আছে কেবল শ্রেরা।
শ্রুম্বে তাদের অসভোষ নেই। এইজন্তেই ভারতবর্ষের-নিমকে-জীর্ণ
দেশে-ফেরা ইংরেজ-গৃহিণীর মুখে অনেক বার শুনেছি, অদেশে এসে
ভারতবর্ষের চাকরের অভাব তারা বড়ো বেশি অমুভব করে। ধর্মশাসনে পুরুষামুক্রমে যাদের চাকর বানিয়েছে তাদের মতো চাকর
পৃথিবীতে কোথার পাওরা যাবে ? লাথিঝাটা-বর্ষণের মধ্যেও ভারা
অধর্ম রক্ষা করতে কৃত্তিত হর না। তারা তো কোনো কালে সম্মানের
দাবি করে নি, পারও নি, তারা কেবল শৃত্তধর্ম অত্যন্ত বিশুভ্জাবে রক্ষা
ক'রেই নিজেকে কৃতার্থ মনে করেছে। আজ যদি তারা বিদেশী শিক্ষার
মাঝে মাঝে আত্মবিশ্বত হয়, তবে সমাজপতি ভাদের স্পর্ধা সম্বন্ধে
আক্রোশ প্রকাশ করে।

স্বধরত শ্দ্রের সংখ্যাই ভারতবর্ষে সব চেয়ে বেশি, তাই এক
দিক থেকে দেখতে গেলে ভারতবর্ষ শ্দ্রধর্মেরই দেশ। তার নানা প্রমাণ
ইতিহাসে পাওয়া গেছে। এই অতি প্রকাশু শ্দুধর্মের অভ্যন্তের ভারাকর্ষণে ভারতের সমস্ত হিন্দুসম্প্রদায়ের মাধা হেঁট হয়ে আছে। বৃদ্ধিসাধ্য জ্ঞানসাধ্য চারিত্রশক্তিসাধ্য যে-কোনো মহাসম্পদলাভের সাধনা
আমরা আজ করতে চাই তা এই প্রবল শ্দুস্বভার ঠেলে তবে করতে
হবে— তার পরে সেই সম্পদকে রক্ষা করবার ভারও এই অসীম
অন্ধতার হাতে সমর্পন করা ছাড়া আর উপায় নেই। এই ক্রাই
আমাদের ভাববার ক্র্যা।

এই শৃত্তপ্রধান ভারতবর্ষের সব চেয়ে বড়ো ছুর্গতির যে ছবি দেখতে পাই সেই পর্য আক্ষেপের কথাটা বলতে বসেছি।

व्यथम वाद्य यथन कार्भात्मय भटक इश्करद्व वक्तद्व कामाद्वय कार्याक

লাগল দেখলুন, সেথানে ঘাটে একজন পাঞ্চাবি পাহারাওরালা অতি তৃচ্ছ কারণে একজন হৈনিকের বেণী ধরে ভাকে লাখি নারলে। আনার নাধা হেঁট হয়ে গেল। নিজের দেশে রাজভূত্যের-লাখন-ধারী কর্তৃক খনেশীর এ রক্ষ অভ্যাচার-ছুর্গতি অনেক দেখেছি, দুর সমুদ্রভীরে সিয়েও ভাই দেখলুন। দেশে বিদেশে এরা শৃত্তধর্ষ পালন করছে। চীনকে অপমানিভ করবার ভার প্রভূর হয়ে এরা গ্রহণ করেছে; সে সম্বন্ধে এরা কোনো বিচার করতেই চায় না, কেননা এরা শৃত্তধর্মের হাওয়ায় মাম্ব। নিমকের সহজ দাবি যত দুর পৌছায় এরা সহজেই ভাকে বহু দুরে লক্ষ্মন করে যায়; ভাতে আনন্দ পার, গর্ব বোধ করে।

চীনের কাছ থেকে ইংরেজ যথন হংকঙ কেড়ে নিতে গিয়েছিল তথন এরাই চীনকে মেরেছে। চীনের বুকে এদেরই অস্ত্রের চিহ্ন অনেক আছে— সেই চীনের বুকে যে চীন আপন হৃদয়ের মধ্যে ভারতবর্ষের বৃদ্ধদেবের পদচিহ্ন ধারণ করেছিল, সেই ইৎসিং হিউরেন্সাঙের চীন।

মানববিশ্বের আকাশে আজ যুদ্ধের কালো মেঘ চার দিকে ঘনিয়ে এসেছে। এ দিকে প্যাসিফিকের তীরে ইংরেজের তীক্ষচঞ্ ধর্নধরদান্ধণ শ্রেনতরণীর নীড় বাঁধা হচ্ছে। পশ্চিম মহাদেশে দিকে দিকে রব উঠেছে যে, এসিয়ার অন্ত্রশালায় শক্তিশেল তৈরি চলছে, মুরোপের মর্মের প্রতি তার লক্ষ্য। রক্তমোক্ষণক্লাক্ত পীড়িত এসিয়াও ক্ষণে ক্ষণে অন্তিরতার লক্ষণ দেখাছে। পূর্বমহাদেশের পূর্বতম প্রান্তে জাপান জেগেছে, চীনও তার দেওয়ালের চার দিকে সিঁধ কাটার শঙ্কে জাপান জিগেছে, চীনও তার দেওয়ালের চার দিকে সিঁধ কাটার শঙ্কে জাপানার উপক্রম করছে। হয়তো এক দিন এই বিরাট্কায় জাতি তার বন্ধন ছির ক'রে উঠে দাঁড়াতে চেষ্টা করবে, হয়তো এক দিন তার আফিমে আবিষ্ট দেছ বছ কালের বিষ ঝেড়ে ফেলে আপনার শক্তি উপলব্ধি করতে পারবে। চীনের পলিঝুলি যারা ফুটো করতে লেগেছিল তারা চীনের এই চৈতন্তলাভকে মুরোপের বিক্রছে অপরাধ বলেই গণ্য করবে। তথন

अगियात्र यह मूज ভात्र जर्रत्व की काज ? जथन म सूर्त्रार्भित कायात्रभागात्र रेजित लाहात्र भिक्न कार्य क'रत निविधारत जात आधीन वक्रु वैशिष्ट यात्। तम यात्रत, तम यत्रत। त्कन यात्रत, त्कन यत्रत्, এ कथा श्रम्न कत्रत्छ छात्र धर्म निरुध। तम वलर्व : अधर्म इननः खित्रः, **पश्च**र्य निधनः (अत्रः। हेश्ट्रक्रगाञाखात्र काथा प्राप्तान **ठाम्न ना, भाम्न ना ; हेश्ट्राब्ब म्हा ट्रा क्**निगिनित वामा वरम महन, य रायात्र यथा छात्र व्यर्व मिहे, भत्रयार्थ मिहे ; हे १ दि व्यत्र हात्र भत्र क সে তেড়ে মারতে যায়, যে পর তার শত্রু নয়; কাজ সিছ হবা মাত্র আবার তাড়া খেয়ে তোষাখানার মধ্যে ঢোকে। শুদ্রের এই তো বছ यूरगंत्र मीका। जात्र काटक वार्थल त्नहे, नवानल त्नहे, चार्ड क्वन 'अधर्य नियनः (अधः' এই वागी। नियम्ब अ अ व हर्ष्ट्र ना ; किन्न छात्र চেয়েও মাহুষের বড়ো চুর্গতি আছে যখন সে পরের স্বার্থের বাহন হয়ে পরের সর্বনাশ করাকেই অনায়াসে কর্তব্য ব'লে মনে করে। অভএৰ এতে আশ্চর্যের কথা নেই যে, যদি দৈবক্রমে কোনে। দিন ব্রিটানিয়া ভারতবর্ধকে হারায় তা হলে নিশাস ফেলে বলবে: I miss my best servant.

चश्रायुग ५७७२

চরকা

চরকা-চালনায় উৎসাহ প্রকাশ করি নি অপবাদ দিয়ে আচার্য প্রফুল-চন্দ্র আমাকে ছাপার কালিতে লাঞ্চিত করেছেন। কিন্তু দণ্ড দেবার বেলাতেও আমার 'পরে সম্পূর্ণ নির্মম হতে পারেন না ব'লেই আচার্য ব্রজেন্দ্রনাথ শীলকেও আমার সঙ্গে এক কলঙ্কের রসায়নে মিল করিয়েছেন।

এতে আমার ব্যথা দূর হল, তা ছাড়া একটা অত্যন্ত পুরোনো কথার নতুন প্রমাণ জুটল এই যে, কারও সঙ্গে কারও বা মতের মিল হয়, কারও मदन वा र्य ना। जर्थार, मकन मासूर मितन सोमाছित मर्छा এकरे নমুনার চাক বাঁধবে, বিধাতা এমন ইচ্ছে করেন নি। কিন্তু সমাজ-विधार्जाको कथाना कथाना मिहे वक्य हेका करवन। छाँवा काखरक महब করবার লোভে মামুষকে মাটি করতে কুন্তিত হন না। তাঁরা ছাটাই-কলের মধ্যে মান্ত্র-বনম্পতিকে চালিয়ে দিয়ে ঠিক সমান মাপের হাজার হাজার দক্ষ দশলাই-কাঠি বের করে আনেন। বন্তদ্রব্যকে এ রকম পণা प्रदा क्रवल वन दिन वादा हुन कर्त्र था क्रिन, किन्छ या श्रूष्ट्र वृद्धिक काष्क्रत था जित्र भोगाहित वृद्धि कत्त जूनल नाताव्राव्यत प्रवाद हिमाव-निकाल्य मित्न कवियानाय मिडल इवाव जय जाहा। हाएँ। वयत्म জগन्नाथित घार्ট জनयाजात প্রয়োজনে যথন যেতেম, নানা পালিব यावि श्रा धरत होनाहानि कत्र । किन्न काना-এकहोत 'भरत यथन অভিক্রচির পক্ষপাত প্রকাশ করা বেভ তথন সেজন্যে কারও কাছ থেকে শাসনভয় ছিল না। কেননা পান্সি ছিল অনেক, যাত্রী ছিল অনেক, তাদের গ্যাস্থানও ছিল অনেক। কিন্তু, यদি দেশের উপর তারকেশরের এমন একটা স্বপ্ন থাকত যে, তারণের জক্তে তধু একটিমাত্র পান্দিই পবিত্র, তবে তাঁর প্রবন্ধ পাতাদের জবর্দন্তি ঠেকাত কে? এ দিকে মানবচরিত্র

घाटी मां ज़िया किएम मज़रू, 'अदा भारमायान, क्म यिन वा এक है हथ, घाटे य नाना— कारनां छेखदा, कानों। मिक्किं।'

শাস্ত্রে বলেন, ঈশ্বরের শক্তি বহুধা। তাই স্টেব্যাপারে পাঁচ ভূতে
মিলে কাজ করে। মৃত্যুতেই বিচিত্র ভূত দৌড় মারে; প্রলয়ে সব
একাকার। মাম্বকে ঈশ্বর সেই বহুধা শক্তি দিয়েছেন, তাই মানবসভাতার
এত ঐশ্বর্ষ। বিধাতা চান মানবসমাজে সেই বহুকে গেঁথে গেঁথে স্প্টে হবে
ঐক্যের; বিশেষজ্বল্র শাসনকর্তারা চান, সেই বহুকে দ'লে ফেলে
পিগু পাকানো হবে সাম্যের। তাই সংসারে এত অসংখ্য এক কলের
মজুর, এক-উর্দি-পরা সেপাই, এক দলের দড়িতে বাঁধা কলের পুতৃল।
বেখানেই মাম্বের মম্ব্যুত্ব জুড়িয়ে হিম হয়ে যায় নি সেখানেই এই
হামানদিস্তায়-কোটা সমীকরণের বিরুদ্ধে বিদ্রোহ চলছেই। কোথাও
যদি সেই বিদ্রোহের লক্ষণ না থাকে, যদি দেখি সেখানে হয় প্রভূর চাবুকে
নয় গুরুর অম্পাসনে মাম্বকে অনায়াসেই একই ধৃলিশয়নে অতি ভালোমাম্বের মতো নিশ্চল শায়িত রাখতে পারে, তা হলে সেই 'দৃষ্টিহীন নাড়ীক্ষীণ হিমকলেবর' দেশের জন্যে শোকের দিন এসেছে বলেই জানব।

আমাদের দেশে অনেক দিন থেকেই সমীকরণের অলক্ষণ বলবান।
এই মরণের ধর্মই আমাদের দেশে প্রত্যেক জাতের প্রত্যেক মামুষের
'পরেই এক-একটি বিশেষ কাজের বরাত দিয়েছে। সঙ্গে সঙ্গে কানে এই
মন্ত্র যে, সৃষ্টির প্রথম দরবারে তাদের আদিপুরুষ একটিমাত্র বিশেষ মজুরির
বায়না নিয়ে তাদের চিরকালকে বাঁধা দিয়ে বসে আছে। স্থতরাং কাজে
ইন্তফা দিতে গেলেই সেটা হবে অধর্ম। এই রকমে পিঁপড়ে-সমাজের
নকলে খুচরো কাজ চালাবার খুব স্থবিধে, কিন্তু মামুষ হবার বিশেষ বাধা।
যে মামুষ কর্তা, যে স্বষ্টি করে, এতে তার মন বায় মারা; যে মামুষ দাস,
যে মজুরি করে, তারই দেহের নৈপুণ্য পাকা হয়। তাই বহুকাল থেকে
ভারতবর্ষে কেবলই পুরাতনের পুনরাবৃত্তি। এবং সেই পুনরাবৃত্তির জাঁতা

চালিয়ে চালিয়েই অন্তিত্বের প্রতি ভারতের এত বিভৃষা। ভাই সে জন্মজনাস্তবের পুনরাবর্তন-কল্পনায় আভক্ষিত হয়ে সকল কর্ম ও কর্মের মূল মেরে দেবার জন্মে চিত্তবৃত্তি নিরোধ করবার কথা ভাবছে। এই পুনরাবৃত্তির বিভীষিকা দে আপন প্রতি দিনের অভ্যাস-জড় কর্মচক্রের ঘুরপাকের মধ্যেই দেখেছে। লোকসান শুধু এইটুকু নয়, এমনি করে যারা कन यत्न राज जावा वीर्य हावारना, कारना जाममरक र्ठकावाव मिक्डिरे তাদের বইল না। যুগ যুগ ধরে চতুর তাদের ঠকাচ্ছে, গুরু ভাদের ভোলাচ্ছে, প্রবল ভাদের কানমলা দিচ্ছে। ভারা এর কোনো অন্তথা কল্পনা মাত্র করতে পারে না, কারণ তারা জানে মেরে রেখেছেন বিধাতা; স্প্তির আদিকালে চতুর্মুখ ভাদের চাকায় দম দিয়ে বসে আছেন, সে দম স্প্রির শেষকাল পর্যস্ত ফুরোবে না। একঘেয়ে কান্তের জীবন্মৃত্যুর ভেলার মধ্যে কালস্রোতে তাদের ভাসিয়ে দেওয়া হয়েছে। কিন্তু সনাতন শাস্ত্র यारे वनून-ना, रुष्टित গোড़ांग्न बन्ना भारूयक निया य कांख कर्त्रिहिलन এর সঙ্গে ভার সম্পূর্ণই ভফাত। মাহুষের খোলের মধ্যে ঘূর্ণিচাকার মোটর-কল না বসিয়ে মন ব'লে অত্যন্ত ছট্ফটে একটা পদার্থ ছেড়ে मिर्प्रिष्ट्रिलन। त्मरे वालारेग्रांक विमाग्न कद्राल ना भादाल याञ्चरक कल করে তোলা ত্:দাধ্য। এহিক বা পারত্তিক ভয়ে বা লোভে বা মোহমন্ত্রে এই মনটাকে আধমরা করে ভবে কর্ভারা এক দলের কাছে কেবলই আদায় করছেন তাঁতের কাপড়, আর-এক দলের কাছে কেবলই ঘানির ভেল: এক দল কেবলই জোগাচ্ছে তাঁদের ফরমাশের হাঁড়ি, আর-এক দল वानाष्टि नाउल्वय कान। जांत्र भर्त यिन नत्रकात द्य यशुरशाहिल काता वर्षा कार्ष जारमंत्र यन পেতে जाता व'ला वरम, 'यन ? मिठा जावात्र कान् जानमः हकूम करता-ना कनः यञ्ज जानकान।'

গাছ বসিম্নে বেড়া তৈরি করতে গেলে সব গাছকেই সমান থাটো করে ছাঁটতে হয়। তেমনি করে আমাদের এই ছাঁটা মনের মুল্লুকে মান্তবের

চিত্তধর্মকৈ যুগে যুগে দাবিয়ে রেখেছে। কিন্তু তা সত্ত্বেও আন্ধকেবার অবাধ্যতার যুগে এ দিকে ও দিকে তার গোটাকতক ভালপালা বিদ্রোহী হয়ে সাম্যসৌষম্যকে অতিক্রম করে যদি বেরিয়ে পড়বার হুষ্ট লক্ষণ দেখায়, যদি সকলেরই মন আজ আধার রাতের ঝিল্লিধ্বনির মতো মৃহ শুঞ্জনে একটিমাত্র উপদেশমন্ত্রের সমতান অহুকরণ না করে, তা হলে কেউ যেন উদ্বিশ্ব বা বিরক্ত না হন; কেননা স্বরাজ্বের জত্যে আশা করা তথনি হবে থাটি।

এইজন্তেই কব্ল করতে লজা হচ্ছে না (যদিও লোকভয় যথেষ্ট আছে) যে, এ পর্যন্ত চরকার আন্দোলনে আমার মন ভিতর থেকে দোল খায় নি। অনেকে সেটাকে আমার স্পর্ধা বলে মনে করবেন, বিশেষ রাগ করবেন; কেননা বেড়জালে যথন অনেক মাছ পড়ে, তথন যে মাছটা ফস্কে যায় তাকে গাল না পাড়লে মন খোলসা হয় না। তথাপি আশা করি, আমার সঙ্গে প্রকৃতিতে মেলে এমন লোকও অনেক আছেন। তাদের সকলকে বাছাই করে নেওয়া শক্ত; কেননা চরকা সম্বন্ধে তাঁদের সকলের হাত চলে না, অথচ মুখ খুব মুখর বেগেই চলে।

ষে-কোনো সমাজেই কর্মকাণ্ডকে জ্ঞানকাণ্ডের উপরে বদিয়েছে, সেইখানেই মানুষের সকল বিষয়ে পরাভব।

বৃদ্ধ থেকে আরম্ভ করে ভারতের মধ্যযুগের সাধু সাধক থাদেরই দেখি, থারাই এসেছেন পৃথিবীতে কোনো মহাবার্তা বহন করে, তাঁরা সকলেই অমনস্ক থান্ত্রিক বাহ্নিক আচারের বিরোধী। তাঁরা সব বাধা ভেদ করে কথা কয়েছিলেন মাহুষের অন্তরাত্মার কাছে। তাঁরা কপণের মতো, হিসাবি বিজ্ঞ লোকের মতো এমন কথা বলেন নি যে, আগে বাহ্নিক, তার পরে আন্তরিক; আগে অন্নবস্ত্র, তার পরে আত্মনক্রির পূর্ণতা। তাঁরা মাহুষের কাছে বড়ো দাবি করে তাকে বড়ো সন্মান দিয়েছিলেন; আর সেই বড়ো সন্মানের বলেই তার অন্তর্নিহিত প্রচ্ছন্ন সন্পদ বিচিত্র ভাবে

প্রকাশিত হয়ে সাহিত্যে, গানে, নানা কারুকলায় সমান্তকে সমৃদ্ধিশালী করেছিল। তাঁরা মানুষকে দিয়েছিলেন আলো, দিয়েছিলেন জাগরণ; অর্থাৎ তাকে দিয়েছিলেন তার আপন আত্মারই উপলব্ধি— তাতেই সবদেওয়া পূর্ণ হয়।

আদ্ধ সমস্ত দেশ জুড়ে আমাদের যদি দৈক্ত এসে থাকে, তা হলে জানা চাই, তার মূল আছে আমাদের ভিতরের দিকে। সেই মূল হুর্গতির একটিমাত্র বাহ্ন লক্ষণ বেছে নিয়ে দেশস্ক সকলে মিলে তার উপরে একটিমাত্র বাহ্মিক প্রক্রিয়া নিয়ে পড়লে শনিগ্রহ ভয় পান না। মাহ্ম্ম পাথরের মতো জড়পদার্থ হলে বাইরে হাতুড়ি ঠুকে তার মূর্তি বদল করা থেত; কিন্তু মাহুষের মূর্তিতে বাহির থেকে দৈক্ত দেখা দিলে ভিতরে প্রাণশক্তির দিকে মন দেওয়া চাই— হাতুড়ি চালাতে গেলে সেই প্রাণটার উপরেই ঘা পড়বে।

এক দিন মোগল-পাঠানের ধাকা যেই লাগল হিন্দুবাজন্বের ছোটো ছোটো আলগা পাট্কেলের কাঁচা ইমারত চার দিক থেকে থান্থান্ হয়ে ভেঙে পড়ল। দেশে তথন সংতোর অভাব ছিল না, কিন্তু সেই স্বতো দিয়ে জড়িয়ে বেঁধে ভাঙন বন্ধ করা যায় নি ; রাজার সঙ্গে তথন আর্থিক বিরোধ ছিল না, কেননা তাঁর সিংহাসন ছিল দেশেরই মাটিতে। যেথানে ছিল গাছ তার পাকা ফল পড়ত সেইখানেই গাছতলায়। আজ্ব আমাদের দেশে রাজা এক-আধজন নয়, একেবারে রাজার বক্তা ভারতের মাটি ধুয়ে তার ফসল ভাসিয়ে নিয়ে চলেছে সমৃত্রপারে। জমি তাতে ফলও হারায়, উর্বরভাও হারায়। এবারকার এ আঘাতও বে ঠেকাতে পারি নি তার কারণ এ নয় যে, আমাদের যথেই স্বতো নেই; কারণ এই যে, আমাদের মিল নেই, প্রাণ নেই।

কেউ কেউ বলেন, মোগল-পাঠানের আমলে আমাদের নি:শক্তি ছিল বটে, কিন্তু অন্নবস্ত্রও তো ছিল। নদীতে জলধারা যথন কম তথনো বাধ

मित्र (इति इति इति कृत्क इति इति काइ मित्न काइ निमान पर पर इन्न स्त त्राक्ष मात्र। ध्व मित्क नैष (इति इति व निम्न व न

তর্ক উঠবে, কাজ বাইরের থেকেও মনকে তো নাড়া দেয়। দেয় বটে, কাজের মধ্যেই যদি মনের অভিমুখে কোনো একটা চিন্তার ব্যঞ্জনা থাকে। কেরানির কাজে এটা থাকে না, এ কথা আমাদের কেরানিগিরির দেশে সকলেই জানে। সংকীর্ণ অভ্যাসের কাজে বাহ্য নৈপুণাই বাড়ে, আর বন্ধ মন ঘানির অন্ধ বলদের মতো অভ্যাসের চক্র প্রদক্ষিণ করতে থাকে। এইজন্মেই, যে-সব কাজ মুখ্যত কোনো-একটা বিশেষ শারীরিক প্রক্রিয়ার পুন:পুন: আবৃত্তি, সকল দেশেই মাহ্মষ তাকে অবজ্ঞা করেছে। কার্লাইল খ্ব চড়া গলায় dignity of labour প্রচার করেছেন; কিন্তু বিশের মাহ্মষ যুগে যুগে তার চেয়ে অনেক বেশি চড়া গলায় indignity of labour সম্বন্ধে সাক্ষ্য দিয়ে আসছে। যারা মজুরি করে তারা নিতান্ত দায়ে পড়েই সমাজের বা প্রভুর, প্রবলের বা বৃদ্ধিমানের, লোভে বা শাসনে নিজেদের যন্ত্র বানিয়ে ভোলে। তাদেরই মন্ত্র, সর্বনাশে সমুৎপরে

वर्षः তाक्रि পश्चिः। वर्षाः, ना श्वरत्न वथन यत्रत्वहे वरमह् ज्थन यनिएक वाम मिर्येह हाज চानिय (भेर हानाता। जोहे व'रन यान्यवर् প্রধানতর অর্ধেকটা বাদ দেওয়াতেই তার dignity, এমন কথা বলে তাকে সান্তনা দেওয়া তাকে বিদ্রাপ করা। বস্তুত পৃথিবীর অধিকাংশ मान्यरकरे এर यद्वी ज्वतन्त्र भन्नुजा (थरक वाँठार किरम, এर दिर राष्ट्र মন্ত সমস্যা। আমার বিশ্বাস, সব বড়ো সভাতাই হয় মরেছে নয় জীবন্যুক্ত र्याह जन्न लाक्त्र हाल वह लाक्त यन-यता क्त्र प्रधाराउरे। किनना मनरे मारुखित मन्भा। मत्नाविरीन मञ्जित वाखितक व्याभीवर थ्यक माञ्चरक कारना वाक् ममाम्रद्र वीहार् भावा यावा নিজের কাছেই নিজে ভিতর থেকে খাটো হয়ে গেছে, অন্তেরা ভাদেরই থাটো করতে পারে। যুরোপীয় সভাভায় বিজ্ঞানচর্চার সামনে বদি কোনো বড়ো নৈতিক সাধনা থাকে সে হচ্ছে বাহ্য প্রকৃতির হাতের সব वक्य याव थिएक याञ्चरक वैक्तिना, ज्याव इटक्क याञ्चरववरे यने विष्क याञ्च ना বেঁধে প্রাক্তিক শক্তিকেই যন্তে বেঁধে সমাজের কাজ আদায় করা। এ कथा निन्छि एय, विकानक এक পাশে ঠেলে রেখে কেবল হাত চালিয়ে দেশের বিপুল দারিদ্রা কিছুতে দূর হতে পারে না। মাহুষের জানা এগিয়ে চলবে না, কেবল তার করাই চলতে থাকবে, মানুষের পক্ষে এত বড়ো কুলিগিরির সাধনা আর কিছুই নেই।

একটা কথা মনে রাখতে হবে বে, মাহ্রষ যে দিন প্রথম চাকা আবিদ্বার করেছিল সে দিন তার এক মহা দিন। অচল জড়কে চক্রাকৃতি দিয়ে তার সচলতা বাড়িয়ে দেবা মাত্র, যে বোঝা সম্পূর্ণ মাহ্র্যের নিজের কাঁধে ছিল তার অধিকাংশই পড়ল জড়ের কাঁধে। সেই তো ঠিক, কেননা জড়ই তো শৃদ্র। জড়ের তো বাহিরের সন্তাব সঙ্গে সঙ্গের অন্তরের সন্তা নেই; মাহ্র্যের আছে, তাই মাহ্র্য মাত্রই দ্বিদ্ধ। তার বাহ্রিরের প্রাণ, অস্তরের প্রাণ, উভয়কেই রক্ষা করতে হবে। তাই জড়ের উপর তার বাহ্য কর্মভার

যতটাই দে না চাপাতে পারবে, ততটাই চাপাতে হবে মান্থষের উপর। স্থতরাং ততটা পরিমাণেই মামুষকে জড় ক'রে শুদ্র ক'রে তুলতেই হবে, नहेरल मभाष हलरव ना। এই-সব गाञ्चरक मूर्थ dignity मिरा किউ কথনোই dignity দিতে পারবে না। চাকা অসংখ্য শূদ্রকে শূদ্রক थ्ये भुक्ति निर्पाद्ध। এই চাকাই চরকায়, কুমোরের চাকে, গাড়ির তলায়, স্থুল স্ক্রম নানা আকারে মামুষের প্রভৃত ভার লাঘব করেছে। এই ভারলাঘবতার মতো ঐশ্বর্যের উপাদান আর নেই, এ কথা মাহুষ বহুযুগ পূর্বে প্রথম বুঝতে পারলে যে দিন প্রথম চাকা ঘুরল। ইতিহাসের मिट्टे প্रथम व्यथारिय यथन চরকা ঘুরে মান্থবের ধন-উৎপাদনের কাজে नागन धन ज्थन थिएक চক্রবর্তী হয়ে চলতে नागन, मिनिकाর চরকাতেই এসে থেমে রইল না। এই তথাটির মধ্যে কি কোনো তত্ত্ব নেই ? বিষ্ণুর শক্তির যেমন একটা অংশ পদ্ম তেমনি আর-একটা অংশ চক্র। বিষ্ণুর সেই শক্তির নাগাল মানুষ যেই পেলে অমনি সে অচলতা থেকে মুক্ত হল। এই षठन डांरे रुष्ट भून मात्रिया। मकन मिव मिकिरे षभीभ, এरेक्स চলনশীল চক্রের এথনো আমরা সীমায় এসে ঠেকি নি। এমন উপদেশ যদি মেনে বসি যে, স্থাতো কাটার পক্ষে আদিম কালের চরকাই শেষ তা হলে বিষ্ণুর পূর্ণ প্রসন্নতা কথনোই পাব না, স্থতরাং লক্ষী বিমৃথ হবেন। विख्वान মर्जलाक এই विकृठक्ति अधिकात वाषाटक এ कथा यनि जूनि, তা হলে পৃথিবীতে অন্ত যে-সব মাসুষ চক্রীর সম্মান রেখেছে তাদের চক্রান্তে আমাদের মরতে হবে।

বিজ্ঞানের দৃষ্টিতে মহাচক্রের যে বিরাট শক্তিরূপ দেখা যায় সেটাকে যথন ভূলি, যথন কোনো-এক বিশেষ কালের বিশেষ চরকাকেই স্থতো কাটবার চরম উপাদান রূপে দেখি ও অভ্যন্তভাবে ব্যবহার করি, তবে চরকা ভিতরের দিক থেকে আমাদের কাছে বোবা হয়ে থাকে; তখন বে চরকা মাহুষকে এক দিন শক্তির পথে, ধনের পথে অনেক দূর এগিয়ে

দিয়েছে সে আর এগোবার কথা বলে না। কানের কাছে আওয়াজ করে না তা নয়, কিন্তু মনের সঙ্গে কথা কয় না।

व्याभारक क्विं क्वें वर्लाह्न, 'हत्रका हाज़ा व्यात्र कारना कांक কোরো না, এমন কথা তো আমরা বলি নে।' তা হতে পারে, কিছ 'আর কোনো কাজ করো' এ কথাও তো বলা হয় না। সেই না-বলাটাই কি প্রবল একটা বলা নয়? স্বরাজসাধনায় একটিমাত্র কাজের হুকুম অতি निर्मिष्ठे, আর তার চার দিকেই নি:শক্তা। এই নি:শক্তার পটভূমিকার উপরে চরকা কি অত্যন্ত মন্ত হয়ে দেখা দিচ্ছে না? বস্তুত সে কি এতই মন্ত ? ভারতবর্ষের তেত্রিশ কোটি লোক স্বভাবস্বাভন্তা-নিবিচারে এই ঘূর্ণ্যমান চরকার কাছে যে যতটা পারে আপন সময় ও **"िक्य निर्देश ममर्थि क्यरय— हे हकात कि श्रीकृष्ट मिट्टे मिटिया आहि ?** একই পূজাবিধিতে একই দেবভার কাছে সকল মামুষকে মেলবার জন্মে আজ পর্যন্ত নানা দেশে বাবে বাবে ডাক পড়ল। কিন্তু, ভাও কি সম্ভব আর দেবার্চনাকে সব মামুষের পক্ষে এক করবার জন্ম কত রক্তপাত, क्छ निष्ठं बजाहात পृथिवौद्ध हत्न बामहा। किছू एउँ किছू इन ना, শুধু কি স্বরাজতীর্থের সাধনমন্দিরে একমাত্র চরকা-দেবীর কাছেই সকলের অর্ঘ্য এসে মিলবে ? মানবধর্মের প্রতি এত অবিশাস ? দেশের লোকের 'পরে এত অশ্রহা ?

গুপী ব'লে আমাদের এক পশ্চিমদেশী বেহারা ছিল। ছেলেবেলায় তার কাছে গল্প শুনেছিল্ম যে, যথন সে পুরীতীর্থে গিয়েছিল, জগল্পাথের কাছে কোন্ খাল্ম ফল উৎসর্গ করে দেবে এই নিয়ে তার মনে বিষম ভাবনা উপস্থিত হল। সে বার বার মনে মনে সকল রকম খাবার যোগা ফলের ফর্দ আউড়িংয় যেতে লাগল। কোনোটাতেই তার মন সায় দিলে না। অবশেষে হঠাৎ মনে পড়ে গেল বিলিতি বেগুন। তথনি ভার বিধা

গেল ঘুচে, জগন্নাথকে দিয়ে এল বিলিভি বেগুন, শেষ পর্যন্ত এ সম্বন্ধে তার পরিতাপ রইল না।

সব চেয়ে সহজ দেবতার কাছে সব চেয়ে কম দেওয়ার দাবি মাহুষের প্রতি সব চেয়ে অন্তায় দাবি। স্বরাজসাধনের নাম করে তেত্রিশ কোটি লোককে চরকা কাটতে বলা জগন্নাথকে বিলিতি বেগুন দেওয়া। আশা করি, ভারতবর্ষে তেত্রিশ কোটি গুপী নেই। বড়ো যখন ডাক দেন তথন বড়ো দাবি করেন, তখন মাহুষ ধন্ত হয়। কেননা, মাহুষ তখন আশন তুচ্ছতার মাঝখানে চমকে জেগে ওঠে, বুঝতে পারে সে বড়ো।

আমাদের দেশ আচারনিষ্ঠতার দেশ বলেই দেবতার চেয়ে পাণ্ডার পাপুজার 'পরে আমাদের ভরসা বেশি। বাহিরকে ঘৃষ দিয়ে অস্তরকে তার
দাবি থেকে বঞ্চিত করতে পারি, এমনতরো বিশাস আমাদের ঘোচে না।
আমরা মনে করি, দড়ির উপরে যদি প্রাণপণে আস্থা রাখি তা হলেই সে
নাড়ী হয়ে ওঠে। এই বাহ্নিকভার নিষ্ঠা মামুষের দাসত্বের দীক্ষা।
আত্মকর্তৃত্বের উপর নিষ্ঠা হারাবার এমন সাধনা আর নেই। এমন দেশে
দেশ-উদ্ধারের নাম করে এল চরকা। ঘরে ঘরে বসে বসে চরকা ঘোরাচ্ছি
আর মনে মনে বলছি, স্বরাজ-জগন্নাথের রথ এগিয়ে চলছে।

ঘোর পুরাতন কথাটাকে আজ নতুন করে বলতে হচ্ছে বে, স্বরাজের ভিত বাহ্য সাম্যের উপর নয়, অস্তরের ঐক্যের উপর। জীবিকার ক্ষেত্রে এই আস্তরিক ঐক্যের মস্ত একটা জায়গা আছে। বস্তুত ঐক্যেটা বড়ো হতে গেলে জায়গাটা মন্ত হওয়াই চাই। কিন্তু, মান্তবের সমগ্র জীবনযাত্রা থেকে তার একটিমাত্র ভগ্নাংশকে ছাড়িয়ে তারই উপর বিশেষ বৌকে দিলে স্থতোও মিলবে, কাপড়ও মিলবে, কেবল মান্তবের জীবনের সঙ্গে জীবনের মিল লক্ষের বাইরে পড়ে থাকবে।

ভারতবর্ষে ধর্মের ক্ষেত্রে সকলের মিল হওয়া সম্ভব নয়; আর রাষ্ট্রীয় ক্ষেত্রে সকলেই মিলবে এমন চর্চা এখানে কোনো দিন ছিল না, সবে এর আরম্ভ হয়েছে— সাধারণের মনকে সত্যভাবে অধিকার করতে অনেক দেরি হবে। এইজন্মেই জীবিকার ভিতের উপরে একটা বড়ো মিলের পত্তন করবার দিকেই আমাদের মন দিতে হবে। জীবিকার ক্ষেত্র সব চেয়ে প্রশন্ত, এখানে ছোটো-বড়ো জ্ঞানী-অজ্ঞানী সকলেরই আহ্বান আছে— মরণেরই ডাকের মতো এ বিশ্ববাপী। এই ক্ষেত্র বদি রণক্ষেত্র না হয়— যদি প্রমাণ করতে পারি, এখানেও প্রতিযোগিতাই মানবশক্তির প্রধান সত্যা নয়, সহযোগিতাই প্রধান সত্যা, তা হলে রিপুর হাত থেকে, অশান্তির হাত থেকে মন্ত একটা রাজ্য আমরা অধিকার করে নিতে পারি। তা ছাড়া এ কথাও মনে রাখতে হবে, ভারতবর্ষে গ্রামসমাজে এই ক্ষেত্রে মেলবার চর্চা আমরা করেছি। সেই মিলনের স্ত্রে বদি বা ছি'ড়ে গিয়ে থাকে, তবু তাকে সহজে জ্যোড়া দেওয়া চলে। কেননা আমাদের মনের স্বভাবটা অনেকটা তৈরি হয়ে আছে।

ব্যক্তিগত মাহুবের পক্ষে যেমন জীবিকা, তেমনি বিশেষ দেশগত মাহুবের পক্ষে তার রাষ্ট্রনীতি। দেশের লোকের বা দেশের রাষ্ট্রনায়কদের বিষয়বৃদ্ধি এই রাষ্ট্রনীতিতে আয়প্রকাশ করে। বিষয়বৃদ্ধি হচ্ছে ভেদবৃদ্ধি। এ পর্যন্ত এমনিই চলছে। বিশেষ বিশেষ রাষ্ট্র একাস্কভাবে স্থকীয় স্বার্থনাধনের যে আয়োজনে ব্যাপৃত সেই তার রাষ্ট্রনীতি। তার মিথ্যা দলিল আর অস্ত্রের বোঝা কেবলই ভারি হয়ে উঠছে। এই বোঝা বাড়াবার আয়োজনে পরস্পর পালা দিয়ে চলেছে; এর আর শেষ নেই, জগতে শান্তি নেই। যে দিন মাহুষ স্পত্ত করে ব্রুবে বে, সর্বজাতীয় রাষ্ট্রক সম্বায়েই প্রত্যেক জ্বাতির প্রকৃত স্বার্থসাধন সম্ভব, কেননা পরস্পর-নির্ভরতাই মাহুবের ধর্ম, সেই দিনই রাষ্ট্রনীতিও বৃহৎভাবে মাহুবের সত্যসাধনার ক্ষেত্র হবে। সেই দিনই সামাজিক মাহুষ যে-সকল ধর্মনীতিকে সত্য বলে স্বীকার করে, রাষ্ট্রিক মাহুষও তাকে স্বীকার করবে। স্বর্থাৎ, পরক্ষে ঠকানো, পরের ধন চুরি, আয়ুক্লাঘার নিরবচ্ছিন্ন চর্চা,

এগুলোকে কেবল পরমার্থের নয়, ঐক্যবদ্ধ মাহুষের স্বার্থেরও অস্তরায় বলে জানবে। League of Nations -এর প্রতিষ্ঠা হয়তো রাষ্ট্রনীতিতে অহমিকামুক্ত মহুস্থাত্বের আসন-প্রতিষ্ঠার প্রথম উদ্যোগ।

রাষ্ট্রনীতি ষেমন একান্ত নেশন-স্বাতন্ত্র্যে, জীবিকাপ্ত তেমনি একান্ত ব্যক্তি-স্বাতন্ত্র্যে আবদ্ধ। এখানে তাই এত প্রতিষোগিতা, ঈর্বা, প্রতারণা, মাহ্বের এত হীনতা। কিন্তু, মাহ্ব্য যথন মাহ্ব্য তথন তার জীবিকাপ্ত কেবল শক্তিনাধনার ক্ষেত্র না হয়ে মহ্ব্যুত্থনাধনার ক্ষেত্র হয়, এইটেই উচিত ছিল। জীবিকার ক্ষেত্রেও মাহ্ব্য কেবল আপন আন পাবে তা নয়, আপন সত্য পাবে, এই তো চাই। কয়েক বছর পূর্বে যে দিন সমবায়মূলক জীবিকার কথা প্রথম শুনি, আমার মনে জটিল সমস্থার একটা গাঁঠ যেন অনেকটা খুলে গেল। মনে হল যে, জীবিকার ক্ষেত্রে স্বার্থের স্বান্ত্র্যা মাহ্বের সত্যকে এত দিন অবজ্ঞা করে এসেছিল, সেখানে স্বার্থের সম্মিলন সত্যকে আদ্ধ প্রমাণ করবার ভার নিয়েছে। এই কথাই বোঝাতে বসেছে যে, দারিদ্র্য মাহ্বের অস্থিলনে, ধন তার স্থিলনে। সকল দিকেই মানব-সভ্যতার এইটেই গোড়াকার সত্য— মহ্ব্যুলোকে এ সত্যের কোথাও সীমা থাকতে পাবে, এ আমি বিশ্বাস করি নে।

জীবিকায় সমবায়তত্ত্ব এই কথা বলে যে, সত্যকে পেলেই মাহুষের দৈল্য ঘোচে, কোনো-একটা বাহ্ন কর্মের প্রক্রিয়ায় ঘোচে না। এই কথায় মাহুষ সম্মানিত হয়েছে। এই সমবায়তত্ত্ব একটা আইডিয়া; একটা আচার নয়। এইজন্ম বহু কর্মধারা এর থেকে স্পষ্ট হতে পারে। মনের সঙ্গে পদে পদেই এর মুকাবিলা। ইংরাজি ভাষায় যাকে আধা গলি বলে, জীবিকা-সাধনার পক্ষে এ সে রকম পথ নয়। বুঝেছিলুম, এই পথ দিয়ে কোনো-একটি বিশেষ আকারের অল্প নয়, স্বয়ং অল্পপূর্ণা আসবেন যার মধ্যে অল্পের সকল প্রকার রূপ এক সড্যে মিলেছে।

আমার কোনো কোনো আত্মীয় তথন সমবায়তত্তকে কাজে খাটাবার

চরকা

আয়োজন করছিলেন। তাঁদের সঙ্গে আলোচনায় আমার মন আন্দোলিত হচ্ছিল, এমন সময় আয়র্লপ্তের কবি ও কর্মবীর A. E. -রচিত National Being বইথানি আমার হাতে পড়ল। সমবায়জীবিকার একটা বৃহৎ বান্তব রূপ স্পষ্ট চোথের সামনে দেখলুম। তার সার্থকতা বে কত বিচিত্র, মাহুষের সমগ্র জীবনযাত্রাকে কেমন করে সে পূর্ণ করতে পারে, আমার কাছে তা উচ্ছল হয়ে উঠল। অন্তব্জন্ত যে ব্রন্ধ, তাকে সত্য পশ্বায় উপলব্ধি করলে মাহুষ যে বড়ো নিদ্ধি পায়— অর্থাৎ কর্মের মধ্যে ব্রুতে পারে যে, অন্তের সঙ্গে বিচ্ছেদেই তার বন্ধন, সহযোগেই তার মৃক্তি—এই কথাটি আইবিশ কবি-সাধকের গ্রন্থে পরিস্ফুট।

নিশ্চয় অনেকে আমাকে বলবেন, এ-সব শক্ত কথা। সমবায়ের আইডিয়াটাকে বৃহংভাবে কাজে খাটানো অনেক চেষ্টায়, অনেক পরীকায়, অনেক বার্থতার ভিতর দিয়ে গিয়ে তবে অনেক দিনে যদি সম্ভব হয়। কথাটা শক্ত বই কি। কোনো বড়ো সামগ্রীই সন্তা দামে পাওয়া যায় না। ত্র্লভ জিনিসের স্থসাধ্য পথকেই বলে ফাঁকির পথ। চরকায় স্বরাজ পাওয়া যায়, এ কথা অনেকে বলছেন, অনেকে বিশাসও করছেন, কিছ যিনি স্পষ্ট করে ব্রেছেন এমন লোকের সঙ্গে আজ্ঞও আমার দেখা হয় নি। কাজেই তর্ক চলে না; দেশে তর্ক চলছেও না, রাগারাগি চলছে। যায়া তর্কে নামেন তাঁয়া হিসাব করে দেখিয়ে দেন, কত চরকায় কত পরিমাণ স্থতো হয়, আর কত স্থতোয় কতটা পরিমাণ বদ্দর হতে পারে। অর্থাং, তাদের হিসাব-মতে দেশে এতে কাপড়ের দৈল্প কিছু ঘূচবে। তা হলে গিয়ে ঠেকে দৈল্য দূর করার কথায়।

কিন্তু, দৈন্ত জিনিসটা জটিল মিশ্র জিনিস। আর, এ জিনিসটার উৎপত্তির কারণ আছে আমাদের জ্ঞানের অভাবে, বৃদ্ধির ক্রটিতে, প্রধার দোবে ও চরিত্রের ত্বলভায়। মাহুষের সমস্ত জীবনধাত্রাকে এক করে ধরে তবে ভিতরে বাহিরে এর প্রতিকার করা বেভে পারে। কাজেই

প্রশ্ন কঠিন হলে ভার উত্তরটা সহজ হতে পারে না। যদি গোরা ফৌজ কামান বন্দুক দিয়ে আক্রমণ করে, তবে দিশি সেপাই তীর ধহক দিয়ে তাদের ঠেকাতে পারে না। কেউ কেউ বলেছেন, কেন পারবে না? দেশস্থ লোক মিলে গোরাদের গায়ে যদি থ্থ ফেলে তবে কামান বন্দুক সমেত তাদের ভাসিয়ে দেওয়া যেতে পারে। এই থ্থু ফেলাকে বলা যেতে পারে ত্রংথগম্য তীর্থের স্থেসাধ্য পথ। আধুনিক কালের বিজ্ঞানাভিমানী যুদ্ধপ্রণালীর প্রতি অবজ্ঞাপ্রকাশের পক্ষে এমন নিথুত অথচ সরল উপায় আর নেই, এ কথা মানি। আর এও নাহয় আপাতত মেনে নেওয়া গেল য়ে, এই উপায়ে সরকারি থ্ংকার-প্রাবনে গোরাদের ভাসিয়ে দেওয়া অসম্ভব নয়; তর্ মাহ্যের চরিত্র যারা জানে তারা এটাও জানে য়ে, তেত্রিশ কোটি লোক একসক্ষে থ্যু ফেলবেই না। দেশের দৈন্ত-সমুদ্র সেনে ফেলবার উদ্দেশে চরকা-চালনা সহক্ষেও ঐ কথা বলা চলে।

আয়র্লপ্তে সার হরেস প্ল্যাকেট যথন সমবায়-জীবিকা-প্রবর্তনে প্রথম লেগেছিলেন তথন কত বাধা, কত ব্যর্থতার ভিতর দিয়ে গিয়েছিলেন, কত নৃতন নৃতন পরীক্ষা তাঁকে করতে হয়েছিল; অবশেষে বহু চেষ্টার পরে সফলতার কী রকম শুরু হয়েছে National Being বই পড়লে তা বোঝা যাবে। আগুন ধরতে দেরি হয়, কিন্তু যথন ধরে তথন ছড়িয়ে মেতে বিলম্ব হয় না। শুধু তাই নয়, আসল সত্যের স্বরূপ এই য়ে, তাকে য়ে দেশের য়ে কোণেই পাওয়া ও প্রতিষ্ঠিত করা যায় সকল দেশেরই সমস্তা সে সমাধান করে। সার হরেস প্ল্যার্কেট যথন আয়র্লপ্তে সিদ্ধিলাভ করলেন তথন তিনি একই কালে ভারতবর্ষের জন্তেও সিদ্ধিকে আবাহন করে আনলেন। এমনি করেই কোনো সাধক ভারতবর্ষের একটিমাত্র পল্লীতেও দৈন্ত দ্র করবার মূলগত উপায় বদি চালাতে পারেন, তা হলে তিনি তেত্রিশ কোটি ভারতবাসীকেই চিরকালের সম্পদ দিয়ে যাবেন। আয়তন

পরিমাপ করে বারা সত্যের বাথার্থ্য বিচার করে ভারা মভ্যকে বাহিক ভাবে জড়ের সামিল করে দেখে; ভারা জানে না বে, অভি ছোটো বীজের মধ্যেও বে প্রাণটুকু থাকে সমস্ত পৃথিবীকে অধিকার করবার পরোয়ানা সে নিয়ে আসে।

এই যাত্র আমার একজন বন্ধু বললেন যে, 'দেলের সাধারণ দৈল্ভ-দূর বা স্বাজলাভ বললে যতথানি বোঝায় তোমার মতে চরকায় স্থতো কাটার नका তত मृत পर्यस्व ना ७ यमि পौछ्य, তাতেই वा मात्र की ? চাयেत काक যথন বন্ধ থাকে তথন চাষির, এবং গৃহকাঞ্চ প্রভৃতি সেরেও গৃহস্থর, হাতে যে উপরি সময় বাকি থাকে তাকে সকলে মিলে কোনো সর্বজনসাধ্য माडवान काट्य नागाम माधावरवित्र व्यवश्वात व्यवक उन्नि श्रांक श्वात वाद्य, দেশে চরকা চলিত করার এই শুভ ফলটুকুই ধরে নাও-না কেন?' মনে वाह्न, এই बाउोय वात-এक हो कथा भूदि स्टाहिन्य। वामाहित हिल् অধিকাংশ লোকেই ভাতের ফেন ফেলে দিয়ে থাকে। ভার বারা সমস্ত ভারত জুড়ে যে পুষ্টিকর খাঘ্য নষ্ট হয়, তা সকলে মিলেই যদি রক্ষা করি তা হলে মোটের উপরে অনেকটা অন্নকষ্ট দূর হতে পারে। কথাটার মধ্যে সত্য আছে। ফেন-সমেত ভাত খেতে গেলে অভান্ত কচিব কিছু বদল कदा ठारे, किंह फल्बद প্ৰতি नक क'दि प्रथल मिछ। इःमाधा रुख्या উচিত नय। এই वक्य এমন আবো অনেক জিনিস আছে যাকে আমাদের रिम्यनाघव-উপায়ের তালিকার মধ্যে ধরা যেতে পারে। এ সম্বন্ধে ধারা यो जाला वात्यन ठानाए हो कक्न-ना ; जात कात्नाहार धन বাড়বে, কোনোটাভে ভার সঙ্গে পুষ্টিও বাড়বে, কোনোটাভে কিছু পরিমাণে আলস্তদোষ কেটে যাবে। কিন্তু দেশে স্বরাজনাভের বে একটা বিশেষ উদ্যোগ চলছে, দেশস্থদ্ধ সকলে মিলে ভাতের ফেন না ফেলাকে তার একটা সর্বপ্রধান অক্ষরপ করার কথা কারও তো মনেও र्य ना। जाद कि कारना कादण त्नरे ? এ मश्रक व्यामाद कथांग পविकाद

146

क्रवात खट्छ धर्मगाधनात मुष्ठास्त्र मिएल भाति। এই সাधन मश्रक উপদেশ मिख्यात छे भन क्या है यिन विराग का त्र किर्य हो का त्र वा त्र विराग है य ষে, যার-ভার কুয়ো থেকে জল খেলে ধর্মভ্রন্তভা ঘটে, ভবে ভার বিরুদ্ধে প্রধান আপত্তি এই ষে, এমন উপদেশে ধর্মসাধনার নৈতিক পন্থার यूना कियर प्राच्या रय। यात्र-ভात क्रियां एक यनिन । थाकात व्यानका আছে, সেই মলিনতায় স্বাস্থ্য ক্লিষ্ট হয়, স্বাস্থ্যের বিকারে চিত্তের বিকার घटि, मिरे विकारित धर्मशानि रुख्यात जानका जाहि— এ-मव कथारे मछा व'ल মানলেও তবু বলতেই হবে, অপ্রধানকে পরিমাণ-অতিরিক্ত মূল্য मिल তাতে প্রধানের মূল্য কমে যায়। সেইজন্মেই আমাদের দেশে এমন অসংখ্য লোক আছে, মুসলমান যাদের কুয়ো থেকে জল তুলতে এলে মুসলমানকে মেরে খুন করতে যারা কুন্তিত হয় না। ছোটোকে বড়োর न्यान जानन मिल रन न्यान थारक ना, रन वर्षाक हाष्ट्रिय याय। এইজন্তেই জলের ভচিতা-রক্ষার ধর্মবিধি মাহুষের প্রাণহিংসা না করার धर्मविधिक जनायाम नज्यन कदण्ड (भर्तिह। जामामिद मिला-ধর্মের সঙ্গে আচারধর্মকে মিলিয়ে দেওয়ার ঘারা এ রকম তুর্গতি যে কত घेटिइ, তা বলে শেষ করা যায় না। আমাদের এই মজ্জাগত সনাতন অভ্যাদেরই জোরে আজ চরকা খদর সর্বপ্রধান স্বারাজিক ধর্মকর্মের বেশে গদা হাতে বেড়াতে পারল, কেউ ভাতে বিশেষ বিশ্বিত হল না। এই প্রাধান্তের ঘারাতেই দে অনিষ্ট করছে, আমাদের দেশের বহুযুগদঞ্চারী তুর্বলতার আর-একটা নতুন খাশ্য জুগিয়ে দিচ্ছে। এর পরে আর-এক मिन जात-कारना वनमानी गुक्ति रुष्ठा जात्राका-मिश्हामन (थरक প্রচার कदर्दन रव, ভাতের ফেন যে ফেলে দেয় সেই অন্নঘাতীকে মন্ত্রণা-সভায় ঢুকতে দেব না। তাঁর যদি বথেষ্ট জোর থাকে এবং তাঁর শাসন यिन विभ पिन हरन তবে আমাদের তুর্ভাগ্য দেশে এক দিন সাধু লোকে নিজেদের শুচিতা-বক্ষার জন্তে ভাতের ফেন-পাত উপলক্ষ্যে মাহুষের

বজ্ঞ-পাত করতে থাকবে। বিদেশী কাপড় পরায় অশুচিতা ঘটে এই নিষেধ যদি দেশের অধিকাংশ লোকে গ্রহণ করে, এবং অন্ন জল প্রভৃতি সম্বনীয় অশুচিতা-বোধের সঙ্গে সঙ্গে আমাদের সংস্থারগত হয়ে ওঠে, তা হলে সে দিন ইদের দিনে কলকাতায় যে রকম মাথা-ফাটাফাটি হয়েছে এ নিয়েও এক দিন ক্লেচ্ছ ও অফ্লেচ্ছদের মধ্যে তেমনি সাংঘাতিক দ্বন্ধ বেধে বাবে। যে আচারপরায়ণ সংস্থারের অন্ধতা থেকে আমাদের দেশে অস্পৃশুতারীতির উৎপত্তি, সেই অন্ধতাই আজ রাপ্রিক ও আর্থিক ক্লেক্তে আবির্ভূত হয়ে চরকা-খাদেরিক অস্পৃশুতা-তত্ত্ব জাগিয়ে তুলছে।

क्षि क्षि वनः वन, 'তুমি ষে সমবায়দ্দী বিকার কথা বলছ সকলে মিলে চরকা কাটাই তো তাই।' আমি তা মানি না। সমস্ত হিন্দুসমাজে মিলে কুয়োর জলের শুচিতা রক্ষা করলেও সেটা জীবাণুভত্মূলক স্বাস্থা-विकान हाय स्टिंग ना ; स्टों अक्टों क्य, स्टों अक्टों मेरा नय । अहेक्ट स कूर्यात सन वथन ७६ थाक्ट् भूकूर्वत सन ज्थन मनिन इस्क, घरवत কানাচের কাছে গর্ভন্ন ডোবায় তখন রোগের বীজাণু অপ্রতিহত প্রভাবে যমরাজের শাসন প্রচার করছে। আমাদের দেশে কান্থন্দি তৈরি করবার সময় আমরা অত্যম্ভ সাবধান হই— এই সাবধানতার মূলে প্যাস্টার-আবিষ্ণত তত্ত আছে, কিন্তু বেহেতু তত্তা রোগের বীজাণুর মতোই অদুস্ত আর বাহা কর্মটা পরিস্ফীত পিলেটারই মতো প্রকাণ্ড দেইজন্তেই এই कर्यशानी एक क्वनमाज काञ्चिनि है वाहर्ष, माञ्च वाहर्ष ना। अक्माज মতোই, একমাত্র স্থতো তৈরির বেলাতেই তেত্রিশ কোটি লোকে মিলে বিশেষ আচার রক্ষা। তাতে হতো অনেক জমবে, কিন্তু যুগে যুগে य अक्ठा खरम উঠে আমাদের দারিদ্রাকে গড়বন্দী করে রেখেছে তার গায়ে হাত পড়বে না।

महाजािक्य मरक कारना विवस्य कामाय मरख्य वा कार्यश्रमानीय

কালাস্তর

ভিন্নতা আমার পক্ষে অত্যস্ত অক্ষচিকর। বড়ো করে দেখলে ভাতে कारना माय तरह। किन्न जरू तर नमस्य यन यातन ना। कनना, रांकि প্রীতি করি, ভক্তি করি, তাঁর সঙ্গে কর্মক্ষেত্রে সহযোগিতার মতো আনন্দ আর কী হতে পারে? তাঁর মহৎ চরিত্র আমার কাছে পরম বিশ্বয়ের বিষয়। ভারতের ভাগ্যবিধাতা তাঁর হাত দিয়ে একটি দীপামান হর্জয় मिया শক্তি আমাদের কাছে পাঠিয়ে দিয়েছেন। এই শক্তি ভারতবাদীকে অভিভূত ना कक्रक, वनभानी कक्रक; তাকে निष्क्रत मन निष्म िष्ठा করতে, সংকল্প করতে, ত্যাগ করতে শিক্ষা দিক— এই আমার কামনা। ষে কারণ ভিতরে থাকাতে রামমোহন রায়ের মতো অত বড়ো মনস্বীকেও মহাত্মা বামন বলতে কুঠিত হন নি— অথচ আমি সেই রামমোহনকে আধুনিক যুগের মহত্তম লোক বলেই জানি— সেই আভাস্তরিক মনঃ-প্রকৃতি-গত কারণই মহাত্মাজির কর্মবিধিতে এমন রূপ ধারণ করেছে যাকে আমার স্বধর্ম আপন ব'লে গ্রহণ করতে পারছে না। সেক্সন্তো আমার থেদ রয়ে গেল। কিন্তু, সাধনার বিচিত্র পথই বিধাতার অভিপ্রেত, নইলে প্রকৃতিভেদ জগতে কেন থাকবে ? ব্যক্তিগত অমুরাগের টানে মহাত্মাজির कां एथरक ठतकां में को निवाद अवन हे छ। वाद्य वाद्य आभाव मरन এদেছে। কিন্তু, আমার বৃদ্ধিবিচারে চরকার যতটুকু মর্যাদা তার চেয়ে পাছে বেশি স্বীকার করা হয়, এই ভয়ে অনেক দিধা করে নিরন্ত হয়েছি। মহাত্মাজি আমাকে ঠিক বুঝবেন জানি, এবং পূর্বেও বার বার আমার প্রতি ষেমন ধৈর্ঘ রক্ষা করেছেন আজও করবেন; আচার্ঘ রায়মশায়ও জনাদরনিরপেক্ষ মতস্বাভদ্রাকে শ্রন্ধা করেন, অতএব মাঝে মাঝে বক্ততা-সভায় যদিচ মুখে তিনি আমাকে অকস্মাৎ তাড়না করে উঠবেন, তবু चरुत्त यागात श्रिक निषक्ष रूपन ना। यात, यात्रा यागात्र प्राप्तत लाक, गाँपित চিন্তবোত বেমে উপকার আর অপকার উভয়েরই কত चुि चि वित्य परिषा जिल्ला राम, जांदा आंक वामारक यमि क्या ना

চরকা

করেন কাল সমস্তই ভূলে যাবেন। আর যদি বা না ভোলেন, আমার কপালে তাঁদের হাতের লাজনা যদি কোনো দিন নাও ঘোচে, তবে আজ যেমন আচার্য ব্রজ্জেনাথকে লাজনার সঙ্গী পেয়েছি কালও তেমনি হয়তো এমন কোনো কোনো স্বদেশের অনাদৃত লোককে পাব যাদের দীপ্তি ঘারা লোকনিশা নিশিত হয়।

ভান্ত ১৩৩২

সরাজসাধন

আমাদের দেশে বিজ্ঞ লোকেরা সংস্কৃত ভাষায় উপদেশ দিয়েছেন যে, 'যত খূলি কথায় বলো, লেখায় লিখো না।' আমি এ উপদেশ মানি নি, তার ভূরি প্রমাণ আছে। কিছু পরিমাণে মেনেওছি, সে কেবল উত্তর লেখা সম্বন্ধে। আমার যা বলবার তা বলতে কম্বর করি নে; কিছু বাদ যখন প্রতিবাদে পৌছয় তখন কলম বন্ধ করি। যত রকম লেখার বায়ু আছে ছন্দে এবং অছন্দে, সকলেরই প্রভাব আমার উপর আছে— কেবল উত্তরবায়ুটাকে এড়িয়ে চলি।

মত বলে যে-একটা জিনিস আমানের পেয়ে বসে সেটা অধিকাংশ স্থানেই বিশুদ্ধ যুক্তি দিয়ে গড়া নয়, তার মধ্যে অনেকটা অংশ আছে যেটাকে বলা যায় আমাদের মেজাজ। যুক্তি পেয়েছি বলে বিশ্বাস করি, সেটা অল্ল ক্ষেত্রেই; বিশ্বাস করি ব'লেই যুক্তি জুটিয়ে আনি, সেইটেই অনেক ক্ষেত্রে। একমাত্র বৈজ্ঞানিক মতই থাটি প্রমাণের পথ দিয়ে সিদ্ধান্তে পৌছয়; অন্ত জাতের মতগুলো বারো আনাই রাগ-বিরাগের আকর্ষণে ব্যক্তিগত ইচ্ছার কেন্দ্রকে প্রদক্ষিণ করতে থাকে।

এ কথাটা থ্বই থাটে, ষথন মতটা কোনো ফললোভের উপর প্রতিষ্ঠিত, আর সেই লোভ ষথন বছসংখ্যক লোকের মনকে অধিকার করে। সেই বছ লোকের লোভকে উত্তেজিত করে তাদের তাড়া লাগিয়ে কোনো-একটা পথে প্রবৃত্ত করতে যুক্তির প্রয়োজন হয় না; কেবল পথটা থ্ব সহজ হওয়া চাই, আর চাই দ্রুত ফললাভের আশা। থ্ব সহজে এবং থ্ব শীন্ত স্বরাজ পাওয়া যেতে পারে, এই কথাটা কিছু দিন থেকে দেশের মনকে মাতিয়ে রেখেছে। গণমনের এই রকম ঝোড়ো স্বস্থায় এ সম্বন্ধে কোনো প্রশ্ন নিয়ে বাদ-প্রতিবাদ উত্তর-প্রত্যান্তর কেবল-

সরাজসাধন

মাজ বাগ্বিতণ্ডার সাইক্লোন আকার ধরে; সেই হাওয়ার পাল তুলে দিয়ে কোনো মতকে কোনো বন্দরে পৌছিয়ে দেওয়া সহজ্ञ নয়। বছকাল থেকে আমাদের ধারণা ছিল অরাজ্ঞ পাওয়া তুর্লভ; এমন সময়ে বেই আমাদের কানে পৌছল বে, অরাজ্ঞ পাওয়া খুবই সহজ্ঞ এবং অতি অল্ল দিনের মধ্যেই পাওয়া অসাধ্য নয়, তথন এ সমজে প্রেল্ল ত্রালার মোহর করে লাকের ক্লচি রইল না। তামার পয়সাকে সয়াসী সোনার মোহর করে দিতে পারে, এ কথায় বারা মেতে ওঠে তারা বৃদ্ধি নেই বলেই যে মাতে তা নয়, লোভে পড়ে বৃদ্ধি বাটাতে ইচ্ছে করে না বলেই তাদের এত উত্তেজনা।

আয় কিছু দিন হল, স্বাজ হাতের কাছে এসে পৌচেছে ব'লে দেশের লোক বিচলিত হয়ে উঠেছিল। তার পরে মেয়াদ উত্তীর্ণ হয়ে গেলে কথা উঠল, শর্ত পালন করা হয় নি ব'লেই আমরা বঞ্চিত হয়েছি। এ কথা থ্ব অয় লোকেই ভেবে দেখলেন যে, আমাদের সমস্থাই হচ্ছে শর্ত প্রতিপালন নিয়ে। স্বাজ পাবার শর্ত আমরা পালন করি নে ব'লেই স্বাজ পাই নে, এ কথা তো স্বতঃসিয়। হিন্দু-মুসলমানে যদি আয়ীয়ভাবে মিলতে পারে তা হলে স্বাজ পাবার একটা বড়ো ধাপ তৈরি হয়, কথাটা বলাই বাছলা। ঠেকছে ঐখানেই যে, হিন্দু-মুসলমানের মিলন হল না; যদি মিলত তবে পাজিতে প্রতি বংসরে যে ৬৯৫টা দিন আছে, সব কটা দিনই হত ভ্রদিন। এ কথা সত্য যে, পাজিতে দিন স্থির করে দিলে নেশা লাগে, তাই ব'লে নেশা লাগলেই যে পথ সহজ হয় তা বলতে পারি নে।

পাজির নির্দিষ্ট দিন অনেক কাল হল ভেসে চলে গেছে, কিন্তু নেশা ছোটে নি। সেই নেশার বিষয়টা এই বে, স্বরাজিয়া সাধন হচ্ছে সহজিয়া সাধন। একটি বা হুটি সংকীর্ণ পথই ভার পথ। সেই পথের অন্তর্গত হয়ে পড়েছে চরকা।

তা হলেই প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করতে হয়, স্বরাজ জিনিসটা কী। আমাদের দেশনায়কেরা স্বরাজের স্কল্পন্ট ব্যাখ্যা করেন নি। স্বাধীনতা শব্দটার মানে বিস্তৃত। নিজের চরকায় নিজের স্থতো কাটার স্বাধীনতা আমাদের আছে। কাটি নে তার কারণ কলের স্থতোর সব্দে সাধারণত চরকার স্থতো পাল্লা রাখতে পারে না। হয়তো পারে, যদি ভারতের বহু কোটি লোক আপন বিনা মূল্যের অবসরকাল স্থতো কাটায় নিযুক্ত ক'রে চরকার স্থতোর মূল্য কমিয়ে দেয়। এটা যে সম্ভবপর নয় তার প্রমাণ এই যে, বাংলাদেশে যারা চরকার পক্ষে লেখনী চালাচ্ছেন তারা অনেকেই চরকা চালাচ্ছেন না।

বিতীয় কথা হচ্ছে এই যে, দেশে সকলে মিলে চরকা চালালে অর্থকষ্ট কিছু দ্ব হতে পারে, কিন্তু সেও শ্বরাজ নয়। না হোক, সেটা অর্থ বটে তো। দরিদ্রের পক্ষে সেই বা কম কী? দেশের চাষিরা তাদের অবসর-কাল বিনা উপার্জনে নষ্ট করে; তারা যদি সবাই স্থতো কাটে তা হলে তাদের দৈল্ল অনেকটা দ্ব হয়।

সীকার করে নেওয়া যাক, এও একটা বিশেষ সমস্যা বটে। চাষিদের উদ্বৃত্ত সময়টাকে কাজে লাগাতে হবে। কথাটা শুনতে যত সহজ তত সহজ নয়। এই সমস্যার সমাধানভার যদি নিতেই হয়, তবে এ সম্বদ্ধে বৃদ্ধির হ্রহ সাধনা দরকার। সংক্ষেপে বলে দিলেই হল না— ওরা চরকা কাটুক।

চাষি চাষ করা কাজের নিয়ত অভ্যাসের ঘারা আপনার মনকে ও দেহকে একটা বিশেষ প্রবণতা দিয়েছে। চাষের পথই তার সহজ্ব পথ। যথন সে চাষ করে তথনি সে কাজ করে, বথন চাষ করে না তথন কাজ করে না। কুঁড়ে বলে কাজ করে না, এ অপবাদ তাকে দেওয়া অক্যায়। যদি সম্বংসর তার চাষ চলতে পারত, তা হলে বছর ভরেই সে কাজ করত।

স্বরাজসাধন

চাব প্রভৃতি হাতের কাজের প্রকৃতিই এই বে, তাতে চালনার অভাবে মনকে নিশ্চেষ্ট করে দেয়। একটা চিরাভান্ত কাজের থেকে আর-একটা ভিন্ন প্রকৃতির কাজে যেতে গেলেই মনের সক্রিয়তা চাই। কিন্তু চাব প্রভৃতি মজুরির কাজ লাইন-বাধা কাজ। তা চলে ট্রামগাড়ির মতো। হাজার প্রয়োজন হলেও লাইনের বাইরে নতুন পথ তার পক্ষে সহজ নয়। চাবিকে চাবের বাইরে বে কাজ করতে বলা যায় তাতে তার মন ভিরেল্ড্ হয়ে বায়। তব্ ঠেলেঠলে তাকে হয়তো নড়ানো বেতে পারে, কিন্তু তাতে শক্তির বিন্তর অপব্যয় ঘটে।

বাংলাদেশের অন্তত দুই জেলার চাষির সঙ্গে আমার ঘনিষ্ঠ পরিচয়।
অভ্যাসের বাঁধন তাদের পক্ষে বে কত কঠিন তার অভিজ্ঞতা আমার
আছে। এক জেলা এক ফসলের দেশ। সেখানে ধান উৎপন্ন করতে
চাষিরা হাড়ভাঙা পরিশ্রম করে। তার পরে তাদের ভিটের জমিতে
তারা অবসরকালে সবজি উৎপন্ন করতে পারত। উৎসাহ দিয়েছিলুম,
ফল পাই নি। যারা ধান-চাষের জন্ত প্রাণপণ করতে পারে, তারা সবজিচাষের জন্ত একটুও নড়ে বসতে চান্ন না। ধানের লাইন থেকে সবজির
লাইনে তাদের মনকে ঠেলে তোলা কঠিন।

আর-এক জেলায় চাষি ধান পাট আখ সর্বে প্রভৃতি সকল রকম চাষেই লেগে আছে। কিন্তু, যে জমিতে এ-সব শশু সহজে হয় না সে জমি তাদের বৃথা পড়ে থাকে, তার খাজনা বহন করে চলে। অথচ বংসরে বংসরে পশ্চিম-অঞ্চল থেকে চাষি এসে এই জমিতেই তর্মুজ থর্মুজ কাকুড় প্রভৃতি ফলিয়ে যথেষ্ট লাভ করে নিয়ে দেশে ফিরে যায়। তর স্থানীয় চাষি এই অনভাশ্ত ফসল ফলিয়ে অবস্থার উন্নতি করতে বিমৃধ। তাদের মন সরে না। যে চাষি পাটের ফলন করে তাকে স্থভাবত অলস বলে বদনাম দেওয়া চলে না। শুনেছি পৃথিবীর অক্তরে কোথাও কোথাও পাট উৎপন্ন করা কঠিন নয়, কিন্তু সেধানকার লোকেরা পাট প্রস্তুত্ত

করার ত্:সাধ্য ত্:থ বহন করতে নারাজ। বাংলাদেশে বে পাট একচেটে তার একমাত্র কারণ এথানকার জমিতে নয়, এথানকার চাষিতে। অথচ আমি দেখেছি, এই চাষিই তার বালুজমিতে তর্মুজ ফলিয়ে লাভ করবার দৃষ্টাস্ত বংসর বংসর স্বচক্ষে দেখা সত্ত্বেও এই অনভ্যস্ত পথে থেতে চায় না।

যথন কোনো-একটা সমস্তার কথা ভাবতে হয় তথন মাহুষের মনকে की करत्र এक পথ থেকে আর-এক পথে চালানো যায়, সেই শক্ত কথাটা ভাৰতে হয়: কোনো একটা সহজ উপায় বাহ্যিকভাবে বাংলিয়ে দিলেই যে कांक शिमन रुप, जा विश्वाम कति नि— याञ्चरित यत्नत्र मत्त्र त्रकानिश्वि क्रवारे रुन গোড़ाव काञ्च। हिन्दू-पूर्यन्यात्वव यिनन हाक, वाहित्वव पिक थ्याक এই পরোয়ানা জাহির করা কঠিন নয়। এই উপলক্ষ্যে হিন্দুরা थिनाक्छ ज्ञान्मान्ति योग मिटल भार्त्र, किनना मि त्रक्म योग मिल्या थूवरे मरुक। এমন कि निष्कापित आर्थिक स्विधि भूमनभानपित क्रम অনেক পরিমাণে ত্যাগ করতে পারে; সেটা ত্রহ সন্দেহ নেই, তবু 'এহ বাহা'। किन्छ, हिन्दू-মুসলমানের মিলনের উদ্দেশে পরস্পারের মনের চিরাগত সংস্থারের পরিবর্তন করা সহজ্ব নয়। সমস্রাটা সেইখানেই ঠেকেছে। हिन्द्र काष्ट्र मूमलयान অশুहि, जांद्र मूमलयानित्र काष्ट्र हिन्द्र काष्ट्र द স্বরাজপ্রাপ্তির লোভেও এ কথাটা ভিতর থেকে উভয় পক্ষের কেউ ভূলতে भारत ना। जामि এक कन है र दिक्षिन वित्न कथा कान रूप, हो छिलत খানার প্রতি তাঁর খুব লোভ ছিল। তিনি আর-সমস্তই ফচিপূর্বক षाश्व क्रवालन, क्वाल धाउँ-क्रेग्डोव्यन जांख्डा वाम मिर्जन; वनर्जन, यूमनयात्नव वाद्या ভাতটা किছুতেই মুখে উঠতে চাম না। যে সংস্থাব-গত কারণে ভাত থেতে বাধে সেই সংস্কারগত কারণেই মুসলমানের मक्ष ভाला करत्र मिमज् जांत्र वाधरव। धर्मनिय्रस्य व्याप्तम निर्य भत्नित्र (य-मकल ज्ञांम जामापित ज्ञांनिहिज महे ज्ञांप्यत मधाहे

সরাজসাধন

হিন্দু-মুসলমান-বিরোধের দৃঢ়তা 'আপন সনাতন কেলা বেঁধে আছে; থিলাফতের আফুকুলা বা আধিক তাগেশীকার সেই অন্দরে গিয়ে পৌছয় না।

আমাদের দেশের এই-সকল সমস্যা আন্তরিক বলেই এত তুরহ। বাধা আমাদের প্রত্যেকের মনের মধ্যেই আছে; সেটা দূর করবার কথা বললে আমাদের মন বিজ্ঞোহী হয়ে ওঠে। এই কারণে একটা অত্যন্ত সহজ্ব বাহ্যিক প্রণালীর কথা শুনলেই আমরা হাঁফ ছেড়ে বাঁচি। ঠিক পথে অর্থ-উপার্জনের বাধা বার অস্তরের মধ্যে আছে সেই ব্যক্তিই জুয়ো থেলে রাভারাতি বড়োমান্ত্র হবার ত্রাশায় নিজের সর্বনাশ করতেও প্রস্তুত হয়।

চরকা কাটা শ্বরাজ্যাধনার প্রধান অঙ্গ এ কথা যদি সাধারণে শ্বীকার করে তবে মানতেই হয়, সাধারণের মতে শ্বরাজ্যা একটা বাহ্য ফললাভ। এইজন্তই দেশের মঙ্গলসাধনে আত্মপ্রভাবের যে-সকল চরিত্রগত ও সামাজিক প্রথাগত বাধা আছে সেই প্রধান বিষয় থেকে আমাদের মনকে সরিয়ে এনে চরকা-চালনার উপরে তাকে অত্যন্ত নিবিষ্ট করলে লোকে বিশ্বিত হয় না, বরঞ্চ আরাম পায়। এমন অবস্থায় ধরেই নেওয়া যাক গে, চাধিরা তাদের অবসরকাল যদি লাভবান কাজে লাগায় তা হলে আমাদের শ্বরজ্বাভের একটা প্রধান অন্তরায় দ্ব হতে পাবে; ধরেই নেওয়া যাক, এই বাহ্যিক ব্যাপারটাই আমাদের দেশে সব চেয়ে আজ্ব পর্ম চিস্তনীয়।

তা হলে দেশনায়কদের ভাবতে হবে, চাষিদের অবকাশকালকৈ
সমাক্রপে কী উপায়ে থাটানো বেতে পারে। বলা বাছলা, চাবের কাজে
থাটাতে পারলেই ঠিক রাস্তাটা পাওয়া বায়। আমার বদি কঠিন
দৈশুসংকট ঘটে তবে আমার পরামর্শদাতা হিতৈষীকে এই কথাই স্বাগ্রে
চিস্তা করতে হবে বে, আমি দীর্ঘকাল ধরে সাহিত্যরচনাতেই অভাস্ত।

বাগ্রাবসায়ের প্রতি তাঁর যতই অপ্রকাথাক, আমার উপকার করতে চাইলে এ কথা তিনি উড়িয়ে দিতে পারবেন না। তিনি হয়তোঁ হিসাব থতিয়ে আমাকে স্পষ্ট দেখিয়ে দিতে পারেন যে, ছাত্রদের জয়ে কলেজ-পাড়ায় যদি চায়ের দোকান খুলি তা হলে শতকরা ৭০ টাকা হারে মৃনফা হতে পারে। হিসাব থেকে মান্তবের মনটাকে বাদ দিলে লাভের অফটাকে খুব বড়ো করে দেখানো সহজ। চায়ের দোকান করতে গিয়ে আমি যে নিজেকে সর্বস্বাস্ত করতে পারি তার কারণ এ নয় যে, স্থোগ্য চাওয়ালার মতো আমার বৃদ্ধি নেই, তার কারণ চাওয়ালার মতো আমার মন নেই। অতএব হিতৈয়া বন্ধু যদি আমাকে ভিটেক্টিভ গল্প লিখতে বা স্থলকলেজ-পাঠ্য বিষয়ের নোট লিখতে বলেন, তবে নিভান্ত দায়ে ঠেকলে হয়তো সেটা চেন্তা দেখতে পারি। আমার বিশ্বাস, চায়ের দোকান খোলার চেয়ে তাতে আমার সর্বনাশের সম্ভাবনা কম হবে। লাভের কথায় যদি বা সন্দেহ থাকে, অন্তত এ কথাটা নিশ্চিত বে, সাহিত্যিকের মনটাকে কাব্যের লাইন থেকে ভিটেক্টিভ গল্পের লাইনে স্থইচ করে দেওয়া ছ্:সাধ্য নয়।

চিরজীবন ধরে চাধির দেহমনের যে শিক্ষা ও অভ্যাস হয়েছে ভার থেকে ভাকে অকমাং ঠেলে ফেলে দিয়ে ভাকে স্থী বা ধনী করা সহজ নয়। পূর্বেই বলেছি, মনের চর্চা ধাদের কম গোঁড়ামি ভাদের বেশি, সামান্ত পরিমাণ নৃতনত্ত্বেও ভাদের বাধে। নিজের প্ল্যানের অভ্যন্ত সহজত্বের প্রতি অহুবাগবশত মনশুত্বের এই নিয়মটা গায়ের জোরে লঙ্খন করবার চেষ্টা করলে ভাভে মনশুত্বে অবিচলিত থাক্বে, প্ল্যানটা জ্বম হবে।

চাষিকে চাষের পথে উত্তরোত্তর অধিক পরিমাণে চরিতার্থ করবার চেষ্টা অক্যান্ত কোনো কোনো কৃষিকেত্রবহুল দেশে চলেছে। দে-সব জায়গায় বৈজ্ঞানিক বৃদ্ধি থাটিয়ে মাতৃষ চাষের বিশ্বর উন্নতি করেছে।

স্রাজসাধন

আমাদের দেশের সঙ্গে তুলনা করলে দেখা যায়, তারা তাদের জমি থেকে আমাদের চেয়ে বিগুণ চারগুণ বেশি ফসল আদায় করছে। এই জ্ঞানালোকিত পথ সহজ পথ নয়, সত্য পথ। এই পথ-আবিকারে মহয়ত্বের প্রমাণ হয়। চাবের উৎকর্ষ-উদ্ভাবনের বারা চাষির উপ্তমকে যোলো-আনা খাটাবার চেষ্টা না করে তাকে চরকা ঘোরাতে বলা শক্তিহীনতার পরিচয়। আমরা চাষিকে অলস বলে দোষ দিই, কিন্তু তার অবস্থার উন্নতিসাধনের উদ্দেশ্যে আমরা যথন তাকে চরকা ধরতে পরামর্শ দিই তথন সেটাতে আমাদেরই মানসিক আলস্তের প্রমাণ হয়।

এত কণ এই যা আলোচনা করা গেল এটা এই মনে করেই করেছি
যে, প্রতো ও গদর বছল পরিমাণে দেশে উৎপন্ন হলে তাতে এক দল
শ্রমিকের অর্থকিষ্ট দূর হবে। কিন্তু, সেও মেনে-নেওয়া কথা। এ সম্বন্ধে
যাদের অভিক্রতা আছে তারা সন্দেহ প্রকাশ করেও থাকেন; আমার
মতো আনাড়ির সে তর্কে প্রবেশ করে কাল্প নেই। আমার নালিশ এই
যে, চরকার সংশে স্বরাজকে জড়িত করে স্বরাজ সম্বন্ধে দেশের জনসাধারণের বৃদ্ধিকে ঘূলিয়ে দেওয়া হচ্ছে।

দেশের কল্যাণ বলতে যে কতথানি বোঝায় তার ধারণা আমাদের স্পাই হওয়া চাই। এই ধারণাকে অত্যন্ত বাহ্যিক ও অত্যন্ত সংকীণ করার ঘারা আমাদের শক্তিকে ছোটো করে দেওয়া হয়। আমাদের মনের উপর দাবি কমিয়ে দিলে অলগ মন নির্মীব হয়ে পড়ে। দেশের কল্যাণসাধনায় চরকাকে প্রধান স্থান দেওয়া অবমানিত মনকে নিশ্চেষ্ট করে তোলবার উপায়। দেশের কল্যাণের একটা বিশ্বরূপ মনের সন্মুধে উজ্জল করে রাখলে দেশের লোকের শক্তির বিচিত্র ধারা সেই অভিমুধে চলবার পথ সমস্ত হৃদয় ও বৃদ্ধিশক্তির ঘারা ধনন করতে পারে। সেই রূপটিকে বদি ছোটো করি আমাদের সাধনাকেও ছোটো করা হবে। পৃথিবীতে যারা দেশের অক্তে, মানুষের ক্তেন্তে তুঃসাধা ত্যাগ্রীকার করেছে

তারা দেশের বা মাহুষের কল্যাণছবিকে উজ্জ্বল আলোয় বিরাটরূপে ধ্যাননেত্রে দেখেছে। মাহুষের ত্যাগকে যদি চাই তবে তার সেই ধ্যানের সহায়তা করা দরকার। বহুল পরিমাণ হতো ও খদরের ছবি দেশের কল্যাণের বড়ো ছবি নয়। এ হল হিসাবি লোকের ছবি; এতে সেই প্রকাণ্ড বেহিসাবি শক্তিকে জাগিয়ে দিতে পারে না যা বৃহত্বের উপলব্ধি-জনত আনন্দে কেবল যে তৃঃখকে মৃত্যুকেও স্বীকার করতে প্রস্তুত হয় তা নয়, লোকের প্রত্যাখ্যান ও বার্থতাকেও গ্রাহ্য করে না।

শিশু আনন্দের সঙ্গে ভাষা শিশা করে। কেননা সে আপন বাপের মৃথে, মায়ের মৃথে সর্বদাই ভাষার সমগ্র রূপটা দেখতে পায়। যথন সে স্পষ্ট করে ব্রতেও পারে না, তথনো এইটেই তাকে কেবলই আকর্ষণ করে। তাই এই প্রকাশের পূর্ণভালাভের জন্ম নিয়ভই তার একটি আনন্দময় চেষ্টা জেগে থাকে। শিশুর মনকে বেষ্টন করে যদি এই পরিপূর্ণ ভাষা সর্বদা বিরাজ না করত, যদি ভার চার দিকে কেবলই ঘ্রতে থাকত মৃশ্ববোধ-ব্যাকরণের স্বত্র, তা হলে বেতের চোটে কাঁদিয়ে তাকে মাহ্নভাষা শেখাতে হত, এবং তাও শিখতে লাগত বহু দীর্ঘ কাল।

এই কারণে আমি মনে করি, দেশকে যদি স্বরাজ্ঞদাধনায় সত্য ভাবে দীক্ষিত করতে চাই তা হলে সেই স্বরাজ্ঞের সমগ্র মৃতি প্রভ্যক্ষগোচর করে তোলবার চেটা করতে হবে। অল্প কালেই সেই মৃতির আয়তন বে খ্ব বড়ো হবে, এ কথা বলি নে; কিন্তু তা সম্পূর্ণ হবে, সত্য হবে, এ দাবি করা চাই। প্রাণবিশিষ্ট জিনিসের পরিণতি প্রথম থেকেই সমগ্রতার পথ ধরে চলে। তা যদি না হত্ত তা হলে শিশু প্রথমে কেবল পায়ের বুড়ো আঙুল হয়ে জন্মাত; তার পরে সেটা ধীরে ধীরে হ'ত হাঁটু পর্যন্ত পা; তার পরে ১৫।২০ বছরে সমগ্র মানবদেহটা দেখা দিত। শিশুর মধ্যে সমগ্রতার আদর্শ প্রথম থেকেই আছে, তাই তার মধ্যে আমরা এত আনন্দ পাই। সেই আনন্দে তাকে মানুষ করে তোলবার কঠিন হৃঃধণ্ড মা-বাপ স্বীকার

সরাজসাধন

করতে পারে। নইলে যদি একথানা আজাত্ব পা নিয়েই তাদের চার-পাঁচ বছর কাটাতে হত, তা হলে সেই আংশিকের দাসত্ব তাদের পক্ষে অসহা হয়ে উঠত।

শ্বাজ্ঞকে যদি প্রথমে দীর্ঘকাল কেবল চরকার স্থতো - আকারেই দেখতে থাকি তা হলে আমাদের সেই দশাই হবে। এই রকম অশ্ব সাধনায় মহাত্মার মতো লোক হয়তো কিছু দিনের মতো আমাদের দেশের এক দল লোককে প্রবৃত্ত-করতেও পারেন, কারণ তাঁর ব্যক্তিগত মাহাত্ম্যের পরে তাদের শ্রহা আছে। এইজন্তে তাঁর আদেশ পালন করাকেই অনেকে ফললাভ বলে গণ্য করে। আমি মনে করি, এ রকম মতি শ্বাজ্ঞলাভের পক্ষে অমুকূল নয়।

ব্দেশের দার্থিত্বক কেবল স্থতো কাটায় নয়, সম্যক্ ভাবে গ্রহণ করবার সাধনা ছোটো ছোটো আকারে দেশের নানা জায়গায় প্রতিষ্ঠিত করা আমি অত্যাবশুক মনে করি। সাধারণের মঙ্গল জিনিসটা অনেক-গুলি ব্যাপারের সমবায়। তারা পরস্পর ঘনিষ্ঠভাবে জড়িত। তাদের একটাকে পৃথক করে নিলে ফল পাওয়া বায় না। স্বাস্থ্যের সঙ্গে, বৃদ্ধির সঙ্গে, জ্ঞানের সঙ্গে, কর্মের সঙ্গে, আনন্দের সঙ্গে মিলিয়ে নিতে পারলে তবেই মাহুধের সব ভালো পূর্ণ ভালো হয়ে ওঠে। স্বদেশের সেই ভালোর রূপটিকে আমরা চোথে দেখতে চাই। সহস্র উপদেশের চেয়ে ভাতে আমরা কাজ পাব। বিশেষ বিশেষ লোকালয়ে সাধারণের কল্যাণসাধনের দায়িত্ব প্রত্যেকে কোনো না কোনো আকারে গ্রহণ ক'রে একটি স্বস্থ জ্ঞানবান জীপপার সন্মিলিত প্রাণ্যাত্রার রূপকে জাগিয়ে তুলেছে, এমন-সকল দৃষ্টান্ত চোথের সামনে ধরা দরকার। নইলে স্বরান্ত কাকে বলে দে আমরা স্বতো কেটে, বন্ধর প'রে, কথার উপদেশ শুনে কিছুতেই বোঝাতে পারব না। যে জিনিসটাকে সমস্ত ভারতবর্বে পেতে চাই ভারতবর্বের কোনো-একটা কৃত্ব অংশে তাকে যদি স্পষ্ট করে দেখা বায়,

তা হলে দার্থকতার প্রতি আমাদের শ্রনা জন্মাবে। তা হলে আত্ম-প্রভাবের যে को মূল্য তা বুঝতে পারব; ন মেধ্যা ন বছনা শ্রুতেন, বুঝব তার সাক্ষাং দর্শনের ঘারা। ভারতবর্ষের একটিমাত্র গ্রামের লোকও যদি আত্মশক্তির ঘারা সমস্ত গ্রামকে সম্পূর্ণ আপন করতে পারে তা হলেই चरानिक चरानिकरि लांड क्वराव कांक मिट्यान्हे बावेख हरव। জীবজন্ত স্থানবিশেষে জন্মগ্রহণ করে, কিন্তু জন্মগ্রহণের দ্বারাই দেশ তার र्य ना। यार्य जाभन म्बल्क जाभनि एष्ठि करत। महे रुष्टित कार्ष्क ও त्रकराव का एक मिटन लाकित भवन्भत्व माधा मश्च घनिष्ठे इय, आव সেই স্পষ্ট-করা দেশকে তারা প্রাণের চেয়ে ভালোবাসতে পারে। আমাদের দেশের মাত্র্য দেশে জন্মাচ্ছে মাত্র, দেশকে স্বাষ্ট করে তুলছে ना: এইজন্মে তাদের পরস্পর-মিলনের কোনো গভীর উপলক্ষা নেই, দেশের অনিষ্টে তাদের প্রত্যেকের অনিষ্টবোধ জাগে না। দেশকে সৃষ্টি করার দ্বারাই দেশকে লাভ করবার সাধনা আমাদের ধরিয়ে দিতে হবে। সেই স্পষ্টির বিচিত্র কর্মে মান্তুষের বিচিত্র শক্তির প্রয়োজন। নানা পথে এক লক্ষ্য - অভিমুখে সেই বিচিত্র শক্তির প্রয়োগের দারাই আমরা व्यापनाक (मर्ग्य मर्पा छेपलिक कति। এই म्बन्छित्र माधना काष्ट्रत থেকে আরম্ভ করে ক্রমে দূরে প্রসারিত করলে তবেই আমরা ফল পাব। ষদি এই রকম উদ্যোগকে আমরা আয়তনে ছোটো বলে অবজ্ঞা করি তবে গীতার সেই কথাটা যেন মনে আনি— স্বল্লমপ্যস্ত ধর্মস্ত ত্রায়তে মহতো ভয়াৎ। সত্যের জোর আয়তনে নয়, তার আপনাতেই।

সন্মিলিত আত্মকর্তৃত্বের চর্চা, তার পরিচয়, তার সম্বন্ধে গৌরববাধ জনসাধারণের মধ্যে ব্যাপ্ত হলে তবেই সেই পাকা ভিত্তির উপর স্বরাজ্ঞ সত্য হয়ে উঠতে পারে। যখন গ্রামে গ্রামে অস্তরে বাহিরে তার অভাব — আর সেই অভাবই যখন দেশের লোকের অন্নের অভাব, শিক্ষার অভাব, স্বাস্থ্যের অভাব, জ্ঞানের অভাব, আনন্দের অভাবের মূল হয়ে

সরাজসাধন

উঠেছে, ज्थन म्हिन्य जनमः एवत्र अहे हिस्ट्रेम्ब्रिक हाफ्रिस फेट्ठ काटना वाक जन्नेहात्व कार्य क रमरन न्यांक कार्यम इरज भार्य, क कथा এक्कार्विष्ठ अञ्चलका। हेश्त्विष्ठ अक्का कथा बाह्य, निविहे निकित्क होत्न: एक्यिन चत्राबरे चत्राबरक चाराहन करत चात्न। विरच विधाजांत्र त्य व्यक्षिकांत्र व्याह्य मिटे इटाइ छात्र व्यताव, व्यवीर विचटक रुष्टि क्त्रवात अधिकात। आभारमत्र अत्राक्ष इटक्ड म्हे अवर्ष, अर्थार आश्रन मिन्द जानि रहि कर्त्र ভোলবার অধিকার। रहि क्রाর ঘারাই ভার প্রমাণ হয়, এবং ভার উৎকর্ষসাধন হয়। বেঁচে থাকবার ঘারাই প্রমাণ হয় বে আমার প্রাণ আছে। কেউ কেউ হয়তো বলতেও পারেন ৰে. স্রতো কাটাও স্ষ্টি। তা নয়। তার কারণ, চরকায় মাত্রৰ চরকারই वक इम्न : वर्षार (वर्षे। कल मिरम कन्ना (वर्ष्ट मि महर्षिष्टे करन--- म घावाय। कल किनिमिंग भरनाशीन वरलहे मि धका, निरक्त वाहरत छात्र কিছুই নেই। তেমনি বে মামুষ স্থতো কাটছে সেও একলা; ভার চরকার সূত্র অক্ত কারও সঙ্গে তার অবশ্রধোগের সূত্র নয়। তার প্রতিবেশী কেট যে আছে, এ কথা তার জানবার কোনো দরকারই নেই। রেশমের পলু বেমন একাস্কভাবে নিঞ্চের চার দিকে রেশমের স্থভো (वात्न, जावन काम मिटे वक्म। मि यन, मि निःमम, मि विष्कि। কন্গ্রেসের কোনো মেম্বর যথন স্থতো কার্টেন তথন সেই সঙ্গে দেশের ইকনমিক্স্-স্বর্গের ধ্যান করতেও পারেন, কিন্তু এই ধ্যানমন্ত্রের দীকা जिनि जग्र উপায়ে পেয়েছেন— চরকার মধ্যেই এই মন্তের বীজ নেই। কিন্তু, যে মাহ্য গ্রাম থেকে মারী দূর করবার উদ্যোগ করছে তাকে যদি বা তুর্ভাগ্যক্রমে সম্পূর্ণ একলাও কাজ করতে হয়, তবু তার কাজের वानिएक ७ व्यरक ममस शारमत हिसा निविष्कार्व युक्त। এই कारकत षात्रारे निष्कत्र मस्या गम्या ग्रामरक म উপनिष्क करत्। श्रास्मत्ररे स्विष्ठ তার সজ্ঞান আনন্দ। তারই কাজে শ্বরাজসাধনার সত্যকার আরম্ভ বটে।

তার পরে সেই কাজে বদি সমন্ত গ্রামের লোক পরস্পার বোগ দেয় তা হলেই বুঝব, গ্রাম নিজেকে নিজে স্পষ্ট করার বারাই নিজেকে নিজে বথার্থরপে লাভ করবার দিকে এগোচেই; এই লাভ করাকেই বলে বরাজলাভ। পরিমাণ হিসাবে কম হলেও সত্য হিসাবে কম নয়। অর্থাৎ শতকরা একশোর হারে লাভ না হলেও হয়তো শতকরা একের হারে লাভ; এই লাভই শতকরা একশোর সগোত্র এমন কি সহোদর ভাই। বে গ্রামের লোক পরস্পরের শিকা-স্বাস্থ্য-অন্ধ-উপার্জনে আনক্ষ-বিধানে সমগ্রভাবে সন্মিলিত হয়েছে সেই গ্রামই সমস্ত ভারতবর্ষের বরাজলাভের পথে প্রদীপ জেলেছে। তার পরে একটা দীপের থেকে আর-একটা দীপের শিখা জালানো কঠিন হবে না; ব্যাজ নিজেই নিজেকে অগ্রসর করতে থাকবে, চরকার বান্ত্রিক প্রদক্ষিণপথে নয়, প্রাণের আত্মপ্রস্থন্ত সমগ্রবৃদ্ধির পথে।

षाचिन ५००२

রায়তের কথা

श्रीभान श्रभणनाथ (होधुत्री कनानिरत्रवृ

আমাদের শাস্ত্রে বলে, সংসারটা উর্ধ্বন্দ অবাক্শাথ। উপরের দিক থেকে এর শুরু, নীতে এসে ভালপালা ছড়িয়েছে; অর্থাৎ নিজের জোরে দাঁড়িয়ে নেই, উপরের থেকে ঝুলছে। তোমার 'রায়তের কথা' পড়ে আমার মনে হল যে, আমাদের পলিটক্স্ও সেই জাতের। কন্ত্রেসের প্রথম উৎপত্তিকালে দেখা গেল, এই জিনিসটি শিকড় মেলেছে উপরওয়ালাদের উপর মহলে— কি আহার কি আশ্রয় উভরেরই জন্তে এর অবলম্বন সেই উর্ধ্বলোকে।

বাদের আমরা ভন্তলোক বলে থাকি তাঁরা দ্বির করেছিলেন বে, রাজপুরুবে ও ভদ্রলোকে মিলে ভারতের রাজগদি ভাগাভাগি করে নেওয়াই পলিটিক্স। সেই পলিটিক্সে মুদ্ধবিপ্রহ সদ্ধিনাত্তি উভর ব্যাপারই বক্তৃতামকে ও খবরের কাগকে, তার অন্ধ্র বিভঙ্ক ইংরেজি ভাষা— কখনো অন্ধনরের করণ কাকলি, কখনো বা ক্রজিম কোপের উত্তপ্ত উদ্দীপনা। আর দেশে যখন এই প্রগল্ভ বাগ্বাত্যা বাছ্মওলের উর্ধন্তরে বিচিত্র বাপালীলা-রচনায় নিযুক্ত তখন দেশের যারা মাটির মান্থর তারা সনাতন নিয়মে জন্মাছের মরছে, চাব করছে, কাপড় বুনছে, নিজের রক্তে মাংসে সর্বপ্রকার খাপদ-মান্থবের আহার জোগাছে, যে দেবতা তাদের ছোঁরা লাগলে অন্তচি হন মন্দিরপ্রান্ধণের বাইবে সেই দেবতাকে ভূমিষ্ঠ হয়ে প্রশাম করছে, মাতৃভাবার কাঁদছে হাসছে, আর মাধার উপর অপমানের ম্বলধারা নিয়ে কপালে করাঘাত করে বলছে 'অদৃষ্ঠ'। দেশের সেই পোলিটিশান্ আর দেশের সর্বসাবারণ, উভরের মধ্যে অসীম দুরস্ব।

সেই পলিটিক্স্ আজ মুখ ফিরিরেছে, অভিমানিনী বেমন করে বল্লভের কাছ থেকে মুখ ফেরায়। বলছে, 'কালো মেঘ আর ছেরব না গো দৃতী।' তথন ছিল পূর্বরাগ ও অভিসার, এখন চলছে মান এবং বিছেদ। পালা বদল হয়েছে, কিছ লীলা বদল হয় নি। কাল যেমন জোরে বলেছিলেম 'চাই', আজ তেমনি জোরেই বলছি 'চাই নে'। সেই সজে এই কথা যোগ করেছি বটে যে, পল্লীবাসী জনসাধারণের অবস্থার উন্নতি করাতে চাই। অর্থাৎ, এরাই আমার আপন, ওয়া আমার পর। কিছ 'চাই নে, চাই নে' বলবার হছংকারেই গলার জোর, গায়ের জোর চুকিয়ে দিই। তার সঙ্গে যেটুকু 'চাই' জুড়ি তার আওয়াল বড়ো মিছি। যে অছিলাতেই অর্থ কিছু সংগ্রহ করি ভদ্র-সমাজের পোলিটিকাল বারোয়ারি জমিয়ে ভ্লতেই তা ফুরিয়ে যায়, ভার পরে অর্থ গেলে শন্ধ যেটুকু বাকি থাকে সেটুকু থাকে পল্লীর হিতের জন্তে। অর্থাৎ, আমাদের আধুনিক পলিটিক্সের শুকু থেকেই আমরা নিগুণি দেশপ্রেমের চর্চা করেছি, দেশের মামুয়কে বাদ দিয়ে।

এই নিরুপাধিক প্রেমচর্চার অর্থ যারা জোগান তাঁদের কারও বা আছে জমিদারি, কারও বা আছে কারখানা; আর শন্ধ যারা জোগান তাঁরা আইনব্যবসায়ী। এর মধ্যে পল্লীবাসী কোনো জায়গাতেই নেই; অর্ধাৎ আমরা বাকে দেশ বলি, সেই প্রতাপাদিত্যের প্রেতলোকে তারা থাকে না। তারা অত্যক্ত প্রতাপহীন— কি শন্ধসন্থলে, কি অর্থ-সমলে। যদি দেওয়ানি অবাব্যতা চলত তা হলে তাদের জাকতে হত বটে, সে কেবল থাজনা বন্ধ করে মরবার জল্পে; আর যাদের অন্ত-ভক্ষা-ধমুন্ত ও তাদের এখনো মাঝে মাঝে জাক পাড়া হর দোকান বন্ধ করে হরতাল করবার জল্পে, উপরওয়ালাদের কাছে আমাদের পোলিটিকাল বাকা ভঙ্গীটাকে অত্যক্ত তেড়া করে দেখাবার উদ্দেশ্যে।

तांत्र एकत्र कथा

वहे कांत्र वहे त्रांत्र एक क्यांना मून्छिर (यरक वांत्र। चार्त्र পাতা হোক সিংহাসন, গড়া হোক মুকুট, থাড়া হোক রাজগও, ন্যাঞ্চৌর পরুক কোপ্নি— ভার পর সময় পাওয়া যাবে রায়তের कथा পाएवात्र। व्यर्था॰, म्हान्त्र श्रिकितृम् व्यार्ग, म्हान्त्र यास्य भरत्। তाই खक्र एउँ निमिष्टिक् रमन्न माष्ट्र- कन्न मार्भन भूम न एए न एए। स्विधा এই যে, याপ निवात कटक काला गकीव याक्षवत्र पत्रकात निर्दे। चक्र দেশের মান্ত্র নিজের দেহের বহর ও আবহাওয়ার প্রতি দৃষ্টি রেখে वात्र वात्र क्टि-(इंटि वन्टल कूट्फ रय माख वानिरत्रदृष्ट किंक टमरे नमूनाहै। मिक्र पाकारन ठालान क्रालहे हर्व। नार्क्र नायस बानि-একেবারে কেতাবের পাতা থেকে সম্ভ-যুখন্থ— কেননা আমাদের कात्रथाना-चरत्र नाम चार्रा, क्रान नरत्र। छिर्पात्किनि, नार्लि:यन्हे, कानाडा चार्न्हेनिया पिक्न-चाक्षिकात त्राष्ट्रेडिस हेलापि, अत्र गम्डहे আমরা চোখ বুজে কলনা করতে পারি; কেননা পায়ের মাপ নেবার कत्य याञ्चरक मायत्न वाथवाव वालाहे अरकवादबहे त्नहे। अहे श्वविधाहेकू िक्छेटक ভোগ করবার অন্তেই বলে থাকি, আগে ছয়াজ, ভার পরে यदाक याम्य करू जाता। পृषिवीर् चन्न ग्रव कार्याएक एन्य যামুষ নিজের প্রকৃতি শক্তি ও প্রয়োজনের স্বাভাবিক প্রবর্তনায় আপনিই আপনার স্বরাজ গড়ে ভুলেছে; জগতে আমরাই কেবল পঞ্জিকার ्कात्ना-এकि व्यानन भन्नना-कासूबादिए व्यार्ग चदाक भाव, छात्र পরে অরাজের লোক ডেকে যেমন করে ছোক সেটাকে ভাদের গায়ে চাপিয়ে দেব। ইতিমধ্যে ম্যালেরিয়া আছে, মারী আছে, ছতিক আছে, वहाकन चाट्ह, क्यिनाद चाट्ह, श्रृ निरमद (भंद्राना चाट्ह, भनाव-काम-लागात्ना (यात्रत्र विद्यु, याद्युत आह, महत्ववाह गयात्यत्र हेगाक्ता, चात्र चाह्य दकामिकत परद्वीकत्राम गर्वयामानून चामान्छ।

এই- गव कात्रात वामात्मत्र भनिष्ठिक्रग छामात्र 'त्राव्याखत कथा'

श्वानकानभारवाहिक हरम्रह कि ना गत्मह कति। पूर्वि खोषांत्र गांवत्व नित्क गाफि कार्वात्र चारमाञ्चल योग निष्क् ना; ७५ छोरे नम्, चाए। होटक द्यादवात्र छम्ट्यांग वक्क द्रार्थ थवत्र निष्ठ हाख टम माना পেলে कि ना, अन मम कछहेकू वाकि। তোমাन मञ्जामाछा वज्रुत्मन मरश এयन कि क्षेड तिरे य छायाकि वनछ भारत 'আर्ग गांषि होनांख, छा हरनरे चयूक ए**ड न**ध्य गयाञ्चातन (भी इवरे— जात्र भरत (भी इवा या वरे यत्थेष्ठे ममञ्जू भोख्या यात्व थवद्र निवाद कत्य त्य त्याद्यांचे। महन ना चहन, বেঁচে चाছে ना गरत्रहं? তোমার জানা উচিত ছিল, হাল আমলের পनिটिक्रम ढे। हेम् ढेव न् टेजिन, তোর अधि । शाफिर का पर विगारे व्यथान कर्डवा। व्यवस्थित गाषिष्ठा कारना व्यवगार्टि श्रीहब्र ना वर्षे, किञ्च रमिं। हो हे मृट हे व्हान द्वाप नम्न ; रचा फा है। हम रमहे हिरम कि মিলে খেত। তুমি তার্কিক; এত বড়ো উৎসাহে বাধা দিয়ে বলতে চাও, ঘোড়াটা যে চলে না বছকাল থেকে সেইটেই গোড়াকার সমস্তা। जूमि मार्टिक क्यामार्टित मार्थानी मासूष, चान्धार्टित थवद्री चार्य **ठाउ।** এ मिटक हान क्यांनात्ने छेश्नाही याञ्च काठवाट्य ठए वरम व्यश्तिवादि भा घरहः घद वाखन नागात्र छेभमा मिस्त म नगहः, অতি শীঘ্র পৌছনো চাই, এইটেই একমাত্র অক্লব্নি কথা। অতএব षाएात्र थवत्र न्ध्या निष्ठक मगत्र नष्ठे कत्रा। मब-चार्ग मत्रकांत्र গাড়িতে চড়ে বসা। তোমার 'রায়তের কথা' সেই খোড়ার কথা, যাকে वना यिट भारत शाषात्र कथा।

3

কিন্তু ভাবনার কথা এই যে, বর্তমান কালে এক দল জোয়ান মাত্রুব রায়তের দিকে মন দিতে শুকু করেছেন। স্ব-আগে জারা ছাতের শুলি পাকাচ্ছেন। বোঝা যাছে, তাঁরা বিদেশে কোথাও একটা নঞ্জির

রায়তের কথা

(পরেছেন। আমাদের মন বখন অভ্যন্ত আড়ম্বরে স্বাদেশিক হয়ে ওঠে তথনো দেখা যায়, সেই আড়ছরের সমস্ত মালমসলার পারে ছাপ মার আছে 'Made in Europe'। যুরোপে প্রকৃতিগত ও অবহাগত কারণের স্বাভাবিক বেগে মান্ত্র সোপ্তালিজ্ম্, ক্ষ্যুনিজ্ম্, সিপ্তি-क्रांणिक् म् श्राष्ट्रि नाना श्रकात्र नागा किक পরিবর্তনের পর্থ করছে। किन्न चामद्रा यथन विन 'दाम्राएद ভाला कद्रव', एथन गुरद्रालिद वाबि वृणि ছाড़ा चामारमत्र मूर्थ वृणि त्यद्राप्त ना। এवात्र পূर्ववरक शिर्व দেখে এলুম, কুদ্র কুল কুলাভুরের মতো কণভলুর সাহিত্য গজিয়ে উঠছে। তারা সব ছোটো ছোটো এক-একটি রক্তপাতের ধবজা। वलएड, 'शिरम रफरना, मरन रफरना।' वर्षा ४ ४३वी निर्कियमात्र निर्महावन हाक। यन व्यवधित्र बाता भाभ यात्र, यन चन्नकात्रक नाठि यात्रम त्म यद्र। এ क्यमन, रयन दोरयद्र मन चनर्छ, भाराष्ट्रिश्यमारक श्रश लाशिय शक्रायाद्वा कदाल, छा इटनई वध्दा निदालन इटवा जूटन याद्र যে, মরা শান্তজির ভূত ঘাড়ে চেপে তাদের শান্তজিতর শান্তজিতম করে कुनटि (भित्र करत्र ना। व्यागामित्र (मित्र भाष्ट्रा वर्ण, वाहरत्रत्र (धरक वाजुरुणा करत्र ग'लिरे खरवहन ছেদन करा यात्र ना— चलारवत्र डिखत्र (थरक दक्षत्वत्र मृनराक्षम कदराज इम्र। मूरद्राराभद्र चानाविः मात्रमूरथा। পাপকে ভিতর থেকে যারতে সময় লাগে— তাদের সে তর সয় না, **लाता वाहेरत्र (थरक मानूयरक मारत्र।**

এক দিন ইংরেজের নকল করে আমাদের ছেঁড়া পলিটিক্স্ নিয়ে পার্লামেন্টীর রাজনীতির পুতৃলখেলা থেলতে বলেছিলেম। তার কারণ, সে দিন পলিটিক্সের আদর্শটাই যুরোপের অন্ত সব-কিছুর চেয়ে আমাদের কাছে প্রত্যক্ষগোচর ছিল।

তখন यूद्राभीय (य माहिन्छा चार्यापत्र यन पथन करत्रहा छोत्र यथा याहेनिन गात्रियाम्फित च्युकोहे हिन द्यथान। अथन म्याप्त नाटोत्र

(परक नी छात्र मूखिन कथा। উखतकार ख चार्छ इर्ग्र (थत खत्र, ताकांत्र गांधा (इँहे, श्रकात्र यन कांगावात्र जागित त्राक्त त्रानीत्क विगर्कन । यूष्कत्र मितन ছिল त्राष्ट्रात यहिया, এখন এল প্রজার यहिया। তখন গান চলছিল, वाहित्त्रत्र विकृत्य चत्रत्र चत्रः , এখনकात्र गान, हेगात्रत्वत्र विकृत्य चाडिनात्र अय। देगानिः পन्टिय वन्ति छक्ष, कानिक्य व श्रृष्ठि य-नव छन्यान দেখা দিয়েছে আমরা যে তার কার্যকারণ, তার আকারপ্রকার স্বস্পষ্ট वृक्षि छ। नम्न ; क्विन स्थारित छे अन्न वृक्षि ए । छ छ। छ छ न खयन। चयनि चायात्मत्र नकननिश्रायन खखायिनेत्व मन ८० एव राष्ट्रा कर्त्र (मथरण वरग्रह्। वदाष्ट- व्यवजात्र भव्यनियग्न धत्राज्य के माजित्र ঠেলায় উপরে তুলেছিলেন, এরা তুলতে চায় লাঠির ঠেলায়। এ কথ। ভাববার অবকাশও নেই, সাহসও নেই যে, গোঁয়ার্ডমির ছারা উপর ও নীচের অসামঞ্জ ঘোচে না। অসামঞ্জের কারণ মামুষের চিত্তর্তির यथा। त्रहेक्टल चाक्रक प्रतिन नीति व वाक्रोति छे पद जूल पितन, कामटकत्र मित्नत्र উপরের থাকটা নীচের দিকে পূর্বের মতোই চাপ রাশিয়ার জার-তন্ত্র ও বলশেভিক-তন্ত্র একই দানবের भाभ याषा प्रथम। भूर्व य काषाठा वै। हाट हिन चाक मिठारक छान हाटल हानान करत्र मिरा यमि लाखनन्त्र कता यात्र, ला हरन मिट्टी वन कि इति भागनाथि। यो एत्र त्रास्क्रित कि दिनि, এक-এक गमरत्र माथात्र विभर्तील बक्त हर्ष भिरत्र लात्मत्र भागमामि त्मथा त्मत्र— किन्न (महे पिशापिशि नकल भागमाभि (हर्भ राम चन्न लारकन, शापित व्रक्तिव क्या जाक्टे राज हिम्हितिया। चाच जाहे यथन छान अनूय गाहिए इभावा हमए 'यहां बन क मागा वाषि, विमाव क क्टिला लिए, ज्थिन व्यास्त भावन्य, अहे नानम्रथा वृनित उर्भिन अरमन्न निरमन्न नरक्षित्र (परक नम्र। এ हर्ष्क् वाक्षामिन्न चमाशान्न

রায়তের কথা

नक्नरेनभूरभाद्र नाहा, मार्किना द्राङ होताता। এর আছে উপরে হাত-পা ছোড়া, ভিতরে চিন্তহীনতা।

আমি নিজে অমিদার, এইজন্তে হঠাৎ মনে হতে পারে, আমি বুঝি
নিজের আসন বাঁচাতে চাই। যদি চাই তা হলে দোব দেওরা যার
না— ওটা মানবস্থভাব। হারা সেই অধিকার কাড়তে চার তাদের বে
বুজি, যারা সেই অধিকার রাখতে চার তাদেরও সেই বুজি; অর্ধাৎ
কোনোটাই ঠিক ধর্মবুজি নয়, ওকে বিষয়ুবুজি বলা যেতে পারে। আজ
যারা কাড়তে চার যদি তাদের চেইা সফল হয় তবে কাল ভারাই
বনবিড়াল হয়ে উঠবে। হয়তো শিকারের বিষয়-পরিবর্তন হবে, কিজ
দাতনখের বাবহারটা কিছুমাত্র বৈষ্ণব ধয়নের হবে না। আজ অধিকার
কাড়বার বেলা তারা বে-সব উচ্চ-অলের কথা বলে তাতে বোঝা যার,
তাদের 'নামে ক্রচি' আছে; কিজ কাল যখন 'জীবে দর'র দিন আসবে
তখন দেখব, আমিবের প্রতি জিহ্বার লেলিহান চাঞ্চল্য। কারণ, নামটা
হচ্ছে মুখে, আর লোভটা হচ্ছে মনে। অতএব, দেশের চিত্রবৃত্তির
মাটিতে আজ বে জমিদার দেখা দিয়েছে সে যদি নিছক কাটাগাছেই হয়,
তা হলে তাকে দ'লে কেললেও সেই মরা গাছের সারে বিভীয় দফা
কাটাগাছের প্রীবৃদ্ধিই ঘটবে। কারণ, মাটি বদল হল না তো।

আমার ভন্মগত পেশা জমিদারি, কিন্তু আমার স্বভাবগত পেশ।
আসমানদারি। এই কারণেই জমিদারির জমি জাঁকড়ে থাকতে আমার
অন্তরের প্রবৃত্তি নেই। এই জিনিসটার 'পরে আমার শ্রদ্ধার একান্ত
অভাব। আমি জানি, জমিদার জমির জোঁক; সে প্যারাসাইট, পরাশ্রিত
জীব। আমরা পরিশ্রম না ক'রে, উপার্জন না ক'রে, কোনো ষধার্থ
দারিত্ব প্রহণ না ক'রে ঐত্বর্ধভোগের ছারা দেহকে অপটু ও চিত্তকে

चनग करत्र जूनि। यात्रा वीर्धित्र बात्रा विनारमत्र चिशकात्र नांख करत्र व्यागदा त्म जाञ्जित गास्य नहे। श्रवादा वागात्मत वन त्वागां व्याद वायनात्रा वायात्रत यूर्थ व्यव कूटन त्मत्र- व्यत याद्या त्भीकृष्ठ त्नहे, গৌরবও নেই। নিজেকে ছোটো হাতের মাপে রাজা বলে কল্পনা করবার একটা অভিযান আছে বটে। 'রায়তের কথা'য় পুরাতন দপ্তর ঘেঁটে তুমি সেই স্থম্বপ্লেও বাদ সাধতে বসেছ। তুমি প্রমাণ করতে চাও যে, আমরা ইংরেজ-রাজসরকারের পুরুষামুক্রমিক গোমস্তা। আমরা এ দিকে রাজার নিমক খাচ্ছি; রায়তদের বলছি 'প্রজা', তারা वागामित वन ह 'त्राका'— यस এक है। काँ कित गर्श वाहि। এगन व्यभिनात्रि ছেড়ে निल्बे छ। इत्र १ किन्छ, कारक ছেড়ে দেব १ व्यक्त এक क्यिमात्रक ? গোলাম-চোর খেলার গোলাম যাকেই গভিয়ে দিই, ভার षात्रा शालाय-छात्रक र्छकारना इत्र ना। श्रकारक ছেড়ে দেব ? ज्यन দেখতে দেখতে এক বড়ো জমিদারের জায়গায় দশ ছোটো জমিদার গজিয়ে উঠবে। রক্তপিপাসায় বড়ো জৌকের চেয়ে ছিনে জৌকের প্রবৃত্তির কোনো পার্থক্য আছে তা বলতে পারি নে। তুমি বলেছ, জমি চাষ করে যে জমি তারই হওয়া উচিত। কেমন করে তা হবে জমি যদি পণ্যদ্রব্য হয়, যদি তার হস্তান্তরে বাধা না থাকে ? এ কথা মোটের উপর वला हला (य, वहे जाबहे इखवा छिहिज (य याञ्चव वहे भए । (य याञ्चव পড়ে ना चष्ठ माखिया द्वारथ प्रियं, वहेराय मन्वावहां वीरक म विकेड करत्र। किन्न, वरे यिन भरिं। निर्धाक्ष प्राकारन विकि करए कारना वाशा ना बादक छ। इतन यात्र वहेरत्रत्र (अन्क चार्ह, वृद्धिविछा निहे, रा य वहे किनरव ना अयन वावन्ता की करत कत्रा यात्र ? गःगारत वहेरत्रत्र लिल्फ रुषित रिरा चानक खला । अर्ह कांत्रण चिर्वाश्य बहैरब्रव गिछ इब्र (निन्धित थारक, वृद्धिगानित एएस्व नव। नवच्छीत वत्रशूख (य ছবি রচনা করে नन्तीत वत्रशूख তাকে मथन करत वरम।

রায়তের কথা

অধিকার আছে ব'লে নয়, ব্যাকে টাকা আছে ব'লে। যাদের যেজাজ কড়া, সমল কম, এ অবস্থায় ভারা থাপা হয়ে ওঠে। বলে, 'মায়ো টাকাওয়ালাকে, কাড়ো ছবি।' কিন্তু, চিত্রকরের পেটের দায় যত দিন আছে, ছবি যত দিন বাজায়ে আগতে বাধা, তত দিন লন্ধীমানের মরের দিকে ছবির টান কেউ ঠেকাতে পারবে না।

8

क्यियि पिर्वा वाकादि विकि इत्रहे छ। इत्न य वाकि चन्नः ठाव करत्र छात्र (कनवात्र मछावना छन्नहे; य लाक ठाव करत्र ना किन्ह यात्र चाह् होका, चिर्काः न विक्रम्रयोगा क्रिय छात्र हाट्ड পড़रवह । जियत्र विक्र स्वत्र गःशां कारण कारण क्र या दे ए वर्ष या वर्ष वर्ष मण्डा কারণ, উত্তরাধিকারস্ত্তে জমি যতই খণ্ড খণ্ড হতে পাকবে, চাবির गाःगाविक অভাবের পক্ষে সে अभि ভতই অলগ্ন হবেই; কাজেই चलारवत्र लाजात्र अतिम-विकि (वर्ष हलरव। अमनि करत्र ह्वारो ह्वारो क्यिक्षि श्रानीय यहाक्टनत वर्षा वर्षा विष्याकारमत्र यरश यादि यादि ধরা পড়ে। তার ফলে জাতার ছুই পাধরের মাঝখানে গোটা রায়ত चात्र वाकि वाकि ना। এका कमिनारतत चामरन कमिर्छ तात्रर्छत (यहूक् व्याधिकात, व्यभिनात्र-यहाक्य दन्त वन्य-नयारन जा व्यात हिंदक ना। व्यागात्र व्यानक त्राप्तिक अहे हद्रम व्यक्किनका (बारक व्यामि निष्क द्रका करत्रिष् क्यि-इन्डाइरत्रत्र वाधात्र উপत्र (कात्र पिरत्र। यहाकनरक विक्रिन्ड করি নি, কিন্তু তাকে রফা করতে বাধা করেছি। যাদের সম্বন্ধ তা कता এक्किराद अमुख्य क्रिक्ट, लार्मित कामा आयात्र मत्रवात (परिक विशंखात्र मन्त्रवादन रगष्ट्। भन्नरमारक खात्रा कारना रथमान्रख भारन कि ना त्म छस अहे खारक चारमाठा नम्र।

नोनहार्यत्र चामरन नीनकत्र यथन श्रापत्र कारन स्करन खानात्र ज्ञान

আছালাং করবার চেষ্টার ছিল তথন জমিদার রায়তকে বাঁচিরেছে।
নিবেধ-আইনের বাঁধ যদি সে দিন না থাকত তা হলে নীলের বস্তার
রায়তি জমি তুবে একাকার হত। মনে করো, আজ কোনো কারণে
বাংলার উৎপর ফসলের প্রতি যদি মাড়োয়ারি দখল-স্থাপনের উদ্দেশি
ক্রমণ প্রজার জমি ছিনিয়ে নিতে ইচ্ছা করে, তা হলে অতি সহজেই
সমস্ত বাংলা তারা ঘানির পাকে ঘুরিয়ে তার সমস্ত তেল নিংড়ে নিতে
পারে। এমন মংলব এদের কারও মাধার যে কোনো দিন আসে নি,
তা মনে করবার হেতু নেই। যে-সব ব্যবসায়ে এরা আজ নিযুক্ত আছে
তার মুনফার বিদ্ব ঘটলেই আবদ্ধ মূলধন এই-সব খাতের সন্ধান থুজবেই।
এখন কথা হচ্ছে, ঘরের দিকে বেনো জল ঢোকাবার অমুকুল খাল-খনন
কি রায়তের পক্ষে ভালো।

বৃদ্ধ কথাটা এই— রায়তের বৃদ্ধি নেই, বিস্তা নেই, শক্তিনেই, আর ধনস্থানে শনি। তারা কোনোমতে নিজেকে রক্ষাকরতে জানে না। তাদের মধ্যে যারা জানে তাদের মতো ভয়ংকর জীব আর নেই। রায়তথাদক রায়তের কুধা যে কত সর্বনেশে তার পরিচয় আমার জানা আছে। তারা যে প্রণালীর ভিতর দিয়ে ক্ষীত হতে হতে জমিদার হয়ে ওঠে, তার মধ্যে শয়তানের সকল শ্রেণীর অমুচরেরই জটলা দেখতে পাবে। জাল-জালিয়াতি, মিধ্যা-মকদ্দমা, ঘর-জালানো, ফসল-ভছরূপ— কোনো বিভীবিকায় তাদের সংকোচনেই। জেলখানায় যাওয়ার মধ্য দিয়ে তাদের শিক্ষা পাকা হয়ে উঠতে থাকে। আমেরিকায় যেমন শুনতে পাই ছোটো ছোটো ব্যাবসাকে গিলে কেলে বড়ো বড়ো ব্যাবসা দানবাকার হয়ে ওঠে, তেমনি করেই ছুর্বল রায়তের ছোটো ছোটো ছোটো ছোটো ছোটো ছোটো ছোটো করেই ছুর্বল রায়ত ক্রমে জমিদার হয়ে উঠতে থাকে। এরা প্রথম অবস্থায় নিজ্পেমি চাব করেছে, নিজের গোকর গাড়িতে মাল ভুলে হাটে বেচে

রায়তের কথা

এনেছে, স্বাভাবিক চতুরতা ছাড়া অক্ত চাবির সঙ্গে এদের কোনো প্রভেদ ছিল না। কিছ, বেমনি জমির পরিধি বাড়তে থাকে অমনি হাতের লাঙল খনে গিয়ে, গদার আবির্ভাব হয়। পেটের প্রত্যক্তসীমা প্রসারিত হতে থাকে, পিঠের দিকে লাগে তাকিয়া, মূলুকের মিখ্যা মকদমা-পরিচালনার কাজে পদার জমে, আর তার দাবরাব-তর্জন-গর্জন শাসন-শোবণের সীমা থাকে না। বড়ো বড়ো জালের ফাক বড়ো, ছোটো মাছ তার ভিতর দিয়ে পালাবার পথ পায়; কিছ ছোটো ছোটো জালে চুনোপুঁটি সমস্তই ছাকা পড়ে— এই চুনোপুঁটির ঝাক নিয়েই রায়ত।

একটা কথা মনে রাখতে হবে যে, প্রতিকৃল আইনটাকেই নিজের অহকৃণ করে নেওরাই মকদমার জুজুংস্ম খেলা। আইনের যে আঘাত মারতে আগে সেই আঘাতের ধারাই উল্টিয়ে মারা ওকালতি-কৃত্তির মারাস্থাক পাঁ। চ। এই কাজে বড়ো বড়ো পালোয়ান নিযুক্ত আছে। অতএব রায়ত হত দিন বৃদ্ধি ও অর্থের তহবিলে সম্পন্ন হয়ে না ওঠেতত দিন ভিচলা আইনও তার পক্ষে অগাধ জলে পড়বার উপায় হবে।

এ কথা বলতে ইচ্ছা করে না, শুনতেও ভালো লাগে না বে, জমি সহদ্ধে রায়তের খাধীন ব্যবহারে বাধা দেওয়া কর্তব্য। এক দিক থেকে দেখতে গেলে বোলো-আনা খাধীনভার মধ্যে আজ্ম-অপকারের খাধীনভাও আছে। কিন্তু ভত বড়ো খাধীনভার অধিকার ভারই ধার শিশুবৃদ্ধি নয়। যে রান্তায় সর্বদা মোটর-চলাচল হয় সে রান্তায় সাবালক মাস্থ্যকে চলতে বাধা দিলে সেটাকে বলা ধায় জ্লুম; কিন্তু অভান্ত নাবালককে যদি কোনো বাধা না দিই ভবে ভাকে বলে অবিবেচনা। আমার ষেটুকু অভিক্রতা ভাতে বলতে পারি, আমাদের দেশের মৃচ্ রায়তদের জমি অবাধে হল্তান্তর করবায় অধিকার দেওয়া আত্মহত্যার অধিকার দেওয়া। এক সময়ে সেই অধিকার ভাদের দিভেই হবে, কিন্তু এখন দিলে কি সেই অধিকারের কিন্তু বাকি থাকবে দু

रणामात्र रणथात्र मर्पा এই चः ए चामात्र मरन रम त्रामात्र चार्छ छ। वनरमम।

Û

আমি জানি, জমিদার নির্লোভ নয়। তাই রায়তের যেখানে কিছু
বাধা আছে জমিদারের আয়ের জালে সেখানে মাছ বেশি আটক পড়ে।
আমাদের দেশে মেয়ের বিবাহের সীমা সংকীর্ণ, সেই বাধাটাই বরপক্ষের
আয়ের উপায়। এও তেমনি। কিন্তু দেখতে দেখতে চাবির জমি সরে
সরে মহাজনের হাতে পড়লে আখেরে তাতে জমিদারের লোকসান
আছে বলে আনন্দ করবার কোনো হেতু নেই। চাবির পক্ষে জমিদারের
মৃষ্টির চেয়ে মহাজনের মৃষ্টি অনেক বেশি কড়া— যদি তাও না মান এটা
মানতে হবে, সেটা আর-একটা উপ্রি মৃষ্টি।

রায়তের জমিতে জমাবৃদ্ধি হওয়া উচিত নয়, এ কথা খুব সত্য।
রাজসরকারের সঙ্গে দেনা-পাওনায় জমিদারের রাজস্বৃদ্ধি নেই, অথচ
রায়তের স্থিতিস্থাপক জমায় কমা সেমিকোলন চলবে, কোণাও দাঁড়ি
পড়বে না, এটা ক্লায়বিকদ্ধ। তা ছাড়া এই ব্যবহাটা জমির উন্নতিসাধন
সম্বন্ধে স্বাভাবিক উৎসাহের একটা মস্ত বাধা; স্থতরাং কেবল চাবি নয়,
সমস্ত দেশের পক্ষে এটাতে অকল্যাণ। তা ছাড়া গাছ কাটা, বাসস্থান
পাকা কয়া, প্রবিশীখনন প্রভৃতির অস্করায়গুলো কোনো মতেই সমর্থন
করা চলে না।

কিন্তু এ-সব গেল খুচরো কথা। আসল কথা, যে মান্থব নিজেকে বাঁচাতে জানে না কোনো আইন তাকে বাঁচাতে পারে না। নিজেকে এই-যে বাঁচাবার শক্তি তা জীবনযাত্রার সমগ্রতার মধ্যে, কোনো-একটা খাপছাড়া প্রণালীতে নর। তা বিশেষ আইনে নয়, চরকায় নয়, থদরে নয়, কন্ত্রেনে ভোট দেবার চার আনা -ক্রীত অধিকারে নয়। পল্লীর

রায়তের কথা

মধ্যে সমগ্রভাবে প্রাণসঞ্চার হলে তবেই সেই প্রাণের সম্পূর্ণতা নিজেকে প্রতিনিয়ত রক্ষা করবার শক্তি নিজের ভিতর থেকেই উদ্ভাবন করতে পারবে।

কেমন করে সেটা হবে সেই ভত্তাই কাজে ও কথার কিছু কাল থেকে ভাবছি। ভালো জবাব দিয়ে বেতে পারব কি না জানি নে— জবাব তৈরি হয়ে উঠতে সময় লাগে। তবু আমি পারি বা না পারি, এই মোটা জবাবটাই খুঁজে বের করতে হবে। সমস্ত খুচরো প্রশ্নের সমাধান এরই মধ্যে। নইলে তালি দিতে দিতে দিন বয়ে যাবে; যার জন্তে এত জোড়াতাড়া সে তত কাল পর্যন্ত টি কবে কি না সন্দেহ।

वावाह ১৩००

রহতর ভারত

বৃহত্তর-ভারত-পরিষদ কর্ড্ক অনুষ্ঠিত বিদারসম্বর্ধনা উপলক্ষে

বৰ্দীপ থাবার পূর্বাহ্ণে যে অভিনন্ধন আপনারা আমাকে দিলেন তাতে আমার মনে বল সঞ্চার করবে। আমরা চার দিকের দাবির দারা আমাদের প্রাণশক্তি আবিষ্কার করি। যার যা দেবার তা বাইবের নেবার ইচ্ছা থেকে আমরা দিতে সক্ষম হই। দাবির আকর্ষণ যদি থাকে তবে আপনি সহক্ষ হয়ে যায় দেওয়ার পথ।

বাইরে যেখানে দাবি সত্য হয়, অপ্তরে সেখানেই দানের শক্তি উদ্বোধিত হয়ে ওঠে। দানের সামগ্রী আমাদের থাকসেও আমরা দিতে পারি নে, সমাজে যত কণ প্রত্যাশা না সজীব হয়ে ওঠে। আজ একটা আকাজ্ঞা আমাদের মধ্যে জেগেছে, যে আকাজ্ঞা ভারতের বাইরেও ভারতকে বড়ো ক'রে সন্ধান করতে চায়। সেই আকাজ্ঞাই বৃহত্তর ভারতের প্রতিষ্ঠানটির মধ্যে রূপ গ্রহণ করেছে। সেই আকাজ্ঞাই আপন প্রত্যাশা নিয়ে আমাকে অভিনন্ধন করছে। এই প্রত্যাশা আমার চেষ্টাকে সার্থক করক।

বর্বরজাতীর মাহবের প্রধান লকণ এই যে, তার আহাবোধ সংকীর্ণ,
সীমাবদ্ধ। তার চৈতন্তের আলো উপস্থিত কাল ও বর্তমান অবস্থার
বেরটুকুকেই আলোকিত করে রাথে ব'লে সে আপনাকে তার চেয়ে
বড়ো কেত্রে জানে না। এইজ্বন্তেই জ্ঞানে কর্মে সে দুর্বল। সংস্কৃত
প্রোকে বলে, যাদৃশী ভাবনা যন্ত সিদ্ধির্ভবিতি তাদৃশী। অর্থাৎ, ভাবনাই
হচ্ছে সাধনার স্কৃত্তিশক্তির মূলে। নিজের সম্বন্ধে, নিজের দেশ সম্বন্ধে বড়ো
ক'রে ভাবনা করবার দরকার আছে, নইলে কর্মে জোর পৌছর না,
এবং অভি ক্ষীণ আশা ও অতি কুল্র সিদ্ধি নিয়ে অক্তার্থ হতে হয়।

বৃহত্তর ভারত

নিজের কাছে নিজের পরিচয়টাকে বড়ো করবার চেষ্টাই সভ্য জাতির ইতিহাসগত চেষ্টা, নিজের পরিচয়কে সংকীর্ণ দেশকালের ভূমিকা থেকে মুক্তিদানই হচ্ছে এই চেষ্টার লক্ষ্য।

বধন বালক ছিলুম বরের কোশের বাতারনে ব'সে দেশের প্রাকৃতিক রূপকে অতি ছোটো পরিধির মধ্যেই দেখেছি। বাইরের দিক থেকে দেশের এমন কোনো মৃতি দেখি নি যার মধ্যে দেশের বাাপক আবির্ভাব আছে। বিদেশী বশিকের হাতে গড়া কলকাতা শহরের মধ্যে তারতের এমন কোনো পরিচয় পাওয়া বায় না যা অগভীর ও অদ্রবিস্তৃত। সেই শিশুকালে কোণের মধ্যে অত্যন্ত বেশি অবক্ষম ছিলাম বলেই ভারত-বর্ষের বৃহৎ স্করপ চোখে দেখবার ইচ্ছা অত্যন্ত প্রবল হয়েছিল।

এমন সময়ে আমার আট-নর বছর বয়সে গলাতীরের এক বাগানে কিছু কালের জন্তে বাগ করতে গিয়েছিলাম। গভীর আনন্দ পেলাম। গলানদী ভারতের একটি বৃহৎ পরিচয়কে বহন করে। ভারতের বহু দেশ, বহু কাল ও বহু চিত্তের ঐক্যধারা ভার শ্রোভের মধ্যে বহুমান। এই নদীর মধ্যে ভারতের একটি পরিচয়-বাণী আছে। হিমাদ্রির ক্ষম থেকে পূর্বসমৃদ্র পর্যন্ত লম্মান এই গলানদী। সে যেন ভারতের যজ্ঞোপবীতের মতো, ভারতের বহুকালক্রমাগত জ্ঞান ধর্ম তপন্তার শ্বতিযোগস্ত্ত ।

তার পর আর কয়েক বৎসর পরেই পিতা আমাকে সঙ্গে করে

হিমালয় পর্বতে নিয়ে যান। আমার পিতাকে এই প্রথম নিকটে দেখেছি,
আর হিমালয় পর্বতকে। উভয়ের মধ্যেই ভাবের মিল ছিল। হিমালয়
এমন একটি চিরস্তন রূপ যা সমগ্র ভারতের, যা এক দিকে হুর্গম, আরএক দিকে সর্বজনীন। আমার পিতার মধ্যেও ভারতের সেই বিভা

চিস্তার প্রায় কর্মে প্রত্যহ প্রাণময় হয়ে দেখা যাদ্দিল, যা সর্বকালীন,
যার মধ্যে প্রাদেশিকতার কার্পণ্যমাত্র নেই।

তার পর আর বরসে ভারতবর্ষের ইতিহাস পড়তে শুক্ক করলাম।
তখন আলেকজান্দার থেকে আরম্ভ ক'রে ক্লাইভের আমল পর্যন্ত রাষ্ট্রীর
প্রতিহন্দিতায় ভারতবর্ষ বারবার কিরকম পরাস্ত অপমানিত হরে এসেছে
এই কাহিনীই দিন ক্ষণ তারিখ ও নামমালা সমেত প্রত্যাহ কঠন্থ করেছি।
এই অগৌরবের ইতিহাসমন্ধতে রাজপুতদের বীরত্বকাহিনীর ওয়েসিস
থেকে যেটুকু ফসল সংগ্রহ করা সম্ভব তাই নিয়ে স্বজাতির মহত্বপরিচয়ের দান্দণ কুধা মেটাবার চেষ্টা করা হত। সকলেই জানেন, সে
সময়কার বাংলা কাব্য নাটক উপস্থাস কিরকম হুংসহ ব্যগ্রতায় উভের
রাজস্থান দোহন করতে বসেছিল। এর থেকে স্পষ্ট বোঝা যায়, দেশের
মধ্যে আমাদের পরিচয়-কামনা কিরকম উপবাসী হয়ে ছিল। দেশ
বলতে কেবল তো মাটির দেশ নয়, সে যে মানবচরিত্রের দেশ। দেশের
বাহু প্রকৃতি আমাদের দেহটা গড়ে বটে, কিন্তু আমাদের মানবচরিত্রের
দেশ থেকেই প্রেরণা পেরে আমাদের চরিত্র গড়ে ওঠে। সেই দেশটাকে
যদি আমরা দীন ব'লে জানি তা হলে বিদেশী বীর জাতির ইতিহাস
প'ড়ে আমাদের দীনতাকে তাড়াবার শক্তি অক্সরের মধ্যে পাই নে।

ঘরের কোণে আবদ্ধ থেকে ভারতের দৃশ্যরপটাকে বড়ো ক'রে দেখবার পিপাসা যেমন মনের মধ্যে প্রবল হয়েছিল, তেমনি তখনকার পাঠ্য ভারত-ইতিহাসের অগোরব-অধ্যায়ের অদ্ধকার কোণের মধ্যে বসে বসে ভারতের চারিত্রিক মহিমার বৃহৎ পরিচয় পাবার জন্ত মনের মধ্যে একটা ক্ষার পীড়ন ছিল। বস্তুত এই অসন্থ ক্ষাই আমাদের মনকে তখন নানা হাম্ভকর অত্যুক্তি ও অবাজ্বতা নিম্নে তৃপ্তির স্বপ্রমূলক উপকরণ-রচনার প্রবৃত্ত করেছিল। আজ্বও সেদিন যে একেবারে চলে গেছে তা বলতে পারি নে।

य छात्रात्र चाटमा निर्व १ गए निष्यत्र मरशहे । निष्यत्र मरश अकार वह बाकवात्र वाश्र छाटकहे वटम देवल । अहे देवरस्त्र मिस्त

বৃহত্তর ভারত

মধ্যেও তার প্রতি-মূহুর্ত-গত কাজ হয়তো কিছু আছে, কিছু উদার নক্ষত্রমন্ত্রদীর সভায় তার সন্মানের স্থান নেই। সে অঞ্চাত, অধ্যাত, পরিচয়হীন। এই অপরিচয়ের অবমাননাই কারাবাসের মতো, এর থেকে উদ্ধার পাওয়া যায় আলোকের হারা। অর্থাৎ, এমন কোনো প্রকাশের হারা যাতে ক'রে বিশের সঙ্গে তাকে যোগযুক্ত করে, এমন সত্যের হারা যা নিথিলের আদর্থীয়।

चार्यापत्र मार्छ वात्रवात्र वरलएइ, यिनि निष्यत्र मर्था गर्वज्ञरक अवश गर्वज्ञा यथा निष्क्रक खानिन जिनिहे गठाक खानिन। वर्षा९, व्यर्शीमात्र मरशा व्याचात्र निक्ष व्यवशा व्याचात्र मठा व्यवशा नत्र। ব্যক্তিগত মাহুষের জীবনের সাধনায় এ ষেমন একটা বড়ো কথা, (नश्चरनत्र ঐতিহাসিক সাধনাতেও সেই त्रक्य। কোনো **यहाबा**जि कौ করে আপনাকে বিশ্বের কাছে পরিচিত করতে পারে এই তপস্তাই তার তপস্তা। যে পারলে না বিধাতা তাকে বর্জন করলেন। মানব-সভাতার স্থিকার্যে তার স্থান হল না। রামচন্দ্র যথন সেতৃবন্ধন করেছিলেন তথন কাঠবেডালিরও স্থান হয়েছিল সেই কাজে। সে তথন खधु गाष्ट्रित काहेरत्र निष्यत्र श्राष्ट्रारष्ट्रात् ना त्थरक चाननात्र कुछ भक्ति निष्ठि हुरे छ छ जू यित्र विष्ठ्र न मू एक या राष्ट्र विष्ठ विष्ठ या न দিয়েছিল। সীতাকে রাবণের হাত থেকে উদ্ধার করাই পৃথিবীতে नकल यहर नाथनात्र क्रायक। त्रहे नीखाहे धर्य; त्रहे नीखा छान, चाचा, गमृद्धिः (गरे गौछा चुन्मत्रीः (गरे गौछा गर्वमानत्वत्र कनाागि। निष्मत कांवेदत्रत्र यदश क्षाकृष्ठ शाश्चनकारत्रत्र अवर्ष निरम्न अहे कांवेदवजानित गार्बक्छ। छिन ना, किंद्र गीछा-উद्घाद्रित्र यह९ काट्न त्म स्व नित्कत्क निर्वापन करत्रिक अधेकरम् यानवरमवला लात्र भिर्छ चानैवीमरत्रथा চিহ্নিত করেছিলেন। প্রত্যেক মহাজাতির পিঠে আমরা সেই চিহ্ पिथए ठारे, रगरे हिस्स बाबारे रा बानन काहेबरकारनब बडीड

निতालाक श्वान नाज करत्र।

ভারতবর্ষের যে বাণী আমরা পাই সে বাণী যে শুধু উপনিষদের লোকের মধ্যে নিবদ্ধ তা নয়। ভারতবর্ষ বিশ্বের নিকট যে মহন্তম বাণী প্রচার করেছে তা ত্যাগের দ্বারা, দ্বংখের দ্বারা, মৈত্রীর দ্বারা, আত্মার দ্বারা— সৈত্য দিয়ে, অন্ত্র দিয়ে, পীড়ন লুঠন দিয়ে নয়। গৌরবের সঙ্গে দাস্মার্ভির কাহিনীকে বড়ো বড়ো অক্ষরে আপন ইতিহাসের পৃষ্ঠায় সে অন্ধিত করে নি।

আমাদের দেশেও দিগ্বিজ্ঞারের পতাকা হাতে পরজাতির দেশ জয় করবার কীতি হয়তো সে কালে অনেকে লাভ করে পাকবৈন, কিস্তু ভারতবর্ষ অন্ত দেশের মতো ঐতিহাসিক জ্বপমালায় ভক্তির সঙ্গে তাঁদের নাম স্বরণ করে না। বীর্ষবান দম্যদের নাম ভারতবর্ষের প্রাণে খ্যাত হয় নি।

অহংকেই বে মামুব পরম ও চরম সত্য বলে জানে সেই বিনাশ পায়। সকল হুংখ সকল পাপের মূল এই অহমিকায়। বিশের প্রতি মৈত্রীভাবনাতেই এই অহংভাব লুপ্ত হয়, এই সভ্যটি আত্মার আলোক। এই আলোকদীপ্তি ভারতবর্ষ নিজের মধ্যে বদ্ধ রাথতে পারে নি। এই আলোকের আভাতেই ভারত আপন ভৃখগুসীমার বাইরে আপনাকে প্রকাশ করেছিল। স্থতরাং এইটিই হচ্ছে ভারতের সত্য পরিচয়। এই পরিচয়ের আলোকেই যদি নিজের পরিচয়কে উচ্ছল করতে পারি তা হলেই আমরা বন্ত ! আমরা বে ভারতবর্ষে জন্মলাভ করেছি সে এই মৃক্তিময়ের ভারতবর্ষে, সে এই তপন্থীর ভারতবর্ষে। এই কথাটি যদি প্রব করে মনে রাথতে পারি তা হলে আমাদের সকল কর্ম বিশুদ্ধ হবে, তা হলে আমরা নিছেকে বিশেব করে ভারতবাসী বলতে পারব, সেজতে আমাদের নতুন করে ধবজা নির্মাণ করতে হবে না।

क्षा रुटनरे माञ्च चरत्रत्र क्या एएट्य। चाककान चामाएत्र एएट्य

বৃহত্তর ভারত

পোলিটিক্যাল আত্মপরিচয়ের ক্ষাটাই নানা কারণে সব চেয়ে প্রবল হরে উঠেছে। এইজজে নিরস্তর তারই ভোজটাই স্বপ্নে দেখছি। ভার চেয়ে বড়ো কথাগুলিকেও অপ্রাসন্তিক ব'লে উপেক্ষা করবার তর্জন আক্রকাল প্রায় শোনা যায়।

কিন্তু এই পোলিটিক্যাল আত্মপরিচয়ের ধারা খ্রুতে গিয়ে বিদেশী ইতিহাসে গিয়ে পৌছতে হয়। সেই ব্যগ্রতার তাড়নায় আপনাকে খপ্রে-গড়া ম্যাট্সিনি, খপ্রে-গড়া গারিবাল্ভি, কাল্লনিক ওয়াশিংটন ব'লে ভাবনা করতে হয়। অর্থতন্ত্বেও তাই; এখানে আমাদের কারও কারও কারনা বল্শেভিজ্ম, কারও সিভিক্যালিজ্ম, কারও বা সোম্ভালিজ ম্এর গোলোকধাধায় ঘুরে বেড়াচ্ছে। এ-সমস্তই মরীচিকার মতো. ভারতবর্ষের চিরকালীন জমির উপরে নেই— আমাদের ছ্রভাগ্যতাপদম্ব হাল আমলের ত্রার্ত দৃষ্টির উপরে স্বপ্ল রচনা করছে। এই স্বপ্ল-সিনেমার কোণে কোণে মাঝে মাঝে Made in Europe -এর মার্কা ঝলক মেরে এর কারখানাধ্রের বৃত্তান্তাটি জানিক্লে দিয়ে যাচ্ছে।

অঞ্চানা পথে অবাস্তবের পিছনে আমান যেখানে ঘূরে বেড়াছি সেখানে অভিভূতিবিহ্বলতার মধ্যে আমানের নিজের পরিচয় নেই। অথচ, পূর্বেই বলেছি, নিজের ব্যক্তিস্বরূপের সভা পরিচয়ের ভিত্তির উপরেই আমরা সিদ্ধিকে গড়ে ভূলতে পারি। পলিটিক্স্-ইকনমিক্সের বাইরেও আমাদের গৌরবলোক আছে, এ কথা যদি আমরা জানি তবে সেইখানেই আমাদের ভবিশ্বংকে আমরা সভ্যে প্রভিত্তিত করতে পারব। বিশ্বাসহীনের মতো নিজের সভো অশ্রদ্ধা ক'রে হাওয়ায় হাওয়ায় আকাশকুস্থম চাব করবার চেষ্টা করলে ফল পাব না।

ভারতবর্ধ যে কোন্থানে সত্য, নিজের লোহার সিদ্ধুকের মধ্যে ভার দলিল সে রেখে যায় নি । ভারতবর্ষ যা দিতে পেরেছে ভার দারাই তার প্রকাশ। নিজের মধ্যে সম্পূর্ণ যা ভার কুলোয় নি ভাতেই ভার

পরিচয়। অন্তকে সত্য ক'রে দিতে পারার ম্লেই হচ্ছে অন্তকে আপন ক'রে উপলব্ধি। আপন সীমার বাধা যে ভাঙতে পেরেছে, বাইরের ছুর্নম ভৌগোলিক বাধাও সে লজ্বন করতে পেরেছে। এইজন্তেই ভারতবর্ষের সভ্যের ঐশ্বর্যকে জানতে হলে সমৃদ্রপারে ভারতবর্ষের স্থান্ব দানের ক্ষেত্রে যেতে হয়। আজ ভারতবর্ষের ভিতরে ব'সে ধূলিকল্বিত হাওয়ার ভিতর দিয়ে ভারতবর্ষকে যা দেখি ভার চেয়ে স্পাই ও উচ্ছল ক'রে ভারতবর্ষের নিত্যকালের রূপ দেখতে পাব ভারতবর্ষের বাইরে থেকে।

চীনে গেলাম, দেখলাম জ্বাত হিসাবে তারা আমাদের থেকে সম্পূর্ণ আলাদা। নাকে চোখে ভাষায় ব্যবহারে তাদের সঙ্গে আমাদের কোনো মিলই নেই। কিন্তু তাদের সঙ্গে এমন একটি গভীর আত্মীয়ভার যোগ অমুভব করা গেল, যা ভারতবর্ষীয় অনেকের সঙ্গে করা কঠিন হয়ে উঠেছে। এই যোগ রাজশক্তির ছারা স্থাপন করা হয় নি, এই যোগ উন্তত তরবারির জ্বোরেও নয়; এই যোগ কাউকে ছংখ দিয়ে নয়, নিজে ছংখখীকার ক'রে। অভ্যন্ত পরের মধ্যেও যে সভ্যের বলে অভ্যন্ত আত্মীয়ভা শ্বীকার করা সন্তব হয়, সেই সভ্যের জ্বোরেই চীনের সঙ্গে সভ্য ভারতের চিরকালের যোগবন্ধন বাধা হয়েছে। এই সভ্যের কথা বিদেশী পলিটিক্সের ইতিহাসে স্থান পায় নি ব'লে আমরা এ'কে অন্তরের সঙ্গে বিশ্বাস করি নে। কিন্তু এ'কে বিশ্বাস করবার প্রমাণ ভারতের বাইরে অনুর দেশে আজ্বও রয়ে গেছে।

জাপানে প্রতি দিনের ব্যবহারে জাপানির স্থগভীর ধৈর্য, আত্মসংযম, তার রসবোধের বিচিত্র পরিচয়ে যখন বিশ্বিত হতেছিলাম তখন এ কথা কতবার শুনেছি যে, এই-সকল শুণের প্রেরণা অনেকখানি বৌদ্ধর্মের বোগে ভারতবর্ধ থেকে এসেছে। সেই মূল প্রেরণা স্বয়ং ভারতবর্ধ থেকে আজ লুপ্তপ্রায় হল। সভাের যে বস্তা এক দিন ভারতবর্ধের ছুই কূল

বৃহত্তর ভারত

উপ্চিম্নে দেশে দেশে বন্ধে গিয়েছিল ভারতবর্ধের প্রবাহিনীতে আজ তা তলার নেমে আসছে, কিন্তু ভার জলসঞ্চয় আজও দুরের নানা জলাশম্বে গভীর হয়ে আছে। এই কারণেই সেই-সকল জারগা আধুনিক ভারতবাসীর পক্ষে তীর্ধন্থান। কেননা, ভারতবর্ধের প্রব পরিচয় সেই-সব জারগাভেই।

यश्यूरण म्गणमान वाक्षणिक गरण हिन्दूरमव धर्मविरवाध घरहे छिन। **रिट निया क्षा वा कि कार्य ना धूना क्ष्म क्ष्म** মধ্যে অনেকে মুসলমান ছিলেন— যারা আত্মীরভার সভ্যের খারা ধর্ম -विद्यार्थत्र यथा राष्ट्रवन्तन क्द्राफ वरगहिरमन। छात्रा भामिनिभान ছিলেন না, প্রয়োজনমূলক পোলিটিকাল ঐক্যকে তাঁরা সভ্য ব'লে क्लना अ करत्रन नि। छात्रा একেবারে সেই গোড়ার গিরেছিলেন যেখানে नकल माञ्चरवत्र मिन्दानत्र व्यक्तिं। अव। वर्षार, छात्रा छात्रछत्र मिरे मश्रदे खर्ग कर्त्रिहालन याएं चार्छ, यात्रा नकलरक चार्नात बर्धा अक क'रत रमरथ ভात्राहे गंछा रमस्थ। ভथनकात्र मिरनद व्यत्नक स्वाद्या व्यत्नक मिष्ठ करत्र इन, विष्ने-हाँ एठ- जाना हे छिहार जां पत्र हे नाम ७ की छि লিখিত ধ্য়েছে। সে-সব যোদ্ধারা আজ তাঁদের ক্বত কীতিভভের ভগ্নবেষ ধ্লিন্ত,পের মধ্যে মিশিয়ে আছেন। কিন্তু আৰও ভারতের প্রাণস্রোতের মধ্যে সেই-সকল সাধকের অমর বাণী-ধারা প্রবাহিত चार्छ; रमथान (परक चामारमंत्र व्यारमंत्र (व्यत्रमा यमि चामन्ना निर्छ পারি তা হলে তারই জোরে আমাদের রাষ্ট্রনীতি অর্থনীতি কর্মনীতি সবই বল পেরে উঠতে পারে।

गठावानी यथन चामाराव थानरक गठीत छार छेन्दाधिक करत छथन गिर्दे थान नकन निर्दे निष्मत थानारक गार्थक करत। छथन गिर्दे थान गृष्टित छेन्नरम पूर्व हरत छर्छ। हिस्सत छेन्द्र गरछात गरचार्छत थमान हरक धरे गृष्टिमक्तित गरहहेछा।

বৌদ্ধর্য সন্ত্যাসীর ধর্ম। কিন্তু তা সত্ত্বেও যখন দেখি তারই প্রবর্তনার শুহাগহ্বরে চৈত্যবিহারে বিপুলশক্তিসাধ্য শিল্লকলা অপর্যাপ্ত প্রকাশ পেয়ে গেছে তখন বুঝতে পারি, বৌদ্ধর্য মান্তবের অস্তরতম মনে এমন একটি সত্যবোধ আগিয়েছে যা তার সমন্ত প্রকৃতিকে সফল করেছে, যা তার অভাবকে পঙ্গু করে নি। ভারতের বাহিরে ভারতবর্ষ যেখানে তার মৈত্রীর সোনার কাঠি দিয়ে স্পর্শ করেছে সেখানেই শিল্লকলার কী প্রভূত ও পরমাশ্র্য বিকাশ হয়েছে। শিল্লফ্টিমহিমায় সে-সকল দেশ মহিমান্বিত হয়ে উঠেছে।

অবচ সেখানকার লোকের সমজাতীয়দের দেখো, দেখনে, তারা নরঘাতক, তারা শিল্পসম্পদহীন। এমন-সকল নিরালোক চিত্তে আলো আললে দয়াধর্ম ত্যাগধর্ম মৈত্রীধর্মের মহতী বাণীর ছারা। সেখানকার লোকে সামান্ত বেশভ্ষা-ভাষার পরিবর্তনের ছারা স্বাভন্ত্র্য পেরেছে তা নয়; স্বষ্টি করবার স্বস্তু শক্তি তাদের মধ্যে জাগ্রত হয়েছে— সে কী পরমান্ত্রত স্বষ্টি! এই-সকল দ্বীপেরই আশে পাশে আরো তো অনেক দ্বীপ আছে। সেখানে আমরা 'বরবুদর' দেখি নে কেন ? সে-সব জায়গায় 'আছরবট'এর সমত্ল্য বা সমজাতীয় কিছু নেই কেন ? সভ্যের জাগরশমন্ত্র যে সেখানে পৌহায় নি। মাত্র্যকে অমুকরণে প্রবৃত্ত করার মধ্যে গৌরব নেই, কিন্তু মাত্র্যবের স্বস্তু শক্তিকে মুক্তিদান করার মতো এত বড়ো গৌরবের কথা আর কি কিছু আছে ?

লোকে যথন দরিদ্র হয় তথন বাইরের দিকে গৌরব খুঁজে বেড়ায়।
তথন কথা ব'লে গৌরব করতে চায়, তথন পুঁথি থেকে শ্লোক খুঁটে
খুঁটে গৌরবের মালমসলা ভগ্নন্ত,প থেকে সঞ্চয় করতে থাকে। এমনি
ক'রে সত্যকে ব্যবহার থেকে দ্রে রেখে যদি গলার জোরে পুরাতন
গৌরবের বড়াই করতে বসি তবে আমাদের ধিক্। অহংকার করবার
জভ্যে সভ্যের ব্যবহার সভ্যের অবমাননা। আমার মনের একান্ত প্রার্থনা

বৃহত্তর ভারত

এই ষে— সভাবাণীকে কাঁধে ঝুলিয়ে জরঢাক ক'রে ভাকে যেন বাজিয়ে না বেড়াই, বাইরের লোককে চমক লাগাবার জন্তে যেন ভাকে অলংকার মাত্র না করি, যেন নিজেরই একান্ত আন্তরিক প্রয়োজনের জন্তেই ভার সন্ধান ও সাধনা করতে পারি।

জাভায় যখন যাব তথন মনকে অহংকারমুক্ত ক'রে সভাের অমৃত-মল্লের ক্রিয়াটি দেখে যেন নম্র হতে পারি। সেই মৈত্রীর মহামন্ত্রটি নিজের মধ্যেই পাওয়া চাই, তা হলেই আমার চিক্তে যেখানে অরণা সেখানে মন্দির উঠবে, যেখানে মক্রভূমি সেখানে সৌন্দর্যের রসর্ষ্টি হবে, জীবনের তপ্তা জয়য়ুক্ত হয়ে সার্থক হয়ে উঠবে।

खार्ग २००८

श्निपूर्यमन्यान

वीवुङ कानिनान नागरक निधि उ

শান্তিনিকেতন

कना गिरम्

षात्र वामन नियाह। छाटे चामात्र मने। मानव-देखिहारमत्र শতাব্দীচিহ্নিত বেড়ার ভিতর থেকে ছুটে বেরিয়ে গেছে। আকাশ-রঙ্গভূমিতে জলবাভাগের মাতনের যুগধুগান্তরবাহিত স্বতিম্পন্দন আজ व्यागाव भिवाय भिवाय त्यचगद्वादिव गीए मागिरयह । व्यागाव कर्ठवा-वृद्धि काथाम जिल्ला राज, मञ्जलि चामि चामान मामत्नकान के मानवनी भागठान-मह्याहाि रायत परन ভिए शिहि। প্রাণরাজ্যে ওদের হল वत्निम वः म, खत्रा त्कान् वामिकात्मत्र द्रोप्तवृष्टित উखताधिकात्र भूत्राभूति ভোগ করে চলেছে। ওরা মামুষের মতো আধুনিক নয়, সেইজন্তে ওরা চিরনবীন। মানবজাতির মধো কেবল কবিরাই সভাতার অপবায়ের চোটে তাদের আদিকালের উত্তরাধিকার একেবারে ফুকে দিয়ে বলে নি। তাই তক্ষণতার আভিজাত্য কবিদের নিতান্ত মানুষ ব'লে অবজ্ঞা कर्त्र ना। এই कर्लिन र्राय वर्ष वर्षात्र नमन्न चामारक अमन करत्र छेलना करत्र रमम्, चायारक गकन माम्रिचनक्रम (धरक विवाणि क'रत्र खार्षित रथनाचरत्र जाकरल थारक— चामारमत्र मर्यत्र मर्था एय हिल्माञ्च चारह, य इष्ट यागातिय गव किया थाठीन शूर्वक, त्रहे यागाय कर्मनाना हि पथन करत्र वरम। रमहेब्बरकारे वर्षा भ'एए व्यविध व्यामि हाखत्रात्र मर्पन, वृष्टित गत्म, गाइপामात्र गत्म প্রতিযোগিতা করতে বলে গেছি; কাজকর্ম ছেড়ে গাল তৈরি করছি— সেই সুত্রে মান্তুবের মধ্যে আমি সব চেয়ে কম মানুষ र्षिण् वायात्र यन घारात्र यरणा कांशरह, शालात्र यरणा विन्यिन्

হিন্দুমুসলমান

क्रवरह। कानिमान এই উপলক্ষ্যেই বলেছিলেন: মেঘালোকে ভবতি স্থিনোহপ্যস্তথাবৃত্তিচেত:। অগুথাবৃত্তি হচ্ছে মানববৃত্তির পণ্ডির वाहेरत्रत वृक्षि। এই वृक्षि चामान्त्र गिर्हे च्रम्त्र काला निरत्न यात्र यथन थार्णित रथेना हनरह, गरनेत्र **याणीति एक इम्र नि— वाक रये**थारिन हैक्टनित्र योगे बाग উঠেছে সেখানে यथन घारमत्र कूल कूल क्यां निल উড়ে উড়ে বেড়াচ্ছে। यारे হোক, এই সময়টাতে ধন মেঘে মধ্যাহ ছারাবৃত, মাঠে মাঠে বাদল-হাওয়া ভেঁপু বাজিয়ে চলেছে, আর हाछि। हाछ। हक्ष्म जनभात्रा हेत्र्महाए। हाजीएमत्र चकात्रभ हामित्र गरा होत्र मिर्क थिन्थिन् कत्रहा आक १हे चार्याह, कुछा अकामनी তিপি, আজ অমুবাচী আরম্ভ হল। নামটা সার্থক হয়েছে, সমস্ভ প্রকৃতি আৰু ৰূলের ভাষায় মুধর হয়ে উঠল। ঘন মেঘের চক্রাতপের ছায়ায় আজ অধুবাচীর গীতিকবিতার আসর বসেছে; তৃণসভার গায়েনের দল विज्ञित्राख नियञ्जन পেয়েছে, चात्र তার সঙ্গে যোগ দিয়েছে মন্তদাছুরি। এ আসরে আমার আসন পড়ে নি যে তা মনেও কোরো না। মেঘের **डाटकत्र क्यांव ना मिटम हुल क'ट्र यांव, व्यामि এमन পाख नहे।** यारचत्र भन्न यारचत्र यारा चायात्र भान हरलाइ निर्नेत्र भन्न निन; তার কোনো গুরুষ নেই, কোনো উদ্দেশ্ত নেই; মেঘ যেমন 'ধুমজ্যোতি:-गिनगङ्गाः गन्निभाजः'. (मञ्ज एजमिन नित्रवंक উপাদানে তৈরি।

ठिक यथन चायात्र जाननात्र धादत्र यदम खब्दनश्वनित्न गान धदत्र ছि—

चाक नवीन (यरषद च्रद्र लिश्ह

चागात्र गतन,

चायात जावना यज छेजन रन

चकात्रर१--

ठिक এमन नमन्न नमूजभात इटिं छामान थिन এन, छान्छवर्ष हिन्द्-मूननमान-नमन्त्रात नमानान की। इठार मत्न भएए राज, मानवनःनारत

আমার কাজ আছে— শুধু মেঘমল্লারে মেঘের ডাকের জবাব দিয়ে চলবে না, মানব-ইতিহাসের বে-সমন্ত মেঘমল্ল প্রশ্লাবলী আছে তারও উত্তর ভাবতে হবে। তাই অমুবাচীর আসর পরিত্যাগ করে বেরিয়ে আসতে হল।

পৃথিবীতে হুটি ধর্মসম্প্রদায় আছে অন্ত সমস্ত ধর্মমতের সঙ্গে যাদের বিক্ষতা অত্যুগ্র— সে হচ্ছে খৃদ্যান আর মুসলমান ধর্ম। তারা নিজের थर्यत्क পोलन कद्दरे मञ्जूष्टे नग्न, खरा धर्मत्क मःश्व कद्रत्व উष्णल। এইজন্মে তাদের ধর্ম গ্রহণ করা ছাড়া তাদের সঙ্গে মেলবার অন্ত কোনো উপায় निरु। थुम्होनधर्मावनश्चीरमत्र मश्चक এकि छ्विशांत्र कथा এই य्, ভারা আধুনিক যুগের বাহন; ভাদের মন মধ্যযুগের গভীর মধ্যে আবদ নয়। ধর্মত একাস্তভাবে তাদের সমস্ত ভীবনকে পরিবেষ্টিত ক'রে নেই। এইজন্মে অপরধর্মাবলম্বীদেরকে তারা ধর্মের বেড়ার দ্বারা সম্পূর্ণ বাধা रमञ्ज ना। शुरद्राभीम् व्याद धुम्हान এই हुरहा अस এकार्यक नम्र। 'सुरद्राभीम् वोक' वा 'युद्रां शीय यूगनमान' नरमंत्र मरशा चरणाविक्षण (नरे। किन् धर्मत्र नार्य ए काजित्र नायकरण धर्ममर्ज्य जात्मत्र मूथा পরিচয়। 'यूगनयान (वोद्ध' वा 'यूगनयान शृज्धान' नक ऋष्ट चगल्य। चलत्र नरक हिनुकाछिछ এक हिनादि यूननयानदिव ये ये ये । वर्षार, छात्रा धर्यत्र थाकाद मन्भूर्ग भद्रितिष्टिछ। नाक् थाएका हा एक अहे एए, चन्न धर्मत्र विक्रष्ठा তাদের পক্ষে সকর্মক নয়— অহিন্দু সমস্ত ধর্মের সঙ্গে তাদের non-violent non-co operation। ছিন্দুর ধর্ম যুখ্যভাবে জনাগত ও चाठा द्रमुनक इश्रांटि छात्र त्व् चार्ता किन। मुगनमानधर्म श्रीकात्र क'र्त्र यूगनयात्नेत्र गरक गयानखात्व याना यात्र, हिस्तूत्र रंग भवे खिल्ले गःकीर्। আहादि वावहादि यूग्नमान चर्नद म्ख्रानाय्य निरम्दि बाद्रा थिछा थान करत्र ना, हिन्दू राथारने गठक। छाहे थिनाक छेनन एका यूगनयान निष्वद यगिष्टा धवः चन्न हिम्दि यङ काष्ट्र हिम्

शिन्तू यू मन यान

• यूग्ण्यानत्क छछ काष्ट्र होनएछ शास्त्र नि। चाहात्र इएक याञ्चरवत्र गरक याञ्चरवत्र मध्दकत्र मजू, महेथान्हे भए भए हिन्दू निष्कत्र त्वछ। जूटन (त्ररथष्ट्र। चाभि यथन व्यथम चामात्र व्यभिनात्रि-काष्ट्र व्यव्य हरमहिन्म তখন দেখেছিলুম, কাছারিতে মুসলমান প্রজাকে বসতে দিতে হলে बाबियत्र এक প্রান্ত তুলে দিয়ে সেইখানে ভাকে স্থান দেওরা হত। অন্ত-चाठात्र-चवनचीरमत्र चक्ठि व'ला गगा कत्रात्र मरला मासूरवत्र मरक याञ्चरवत्र यिन्दान्त्र अयन जीवन वांशा चात्र किছू निहे। जात्रजवर्षत्र এমনি কপাল যে, এখানে ছিন্দু-মুসলমানের মতো ছুই জাত একত্ত रुपाइ— धर्ममुद्र वाधा अवन नम्न, चाठाद्र अवन ; चाठाद्र यूगनयात्नत्र वाथा প्रवन नम्न, धर्ययाज প्रवन। এक পক্ষেत्र या निक बात्र (थाना, चन्न भरकत रम मिरक चात्र क्रक। अदा की करत्र मिनर्व १ अक সময়ে ভারতবর্ষে গ্রীক পারসিক শক নানা জাতির অবাধ সমাগম ও गित्रानन ছिল। किन्ह गत्न द्रारथा, त्म 'हिन्दू' गुरगत्र পূर्ववर्जी कात्न। हिन्यूग हत्क अकठे। প্রতিক্রিয়ার यूग — এই যুগে ব্রাহ্মণাধর্মকে সচেষ্ট-ভাবে পাকা क'त्र गाँचा इत्यहिन। इर्नन्या चाठात्रत्र প्राकात्र जून व'रक ब्र्ञारवचा क'रत्र लामा हस्त्रिम। बक्रो क्षा गत्न हिम ना, कारना लाननान जिनिमक अक्तारत चाहेवाह वक्क क'रत्र माममारक (गल जाक याद एक इष्ठा वाहे हाक, याहे कथा हर्छ, विलव এক সময়ে বৌদ্বাগের পরে রাজপুত প্রভৃতি বিদেশীয় জাতিকে দলে টেনে বিশেষ অধ্যবসায়ে নিজেদেরকে পরকীয় সংশ্রব ও প্রভাব **খে**কে मल्पूर्व दका कदवाद खर्छि चाधूनिक हिन्दू धर्म खाद खरानी श्रका ख একটা বেড়ার মতো করেই গড়ে তুলেছিল। এর প্রকৃতিই হচ্ছে নিষেধ এবং প্রত্যাখ্যান। সকল প্রকার মিলনের পক্ষে এমন স্থনিপুণ কৌশলে त्रिष्ठ वाधा खगए खात्र काषा ७ एष्ठि रुम्न नि। এই वाधा क्विन हिन्दू-म्राम्यात्न छ। नम्र। छामात्र वामात्र मछ। मास्य यात्रा वाहात्त्र

चारीनजा तका करण ठारे, चामत्राध श्वक, वांधाश्रध। ममञा जा এই, किन्द नमाथान काथात्र ? मत्नत्र পরিবর্তনে, মুগের পরিবর্তনে। মুরোপ সত্যসাধনা ও জ্ঞানের ব্যাপ্তির ভিতর দিয়ে যেমন ক'রে মধ্যযুগের ভিতর वाहेरत्र याखा कत्ररा हरत। धर्मराक कवरत्रत्र मराजा रेजित करत्र जात्रहे মধ্যে সমগ্র জাতিকে ভূতকালের মধ্যে সর্বতোভাবে নিহিত করে রাখলে উन्नजित्र পথে চলবার উপায় নেই, কারও সঙ্গে কারও মেলবার উপায় (नरे। चागापित्र गानगश्रक्वाित्र गर्था एव चवरत्राथ त्राया छारकः चिठिए ना भारत यागरा कारना दकरमत याधीनछाई भाव ना। শিক্ষার দারা, সাধনার দারা সেই মুলের পরিবর্তন ঘটাতে হবে— **जानात्र (हार्य थें। हा वर्ष्ण এई गःश्वात्र हो एक वर्ष कर्म कर्म कर्म कर्म** जात्र পরে আমাদের কল্যাণ হতে পারবে। হিন্দু-মুসলমানের মিলন यूगनित्रवर्जनित व्यानकात्र व्याहि। किञ्च এ क्या छान छत्र भावात्र कात्रग त्नहे, काव्रव ष्यञ्च प्राप्त माश्रव माधनाव बावा यूगमदिवर्छन घिटियाए, खिव यूग (परक छाना रमनात यूरग (विद्रिष এगেছে। आमत्राध मानिक व्यवद्रांश (कर्षे विदिय वागव; यनि ना वागि छर्व, नामः भन्ना विष्ठ छ व्यवनात्र। हेि १ श्रे व्यायापु १०२२।

भावन ३०२२

. साभी अकानम

चांगारित पर्भ वात्रा गरछात्र खछ श्रद्ध कत्रवात्र चिविकात्री, अवः मिट बिछ दे थी। पिरम यात्रा भाजन कत्रवात्र भक्ति त्रार्थन, छाएमत्र मश्या অল্ল বলেই দেশের এভ ছুর্গভি। এমন চিন্তদৈক্ত যেখানে সেখানে স্বামী শ্রদানন্দের মতো অন্ত বড়ো বীরের এমন মৃত্যু যে কতদূর শোকাবছ তার वर्गनाम क्षरमाष्यन त्नहे। अत्र गरंग अकि कथा अहे चाह्न रम, छात्र मृङ्ग যতই শোচনীয় হোক, সে মৃত্যুতে তাঁর প্রাণ, তাঁর চরিত্র ততই মহীয়ান रुप्तरह। বারে বারে ইতিহাসে দেখা যায়, নিজের সমস্ত দিয়ে যারা कन्यां विकास अर्थ कर्त्राह्न, चन्यांन ও चन्युका उत्तिव ननारि खन्न जिन क अभि क देश के किए । यहा भूक यत्रा चारिन वा भिक्त मृत्रु त উপরেও অয়ী করতে, সত্যকে জীবনের সামগ্রী করে তুলতে। আমাদের शांक्रमत्वा व्यान मिवात या উপকরণ র্ষেছে তা বায়ুতে আছে, विक्रानिक পदीकाशाद्व आहि। किंद्र, यल क्व ला छेडिए श्रीपीटल क्विन-वाकांद्र ना शादन करत्र छछ कन खारनद्र भूष्टि इत्र ना। गछा गश्रक्ष ए कथा थार्छ। अधूयाख वारकान हाखना (बरक चाकर्षण करन निरम जारक कीवनगर करवात्र मिक क'कनारहे वा चाहि । मठाक कारन चरनक लारक, जारक यारन रमहे याञ्च रच विरम्य मिक्सान। ज्यान मिर् তাকে মানার दারাই সভ্যকে আমরা সকল মান্তবের করে দিই। এই यान एक भारतात्र मिक्कि हो हे यक बिनिन। अहे मिक्कित नम्भाग यात्रा नमाक्य क पिन जैपित्र मान महामृगा। गएगुत्र क्षिण गिरे निष्ठांत्र चामर्न क्षानन थरे इर्वन (मन्दर्क मिर्प्स रगष्ट्न। जांत्र गांधना-পत्रिष्ठरत्रत्र উপयोगी (य नाग छिनि खहन करबिहिलन राहे नाग छात्र गार्थक। गछारक छिनि लका करत्रहरू। এই लकात्र यथा एडिमिक चाह्य। मिरुत

বারা তাঁর সাধনাকে রূপমৃতি দিয়ে তাকে তিনি সজীব করে গেছেন।
তাই তাঁর মৃত্যুও আলোকের মতো হয়ে উঠে তাঁর শ্রদ্ধার সেই ভয়হীন
ক্ষহীন ক্লান্তিহীন অমৃতচ্ছবিকে উজ্জল করে প্রকাশ করেছে। সভ্যের
প্রতি শ্রদ্ধার এই ভূমানন্দকে তাঁর চরিত্রের মধ্যে আজ আমরা যেন
সার্থক আকারে দেখতে পারি। এই সার্থকতা বাহ্ন ফলে নয়, নিজেরই
অক্ত্রিম বাস্তবতায়।

অপবাতের এই-যে আবাত শুধু মহাপুরুষেরাই একে শহু করতে পারেন, শুধু তাঁদের পক্ষেই এর কোনো অর্থ নেই। যারা মরণকে কুদ্র আর্থের উর্ধের ভূলতে পেরেছেন, জীবন থাকতেই তারা অমৃতলোকে উত্তীর্গ। কিন্তু, মৃত্যুর শুপুচর তো শ্রদ্ধানন্দের আয়ু হরণ করেই ফিরে যাবে না। ধর্মবিদ্রোহী ধর্মান্ধতার কাঁধে চড়ে রক্তকলুবিত যে বীভংশতাকে নগরের পথে পথে সে বিভার করেছিল অনতিকাল পুর্বেই, সে তো আমরা দেখেছি। সে যাদের নষ্ট করেছে তাদের তো কিছুই অবশেষ থাকে নি। তাদের মৃত্যু যে নিরতিশয় মৃত্যু, তাদের ক্ষতি যে চরম ক্ষতি।

তাদের ঘরে সম্ভানহীন মাতার ক্রন্দনে সাম্বনা নেই, বিধবার ছু:খে শাস্তি নেই। এই-যে নিষ্ঠ্রতা যা সমস্তকে নিঃশেষে চিতাভন্মে সমাধা করে, তাকে তো সহু করতে পারা যায় না। ছুর্বল শলপ্রাণ যারা, যাদের জনসাধারণ বলি, তারা এত বড়ো হিংসার বোঝা বইবে কীক'রে? এখন দেখতে পাক্রি, আবার যমরাজের সিংহ্ছার উদ্ঘাটিত হল, আবার প্রতিবেশীতে প্রতিবেশীতে হত্যার প্রতিযোগিতা আরম্ভ হল। এর ছু:খ সইবে কে?

বিধাতা যখন হঃথকে আমাদের কাছে পাঠান তখন সে একটি প্রশ্ন নিয়ে আসে। সে আমাদের জিজ্ঞাসা করে, তোমরা আমাকে কী ভাবে গ্রহণ করবে। বিপদ আসবে না এমন হতে পারে না— সংকটের সময়

यामी अकानम

উপস্থিত হয়, আশু উদ্ধায়ের উপায় থাকে না, কিছ की. ভাবে বিপদকে আমরা ব্যবহার করি ভারই উপরে প্রশ্নের সমুত্তর নির্ভর করে। এই-य পाপ काला इस्त्र मिथा मिन, अद्र खरत्र डीड इव ना अद्र कार्छ याषा নত করব? না সে পাপের বিক্লছে পাপকে দাঁড় করাব ? মৃত্যুর আঘাত, ত্বংথের আঘাতের উপর রিপুর উন্মন্ততাকে আগ্রত করব ? শিশুর আচরণে দেখা যায়, সে যখন আছাড় খায় তখন মেজেকে আঘাত করতে পাকে। যতই আঘাত করে মেজে ততই সে আঘাত ফিরিয়ে एमग्र। এ শिশুর ধর্ম। কিন্তু, यদি কোনো বয়য় লোক হোঁচট খায় তবে সে চিস্তা করে, বাধাটা কোপায়— বাধা যদি থাকে তো সেটা नन्यन वा मिटोटक व्यथनावन क्वरा हत्। महवाहब प्रश्रात भारे বাহির থেকে আকস্মিক আঘাতের চমকে মামুখের শিশুবুদ্ধি ফিরে चारा। रा ७४न गरन करत्र, देश्य चवलवन कत्राष्ट्रे काशुक्रवछा, राजारबद्र প্রকাশ পৌরুষ। আত্তকের দিনে স্বভাবতই ক্রোধের উদয় হয়ে পাকবে, त्र कथा चौकाव कवि। यानवधर्य एठा এक्वादि ছाড्छে পাवि न। किन क्रिया वात्रा यिन चिन्निन हरे ज्य राज्य यानवर्ध नम्र। चार्थन लिए भाषा यि निक्रभाष्य जन्म हत्य यात्र जत्य चा अत्नद्र क्रम् जा नित्र আলোচনা করা রুপা। তখন যদি দোষ কাউকে দিতে হয় তো আগুনকে रयन ना निर्हे। विপদের কারণ সর্বত্রেই পাকে, তার প্রতিকারের উপায় यात्रा त्रात्थ ना जात्राहे (मायौ। यात्मत्र चत्र शूरफ्ट् जात्रा यिन वनरज পারে যে 'কৃপ খনন করে রাখি নি সেই অপরাধের শান্তি পেলেম', তা হলে ভবিশ্বতে তাদের ঘর পোড়ার আশহা কমে। আমাদেরও चाक्र क ठारे नमर्छ रूर । चन्द्रारिश्व भाषात्र क्यांने छाना नारे। खत्न रूप्रका लाक रमत्, ना, এ का जामा मागह ना; अको প্রালয়-ব্যাপার বাধিয়ে দিতে পারলে সান্তনা পাওয়া যায়।

ভারতবর্ষের অধিবাসীদের তুই মোটা ভাগ, হিন্দু ও মুসলমান। यपि

ভাবি, মুসলমানদের অশীকার করে এক পাশে সরিমে দিলেই দেশের शांठिं। किएक यानव, वाकि जिन्हें कि कि यानवरे ना, अर्ग विवक्तिव कथा হতে পারে, কিন্তু ছাদ-রক্ষার পক্ষে স্থবৃদ্ধির কথা নয়। আমাদের गव किया वर्षा व्यवन, वर्षा पूर्वि घरि, यथन यासूय यासूरवद भारम द्रसिष्ट् चष्ठ भद्रम्भदिद यशा मध्य निष्ठे जथवा एम मध्य विक्रुछ। विष्मीत त्रांख्या त्रांख्यपूरूयम् त्र मान वायामित अक्टो वाश यांग वारक, व्यषठ व्याखित्रक मधक थाएक ना। विष्मिश्र त्राव्य ए এই छिटे व्यागाएमत्र गव किया भीड़ा मित्र। भारत्र-भड़ा यागठा इर्वमठा ও अभूयान चारन। विषि नी नागन गम्भर्क यि । कथा थार्ट जर्व यरमे श्रीय्रापत्र गश्यक रग আরো কত সত্য। এক দেশে পাশাপাশি থাকতে হবে, অবচ পরস্পরের সঙ্গে হায়তার সম্বন্ধ থাকবে না, হয়তো বা প্রয়োজনের থাকতে পারে---रमहेषात्महे (य ছিদ্র — ছিদ্র নয়, কলির সিংহ্**षার। হুই প্রতিবেশীর** मर्था राथान এতথানি বাবধান দেখানেই আকাশ ভেদ করে ওঠে व्ययक्रकात व्यवक्रा व्यापाद प्राप्त क्रिकार व्यवक्र नकरन भिरम होनए एहं। क्या हरप्रह, क्राज्य खन्छ नाना खरहही वाता, त्म त्रथ कावात्र अत्म (षर्भ यात्र, ভেঙে পড়ে? यिश्रान गर्डश्राला है। क'रत्र चाह्य हास्नात्र वहत्र भरत्र।

আমাদের দেশে যখন খদেশী আন্দোলন উপস্থিত হয়েছিল তথন
আমি তার মধ্যে ছিলেম। মুসলমানরা তখন তাতে যোগ দেয় নি,
বিরুদ্ধ ছিল। জননামকেরা কেউ কেউ তখন কুদ্ধ হয়ে বলেছিলেন,
ওদের একেবারে অধীকার করা যাক। জানি, ওরা যোগ দেয় নি।
কিন্তু, কেন দেয় নি ? তখন বাঙালি হিন্দুদের মধ্যে এত প্রবল যোগ
হয়েছিল যে সে আন্হর্ষ। কিন্তু, এত বড়ো আবেগ ওধু হিন্দুসমাজের
মধ্যেই আবদ্ধ রইল, মুসলমানসমাজকে স্পর্শ করল না । সে দিনও

স্বামী শ্রদ্ধানন্দ

व्यागारमत्र निका इत्र नि । পत्रन्भरत्रत्र गर्था विष्कृत्मत्र छावाछारक व्यागत्रा न्यारक्त पाहाहे पिरम गडीम करम द्रायिह। राष्ट्रीक मुक्ता करमुख माफ निष्म (महा भाव इएक इरव, अयन चावनाव हरन ना। अयन কৰা উঠতে পারে যে, ভোষা তে। সনাতন ভোষা, কিন্তু আৰু ভার মধ্যে य इन्हिकिश्च विद्या विद्या विद्या हो विद्या हो विद्या हो विद्या विद्या है विद्या विद्या है विद्य है विद्या कारना अको। ज्ञ चामारात्र घाष जाढवात्र लाभन किन करत्रहाः ए जारा कारना मार्च तन्हे, अहा बक्षात्र तूर्णा चाडु मत्र हार्म रेडिन । এकिট कथा মনে রাখতে হবে যে, ভাঙা গাড়িকে ৰখন গাড়িখানাম রাখা यात्र ७४न काटना छिभजन इत्र ना। त्महोत्र यद्या निख्ना त्थना कत्र छ পারে, চাই कि মধ্যান্ডের বিশ্রামাবাসও হতে পারে। কিন্তু, যথনই ভাকে টানতে যাই তথন তার জোড়ভাঙা অংশে অংশে সংঘাত উপস্থিত इम्र। यथन ठिन नि, दाष्ट्रेगाधनात्र भएष भाषाभाषि द्राप्त्रिक्ति, खारमद्र कर्डिंग भागन करत्रिष्ठ, ज्थन एका नाषा थाहे नि। वामि यथन वामात्र क्यिमाति (मृद्धांत्र क्षयं क्षयं क्षर्यं क्रेट्रिंग छ्यंन এक मिन (म्यि, व्यायात्र नारत्रव छात्र विठेकथानात्र এक काव्रगात्र काकिय थानिको। जूल दार्थ पिरिव्राह्म । यथन **किर्**क्रम क्रिल्मम, এ क्नि, छथन क्रिवार **(भर्म्स, स्य-**गर गयानी यूगलयान श्रका रिकिक्थानाम श्रावर्णन व्यथिकान भाम छाएनन जग्र के वावशा। এक जरूरभारि वनार्जा हरव चषठ वृक्षित्र मिर्ज श्व चामना श्वक। এ अथा एका चरनक मिन श्रव हरन अरमरह ; चारनक मिन मूमनमान এ यारन এमाइ, हिन्दू यारन अमाइन-তোলা আসনে মুসলমান বসেছে, জাজিম-পাভা আসনে অক্তে বসেছে। তার পর ওদের ডেকে এক দিন বলেছি, আমরা ভাই, ভোমাকেও আমার गत्त्र कि चौकात कत्र ए हर्दि, कात्रावांग ७ मृज्य भर्ष हलाए हर्दि। তখন হঠাৎ দেখি অপর পক্ষ লাল-টক্টকে নতুন ফেব্রু মাধার দিয়ে বলে, चामत्रा शृषक। चामत्रा विचिष्ठ हत्त्र विन, बाह्रे व्याभारत भवन्भव भारम

এসে দাঁড়াবার বাধাটা কোপার? বাধা ঐ জাজিম-তোলা আরনে বহু দিনের মস্ত ফাঁকটার মধ্যে। ওটা ছোটো নয়। ওথানে অকূল অতল কালাপানি। বক্তৃতামঞ্চের উপর দাঁড়িয়ে চেঁচিয়ে ডাক দিলেই পার হওয়া যায় না।

আত্মকের দিনে রাষ্ট্রশক্তির উদ্বোধন হয়েছে বলেই যত ভেদ, যত ফাঁক, সব স্পষ্ট হয়ে উঠেছে। সেইজ্যুই মার থাচ্ছি। এই মার নানা রূপে আসে— কিন্তু, আজ বড়ো করে দেখা দিল এই মহাপুরুষের মৃত্যুতে। মহাপুরুষেরা এই মারকে বক্ষে গ্রহণ ক'রে এর একান্ত বীভংগভার পরিচয় দেন। তাতেই আমাদের চৈত্যু হয়। এই-যে চৈত্যু এসেছে, রিপুর বশবর্তী হয়ে কি এই শুভ অবসরকে নষ্ট করব না শুভবুদ্ধিদাতাকে বলব 'ষেখানেই ভেদ ঘটিয়েছি সেখানেই পাপের বেদি গেঁথেছি, তার থেকেই বাঁচাও' ?

এই-যে ক্ষরেশে পাপ দেখা দিল, এ তো ভালোই হয়েছে এক ভাবে। আজকে না ভেবে উপায় নেই যে, কী করে এ'কে চিরকালের মতো পরাভূত করা যেতে পারে। প্রশ্ন উঠতে পারে, আশু আমরা কোন্ উপায় অবলঘন করব। সহসা এ প্রশ্নের একটা পাকা-রকম উত্তর দিই এমন শক্তি আমার নেই। পরীক্ষা আরম্ভ করে ক্রমে ক্রমে সে উপায় এক দিন পাবই। আজকে কিই পরীক্ষা-আরম্ভের আয়োজন। আজকে দেখতে হবে, আমাদের হিন্দুসমান্দের কোথায় কোন্ ছিন্দ্র, কোন্ পাপ আছে; অতি নির্মমভাবে ভাকে আক্রমণ করা চাই। এই উদ্দেশ্ত মনে নিয়ে আজ হিন্দুসমাজকে আহ্বান করতে হবে; বলতে হবে, 'পীড়িত হয়েছি আমরা, লক্ষিত হয়েছি, বাইরের আঘাতের জন্ত নয়, আমাদের ভিতরের পাপের জন্ত। এসো আজ সেই পাপ দূর করতে সকলে মিলি।' আমাদের পক্ষে এ বড়ো সহন্দ কথা নয়। কেননা, অন্তরের মধ্যে বহু কালের অভ্যন্ত তেদবৃদ্ধি, বাইরেও বহু দিনের গড়া অভি কঠিন ভেদের প্রাচীর। মুসলমান

স্বামী শ্রহ্মানন্দ

यथन कारना छेरमञ्ज निष्म यूगमयानगयाकरक छाक निष्म हि, त्म कारना वांशा भाषा नि— এक बेयरव्रव नार्य 'बाब्राहा बाक्वव्र' वर्ष म ছেকেছে। আর আজ আমরা যখন ডাকব 'হিন্দু এসো', ভখন কে चागरव ? चागरित्र गर्श कल (हारि। हारि। मध्यमात्र, कल गर्छी, कल खारिनिकला— এ ऐक्षीर्ग इरिय कि चागरव ? कल विभन शिरम्रहि। करे এक छ एका रहे नि। वाहित्र (चरक यथन व्यथम व्याचान निस्न अन মহম্মদ ঘোরী, তথন হিন্দুরা সে আসম্ন বিপদের দিনেতেও তো একত্র হয় নি। তার পর যখন মন্দিরের পর মন্দির ভাঙতে লাগল, দেবমৃতি চুর্ণ হতে লাগল, তখন তারা লড়েছে, মরেছে, খণ্ড খণ্ড ভাবে বৃদ্ধ করে गर्तिह। एथरना একত इस्छ भात्रम ना। अखिछ ছिल्म रामहे মেরেছে, যুগে যুগে এই প্রমাণ আমরা দিয়েছি। কথনো কথনো ইতিহাস উদ্ঘাটন করে অন্ত প্রমাণ পাবার চেষ্টা করি বটে; বলি, শিখরা তো এক সময় বাধা ঘূচিয়েছিল। শিখরা যে বাধা ঘূচিয়েছিল লে তো निश्वर्य बात्रारे। পাঞ্চাবের কোপাকার জাঠ, কোপাকার কোন্ জাতি नव, निथधर्यद्र चास्वात्न এक क हर्ल (পরেছিল; বাধাও দিতে পেরেছিল. ধর্মকেও রক্ষা করতে এক হয়ে দাঁড়িয়েছিল। শিবাজি এক সময় ধর্মরাজ্য-श्रांभरनत्र खिल शिए हिर्मन। जात्र य चनाशात्र मिल हिन लम्बात्रा ভিনি মারাঠাদের একতা কহতে পেরেছিলেন। সেই সন্মিলিভ শক্তি ात्रजनर्यक উপক্रज करत्र जूरमिन। व्यापत्र गर्म व्यथारत्राहीत्र यथन সামপ্রস্য হয় কিছুভেই সে অশ্ব থেকে পড়ে না; শিবাজির হয়ে সে দিন যারা লডেছিল তাদের সঙ্গে শিবাজির তেমনি সামগ্রন্থ হয়েছিল। পরে चात्र (म मामश्रक त्रहेम ना, পেশোয়াদের মনে ও चाहत्रण ভেদবৃতি, খঙ थे वार्ववृद्धि जीक हरत्र कनकानीन दाष्ट्रेरक्षनरक हेकरता हेकरता करत मिला। व्यायात्र कथा এই यে, व्यायात्मत्र यथा এই-यে भाभ भूत्व त्राथिह এতে कि स्र वागामित्र विकागान ? तम भारभ कि वागना व्यक्तिवित्र

প্রতি অবিচার করি নে ? তাদের মধ্যে হিংলা জাগিয়ে তুলি নে ? ফে ছুর্বল সেই প্রবলকে প্রকৃত্ব করে পাপের পথে টেনে আনে। পাপের প্রধান আশ্রম ছুর্বলের মধ্যে। অত এব যদি মুললমান মারে আর আমরা পড়ে পড়ে মার থাই, তবে জানব, এ সম্ভব করেছে শুধু আমাদের ছুর্বলতা। আপনার জ্মন্তেও, প্রতিবেশীর জ্মন্তেও আমাদের নিজেদের ছুর্বলতা দূর করতে হবে। আমরা প্রতিবেশীদের কাছে আপিল করতে পারি 'তোমরা কুর হোয়ো না, তোমরা ভালে। হও, নরহত্যার উপরে কোনো ধর্মের ভিত্তি হতে পারে না'— কিছু সে আপিল যে ছুর্বলতা প্রে রেখে লিলে বাতাল লঘু হয়ে এলে ঝড় যেমন আপনিই আলে, ধর্মের দোহাই দিয়ে কেউ তাকে বাধা দিতে পারে না, তেমনি ছুর্বলতা প্রে রেখে দিলে সেখানে অত্যাচার আপনিই আলে— কেউ বাধা দিতে পারে না। কিছু ক্ষণের জন্ম হয়তো একটা উপলক্ষ্য নিয়ে পরম্পার ক্রন্তিম বন্ধুতাবন্ধনে আবন্ধ হতে পারি, কিছু চিরকালের জন্ম তা হয় না। যে মাটিতে কণ্টকতর ওঠে লে মাটিকে যত ক্ষণ শোধন না করা হয় ভত কণ তো কোনো ফল হবে না।

আপনার লোককেও যে পর করেছে, পরের সঙ্গেও যার আত্মীয়তা নেই, সে তো ঘাটে এসেছে, তার ঘর কোথায় ? আর তার শাসই বা কত কণ ? আত্ম আমাদের অমুতাপের দিন— আত্ম অপরাধের ক্ষালন করতে হবে। সত্যিকার প্রায়ন্তিন্ত যদি করি তবেই শত্রু আমাদের মিত্রু হবে, রুদ্র আমাদের প্রতি প্রসন্ন হবেন।

মাঘ ১৩৩৩

श्निपू मृनन मान

ভারতবর্ষের সকল প্রদেশের, সকল সমাজের ঐক্যে প্রভিন্তিত এক মহাজাতিকে জাগিরে তুলে ভার একছত্র আসন রচনা করব ব'লে দেশনেভারা পণ করেছেন।

ঐ আসন জিনিসটা, অর্থাং বাকে বলে কন্স্টিট্যুক্তন, ওটা বাইরের, রাষ্ট্রশাসনবাবস্থায় আমাদের পরস্পরের অধিকারনির্ণয় দিয়ে সেটা গড়েপিটে তুলতে হবে। তার নানা রকমের নমুনা নানা দেশের ইতিহাসে দেখেছি, তারই থেকে বাচাই বাছাই করে প্ল্যান ঠিক করা চলছে। এই ধারণা ভিল, ওটাকে পাকা করে খাড়া করবার বাধা বাইরে অর্থাৎ বর্তমান কর্তৃপক্ষদের ইচ্ছার মধ্যে। তারই সঙ্গে রকা করবার, ভক্রার করবার কাজে কিছু কাল থেকে আমরা উঠে পড়ে লেগেছি।

বে বিরুদ্ধ মানুষটার সঙ্গে আমাদের বাইরের সন্ধা, বিবাদ করে এক দিন ভাকে হটিয়ে বাহির করে দেওয়া ত্রংসাধ্য হলেও নিভান্ত অসাধ্য নর, সেখানে আমাদের হারজিভের মামলা। কিন্ধ ভিভরের লোকের বিবাদে কোনো এক পক্ষ জিভলেও মোটের উপর সেটা হার, আর হারলেও শান্তি নেই। কোনো পক্ষকে বাদ দেবারও জো নেই, আবার দাবিয়ে রাখতে গেলেও উৎপাভকে চিরকাল উদ্ভেজিত করে রাখাই

হবে। জ্ঞান পাশের দাঁত বাঁ পাশের দাঁতকে নড়িয়ে দিয়ে যদি বড়াই করতে চায় তবে অবশেষে নিজে অনড় থাকবে না।

এত দিন রাষ্ট্রসভায় বরসজ্জাটার 'পরেই একাস্ত মন দিয়েছিল্ম, আসনটা কেমন হবে এই কথা ভেবেই মুগ্ধ। ওটা মহামূল্য ও লোভনীয়। প্রতিবেশীরা যারা কিংখাবের আসন বানিয়েছে তাদের আসরের ঘটা দেখে দর্যা হয়। কিন্তু হায় রে, স্বয়ং বরকে বরণ করবার আন্তরিক আয়োজন বছকাল থেকে ভূলেই আছি। আজ তাই পণ নিয়ে বর্যাত্রীদের লড়াই বাধে। শুভকর্মে অশুভ গ্রহের শান্তির কথাটায় প্রথম থেকেই মন দিই নি, কেবল আসনটার মালমসলার ফর্দ নিয়ে বেলা বইয়ে দিয়েছি।

রাষ্ট্রক মহাসন-নির্মাণের চেয়ে রাষ্ট্রক মহাজাতি-স্টের প্রয়োজন আমাদের দেশে অনেক বড়ো, এ কথা বলা বাহুলা। সমাজে ধর্মে ভাষার আচারে আমাদের বিভাগের অস্ত নেই। এই বিদীর্ণতা আমাদের রাষ্ট্রক সম্পূর্ণতার বিরোধী; কিছু তার চেয়ে অশুভের কারণ এই যে, এই বিচ্ছেদে আমাদের মহুয়ন্থসাধনার ব্যাঘাত ঘটরেছে। মাহুষে মাহুষে কাছাকাছি বাস করে তবু কিছুতে মনের মিল হয় না, কাজের যোগ থাকে না, প্রত্যেক পদে মারামারি কাটাকাটি বেধে যায়, এটা বর্বরতার লক্ষণ। অথচ আমরা যে আত্মশাসনের দাবি করছি সেটা তো বর্বরের প্রাপ্য নয়। যাদের ধর্মে সমাজে প্রথায়, যাদের চিন্তবৃত্তির মধ্যে এমন একটা মজ্জাগত জোড়-ভাঙানো ছুর্যোগ আছে যে তারা কথায় কথায় একখানাকে সাতখানা করে কেলে, সেই ছত্রভক্ষের দল ঐকরাষ্ট্রিক সন্তাকে উদ্ভাবিত করবে কোন্ যন্তের সাহাযো ?

যে দেশে প্রধানত ধর্মের মিলেই মামুষকে মেলার, অন্ত কোনো বাঁশনে তাকে বাঁধতে পারে না, সে দেশ হতভাগ্য। সে দেশ শ্বরং ধর্মকে দিয়ে যে বিভেদ স্ষ্টি করে সেইটে সকলের চেয়ে সর্বনেশে

হিন্দুমুসলমান

বিভেদ। মামুষ বলেই মামুষের যে মৃশ্য সেইটেকেই সহজ প্রীতির সঙ্গে স্বীকার করাই প্রকৃত ধর্মবৃদ্ধি। যে দেশে ধর্মই সেই বৃদ্ধিকে পীড়িত করে রাষ্ট্রক স্বার্থবৃদ্ধি কি সে দেশকে বাঁচাতে পারে ?

ইতিহাসে বারে বারে দেখা গেছে, যখন কোনো মহাজ্ঞাতি নবজীবনের প্রেরণায় রাষ্ট্রবিপ্লব প্রবর্তন করেছে, তার সঙ্গে সঙ্গে প্রবল্ভাবে প্রকাশ পেয়েছে তার ধর্মবিষেষ। দেও শত বংসর পূর্বকার ফরাসি-বিপ্লবে তার দৃষ্টাস্ত দেখা গেছে। সোভিয়েট রাশিয়া প্রচলিত ধর্মতন্ত্রের বিরুদ্ধে বদ্ধপরিকর। সম্প্রতি স্পেনেও এই ধর্মহননের আগুন উদ্দীপ্ত! মেক্সিকোয় বিজ্ঞাহ বারে বারে রোমক চার্চকে আঘাত করতে উত্তত।

নব্য তুর্কী যদিও প্রচলিত ধর্মকে উন্মূলিত করে নি কিন্তু বলপূর্বক তার শক্তি হ্রাস করেছে। এর ভিতরকার কথাটা এই মে, বিশেষ ধর্মের আদিপ্রবর্তকগণ দেবতার নামে মাছ্মকে মেলাবার জন্তে, তাকে লোভ বেব অহংকার থেকে মুক্তি দেবার জন্তে উপদেশ দিরেছিলেন। তার পরে সম্প্রদায়ের লোক মহাপুরুষদের বাণীকে সংঘবদ্ধ করে বিক্তত করেছে, সংকীর্ণ করেছে; সেই ধর্ম দিরে মাছ্মকে তারা যেমন ভীষণ মার মেরেছে এমন বিষরবৃদ্ধি দিয়েও নয়; মেরেছে প্রাণে মানে বৃদ্ধিতে শক্তিতে, মাছ্মবের মহোৎকৃষ্ট ঐশ্বর্যকে ছারখার করেছে। ধর্মের নামে প্রাতন মেক্সিকোর স্পেনীয় খুস্টানদের অকথ্য নির্চুরতার তুলনা নেই। পৃথিবীতে অপ্রতিহত প্রভুদ্ধ নিয়ে রাজা ষেমন কতবার ছুর্দান্ত অরাজকভায় মন্ত হয়েছে, প্রজার রক্ষাকর্তা নাম নিয়ে প্রজার সর্বনাশ করতে কৃষ্টিত হয় নি, এবং অবশেষে সেই কারণেই আজকের ইতিহাসে রাজ্য থেকে রাজার কেবলই বিলুন্থি ঘটছে, ধর্ম সম্বন্ধেও অনেক স্থলে সেই কারণে ধর্মতন্তের নিদারণ অধার্মিকতা দমন করবার জন্তে, মাছ্মবকে ধর্মপীড়া থেকে বাঁচাবার জন্তে, অনেক বার চেষ্টা দেখা গেল।

আজ সেই সেই দেশেই প্রজা যথার্থ খাধীনতা পেয়েছে যে দেশে ধর্মমোহ মামুষের চিন্তকে অভিভূত ক'রে এক-দেশ-বাসীর মধ্যে পরস্পরের প্রতি ওদাসীক্ত বা বিরোধকে নানা আকারে ব্যাপ্ত করে না রেখেছে।

शिन्युमयाटक चाठात्र निरम्राष्ट्र शर्यत्र नाय। এই कात्राण चाठारत्रद्र भार्थिका भवन्भदिव गर्था कठिन विरुद्धन घटात्र। गर्ञामी वाडामिक নিরামিষ প্রদেশের প্রতিবেশী আপন ব'লে মনে করতে কঠিন বাধা পায়। সাধারণত বাঙালি অন্ত প্রদেশে গিয়ে অভ্যন্ত আচারের ব্যতিক্রম উপলক্ষো অবজ্ঞা মনের মধ্যে পোষণ করে। যে চিত্তরুত্তি বাহ্য আচারকে द्राष्ट्रेमिननीएज এই অভাব क्षांत्र क्षांत्र ध्रा পড়ে এবং দেখা यात्र, আমরা যে অলক্ষ্য বাবধান সঙ্গে করে নিয়ে বেড়াই তা সংস্কারগত, অতি স্ক্র এবং সেইজন্য অতি তুর্গজ্য। আমরা ষধন মুধে তাকে অস্বীকার क्रि ७थरना निष्क्रत्र व्यरगांहरद्र एन । व्यक्षः क्रद्र ग्रहा या (यरक यात्र । धर्म चामारित रमनाराज भारत नि, तदक हाकाद्रभाना रक्षा गरफ जूरन সেই বাধাগুলোকে ইতিহাসের অতীত শাশ্বত বলে পাকা করে দিয়েছে। हेरद्रक निष्कद्र काल्टक हेरद्रक वर्लंडे পदिवस एमस्। यनि वन्छ थुगीन छा इल एय देश्द्रक वोक वा मुजनमान वा नास्त्रिक छाटक निरम्न दाहुगईन याथा-ঠোকাঠুकि (दर्ध (यछ। आयामित्र श्रिथान भरिष्ठम हिम्मू वा यूजनयान। এक मल्टक विट्मय পরিচয়কালে বলি বটে ছিন্দুস্থানি, किन्न তাদের হিন্দুখান বাংলার বাইরে।

করেক বছর পূর্বে আমার ইংরেজ বন্ধু এণ্ড,জকে নিমে মালাবারে শ্রমণ করছিল্য। বান্ধণপল্লীর সীমানার পা বাড়াতেই টিয়া-সমাজ-ভূক্ত একজন শিক্ষিত ভদ্রলোক আমাদের সঙ্গ ত্যাগ করে দৌড় দিলেন। এণ্ড,জ বিক্ষিত হয়ে তাঁকে গিয়ে ধরলেন, এবং প্রাপ্ন জিজ্ঞাসা করাতে

হিন্দুমূসলমান

জানলেন, এ পাড়ার তাঁদের জাতের প্রবেশনিষেধ। বলা বাহল্যা, ছিন্দুসমাজবিধি-অন্থসারে এণ্ডুজের আচারবিচার টিয়া-ভদ্রলোকের চেরে অনেক গুণে অশান্ত্রীয়। শাসনকর্তার জাত বলে তাঁর জোর আছে, কিন্তু হিন্দুর কাছে আত্মীরতার জোর নেই। তার সহত্তে হিন্দুর দেবতা পর্যন্ত জাত বাঁচিয়ে চলেন, স্বরং জগরাধ পর্যন্ত প্রত্যক্ষণদর্শনীয় নন। বৈমাত্র সন্থানও মাতার কোলের অংশ দাবি করতে পারে— ভারতে বিশ্বমাতার কোলে এত ভাগ কেন? অনাত্মীরতাকে অন্থিমজ্জায় আমরা সংস্কারগত করে রেখেছি, অবচ রাব্রীয় প্রয়োজনে তালের আত্মীয়তা না পেলে আমরা বিশ্বিত হই। শোনা গিয়েছে, এবার পূর্ববঙ্গে কোবাও কোবাও হিন্দুর প্রতি উৎপাতে নমশুদ্ররা নির্দ্বভাবে মুসলমানদের সঙ্গে যোগ দিয়েছিল। ভাবতে হবে না কি, ওদের দরদ হল না কেন, আত্মীয়ভার দায়িছে বাধা পড়ল কোবার ?

এই অনাস্থায়তার অসংখ্য অন্তরাল বহু বুগ ধরে প্রকাশ্যে আমাদের রাষ্ট্রভাগ্যকে বার্থ করেছে এবং আজও ভিতরে ভিতরে আমাদের হুঃখ ঘটাছে। জোর গলায় যেখানে বলছি, আমরা এক, সৃদ্ধ স্থারে সেখানে অন্তর্থামী আমাদের মর্মস্থানে বসে বলছেন, 'ধর্মে-কর্মে আচারে-বিচারে এক হবার মতো উদার্য ভোমাদের নেই।' এর ফল ফলছে; আর রাগ করছি ফলের উপরে, বীজবপনের উপরে নয়।

ষথন বন্ধবিভাগের সাংঘাতিক প্রস্তাব নিয়ে বাঙালির চিত বিক্র তথন বাঙালি অগত্যা বয়কট-নীতি অবলম্বন করতে চেষ্টা করেছিল। বাংলার সেই ছুদিনের অ্যোগে বোধাই-মিলওয়ালা নির্মভাবে তাঁদের মুনফার অহু বাড়িয়ে তুলে আমাদের প্রাণপণ চেষ্টাকে প্রতিহত করতে কৃষ্টিত হন নি। সেই সঙ্গে দেখা গেল, বাঙালি মুসলমান সে দিন আমাদের থেকে মুখ ফিরিয়ে দাঁড়ালেন। সেই মুগেই বাংলাদেশে হিন্দুমুসলমানে লক্ষাজনক কুৎসিত কাত্তের স্ক্রপাত হল। অপরাধটা

প্রধানত কোন্ পক্ষের এবং এই উপদ্রব অকলাৎ কোথা থেকে উৎসাহ পেলে, সে তর্কে প্রয়োজন নেই। আমাদের চিস্তা করবার বিষয়টা হচ্ছে এই যে, বাংলা দ্বিখন্ডিত হলে বাঙালিজাতের মধ্যে যে পঙ্গুতার স্থষ্ট হত সেটা বাংলাদেশের সকল সম্প্রদায়ের এবং ২স্তত সমস্ত ভারতবর্ষেরই পক্ষে অকল্যাণকর, এটা যথার্থ দরদ দিয়ে বোঝবার মতো একাত্মকতা আমাদের নেই ব'লে সে দিন বাঙালি হিন্দুর বিরুদ্ধে অনাত্মীয় অসহ-যোগিতা সম্ভব হয়েছিল। রাষ্ট্রপ্রতিমার কাঠামো গড়বার সময় এ কথাটা মনে রাখা দরকার। নিজেকে ভোলানোর ছলে বিধাতাকে ভোলাতে পারব না।

এই ব্যাপারে সে দিন অনেকেই রাগারাগি করেছিলেন। কিন্তু ফুটো কলসীতে জল তুলতে গেলে জল যে পড়ে যায়, তা নিয়ে জলের উপরে বা কলসীর উপরে চোখ রাঙিয়ে লাভ কী ? গরজ আমাদের যতই থাক্, ছিদ্রটা স্বভাবত ছিদ্রের মতোই ব্যবহার করবে। কলঙ্ক আমাদেরই আর সে কলঙ্ক যথাসময়ে ধরা পড়বেই, দৈবের রূপায় লজ্জা-নিবারণ হবে না।

কথা হয়েছে, ভারতবর্ষে একরাষ্ট্রশাসন না হয়ে যুক্তরাষ্ট্রশাসননীতির প্রবর্তন হওয়া চাই। অর্থাৎ একেবারে জ্যোড়ের চিহ্ন থাকবে না এতটা দ্র মিলে যাবার মতো ঐক্য আমাদের দেশে নেই, এ কথাটা মেনে নিতে হয়েছে। আমাদের রাষ্ট্রসমস্তার এ একটা কেজো রক্মের নিপত্তি বলে ধরে নেওয়া যাক। কিছ তবু একটা কঠিন গ্রন্থি রয়ে গেল, হিন্দু-মুসলমানের মধ্যে ভেদ ও বিরোধ। এই বিচ্ছেদটা নানা কারণে আন্তরিক হয়ে দাঁড়িয়েছে। বাইরে থেকে রাষ্ট্রনৈতিক প্রলেপ দিয়ে এর কাটল নিবারণ করা চলবে না; কোনো কারণে একটু তাপ বেড়ে উঠলেই আবার ফাটল ধরবে।

रिथान निरक्तित्र गर्धा मछाकात्र एक मिथानिह त्रांडिक क्रमछात्र

शिन्तु गूजनगान

হিন্তা নিম্নে স্বতন্ত্র কোঠার স্বতন্ত্র হিসাব চলতে থাকে। সেখানে রাষ্ট্রক সম্পদে সকলেরই অথও স্বার্থের কথাটা স্বভাবতই মনে থাকে না। এমন ছপ্রহে একই গাড়িকে ছুটো ঘোড়া ছু দিকে টানবার মুশকিল বাধার। এখন থেকেই অধিকারের ভাগ-বখরা নিম্নে হটুগোল জেগেছে। রাষ্ট্রনৈতিক বিষয়বৃদ্ধির যোগে গোল-টেবিল পেরিয়েও এই গোল উত্তরোজর বাড়বে বই কমবে এমন আশা আছে কি? বিষয়বৃদ্ধির আমলে সহোদর ভাইদের মধ্যেও বচসা বেধে যার। শেষকালে গুঙাদের হাতেই লাঠিসড়কির যোগে যমের দ্বারে চরম নিপ্রতির ভার পড়ে।

এक मन गुननगान निर्मानि निर्नाहरनत विकृत्व, छात्रा चलक निर्वाচनशैष्ठि मावि करत्रन এবং তাঁদের পক্ষের ওজন ভারি করবার জন্তে नाना वित्यय ऋ रयार गत्र वाहेथात्रा वाष्ट्रित्र निष्ठ हान। यनि यूगनयान-দের স্বাই বা অধিকাংশ একমত হয়ে স্বতন্ত্র নির্বাচনরীতির দাবি করেন, এবং নিজেদের পক্ষের ওজন বাড়িয়ে নিতে চান, তা হলে এমনতরো मावि মেনে নিয়েও আপোষ করতে মহাত্মাজি রাজি আছেন বলে বোধ इन। তা यनि इम्न, তাঁর প্রস্তাব মাধা পেতে নেওয়াই ভালো। किनना, ভারতবর্ষের ভরফে রাষ্ট্রিক যে অধিকার আমাদের জয় করে নিতে হবে তার স্থাপষ্ট মৃতি এবং সাধনার প্রণালী সমগ্রভাবে তাঁরই মনে আছে। এ পর্যন্ত একমাত্র ভিনিই সমস্ত ব্যাপারটাকে অগামান্ত দক্ষভার সঙ্গে প্রবল বাধার বিরুদ্ধে অগ্রসর করে এনেছেন। কাজ-উদ্বাবের দিকে দৃষ্টি রাথলে শেষ পর্যন্ত তাঁরই হাতে সার্ধ্যভার দেওয়া সংগত। তবু, এক জনের বা এক দলের ব্যক্তিগত সহিষ্ণুতার প্রতি निर्जन करत्र এ कथा जुनला हनर ना एए, अधिकात्र-পत्रित्वर्य कारना এক পক্ষের প্রতি যদি পক্ষপাত করা হয় তবে সাধারণ মানবপ্রকৃতিতে रारे व्यविठात गरेरव ना, এर निष्त अक्टा व्यमासि नित्र छरे यात्र गूर्या रुष्य (परक यार्व। वञ्च छ छो। भद्रम्भारत्र विवान (यहावांत्र भश्च। नम्र।

नकरनरे यि अकरका हे रुप्त जनम्मान अकरबीका चारिनाय कत्र ज त्रांकि इस छा इरन छावना तन्हे। किश्व याश्रु एवत यन। छात्र कारना- अक्छा তারে যদি অত্যম্ভ বেশি টান পড়ে তবে ত্মর যায় বিগড়ে, তখন সংগীতের माहाहे भाष्ट्रति गःगं यादि हत्र। कि जानि ना, की जात यहाचा जि এ मध्य हिन्छ। क्रव्राह्म। इम्राह्म शान-हिनिन-देन्द्रिक चामापिन সন্মিলিত দাবির জোর অকুণ্ণ রাখাই আপাতত সব চেম্নে গুরুতর প্রয়োজন वल छात्र यत्न इटल भारत। इहे भक्हे चाभन चाभन किए गयान चिन इस्य नगरम काक এগোবে ना, এ क्या गछा। এ क्टिं এक পক্ষে ত্যাগ স্বীকার করে মিটমাট হয়ে গেলে উপস্থিত রক্ষা হয়। একেই वल जिल्लागानि। পनिष्क्रिंग अथम (बर्क्ट साला-चाना आल्पान উপর চেপে বদলে যোলে। আনাই খোয়াতে হয়। যারা অনুরদর্শী ক্লপণের মতো অত্যন্ত বেশি টানাটানি না করে আপোষ করতে জানে তারাই জেতে। ইংরেজের এই গুণ আছে, নৌকোডুবি বাঁচাতে পিয়ে व्यत्नको मान हेश्द्रक कत्न क्वतन कित्व भित्व भारत। वामात्र निष्कत विद्यान, वर्ज्यान व्याप्तारवत्र श्रष्टारव हेः द्रिरक्षत्र काष्ट्र व्यापत्रा एव श्रकाख क्रिजीकात्र मावि कत्रि रिगो। यूर्त्रार्भित चात्र-रकार्ना खाछित कार्छ একেবারেই খাটত না, তারা আগাগোড়াই ঘুষি উচিয়ে কথাটা সম্পূর্ণ চাপা দেবার চেষ্টা করত। রাষ্ট্রনৈতিক ব্যাপারে ইংরেজের ত্রবৃদ্ধি পারে। এই বৃদ্ধির প্রয়োজন যে আমাদের নেই, এ কথা গোঁয়ারের কথা; আথেরে গোঁয়ারের হার হয়ে থাকে। রাষ্ট্রিক অধিকার সম্বন্ধ এক छ र यु छा दि । स्त्र-क्या कि यि निष्य हिन्दू-यू मन या निष्य या निष्य चाराष्ठ विभि मृत्र এগোডে দেওয়। भाक পক্ষের আনন্দবর্ধনের প্রধান উপায়।

वागात्र वक्तवा এहे या, উপস্থিত काव-উদ্ধারের খাতিরে আপাত্ত

रिन्पू मृमलयान

নিজের দাবি খাটো করেও একটা মিটমাট করা সম্ভব হয় তো হোক, কিন্তু তবু আসল কথাটাই বাকি রইল। পলিটিক্সের ক্ষেত্রে বাইরে থেকে বেটুকু তালি-দেওয়া মিল হতে পারে সে মিলে আমাদের চির কালের প্রয়োজন টি কবে না। এমন কি পলিটিক্সেও এ তালিটুকু বরাবর অটুট থাকবে এমন আশা নেই, ঐ ফাঁকির জোড়টার কাছে বারে বারেই টান পড়বে। যেখানে গোড়ায় বিচ্ছেদ সেখানে আগায় জল ঢেলে গাছকে চিরদিন তাজা রাখা অসম্ভব। আমাদের মিলতে হবে সেই গোড়ায়, নইলে কিছুতে কল্যাণ নেই।

এত দিন সেই গোড়ার দিকে এক রক্ষের মিল ছিল। পরস্পরের তফাত মেনেও আমরা পরস্পর কাছাকাছি ছিলুম। সম্প্রদারের গণ্ডীর উপর ঠোকরখেরে পড়তে হত না,সেটা পেরিয়েও মান্ত্রে মান্ত্রে মিলের ব্রেট জারগা ছিল। হঠাং এক সময়ে দেখা গেল, ছই পক্ষই আপন ধর্মের অভিমানকে উচিয়ে তুলতে লেপেছে। বত দিন আমাদের মধ্যে ধর্মবাধ সহজ ছিল তত দিন গোঁড়ামি থাকা সম্বেও কোনো হালাম বাধে নি। কিন্তু এক সময়ে যে কারণেই হোক ধর্মের অভিমান যখন উগ্র হয়ে উঠল তখন থেকে সম্প্রদারের কাঁটার বেড়া পরস্পরকে ঠেকাতে ও খোঁচাতে শুরু করলে। আমরাও মসজিদের সামনে দিয়ে প্রতিমানিয়ে যাবার সময় কিছু অভিরিক্ত জিদের সঙ্গে ঢাকে কাঠি দিলুম, অপর পক্ষেও কোর্বানির উৎসাহ পূর্বের চেয়ে কোমর থেঁবে বাড়িয়ে তুললে, সেটা আপন আপন ধর্মের দানি মেটাবার খাতির নিয়ে নয়, পরস্পরের ধর্মের অভিমানকে আঘাত দেবার স্পর্ধা নিয়ে। এই-সমস্ত উৎপাতের শুরু হয়েছে শহরে, যেখানে মান্ত্রে মান্ত্রে প্রক্ত মেলামেশা নেই বলেই পরস্পরের প্রতি দরদ খাকে না।

धर्ममछ ७ ममाकत्री छित्र मधरक हिन्म्-मूमनमात्न स्थू श्राटक नम्न, विक्रका चाह्न, এ कथा मानराइ हत्। चाडा वामारमन्न माधनान

বিষয় হচ্ছে, তৎসত্ত্বেও ভালো রক্ষ করে যেলা চাই। এই সাধনায় সিদ্ধিলাভ আমাদের না হলে নয়। কিন্তু এর একান্ত আবশুকতার কথা আমাদের সমস্ত হৃদয়মন দিয়ে আজও ভাবতে আরম্ভ করি নি। একদা খিলাফতের সমর্থন করে মহাত্মাজি মিলনের সেতু নির্মাণ করতে পারবেন মনে করেছিলেন। কিন্তু 'এহ বাহু'। এটা গোড়াকার কথা নয়, এই খেলাফত সম্বন্ধে মতভেদ থাকা অক্যায় মনে করি নে, এমন কি, মুসলমানদের মধ্যেই যে থাকতে পারে তার প্রমাণ হয়েছে।

नाना উপলক্ষ্যে এবং বিনা উপলক্ষ্যে সর্বদা আমাদের পরস্পরের जक ७ जाकार-चानाभ ठारे। यनि चायदा भागाभाभि ठनि, काहाकाहि थानि, তা হলেই দেখতে পাব, মানুষ ব'লেই মানুষকে খাপন ব'লে यत्न कदा महस्र। यात्मद्र मह्म (यनार्यमा (नहे जात्मद्र मशक्रहे মত প্রভৃতির অনৈক্য অত্যন্ত কড়া হয়ে ওঠে, বড়ো হয়ে দেখা দেয়। यथनरे পরস্পর কাছাকাছি আনাগোনার চর্চা হতে থাকে তথনই মত পিছিয়ে পড়ে, যামুষ সামনে এগিয়ে আসে। শান্তিনিকেতনে মাঝে यात्य यूगमयान ছाত ও निक्क এगেছেन, छाम्ब ग्राम वायाम्ब काना প্রভেদ অমুভব করি নি, এবং সখ্য ও স্নেহসমন্ধ -স্থাপনে লেশমাত্র বাধা घटि नि। य-गकन शायित्र गक्न नाश्विनिक्छित्व गश्क छात्र मरशु यूग्लयान श्राय चाहि। यथन कलकालाम हिन्दू-यूग्लयात्नत्र नाका पृष्ठ-गहरवारि कनकालांद्र वाहेर्द्र इफ़्रिक हरनाइ, ७४न वानभूद-जक्त यिथा। खनत्रव ताड्डे कत्रा इत्त्रिक्त एए, हिन्दूता यमखित खाउ एतवात्र मश्कत क्रव्रह् । এই मঙ্গে कनकाठा (पर्क खखाद्र चामनानिख इर्धिन । किन्न, श्रानीय यूगनयानरमय भाख वाथरङ वायारमय रकारना कहे रभरङ इस नि, क्निना छात्रा निन्छि जान्छ जामद्रा छात्रत्र चक्कु बिय वक्कु।

वायात्र व्यक्षिकाः न श्रकारे यूगनयान। कात्र्वानि निष्त्र (मर्ट्स स्थन এको উত্তেबना श्रवन তथन हिन्सू श्रवाता वायास्त्र अनाकात्र राहे।

হিন্দুমূসলমান

সম্পূর্ণ রহিত করবার জন্ত আমার কাছে নালিশ করেছিল। সে নালিশ আমি সংগত বলে মনে করি নি, কিছু মুসলমান প্রজাদের ডেকে বখন বলে দিলুম কাজটা যেন এমনভাবে সম্পন্ন করা হয় যাতে ছিলুদের মনে অকারণে আঘাত না লাগে, তারা তখনি তা মেনে নিলে। আমাদের সেখানে এ পর্যন্ত কোনো উপদ্রব ঘটে নি। আমার বিশাস তার প্রধান কারণ, আমার সঙ্গে আমার মুসলমান প্রজার সম্বন্ধ সহজ্ব ও বাধাহীন।

এ कथा चामा कदारे চলে ना एय, चायारमद रमरमद छिन्न छिन्न गगाष्ट्रित गरशा धर्मकर्मत्र मछित्रिशास्त्रत एछम এक्वाद्रिष्टे घूठएछ भारत। তবুও মহুবাছের খাতিরে আশা করতেই হবে, আমাদের মধ্যে মিল পারবে। সঙ্গের দিক খেকে আজকাল হিন্দু মুসলমান পৃথক হয়ে গিয়ে गाच्यनाविक चरेनकारक वाफिस्त्र कूरमर्छ, मञ्चारचत्र मिमहोरक मिस्त्रर्छ চাপা। वामि हिन्दूद छद्रक (बद्कि वन्नि मूननमारनद क्रिविठाद्रि)। थाक्— चायत्रा यूगमयानत्क काष्ट्र होनत्छ यमि ना (भारत थाकि छर्व राक्छ रयन मक्का चौकात कति। चन्नवस्राम यथन खपम अभिनाति रार्वा प्रथित शिर्विष्य ७४न प्रथम्, चार्याप्त्र वाक्रण गार्निकाव य उक्त लार्य गिरिं व'रम मन्नान कर्नन रम्थान এक शास काकिय তোলা, সেই आयगाठी यूगलयान প্रकारित वगवाय करछ ; आत काकिर्यत উপর বলে হিন্দু প্রকারা। এইটে দেখে আমার বিকার জন্মছিল। चषठ এই गारिनवात्र चाधूनिक मिनाचारवाशी मरमत्र। हे रतकत्रारकत দরবারে ভারতীয়ের অসমান নিয়ে কটুভাষা-ব্যবহার তিনি উপভোগ करत्र पारकन, छत् चरमनीव्ररक ভয়োচিত मचान मिवान रिका এত क्रमन। वरे क्रुनाका गमारक छ कर्मरकत्व चानक मूत्र गर्वत खारान करत्रहा। चवरनरव अयन इरव्रष्ट रचवारन हिन्दू रमवारन यूमनयारनव बाव मश्कीर्न, विशास यूगम्यान रमशास्त्र हिसूत्र वाशा विखन्। अहे चाडित्रिक विष्ट्रम

যত দিন পাকবে তত দিন স্বার্থের তেদ গৃচবে না এবং রাষ্ট্রব্যবস্থার এক পক্ষের কল্যাণভার অপর পক্ষের হাতে দিতে সংকোচ অনিবার্য হয়ে উঠবে। আজ সম্মিলিত নির্বাচন নিম্নে বে ক্ষ্ম বেধে গেছে তার মূল তো এইখানেই। এই ক্ষ্ম নিম্নে যখন আমরা অসহিষ্ণু হয়ে উঠি তখন এর স্বাভাবিক কারণটার কথা ভেবে দেখি না কেন ?

हेलियर्था वाःलारित व्यक्षा वर्षत्रका वारत्र वारत्र वायारित गर् করতে হয়েছে। জার-শাসনের আমলে এই রকম অত্যাচার রাশিয়ায় थात्र घटेल। वर्ज्यान विभवश्रवण পোলिটिक्रान यूरमत भूर्व चामारमत्र प्राप्त अ त्रक्य मानविक काश्व कथाना (भाना यात्र नि। वृष्टिभभानिक छात्र एक वह शोवरवव iaw and order পদাৰ্থটা বড়ো বড়ো শহরে পুলিস-পাহারার জাগ্রত দৃষ্টির সামনে স্পর্ধাসহকারে উপরি উপরি অবমানিত হতে লাগল, ঠিক এই বিশেষ সময়টাতেই। মারের ছু:খ কেবল আমাদের পিঠের উপর দিয়েই গেল না, ওটা প্রবেশ করেছে বুকের ভিতরে। এটা এयन गयर घटेन ठिक यथन हिन्द्-यूगनयात्न कर्श यिनिय माँ पार्टि भावतन वायामित्र जागा च्रथमन रुज, विश्वमजात्र कार्छ वायामित्र यापा रहें रे रुज এই त्रकरमत्र व्यमाञ्चिक घटेनात्र लाकपुष्टिक वित्रमितनत्र मर्छ। বিষাক্ত করে তোলে, দেশের ডান হাতে বাঁ হাতে মিল করিয়ে ইতিহাস गए छाना इःगांश रम। किइ, छारे वरनरे छा हान ছেড়ে দেওয়া চলে ना ; श्रष्टि चिन रुप्त भाकित्य উঠেছে বলে ক্রোধের বেগে সেটাকে होनाहोनि करत्र चारता चाँहे करत्र लामा मृह्छ। वर्डमान्त्र बौर्ष ভবিশ্বতের বীজ্ঞটাকে পর্যন্ত অঞ্চলা করে ফেলা স্বাজ্ঞাতিক আশ্বহভ্যার व्यनानी। नाना चाल ७ चमूत्र कांत्ररण, चरनक मिरनद्र भूक्षिण चनद्रार्थ, हिन्द-यूगनयात्नव यिननगयना कठिन हरबरह ; तिहेकरमहे चिनिन्द अवः मृह गश्करहात्र गरक छात्र गयाशास्त्र श्राप्त हर्छ हर्द। चश्राप्त छारगात्र छिপत्र त्रांग करत्र তাকে विश्वन हर्ष्ण करत्र राजान। टार्त्रत्र উপत्र त्रांग कर्त्र

হিন্দুমূসলমান

যাটিতে ভাভ খাওয়ার মতো।

বর্তমান রাষ্ট্রক উদ্যোগে বোদাই প্রদেশে আন্দোলনের কাজটা সব চেরে সবেগে চলতে পেরেছিল তার অন্ততম কারণ, সেখানে ছিন্দুমুসলমানের বিরোধ বাধিরে দেবার উপকরণ যথেষ্ট ছিল না। পার্সিতে
হিন্দুতে ছুই পক্ষ থাড়া করে তোলা সহজ হর নি। কারণ, পার্সি সমাজ
সাধারণত শিক্ষিত সমাজ, স্বদেশের কল্যাণ সহকে পার্সিরা বৃদ্ধিপূর্বক
চিন্তা করতে জানে, তা ছাড়া ভাদের মধ্যে ধর্মোন্মন্ততা নেই।
বাংলাদেশে আমরা আছি জতুগৃহে, আগুন লাগাতে বেশি ক্ষণ লাগে
না। বাংলাদেশে পরের সকে বোঝাপড়া করতে যথনই নামি
ঠিক সেই সময়টাতেই নিজের হর সাম্লানো অসাধ্য হরে ওঠে।
এই ছুর্ঘোগের কারণটা আমাদের এখানে গভীর করে শিক্ড গেড়েছে,
এ কথাটা মেনে নিতেই হবে। এ অবস্থার শান্তমনে বৃদ্ধিপূর্বক পরম্পরের
মধ্যে সন্ধি-স্থাপনের উপায়-উদ্ভাবনে যদি আমরা অক্ষম হই, বাঙালিপ্রকৃতি-স্থলত হুদরাবেগের ঝোঁকে যদি কেবলই জেদ জাগিয়ে স্পর্ধা
পাকিয়ে তৃলি, তা হলে আমাদের ছুর্থের অন্ত থাকবে না এবং স্বাজাতিক
কল্যাণের পথ একান্ত ছুর্গম হয়ে উঠবে।

আমাদের মধ্যে কেউ কেউ চোথ বুজে বলেন, সবই সহজ হয়ে যাবে যখন দেশটাকে নিজের হাতে পাব। অর্থাৎ, নিজের বোঝাকে অবস্থা-পরিবর্তনের কাঁথে চাপাতে পারব এই ভরসায় নিশ্চেষ্ট থাকবার এই ছুতো। কথাটা একটু বিচার করে দেখা যাক।

ধরে নেওয়া গেল গোল-বৈঠকের পরে দেশের শাসনভার আমরাই পাব। কিন্তু, দেশটাকে হাত-কেরাফেরি করবার মাঝখানে একটা ফ্রনির্থ সন্ধিক্ষণ আছে। সিভিল-সাভিসের মেয়াদ কিছুকাল টিকে থাকতে বাধা। কিন্তু, সেইদিনকার সিভিল-সাভিস হবে ঘা-খাওয়া নেকড়ে বাধের মতো। মন ভার পরম হয়ে থাকবার কথা। সেই

সময়ঢ়ুকুর মধ্যে দেশের লোক এবং বিদেশের লোকের কাছে কথাটা দেগে দেগে দেওয়া তার পক্ষে দরকার হবে যে, ব্রিটিশরাজের পাহারা আলগা হবা মাত্রই অরাজকতার কালগাপ নানা গর্ভ থেকে বেরিয়ে চারি দিকেই ফণা তুলে আছে, তাই আমরা স্বদেশের দায়িম্বভার নিতে সম্পূর্ণ অকম। আমাদের আপন লোকদেরকে দিয়েও এ কথা কর্ল করিয়ে নেবার ইচ্ছা তার স্বভাবতই হবে যে, আগেকার আমলে অবস্থা ছিল ভালো। সেই যুগাস্তরের সময়ে যে যে গুহায় আমাদের আত্মীয়নবিদেবের মারগুলো লুকিয়ে আছে সেই সেইখানে খ্ব করেই থোঁচা খাবে। সেইটি আমাদের বিষম পরীকার সময়। সে পরীকা সমস্ত পৃথিবীর কাছে। এখন থেকে সর্ব প্রকারে প্রস্তুত থাকতে হবে যেন বিশ্বজগতের দৃষ্টির সামনে মৃঢ়তায় বর্বরতায় আমাদের নৃতন ইতিহাসের মুখে কালি না পড়ে।

खावन १७७৮

'রবীন্দ্রনাথের রাফ্রনৈতিক মত'

খিখন খবর পাই, রাষ্ট্রনীতি, সমাজনীতি, ধর্মনীতি সম্বন্ধে আমার বিশেষ মত কী তা আমার রচনা থেকে কেউ উদ্ধার করবার চেষ্টা করছেন, তখন নিশ্চিত জানি, আমার মতের সঙ্গে তাঁর নিজের মত মিপ্রিত হবে। দিলিলের সাক্ষ্যের সঙ্গে উকিলের ব্যাখ্যা জড়িত হয়ে যে জিনিসটা দাঁড়ায় সেটাকে প্রমাণ বলে গণ্য করা চলে না। কেননা অন্ত পক্ষের উকিলও সেই একই দলিলকে বিপরীত কথা বলিয়ে থাকেন; তার কারণ, বাছাই-করা বাক্যের বিশেষ অর্থ নির্ভির করে বিশেষরূপে বাছাই করার উপরেই।

রাইনীতি সম্বন্ধে আমার মত আলোচনা করে সম্প্রতি ইংরেজি ভাষায় একথানি বই' লেখা হয়েছে। ব্যক্তিগত দিক থেকে আমি লেখকের প্রতি ক্রতজ্ঞ; তিনি আমার প্রতি অসন্মান প্রকাশ করবার চেষ্টা করেন নি, শ্রহা করেই লিখেছেন। আমার প্রতি তার মনের অমুকূল ভাব থাকাতেই, আমার মতকে অনেক অংশে প্রচলিত মতের অমুকূল করে গাজিয়ে আমাকে সাধারণের প্রতিকূলতা থেকে রক্ষা করবার চেষ্টা করেছেন।

বইখানি আমাকে পড়তে হল। কেননা, আমার রাষ্ট্রনৈতিক মত কোনো পাঠকের কাছে কা রক্ম প্রতীত হয়েছে তা জানবার কৌতৃহল সামলাতে পারি নি। আমি জানি, আমার মত ঠিক যে কী তা সংগ্রহ করা সহজ নয়। বাল্যকাল থেকে আজ পর্যন্ত দেশের নানা অবস্থা এবং আমার নানা অভিজ্ঞতার মধ্য দিয়ে দীর্ঘকাল আমি চিস্তা করেছি এবং

^{&#}x27; Political Philosophy of Rabindranath
by Sachindranath Sen

কাজও করেছি। যেহেভু বাকা রচনা করা আযার স্বভাব সেইজন্তে যথন या यत्न এरम्ह उथनि छ। প্रकाम करत्रि । तहनाकामीन मयस्त्र मरक, প্রয়োজনের সঙ্গে সেই-সব লেখার যোগ বিচ্ছিন্ন করে দেখলে ভার गर्ल्य जार्भर श्रह्भ कत्रा मख्यभत्र इत्र ना। य यासूय स्पीर्य कान त्ये क िखा क्रत्र क्रव्य निर्थिष् छात्र त्रा भात्राक खेलिशानिक्छा व मिथाई मश्मिछ। यग्न এ कथा वला ठला ना (य, खाञ्चल-चापि ठावि वर्ल श्रष्टित्र चानिकारमहे बक्कात्र गूथ (धरक भित्रभूर्ग चक्रांभ अक्रांभ (भरत्रह्र, रययन श्रीकात्र कत्र एवं इत्य वार्यका जित्र ग्रमारक वर्ग एए एत्र प्रेथा कारण कार्ण नाना क्रेंशास्त्रक याथा निष्ठ পविषठ, তেমनि कर्वे चस्ठ আমার সম্বন্ধে জানা চাই যে রাষ্ট্রনীতির মতো বিষয়ে কোনো বাঁধা ये अदिक्वादि स्मर्ग्शिय कार्या- अक विरम्य मयदि स्थापि येन (बर्क উৎপन्न इस नि, कीवरने व्यक्तिकात मर्क मरक नाना পतिवर्जनित गर्धा তারা গড়ে উঠেছে। সেই-সমস্ত পরিবর্তনপরম্পরার মধ্যে निःসন্দেহ একটা विकार्व चाह्। महिंदिक देवाद करां हान दहनांद्र कान् चः मूथा, कान् चः म शोध, कान्हा एरगामिक, कान्हा विस्थ गमरमद नीयादक चिक्रिय करत्र व्यवस्थान, रमहर्षे विठात्र करत्र रमश ठाहै। वञ्चल मिहारक चार्टम चार्टम विहास कर्त्राल भाषा यात्र ना. সমগ্রভাবে অমুভব করে তবে তাকে পাই।

বইথানি পড়ে আমি নিজের মতের ঠিক চেছারাটা পেল্ম না। মন
বাধা পেল। বাধা পাবার অক্তান্ত কারণের মধ্যে একটা কারণ এই যে,
এর মধ্যে অনেক তর্জমা আছে যার ভাষা আমার নর, অবচ আমার যে
নয় তার নিদর্শন নেই। ভাষার ইঙ্গিত অনেকথানি কবা কয়। সেটা
যথন বাদ পড়ে তথন কবার অর্থ পাওরা যায়, কিছ তার ব্যলনা মায়া
পড়ে। আর যাই হোক, নিজের ভাষার দায়িছ নিজেকে নিভেই হয়,
কিছ অক্তের ভাষার দায়িছ নেওয়া চলে না।

রবান্তনাথের রাষ্ট্রনৈতিক মত

তবু এই ফটিকেও উপেক্ষা করা চলে, কিন্তু এ কথা বলতেই হল যে, নানা লেখা থেকে বাক্য চয়ন করে আমার মতের যে-একটা মূর্তি দেওরা হরেছে তাতে অংশত হয়তো সব কথাই আছে কিন্তু সমগ্রত মোট কথাটা প্রকাশ পায় নি। এ রকম হওয়াটা বোধ করি অবশুভাবী। কোন্ কথাটার ওক্ষত বেশি, কোন্টার কম, লেখক সেটা অভাবত নিজের অভিমত ও ক্রচির ধারা স্থির করেন এবং সেই ভাবেই সমন্তটাকে গড়ে ভোলেন।

এই উপলক্ষ্যে আমার সমস্ত চিম্বার ক্ষেত্রের উপর নিজেকে একবার দৃষ্টিক্ষেপ করতে হল। বিশ্বাধিক সমস্তা সম্বন্ধে আমি কী ভেবেছি, কী বলতে চেম্বেছি, তা নিজেই কুড়িয়ে এনে সংক্ষেপে আঁটি বাধবার চেষ্টা করা ভালো মনে করি। এজন্তে দলিল ঘাটব না, নিজের স্থৃতির উপরিতলে স্পষ্ট হয়ে যা জেগে আছে তারই অমুসরণ করব।

বালকলালের অনেক প্রভাব জীবনপথে শেব পর্যন্ত সলী হয়ে থাকে; প্রভাক না ধাকলেও ভাদের প্রশোদনা থেকে যায়। আমাদের গ্রাহ্মপরিবার আধুনিক হিন্দুসমাজের বাহ্ম আচারবিচার ক্রিয়াকর্মের নানা আবজ্ঞিক বন্ধন থেকে বিযুক্ত ছিল। আমার বিধাস, সেই কিছু-পরিমাণ দ্রত্ব-বশতই ভারতবর্ষের সর্বজনীন সর্বকালীন আদর্শের প্রতি আমার গুরুজনদের শ্রন্ধা ছিল অভ্যন্ত প্রবল। সেই গৌরববোধ সে দিন নানা আকারে আমাদের বাড়ির অভঃপ্রকৃতি ও বাইরের ব্যবহারকে অধিকার করেছে। তথনকার দিনে প্রচলিত আমুঠানিক হিন্দুথর্মের প্রতি বাদের আছা বিচলিত হ'ত, তাঁদের মনকে হয় হুরোপের অঠাদশ শতান্ধীর বিশেষ ছাঁদের নাজ্ঞিকতা অথবা খুস্টানধর্মপ্রবণতা পেরে বসত। কিছু এ কথা সকলের জানা বে, লে কালে আমাদের পরিবারে ভারতেরই শ্রেষ্ঠ আদর্শের অন্তস্ত্রণ ক'রে ভারতের ধর্ম সংভার করবার উৎসাহ সর্বদা জাব্রাত ছিল।

বলা বাহুল্য, বালককালে স্বভাবতই সেই উৎসাহ আমার মনকে একটি বিশেষ ভাবে দীন্দিত করেছে।

त्मरे ভाविष এই यে, जीवत्मत्र या किছू मरुखम मान ভात পूर्व विकास वागामित वर्षः श्रक्तित यथा (थरकहै। वागामित वर्णावनीयात वाहेत्त শ্রেষ্ঠ জিনিসের অভাব নেই, লোভনীয় পদার্থ অনেক আছে, সে-সমস্তকে আমরা গ্রহণ করতে পারি নে যদি না আমাদের প্রকৃতির মধ্যে ভাদের আত্মসাৎ করি। যখন আমরা বাইরের কিছুতে মুগ্ধ হই তখন লুক মন অফুকরণের মরীচিকা-বিন্তারের ছারা তাকে নেবার জ্বন্তে ব্যগ্র হয়। অমুকরণ প্রায় অতিকরণে পৌছয়; তাতে রঙ চড়াই বেশি, তার আওয়াজ হয় প্রবল, তার আন্দালন হয় অত্যুগ্র ; অত্যন্ত জোর করে निष्कद्र काष्ट्र প्रमान कद्राफ हिंही कदि किनिमही वामाद्रहे, व्यवह नाना দিক থেকে তার ভঙ্গুরতা, তার আত্মবিরোধ প্রকাশ পেতে থাকে। বাইরের জিনিসকে ষখন আপন অন্তরের করি তখন তার ভাবটা বজায় পাকতে পারে, তবু তার প্রকাশটা হয় নিজের মতো। কিন্তু যত কণ **मिटा वायामित्र वाहेर्द्र खा**फा थारक, खिल्द्र यिला ना यात्र, जल कन रमिं। इस स्माने। कनस्य मागा वानाना चकरत्र यटन, मूरनद रहस व्यक्ति वर्षा, किन्न এक्विदि छात्र शास शास गः नधा छात्र (धरक স্বতন্ত্র হয়ে সে অক্ষর লেখকের আপন বাক্যে লেখকের আপন চিন্তিত ভাবকে লিপিবছ করতে পারে না। আমাদের রাষ্ট্রীয় চেষ্টায়, বাইরে (थरक, हेक्रुटन পড़ाর वहे (थरक चामना या পেয়েছি ভা चामामित्र প্রাণে সর্বাঙ্গীন হয়ে ওঠে নি ব'লেই, অনেক সময় ভার বাইরের हैं मिछे। दिन व्याप्यदिन माम दिनाम दिनाम दिनाम रामानान गमन्यर्भ दिही। क्रि— এवः मिन्रूक् घिष्ट्र यान क्रि, या भावात छ। भावात्र, যা করবার তা করা হল।

'गाधना' পত्रिकाय दाष्ट्रीय विषय व्यामि श्रथम व्याटनाहना एक कति।

রবীন্দ্রনাথের রাষ্ট্রনৈতিক মত

তাতে আমি এই क्षांठात्र উপরেই বেশি জোর দিয়েছি। তথনকার षित्न काथ बाढि व छिका करा ७ गमा त्यां है। करब भवर्र्य छुकुब खन्न मिथारनारे वामना बीन्न व'रम गना कंन्नरक्य। वामारमन मिर् পোলিটিকাল অধ্যবসায়ের সেই অবান্তব ভূমিকার কথাটা আজকের দিনের ভক্ষণেরা ঠিকমভো কল্পনা করতেই পারবেন না। ভখনকার পলিটিক্সের সুমন্ত আবেদনটাই ছিল উপরওয়ালার কাছে, দেশের लाटकत्र काष्ट्र अटकवादत्रहे ना। त्महे कात्रत्महे खात्मिक त्राष्ट्र-मिननीटि, প্রাম্যজনমগুলীসভাতে, ইংরেজি ভাষায় বক্তৃতা করাকে (कछ चगःगछ वर्ण मत्न कद्राउँ भाद्राजन ना) द्राज्याही-मञ्जनीरङ নাটোরের পরলোকগত মহারাজা অগদিজনাথের সঙ্গে চক্রান্ত করে সভায় বাংলাভাষা প্রবর্তন করবার প্রথম চেষ্টা যথন করি, তথন উমেশচন্দ্র বন্যোপাধ্যায় মহাশয় প্রভৃতি তৎসামন্ত্রিক রাষ্ট্রনেতারা আমার প্রতি একাম জুদ হয়ে কঠোর বিজপ করেছিলেন। বিজপ ও বাধা আমার জীবনের সকল কর্মেই আমি প্রচুর পরিমাণেই পেয়েছি, এ ক্ষেত্রেও ভার चक्रथा इत्र नि। **পর বৎসরে রুগ্ন শরীর নিয়ে ঢাকা-কন্**ফারে**ভোও** चागारक এই চেষ্টান্ন প্রবৃত্ত হতে হমেছিল। चागात्र এই স্বাইছাড়া উৎসাহ উপলক্ষ্যে তখন এমনতরো একটা কানাকানি উঠেছিল যে, ইংরেজি ভাষার আমার দথল নেই ব'লেই রাষ্ট্রসভার মভো অজারগার আমি वाश्मा ठामावात्र উদ্যোগ করেছি। বাঙালির ছেলের পক্ষে যে গালি गव किया निकात राहे हैं रा मिन चामात्र श्रिष्ठ श्रीयां क्रा ह्या हिन, वर्षा देश्यक वामि कानि न। এত राष्ट्रा द्वार नाक्ष्मा वामि नीयर गछ करब्रिकृम ভात এको। कात्रण, हेरदिबिजाया-िकाम यानाकान (थरक चामि गठाई चवरहना करब्रि ; विठी व कावन, निज्रात्वत्र भागतन তখনকার দিনেও আমাদের পরিবারে পরম্পর পত্ত লেখা প্রভৃতি गांशाद्र हेश्द्रिक्किया-गुरुश्त्र क्रथमानकनक यान भग्र रेक।

रेजियशा कार्जन नार्छेत्र छकूरम मिन्नित मत्रवादित छन्यां रन। ভখন রাজশাসনের ভর্জন স্বীকার করেও আমি ভাকে ভীত্র ভাষার चाक्रिय करत्र हिन्य। त्रहे श्रवक यपि हान चायत्नत्र भाठत्कत्रा भएष म्हिन करन मध्यतन, हेश्द्राच्यत महा कात्रक नामित नामित मध्या বেদনা ও অপমানটা যে কোথায়, আমার সেই লেখায় কভকটা প্রকাশ करत्रि । व्यामि এই वलएक टिएम्डिन्स, मत्रवात्र विनिम्हे। व्याहा; পাশ্চাত্য কর্ত্তপক্ষ যখন সেটা ব্যবহার করেন তখন তার ষেটা শৃষ্টের मिक रमहेिएकहे काहित्र करत्रन, रयहें। পূर्वित्र मिक रमहे। व्याह्य व्यक्षांत्र शाहाजा किरम ? रम इत्क हुई भरकत्र गर्था वाचिक मध्य স্বীকার করা। তরবারির জোরে প্রতাপের যে সম্বন্ধ সে হল বিরুদ্ধ गथक, व्यात्र व्यञ्ज माक्षिरगात्र बादा य गथक राहरेहेहे निकरहेत्र। দরবারে সমাট আপন অজ্ঞ ওদার্য প্রকাশ করবার উপলক্ষ্য পেতেন; সেদিন তাঁর ঘার অবারিত, তাঁর দান অপরিমিত। পাশ্চাত্য সকল मत्रवाद्य मिर्हे निक्रोटि क्रिन क्रिन्छा, मिश्रान खनगांवाद्र श्रान गःकीर्ग, পাহারাওয়ালার অল্রে শল্পে রাজপুরুষদের সংশয়বুদ্ধি কণ্টকিত, তার উপরে এই দরবারের বায়-বহনের ভার দরবারের অভিবিদেরই 'পরে। কেবলমাত্র নতমস্তকে রাজার প্রতাপকে স্বাকার করাবার জন্তেই এই দরবার। উৎসবের সমারোহ বারা পরস্পরের সমক্ষের অন্তর্নিহিত चनमान एक है चाए बन्न करन वाहरत धाकाम कन्ना हम। এই कृतिम श्वमश्रीन चाएषद्र প्राচाश्वमश्र चिन्त्र रूप शाम विश्वा করার মধ্যেও অবিমিশ্র ঔছতা এবং প্রজার প্রতি অপমান। ভারতবর্ষে हेश्द्राक्त अञ्च छात्र चाहेत्न, छात्र मजगृहरू, छात्र मागनछा वााश्रधात् चाह्न, किन्न मिहिटिक छेरमत्वन्न चाकान मिर्म छेरके करन छानान क्लाम क्रायम यावह लहे।

वत्रक धरे तकम कुखिम छेरमत्व म्माहे करत क्षाकां न करत स्विता हत्

রবীন্দ্রনাথের রাষ্ট্রনৈতিক মত

বে, ভারতবর্ধে ইংরেজ খ্ব কঠিন হয়ে আছে কিন্তু ভার সজে আমাদের
মানবসম্বন্ধ নেই, যান্ত্রিক সম্বন্ধ। এ দেশের সঙ্গে ভার লাভের যোগ
আছে, ব্যবহারের যোগ আছে, দ্বদয়ের যোগ নেই। কর্তব্যের জালে
দেশ আর্ত, সেই কর্তব্যের নৈপুণা এবং উপকারিতা স্বীকার করলেও
আমাদের মানবপ্রকৃতি স্বভাবতই সেই প্রাণহীন শাসনতক্ষে পীড়া বোধ
করে।

अहे (वननाहे यत्न नित्र चायात्र त्नशात्र चायि वित्मव कत्त्र अवः वात्र वात्र करत्र वरमिछ रथ, ভात्रखवानी यिन ভात्रखवर्षत्र मकन প्रकात्र हिछकत्र मान (कारना- এकि। প্রবল শক্তিশালী যন্ত্রের হাত দিয়েই চিরদিন গ্রহণ করতে অভ্যন্ত হয়, তা হলে তার অবিধা অযোগ ষতই থাক্, তার চেয়ে हुर्गिछ चार्यादात्र चात्र इटल्डे लाद्य ना। नत्रकात्रवाहाह्तत-नायक अक्टां व्ययानिक व्यवाव ছाড़ा व्यायात्मत्र व्यवावनिनात्रत्वत्र व्यात्र त्कारना छेलात्र चायामित्र शांख त्नहें, अहे त्रक्य धात्रना यत्न वक्षमून श्ख मिखत्राख्हे व्यायत्रा नित्वत्र तम्भारक नित्व यथार्यजात्व हात्राहे। व्यायात्वत्र नित्वत मि ए वायामित्र निष्कत इस नि छात्र ध्रशान कात्रण এ नम्र एए, এ मिन विदिनीत भागनाथीति। चागन कथाहै। अहे (य, त्य दिन देनवक्रत्य कत्मिकि याज रिन्हे (मन्दिक रिनवांत्र बात्रा जारिशत बात्रा, जिल्छ। बात्रा, कानात बात्रा, (वायात बात्रा मण्जूर्व चांबीत करत कूनि नि ; একে व्यक्षिकात क्त्राफ भात्रि नि। निष्कत्र वृष्टि मिरत्र, खान मिरत्र, खान मिरत्र यारक गएए जूनि তাকেই আমরা অধিকার করি; তারই 'পরে অন্তায় আমরা মরে গেলেও সহ कर ए পারি নে। কেউ কেউ বলেন, আমাদের দেশ পরাধীন व'लाई छात्र मिवा मध्यक्क प्राप्ति लाक देनामीन। अयन कथा लानवात्र যোগ্য নয়। সভ্যকার প্রেম অমুকৃল প্রতিকৃল সকল অবস্থাতেই সেবার ভিতর দিয়ে ৰভই আত্মত্যাগ করতে উত্তত হয়। বাধা পেলে তার উত্তম वाए वहे करम ना। वामना कन्तान करन्नि, छीत छावान कननारिश

প্রকাশ করেছি; কিন্তু যে-সব অভাবের তাড়নার আমাদের দেই রোগে তীর্ণ, উপবাসে শীর্ণ, কর্মে অপটু, আমাদের চিন্ত অন্ধসংস্কারে ভারাক্রান্ত, আমাদের সমাজ শত থণ্ডে থণ্ডিত, তাকে নিজের বৃদ্ধির দারা, বিভার দারা, সংঘবদ্ধ চেষ্টা দারা দূর করবার কোনো উদ্যোগ করি নি। কেবলই নিজেকে এবং অভ্যকে এই ব'লেই ভোলাই যে, যে দিন স্বরাজ হাতে আসবে তার পরদিন থেকেই সমস্ত আপনিই ঠিক হয়ে যাবে। এমনি করে কর্তব্যকে স্থল্বে ঠেকিয়ে রাখা, অকর্মণ্যতার শৃত্তগর্জ কৈষিয়ত রচনা করা, নিরুৎস্ক নিরুত্যম মুর্বল চিন্তেরই পক্ষে সম্ভব।

আমাদের দেশকে সম্পূর্ণভাবে কেউই কেড়ে নিতে পারে না, এবং সেই দেশকে বাইরে থেকে দয়া করে কেউ আমাদের হাতে তুলে দেবে এমন শক্তি কারও নেই। দেশের 'পরে নিজের খাভাবিক অধিকারকে যে পরিমাণে আমরা ত্যাগ করেছি সেই পরিমাণেই অস্তে তাকে অধিকার করেছে। এই চিস্তা করেই এক দিন আমি 'বদেশী সমাজ' নাম দিয়ে একটি বক্তৃতা করেছিলুম। ভার মর্মকথাটা আর-এক বার সংক্ষেপে বলবার প্রয়োজন আছে।

চিরদিন ভারতবর্ষে এবং চীনদেশে সমাজতক্তই প্রবল, রাষ্ট্রতক্ত তার নীচে। দেশ যথার্থভাবে আত্মরক্ষা করে এসেছে সমাজের সম্মিলিভ শক্তিতে। সমাজেই বিষ্ণার ব্যবস্থা করেছে, ভ্বিতকে জল দিয়েছে, ক্ষিতকে অর, পূরার্থীকে মন্দির, অপরাধীকে দণ্ড, প্রছেয়কে প্রছা; গ্রামে গ্রামে দেশের চরিত্রকে রক্ষিত এবং তার প্রীকে প্রতিষ্ঠিত করেছে। দেশের উপর দিয়ে রাজ্য-সাম্রাজ্যের পরিবর্তন হয়ে গেল, অদেশী রাজার রাজার নিয়ভই রাজত্ব নিয়ে হাত-ফেরাফেরি চলল, বিদেশী রাজারা এসে সিংহাসন-কাড়াকাড়ি করতে লাগল, সূঠপাট অত্যাচারও কম হল না, কিন্তু তরু দেশের আত্মরক্ষা হয়েছে, বেছেতু সে আপন কাজ আপনি করেছে, তার অরবস্ত্র ধর্মকর্ম সমস্তই তার আপনারই হাতে!

রবীজনাথের রাষ্ট্রনৈতিক মত

এমনি করে দেশ ছিল দেশের লোকের; রাজা ছিল তার এক অংশে মাত্র,
মাণার উপর যেমন মুক্ট খাকে তেমনি। রাষ্ট্রপ্রধান দেশে রাষ্ট্রতন্ত্রের
মধ্যেই বিশেষভাবে বন্ধ থাকে দেশের মর্মহান; সমাজপ্রধান দেশে
দেশের প্রাণ সর্বত্র ব্যাপ্ত হরে থাকে। রাষ্ট্রপ্রধান দেশের রাষ্ট্রতন্ত্রের
পতনে দেশের অধঃপতন, তাতেই সে মারা যার। গ্রীস রোম এমনি
করেই মারা গিরেছে। কিন্তু চীন ভারত রাষ্ট্রীয় পরিবর্তনের ভিতর
দিরেই স্থদীর্ঘকাল আত্মরক্ষা করেছে, তার কারণ সর্বব্যাপী সমাজে
তার আত্মা প্রসারিত।

পাশ্চাত্য রাজার শাসনে এইখানে ভারতবর্ষ আঘাত পেয়েছে। গ্রামে গ্রামে তার যে সামাজিক শ্বরাজ পরিব্যাপ্ত ছিল, রাজশাসন তাকে অধিকার করলে। যথন থেকে এই অধিকার পাকা হয়ে উঠল তথন থেকে গ্রামে গ্রামে দিখিতে গেল জল শুকিরে, জীর্ণ মন্দিরে শৃক্ত অতিথি-শালায় উঠল অপথ গাছ, জাল-জালিয়াতি মিধ্যা-মকদ্দমাকে বাধা দেবার কিছু রইল না, রোগে তাপে দৈক্তে অজ্ঞানে অধর্মে সমস্ত দেশ রসাতলে তলিয়ে গেল।

সকলের চেয়ে বিপদ হল এই বৈ, দেশ দেশের লোকের কাছে কিছু চাইলে আর সাড়া পার না। জলদান বিভাদান সমস্তই সরকার-বাহাছুরের মুখ তাকিরে। এইখানেই দেশ গভীরভাবে আপনাকে হারিয়েছে। দেশের লোকের সঙ্গে দেশ যথার্বভাবে সেবার সম্বন্ধত্ত্ত্রে যুক্ত, সেইখানেই ঘটেছে মর্মান্তিক বিচ্ছেদ। আগে স্বরাজ্ব পেলে তবে সেই স্বাভাবিক সম্বন্ধের কাজ চলতে থাকবে এ কথা বলাও বা, আর, আগে ধন লাভ হবে তার পরে ছেলে মাকে শীকার করবে এ কথা বলাও তাই। দারিজ্যের মধ্যেও শাভাবিক সম্বন্ধের কাজ চলা উচিত— বস্তুত সেই অবস্থায় সম্বন্ধের দাবি বাড়ে বই কমে না। স্বিদেশী-সমাজে তাই আমি বলেছিলুম ইংরেজ আমাদের রাজা কিয়া আর-কেউ আমাদের রাজা

कानास्त

এই কথাটা নিম্নে বকাবকি ক'রে সময় নই না ক'রে শেষার ছারা,
ত্যাগের ছারা নিজের দেশকে নিজে সভ্যভাবে অধিকার করবার চেটা
সর্বারো করতে হবে। দেশের সমন্ত বৃদ্ধিপত্তি ও কর্মশক্তিকে সংঘবদ্ধ
আকারে কেমন করে দেশে বিন্তীর্ণ করা যেতে পারে, অদেশী-সমাজে
আমি তারই আদর্শ ব্যাখ্যা করেছিল্ম। খদর-পরা দেশই যে সমগ্র
দেশের সম্পূর্ণ আদর্শ এ কথা আমি কোনোমতেই মানতে পারি নে;
যখন দেশের আত্মা সজাগ ছিল তখন সে যে কেবলমাত্র আপন তাঁতে
বোনা কাপড় আপনি পরেছে তা নম্ন, তখন তার সমাজে তার বহুধা
শক্তি বিচিত্র স্প্রতিত আপনাকে সার্থক করেছে। আজ সমগ্রভাবেই
সেই শক্তির দৈন্ত ঘটেছে, কেবলমাত্র চরকার স্বতো কাটবার শক্তির
দৈন্ত নম।

আজ আমাদের দেশে চরকালাঞ্চন পতাকা উড়িরেছি। এ যে সংকীর্ণ জড়শক্তির পতাকা, অপরিণত যন্ত্রশক্তির পতাকা, স্বরবল পণ্যশক্তির পতাকা— এতে চিন্তশক্তির কোনো আহ্বান নেই। সমস্ত জাতিকে মুক্তির পথে যে আমন্ত্রণ সে তো কোনো বাহ্য প্রক্রিয়ার অন্ধ প্নরাবৃত্তির আমন্ত্রণ হতে পারে না। তার জন্তে আয়ন্ত্রক পূর্ণ মন্ত্রন্তরের উন্বোধন; সে কি এই চরকা-চালনার ? চিন্তাবিহীন মৃঢ় বাহ্য অনুষ্ঠানকেই ঐহিক পারত্রিক সিদ্বিলাভের উপায় গণ্য করেই কি এত কাল জড়ত্বের বেইনে আমরা মনকে কর্মকে আড়েই করে রাখি নি ? আমাদের দেশের সব চেয়ে বড়ো তুর্গতির কারণ কি তাই নর ? আজ কি আকাশে পতাকা উড়িয়ে বলতে হবে, বৃদ্ধি চাই নে, বিল্লা চাই নে, প্রীতি চাই নে, পৌরুষ চাই নে, অন্তর্ব-প্রকৃতির মৃক্তি চাই নে, সকলের চেয়ে বড়ো ক'রে এক-মাত্র ক'রে চাই, চোঝ বৃজে, মনকে বৃজ্ঞিয়ে দিয়ে হাত চালানো, বছ সহস্র বংসর পূর্বে যেমন চালানো হয়েছিল তারই অন্থর্তন ক'রে ! স্বরাজ-সাধন-বাত্রায় এই হল রাজপথ ? বিমন কথা ব'লে মান্ত্রবকে

प्रविद्यनात्पत्र बाहुदेनिक मक

कि वागमान करा एवं ना

বস্তুত বৰ্ণন সমগ্রহাৰে দেশের বৃদ্ধিন্তি কর্মনন্তি উত্তত বাকে তথ্য অন্ত দেশ থেকে কাপড় কিনে পরলেও ম্বাজের মূলে আঘাত লাগে না। পাছের গোড়ার বিদেশী সার দিলেই গাছ বিদেশী হয় না, যে মাটি তার মদেশী তার মূলগত প্রাধান্ত থাকলে ভাবনা নেই। পৃথিবীতে ম্বাজী এমন কোনো দেশই নেই যেখানে অন্ত দেশের আমদানি জিনিস বহুল পরিমাণে ব্যবহার না করে। কিন্তু সেই সলে সকেই তারা নানা চেটার আপন শক্তিকেও সার্থক করছে— কেবল এক দিকে নয়, কেবল বণিকের মতো পণ্য-উংপাদনে নয়, বিভা-অর্জনে, বৃদ্ধির আলোচনায়, লোকহিতে, শিল্পাহিত্য-স্কৃত্তিতে, মহন্যুন্থের পূর্ণ বিকাশে। সে দিকে যদি আমাদের দেশে অভাব থাকে তবে নিজের হাত ছুটোকে মনোবিহীন কল-আকারে পরিণত করে আমরা যতই হাতো কাটি আর কাপড় বৃনি

আমি প্রথম থেকেই রাষ্ট্রীয় প্রশক্তে এই কথাই বার্ষার বলেছি,
বিষেক্তি নিজে করতে পারি সেকাজ সমন্তই বাকি ফেলে, অক্তের
উপরে অভিযোগ নিয়েই অহরহ কর্মহীন উত্তেজনার মাত্রা চড়িয়ে দিন
কাটানোকে আমি রাষ্ট্রীয় কর্তব্য বলে মনে করি নে। আপন পক্ষের
কথাটা সম্পূর্ণ ভূলে আছি ব'লেই অপর পক্ষের কথা নিয়ে এত অত্যন্ত
অধিক করে আমরা আলোচনা করে থাকি। তাতে শক্তিহাস হয়।
বরাজ হাতে পেলে আমরা বরাজের কাজ নির্বাহ করতে পারব, তার
পরিচয় বরাজ পাবার আগেই দেওয়া চাই। সে পরিচয়ের ক্ষেত্র
প্রশন্ত। দেশের সেবার মধ্যে দেশের প্রতি প্রতির প্রকাশ কোনো
বাহ্ অবস্থান্তবের অপেকা করে না, তার নির্ভর একমাত্র আন্তরিক
সত্যের প্রতি। আজ যদি দেখি সেই প্রকাশ অলস উদাসীন, তবে
বাহিরের অন্ধ্রাহে বান্ধ হরাজ পোলেই অন্তরের সেই জন্মতা দুর হবে, এ

কথা আমি বিখাস করি নে। আগে আমাদের বাহিরের বাধা দূর হবে, তার পরে আমাদের দেশপ্রীতি অন্তরের বাধা ভেদ করে পরিপূর্ণ শক্তিতে দেশের সেবার নিষ্ক্ত হবে, এমন আয়বিভ্রনার কথা আমরা বেন না বলি।) বে মাহ্ব বলে 'আগে ফাউণ্টেন-পেন পাব ভার পরে মহাকাব্য লিখব', ব্যুতে হবে ভার লোভ ফাউণ্টেন-পেনের প্রতিই, মহাকাব্যের প্রতি নয়। যে দেশাস্থবোধী বলে 'আগে শ্বরাজ্ব পেলে ভার পরে মনেদেশর কাজ করব', ভার লোভ পতাকা-ওড়ানো উদি-পরা শ্বরাজ্বের রঙকরা কাঠামোটার 'পরেই। এক জন আটিস্ট্কে জানি, তিনি আনেক দিন থেকে বলে এসেছিলেন, 'রীভিমতো স্টুডিয়ো আমার অবিকারে না পেলে আমি হাতের কাজ্ব দেখাতে পারব না।' ভার স্টুডিয়ো জ্টল, কিন্তু হাতের কাজ্ব আজও এগোয় না। যত দিন স্টুডিয়ো ছিল না তত দিন ভাগ্যকে ও অন্ত সকলকে ক্রপণ বলে দোষ দেবার প্রযোগ ভার ছিল; স্টুডিয়ো পাবার পর থেকে ভার হাতও চলে না, মুখও চলে না। 'শ্বরাজ আগে আসবে, খদেশের সাধনা ভার পরে, এমন কথাও তেমনিই সভাহীন, এবং ভিডিহীন এমন শ্বরাজ।'

অগ্রহায়ণ ১৩৩৬

नात्री

बास्ट्रिय पृष्टिष्ठ नात्री भूत्राष्ठनी। नत्रम्याच्य नात्रीमिक्ट्रिक वना व्यक्त भारत चाणामिक। এই मिक्र या जीवत्नादक প्रान्तक वहन करत्र, श्रान्टक भारत करत्र।

পৃথিবীকে জীবের বাসবোগ্য করবার জন্তে অনেক যুগ গেছে ঢালাই-পেটাই-করা মিল্লির কাজে। সেটা আধখানা শেব হতে না হতেই প্রকৃতি শুরু করলেন জীবন্দৃষ্টি, পৃথিবীতে এল বেদনা। প্রাণসাধনার সেই আদিম বেদনা প্রকৃতি দিয়েছেন নারীর রক্তে, নারীর হৃদয়ে। জীবপালনের সমন্ত প্রবৃত্তিজাল প্রবল ক'রে জড়িত করেছেন নারীর দেহমনের তন্ততে তন্ততে। এই প্রবৃত্তি ঘভাবতই চিন্তর্ন্তির চেয়ে হৃদয়্বৃত্তিতেই স্থান পেয়েছে গভীর ও প্রশন্ত ভাবে। এই সেই প্রবৃত্তি নারীর মধ্যে বা বন্ধনজাল গাঁথছে নিজেকে ও অন্তকে ধরে রাখবার জন্তে— প্রেমে, সেহে, সকরুণ বৈর্যে। মানবসংসারকে গড়ে ভোলবার, বেধে রাখবার এই আদিম বাধুনি। এই সেই সংসার বা সকল সমাজের, সকল সভ্যতার মূল ভিত্তি। সংসারের এই গোড়াকার বাঁধন না থাকলে মানুব ছড়িয়ে পড়ত আকারপ্রকারহীন বাম্পের মতো; সংহত হয়ে কোথাও মিলনকেন্দ্র স্থাপন করতে পারত না। সমাজবন্ধনের এই প্রথম কাজটি মেয়েদের।

প্রকৃতির সমস্ত সৃষ্টিপ্রক্রিয়া গভীর গোপন, তার স্বভঃপ্রবর্তনা বিধাবিহীন। সেই আদিপ্রাণের সহক প্রবর্তনা নারীর স্বভাবের মধ্যে।
সেইজন্ত নারীর স্বভাবকে মান্ত্র রহন্তময় আখ্যা দিয়েছে। তাই অনেক
সময়ে অকলাৎ নারীর জীবনে যে সংবেগের উচ্ছাস দেখতে পাওরা
যার তা তর্কের অভীত— তা প্রয়োজন-অন্ত্রসারে বিধিপূর্বক খনন করা

জ্ঞলাশয়ের মতো নয়, তা উৎসের মতো যার কারণ আপন অহৈত্ব রহস্তে নিহিত।

প্রেমের রহন্ত, স্নেহের রহন্ত অতি প্রাচীন এবং ছুর্গম। সে আপন সার্থকভার জন্তে ভর্কের অপেকা রাখে না। যেখানে ভার সমস্তা সেখানে তার জত সমাধান চাই। তাই গৃহে নারী যেমনি প্রবেশ করেছে কোপা পেকে অবভীর্ণ হল গৃহিণী, শিশু যেমনি কোলে এল মা তখনই প্রস্তত। জীবরাজ্যে পরিণত বৃদ্ধি এসেছে অনেক পরে। সে আপন জায়গা পুঁজে পায় সন্ধান ক'রে, যুদ্ধ ক'রে। বিধা মিটিয়ে চলতে তার गयत्र यात्र। এই विधात्र गत्त्र कठिन बत्पहे (म गवन्छ। ও मফनछ। नाख করে। এই দ্বিধাতরক্ষের ওঠাপড়ায় শতাব্দীর পর শতাব্দী চলে যায়, गाःचा छिक ल्य ब्राय ऐर्फ वात वात याशू एवत हे छिहा गरक प्रिय विপर्यस क'रत्र। পুরুষের স্ষ্টি বিনাশের মধ্যে তলিয়ে যায়, নৃতন क'রে বাঁধতে इव छात्र की छित्र छू यिका। भान् छित्र भान् छित्र भत्रीकाम भूकत्वत्र कर्य क्विक एक प्रतिवर्धन करता चिष्ठिष्ठात अहे निष्ठा प्रतिक्र मार्थ यिन ভাকে অগ্রসর করে ভবে সে বেঁচে যায়, যদি ক্রটিসংশোধনের অবকাশ ना भाष्र তবে জीবনবাহনের ফাটল বড়ো হয়ে উঠতে উঠতে তাকে होत्न विनुश्चित्र करानत्र याथा। शुक्रावत्र त्रहिष्ठ मङ्गुष्ठात्र चामिकान (बदक এই त्रकम खाडामड़ा हलहा। हेलिमरश, नादीत्र मरश (अवनी, नात्रीत्र गरशा जननी প্রকৃতির দৌতো স্থিরপ্রতিষ্ঠিত হয়ে আপন কাজ कर्त्र हरलहा । এवः श्रवन चार्विशत्र मः पर्व चार्यन मः मारत्र क्रिय यात्व यात्व व्यविकाख करब्र वानात्व। त्रहे खनवात्वा एवन विष-श्रक्तित श्रमत्रमीमात्रहे यत्ना, याप्त्र यत्ना, मानमारहत यत्ना— আক্ষিক, আত্মহাতী।

পুরুষ তার আপন জগতে বারে বারে নৃতন আগন্ধ। আজ পর্বন্ত কত বার সে গড়ে তুলেছে আপন বিধিবিধান। বিধাতা তাকে তার

नात्री

জীবনের পথ বাধিরে দেন নি; কত দেশে কত কালে তাকে আপন পথ বানিয়ে নিতে হল। এক কালের পথ বিপথ হয়ে উঠল আর-এক কালে, উল্টিয়ে গেল তার ইতিহাস। করলে সে অন্তর্ধান।

নব নব সভ্যতার উপট-পালটের ভিতর দিয়ে নারীর জীবনের মৃশ ধারা চলেছে এক প্রশন্ত পথে। প্রকৃতি তাকে বে দ্দরসম্পদ দিয়েছেন নিত্যকোত্হলপ্রবণ বৃদ্ধির হাতে তাকে নৃতন নৃতন অধ্যবসায়ে পরধ করতে দেওয়া হয় নি। নারী পুরাতনী।

পুরুষকে নানা দারে নানা আপিসে উমেদারিতে দোরায়। অধিকাংশ পুরুষই জীবিকার তত্তে এমন কাজ মানতে বাধ্য হয় বার প্রতি তার ইছোর, তার ক্মতার সহজ সম্মতি নেই। কঠিন পরিশ্রমে নানা কাজের শিক্ষা তার করা চাই— তাতে বারো আনা পুরুষই যথোচিত সফলতা পায় না। কিন্তু গৃহিণীরূপে, জননীরূপে মেয়েদের যে কাজ সে তার আপন কাজ, সে তার স্বভাবসংগত।

নানা বিশ্ব কাটিয়ে অবস্থার প্রতিকৃশতাকে বীর্থের বারা নিজের অম্পত্ত করে প্রুষ মহন্ত লাভ করে। সেই অসাধারণ সার্থকতার উত্তীর্ণ প্রুষের সংখ্যা অল্ল। কিন্তু হৃদয়ের রসধারায় আপন সংসারকে শভশালী করে তুলেছে এমন মেয়েকে প্রায় দেখা যায় দরে ঘরে। প্রকৃতির কাছ থেকে তারা পেয়েছে অশিক্ষিতপট্ন ; মাধুর্ষের ঐশর্য তাদের সহজে লাভ করা। যে মেয়েয় সভাবের মধ্যে ছুর্ভাগ্যক্রমে সেই সহজ রসটি না পাকে, কোনো শিক্ষায়, কোনো ক্রিম উপায়ে সংসারক্ষেত্রে সে সার্থকতা পায় না।

যে সম্বল অনায়াসে পাওয়া যায় তার বিপদ আছে। বিপদের এক কারণ অন্তের পক্ষে তা লোভনীয়। সহজ-এশর্যবান দেশকে বলবান নিজের একান্ত প্রয়োজনে আত্মসাৎ করে রাথতে চায়। অনুর্বন্ন দেশের পক্ষে স্বাধীন থাকা সহজ। যে পাধির ভানা স্থকর ও কঠনর মধুর

ভাকে থাঁচার বন্দী করে মাছ্র গর্ব অন্তভ্র করে; ভার গৌন্দর্য সমস্ত অরণ্যভূমির, এ কথা সম্পত্তিলোলুপরা ভূলে যায়। মেয়েদের হৃদয়মাধুর্য ও সেবানৈপুণাকে পুরুষ স্থদীর্ঘকাল আপন ব্যক্তিগত অধিকারের মধ্যে কড়া পাহারার বেড়া দিয়ে রেখেছে। মেয়েদের নিজের শ্বভাবেই বাঁধন-মানা প্রবণতা আছে, সেইজ্বন্তে এটা সর্বত্রই এত সহজ হয়েছে।

বস্তুত জীবপালনের কাজটাই ব্যক্তিগত। সেটা নৈর্ব্যক্তিক তত্ত্বের কোঠার পড়ে না, সেই কারণে তার আনন্দ বৃহৎ তত্ত্বের আনন্দ নম ; এমন কি যেরেদের নৈপুণ্য যদিও বহন করেছে রস, কিন্তু শৃষ্টির কাজে আজও যথেষ্ট সার্থক হয় নি।

তার বৃদ্ধি, তার সংস্কার, তার আচরণ নির্দিষ্ট সীমাবদ্ধতার দ্বারা বহু যুগ থেকে প্রভাবাধিত। তার শিক্ষা, তার বিশ্বাস বাহিরের বৃহৎ অভিজ্ঞতার মধ্যে সত্যতা লাভ করবার সম্পূর্ণ প্রযোগ পায় নি। এইজন্তে নির্বিচারে সকল অপদেবতাকেই সে অমূলক ভয় ও অযোগ্য ভক্তির অর্থ্য দিয়ে আগছে। সমস্ত দেশ জুড়ে যদি দেখতে পাই তবে দেখা যাবে এই মোহমুগ্ধতার ক্ষতি কত সর্বনেশে, এর বিপুল ভার বহন করে উরতির দুর্গম পথে এগিয়ে চলা কত হুংসাধ্য। আবিলবৃদ্ধি মৃত্যতি পুরুষ দেশে যে কম আছে তা নয়, তারা শিশুকাল থেকে মেয়ের হাতে গড়া এবং তারাই মেয়েদের প্রতি সব চেয়ে অত্যাচারী। দেশে এই-যে সব আবিল মনের কেক্সগুলি দেখতে দেখতে চারি দিকে গড়ে উঠছে, মেয়েদের অদ্ধ বিচারবৃদ্ধির উপরেই তাদের প্রধান নির্ভর। চিন্তের বন্ধীশালা এমনি করে দেশে ব্যাপ্ত হয়ে পড়ছে, এবং প্রতিদিন তার ভিত্তি হয়ে উঠছে দুচ়।

এ দিকে প্রায় পৃথিবীর সকল দেশেই মেয়েরা আপন ব্যক্তিগত সংসারের গণ্ডি পেরিয়ে আসছে। আধুনিক এসিয়াতেও তার লক্ষণ দেখতে পাই। তার প্রধান কারণ সর্বত্রই সীমানা ভাঙার যুগ এসে

नात्री

পড়েছে। যে-সকল দেশ আপন আপন ভৌগোলিক ও রাষ্ট্রক প্রাচীরের মধ্যে একাস্ত বন্ধ ছিল তাদের সেই বেড়া আজ আর তাদের তেমন করে বিরে রাখতে পারে না— তারা পরস্পর পরস্পরের কাছে প্রকাশিত হয়ে পড়েছে। স্বতই অভিজ্ঞতার ক্ষেত্র প্রশন্ত হয়েছে, দৃষ্টিসীমা চিরাভান্ত দিগন্ত পেরিয়ে গেছে। বাহিরের সঙ্গে সংঘাতে অবস্থার পরিবর্তন ঘটছে, নৃতন নৃতন প্রয়োজনের সঙ্গে আচারবিচারের পরিবর্তন অনিবার্য হয়ে পড়ছে।

আমাদের বাল্যকালে দরের বাইরে যাতায়াতের আবশুকে মেয়েদের ছিল পাল্কির যুগ। মানী দরে সেই পাল্কির উপরে পড়ত ঘেটাটোপ। বেপুন ক্লে যে মেয়েরা সবপ্রথমে ভতি হয়েছিলেন তার মধ্যে অপ্রথী ছিলেন আমার বড়দিদি। তিনি ধারখোলা পাল্কিতে ইকুলে বেতেন, সেদিনকার সম্ভান্তবংশের আদর্শকে সেটা অল্ল পীড়া দেয় নি। সেই একবল্লের দিনে সেমিজ পরাটা নির্লজ্জভার লক্ষণ ছিল। শালীনতার প্রচলিত রীতি রক্ষা করে রেলগাড়িতে যাতায়াত করা সহজ্ব ব্যাপার ছিল না।

আজ সেই ঢাকা পাল্কির মুগ বছ দ্রে চলো গৈছে। মৃত্পদে বার নি, জ্ঞতপদেই গেছে। বাইরের পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে এ পরিবর্তন আপনিই ঘটেছে— এ নিয়ে কাউকে সভাসমিতি করতে হয় নি। মেয়েদের বিবাহের বয়স দেখতে দেখতে এগিয়ে গেল, সেও হয়েছে সহজে। প্রাকৃতিক কারণে নদীতে জলধারার পরিমাণ যদি বেড়ে যায় তবে তার তটভূমির সীমা আপনিই হটে যেতে থাকে। মেয়েদের জীবনে আজ সকল দিক থেকেই স্বতই তার তটের সীমা দ্রে চলে যাছে। নদী উঠছে মহানদী হয়ে।

এই-যে বাহিরের দিকে ব্যবহারের পরিবর্তন এ তো বাইরেই থেকে বার না। অন্তরপ্রকৃতির মধ্যেও এর কাজ চলতে থাকে। মেরেদের

বে মনোভাব বন্ধ সংসারের উপবোগী, যুক্ত সংসারে সে তো অচল হঙ্কে থাকতে পারে না। আপনিই জীবনের প্রশন্ত ভূমিকায় দাঁড়িয়ে তার মন বড়ো করে চিন্তা করতে, বিচার করতে আরম্ভ করে। তার পূর্বতন সংস্কারগুলিকে বাচাই করার কাজ আপনিই শুরু হতে থাকে। এই অবস্থায় সে নানা রকম ভূল করতে পারে, কিন্তু বাধায় ঠেকতে ঠেকতে সে ভূল উত্তীর্ণ হতে হবে। সংকীর্ণ সীমায় পূর্বে মন যে রকম ক'রে বিচার করতে অভ্যন্ত ছিল সে অভ্যাস আঁকড়ে থাকলে চারি দিকের সঙ্গে পদে পদে অসামঞ্জল আনতে থাকবে। এই অভ্যাস-পরিবর্তনে হংখ আছে, বিপদও আছে; কিন্তু সেই ভয় ক'রে আধুনিক কালের প্রোতকে পিছনের দিকে ফিরিয়ে দেওয়া যায় না।

গৃহস্থালির ছোটো পরিধির মধ্যে মেরেদের জীবন যথন আবদ্ধ ছিল তথন মেরেলি মনের খাভাবিক প্রবৃত্তিগুলি নিয়ে সহজেই তাদের কাজ চলে যেত। এজতো তাদের বিশেষ শিক্ষার দরকার ছিল না বলেই এক দিন স্ত্রীশিক্ষা নিয়ে এতই বিক্রজতা এবং প্রহ্রসনের স্বষ্ট হয়েছে। তথন পুরুবেরা নিজে যে-সব সংস্কারকে উপেক্ষা করত, যে সব মত বিখাস করত না, যে-সকল আচরণ পালন করত না, মেহেদের বেলায় সেগুলিকে স্থত্নে প্রশ্রম দিয়েছে। তার মূলে তাদের সেই মনোবৃত্তি ছিল যে মনোবৃত্তি একেশ্বর শাসনকর্তাদের। তারা জানে, অজ্ঞানের অন্ধ্রম সংস্কারের আবহাওয়ায় যথেছে শাসনের স্ব্রোগ রচনা করে; মন্থ্রোচিত যাধিকার বিসর্জন দিয়েও সম্বৃত্তিতে পাকবার পক্ষে এই মুয় অবস্থাই অমুকৃল অবস্থা। আমাদের দেশের অনেক পুরুবের মনে আজ্ঞও এই ভাব আছে। কিন্তু কালের সঙ্গে সংগ্রামে তাদের হার মানতেই হবে।

কালের প্রভাবে মেয়েদের জীবনের ক্ষেত্র এই-যে সভই প্রসারিত হরে চলেছে, এই-যে মুক্ত সংসারের জগতে মেয়েরা আপনিই এসে পড়ছে, এতে ক'রে আত্মরক্ষা এবং আত্মসন্মানের জন্তে ভাদের বিশেষ ক'বে বৃদ্ধির চর্চা, বিভার চর্চা, একান্ত আবশুক হয়ে উঠল। তাই দেখতে দেখতে এর বাধা দ্র হয়ে চলেছে। নিরক্ষরতার লক্ষা আত্ম তন্ত্র মেরেদের পক্ষে সকলের চেরে বড়ো লক্ষা, পূর্বকালে মেরেদের ছাতা জ্তো ব্যবহারের যে লক্ষা ছিল এ তার চেরে বেশি; বাটনা-বাটা কোটনা-কোটা সম্বন্ধে অনৈপ্প্যের অথ্যাতি তার কাছে কিছুই নয়। অর্থাৎ, গার্হস্থ্য বাজার-দরেই মেয়েদের দর, এমন কথা আত্মকের দিনে বিয়ের বাজারেও বোলো আনা খার্টছে না। যে বিভার মূল্য সার্বভৌমিক, যা আত্ম প্রয়োজনের ঐকান্তিক দাবি ছাড়িয়ে চলে যায়, আত্ম পাত্রীর মহার্ঘতা যাচাইয়ের জন্তে অনেক পরিমাণে সেই বিভার সন্ধান নেওয়া হয়।

এই প্রশালীতেই আমাদের দেশের আধুনিক মেয়েদের মন ঘরের সমাজ ছাড়িয়ে প্রতিদিন বিশ্বসমাজে উত্তীর্ণ হচ্ছে।

প্রথম যুগে এক দিন পৃথিবী আপন তপ্ত নিশাসের কুরাশার অবগুরিত ছিল, তখন বিরাট আকাশের গ্রহমগুলীর মধ্যে আপন স্থান সে উপলব্ধি করতেই পারে নি। অবশেষে এক দিন তার মধ্যে স্থাকিরণ প্রবেশের পথ পেল। তখনই সেই মুক্তিতে আরম্ভ হল্প পৃথিবীর গোরবের যুগ। তেমনি এক দিন আর্দ্র হদয়ালুতার ঘন বাল্পাবরণ আমাদের মেয়েদের চিত্তকে অতাক্ত কাছের সংসারে আবিষ্ট করে রেখেছিল। আল্ল তা ভেদ ক'রে সেই আলোকরশ্মি প্রবেশ করছে বা মুক্ত আকাশের, বা সর্বলোকের। বহু দিনের যে-সব সংস্থারক্ষড়িমালালে তাদের চিত্ত আবদ্ধ বিক্ষড়িত ছিল, যদিও আল্ল তা সম্পূর্ণ কেটে যায় নি তরু তার মধ্যে অনেকথানি ছেদ ঘটেছে। কতথানি বে, তা আমাদের মতো প্রাচীন বর্ষস যাদের তারাই জানে।

আত্র পৃথিবীর সর্বত্রই মেরেরা ঘরের চৌকাঠ পেরিয়ে বিশ্বের উন্মৃত্ত প্রাক্তণ এসে দাড়িরেছে। এখন এই বৃহৎ সংসারের দারিত্ব তাদের

चीकांत्र कत्रएवरे रूटव ; नरेटल তाम्त्र लब्का, তाम्त्र चक्रुठार्थछ।

আমার মনে হয়, পৃথিবীতে নৃতন য়ৄগ এগেছে। অতি দীর্ঘকাল
মানবসভ্যতার ব্যবস্থাভার ছিল পুরুষের হাতে। এই সভ্যতার রাষ্ট্রতম্ব
অর্থনীতি সমাজশাসনতম্ব গড়েছিল পুরুষ। মেয়েরা তার পিছনে
প্রকাশহীন অন্তরালে থেকে কেবল করেছিল ঘরের কাজ। এই
সভ্যতা হয়ে ছিল একঝোঁকা। এই সভ্যতায় মানবিচন্তের অনেকটা
সম্পদের অভাব ঘটেছে; সেই সম্পদ মেয়েদের হ্রদয়ভাণ্ডারে রূপণের
জিল্মায় আটকা পড়েছিল। আজ্ব ভাণ্ডারের শ্বার খুলেছে।

তরুণ বুগের মামুষহীন পৃথিবীতে প্রস্তুরের উপর যে অরণ্য ছিল বিস্তৃত সেই অরণ্য বহুলক বংসর ধরে প্রতিদিন স্থত্তক সঞ্চয় করে এসেছে আপন বৃক্ষরাজির মজ্জায়। সেই-সব অরণ্য ভূগর্ভে তলিয়ে গিয়ে রূপান্তরিত অবস্থায় বহুষ্গ প্রচ্ছের ছিল। সেই পাডালের শার যে দিন উদ্যাটিত হল, অক্সাৎ মামুষ শত শত বৎসরের অব্যবহৃত স্থত্তককে পাপুরে কয়লার আকারে লাভ করল আপন কাজে; তথনই নৃতন বল নিয়ে বিশ্ববিজ্য়ী আধুনিক যুগ দেখা দিল।

এক দিন এ বেমন ফটেছে সভ্যতার বাহিরের সম্পদ নিয়ে, আজ তেমনি অন্তরের সম্পদের একটি বিশেষ থনিও আপন সঞ্চয়কে বাহিরে প্রকাশ করল। ঘরের মেয়েরা প্রতিদিন বিশ্বের মেয়ে হয়ে দেখা দিছে। এই উপলক্ষে মায়ুষের স্টেশীল চিন্তে এই-যে নৃতন চিন্তের যোগ, সভ্যতায় এ আর-একটি তেজ এনে দিলে। আজ এর ক্রিয়া প্রত্যক্ষে অপ্রত্যক্ষে চলছে। একা পুরুষের গড়া সভ্যতায় যে ভারসামঞ্জের অভাব প্রায়ই প্রলম বাধাবার লক্ষণ আনে, আজ আশা করা যায় ক্রমে সে যাবে সামের দিকে। প্রচণ্ড ভূমিকম্প বার বার ধাকা লাগাছে পুরাতন সভ্যতার ভিত্তিতে। এই সভ্যতায় বিপত্তির কারণ অনেক দিন থেকে সঞ্চিত হয়ে উঠছিল, অতএব ভাঙনের কাজ কেউ বক্ক করতে

नात्री

পারবে না। একটিমাত্র বড়ো আশাসের কথা এই বে, কল্লান্তের ভূমিকার নৃতন সভ্যতা গড়বার কাজে মেরেরা এসে দাড়িরেছে— প্রস্তুত হচ্ছে তারা পৃথিবীর সর্বত্রই। তাদের মুখের উপর থেকেই যে কেবল ঘোমটা খসল তা নর— যে ঘোমটার আবরণে তারা অধিকাংশ জগতের আড়ালে পড়ে গিরেছিল সেই মনের ঘোমটাও তাদের খসছে। যে মানবসমাজে তারা জন্মছে সেই সমাজ আজ সকল দিকেই সকল বিভাগেই স্বন্দাই হরে উঠল তাদের দৃষ্টির সমূখে। এখন অন্ধ সংস্থারের কারখানার গড়া পুতৃলগুলো নিয়ে খেলা করা আর তাদের সাজবে না। তাদের স্বাভাধিক জীবপালিনী বৃত্তি, কেবল ঘরের লোককে নয়, সকল লোককে রক্ষার জন্তে কারমনে প্রবৃত্ত হবে।

একটা নাড়াচাড়া ঘটাতে গেলে মন্দিরের ভিত হবে বিদীর্ণ। প্রাণবান স্কান্তর ধারাকে বাঁচিয়ে রেখেও বড়ো রকম বিপর্যয় সাধন করবার যোগ্য অসামান্ত চারিত্রশক্তি এ দেশে সম্প্রতি কোথাও দেখা যাচছে না, সে কথা স্বীকার করতেই হবে। দেশের যে-একটা মন্ত মিলনভীর্থ মহাম্মাজির শক্তিতে গড়ে উঠেছে এখনো সেটাকে তাঁরই সহযোগিতায় রক্ষা করতে ও পরিণতি দান করতে হবে, তাতে কোনো সন্দেহ নেই।

তুমি জান আমার সভাবটা একেবারেই সনাতনী নয়— অর্থাৎ
খুটিগাড়া মত ও পছতি অতীত কালে আড়াই ভাবে বছ হয়ে থাকলেই
যে শ্রেয়কে চিরন্তন করতে পারবে, এ কথা আমি মানি নে। বর্তমান
কন্প্রেস যত বড়ো মহং অমুষ্ঠানই হোক না কেন তার সমস্ত মত ও
লক্ষ্য যে একেবারে দৃচনির্দিষ্ট ভাবে নির্বিকার নিশ্চল হয়ে গেছে, তাও
সত্য হতেই পারে না। কোনো দিনই তা না হোক, এই আকাজনা
করি। কিন্তু এই কন্প্রেসের পরম মূল্য যখন উপলব্ধি করি এবং এ
কথাও যখন জানি এই কংগ্রেস একটি মহং ব্যক্তিস্বরূপের সৃষ্টি, তখন
হঠাৎ এ'কে সজোরে নাড়া দেবার উপক্রম দেখলে মন উৎকৃষ্টিত না
হয়ে থাকতে পারে না। তখন এই কথাই মনে হয়, এর পরিণতি ও
পরিবর্তনের প্রক্রিয়া এর ভিতর থেকেই সঞ্চারিত করতে হবে। বাইরে
থেকে কাটাইেড়া করে নয়।

ইতিপূর্বে কন্গ্রেসনামধারী যে প্রতিষ্ঠান ভারতবর্ষে আন্দোলন জাগিয়েছিল তার কথা তো জানা আছে। তার আন্দোলন ছিল বাইরের দিকে। দেশের জনগণের অস্তরের দিকে সে তাকায় নি, তাকে জাগায় নি, খদেশের পরিত্রাণের জন্তে সে করণ দৃষ্টিতে পথ তাকিয়ে ছিল বাইরেকার উপরওয়ালার দিকে। পরবশতার ধাত্রী-ক্রোড়েই তার স্বাধীনতা আশ্রয় নিয়ে আছে, এই স্বপ্ন তার কিছুতে ভাঙতে চায় নি। সেদিনকার হাতজ্যেড়-করা দোহাই-পাড়া সৃক্তি-

ফৌজের চিন্তদৈন্তকে বার বার ধিকার দিয়েছি, সে তৃমি জান। হঠাৎ সেই ভাষসিকভার মধ্যে দেশের স্থপ্ত প্রাণে কে ছুইমে দিলে সোনার কাঠি, জাগিয়ে দিলে একমাত্র আত্মশক্তির প্রতি ভরসাকে, প্রচার করলে অহিংশ্র সাধনাকেই নির্ভীক বীরের সাধনারূপে। নব জীবনের তপপ্তার সেই প্রথম পর্ব আজ্বও সম্পূর্ণ হয় নি, আজ্বও এ রয়েছে তাঁরই হাতে যিনি একে প্রবৃত্তিত করেছেন। শিবের তপোভূমিতে নন্দী দাড়িয়েছিলেন ওঠাধরে তর্জনী তৃলে, কেননা তপস্তা তথনো শেষ হয় নি—বাইরের অভিঘাতে ভাকে ভাঙতে গিয়ে অগ্নিকাও হয়েছিল।

এই তো গেল এক পক্ষের কথা, অপর পক্ষের সম্বন্ধেও ভাবনার কারণ প্রবল হয়ে উঠেছে। কন্গ্রেস যত দিন আপন পরিণতির আরম্ভ-যুগে ছিল, তত দিন ভিতর দিক থেকে তার আশঙ্কার বিষয় অল্লই ছিল। এখন সে প্রভৃত শক্তি ও খ্যাতি সঞ্চর করেছে, শ্রন্থার সঙ্গে তাকে স্বীকার করে নিয়েছে সমস্ত পৃথিবী। সে কালের কন্গ্রেস যে वाक्षम्ववादव क्रक चाद्र वृथा याषा (बाँफार्थ्र फ क्रव यव्र वाक मरे मत्रवादत्र ভात्र गन्नान व्यवादिष्ठ, अयन कि त्यहे मद्रवाद्र कन्त्थात्यत्र गत्क चारिंश क्रवा कूर्श (वाश करत्र ना। किन्क यञ्च वर्ष्टाहन, गर्यानरक विरयत यटा कानत्व। পृषिवीटा य मिट्न रय-कात्ना विভाগেই क्रमणा অতিপ্রভূত হয়ে गঞ্চিত হয়ে ওঠে সেখানেই সে ভিতরে ভিতরে निष्कत्र यात्रगविष উष्ठाविक करत्र। हेन्शितिश्राणिक्य् वरला, कानिक्य् विला, व्यस्टित व्यस्टित निष्यत विनाम निष्यरे रुष्टि करत हरलए । কন্ত্রেসেরও অন্তঃসঞ্চিত ক্মতার তাপ হয়তো তার অস্বাস্থ্যের কারণ रम উঠেছে व'ला गत्मार कति। यात्रा এत किन्न शता এरे मिछिएक विभिष्ठे ভাবে অধিকার করে আছেন, সংকটের সময় তাঁদের ধৈর্যচ্যতি হয়েছে, विठात्रवृद्धि माञ्चा भर्ष हरण नि। भत्रम्भरत्रत्र श्रिष्ठि य श्रद्धा । भाष्य ,

তার ব্যভিচার ঘটতে দেখা গেছে; এই ব্যবহারবিক্বভির মূলে আছে मिकिन्मिक्तांत्र क्षाडार । थुम्होन मास्त्र यस्त, प्रोडकांत्रा मन्मस्त्र भरक वर्गत्राच्छात्र প্রবেশপথ সংকীর্ণ। কেননা ধনাভিযানী ক্ষমভা আনে ভাষদিকতা। कन्द्यम আজ বিপুল मन्नारनंत्र धरन धनी, এতে ভার স্বর্গরাজ্যের পথ করছে বন্ধুর। মুক্তির সাধনা তপস্থার সাধনা। সেই তপস্তা সান্ত্ৰিক, এই জানি মহাত্মার উপদেশ। কিন্তু এই তপংক্ষেত্ৰে यांत्रा त्रक्ककत्राप এक अ इस्त्र एक जाएन यन कि छेनात्र छार नित्रामक १ তাঁরা পরস্পরকে আঘাত করে যে বিচ্ছেদ ঘটান সে কি বিশুদ্ধ मতात्रहे बखा १ जात्र गर्था कि महे छेखान এक वादि है नहे य छेखान শক্তিগর্ব ও শক্তিলোভ থেকে উদ্ভুত ? ভিতরে ভিতরে কন্গ্রেসের মন্দিরে এই-যে শক্তিপুজার বেদি গ'ড়ে উঠছে তার কি স্পধিত প্রমাণ এবারে পাই नि यथन মহাত্মাজিকে তার ভজেরা মুসোলীনি ও हिंचेनारत्रत नमकक व'ला विश्वनमस्क जनमानिङ क्रांड भात्रलन? সত্যের যজে যে কন্গ্রেসকে গড়ে তুলেছেন তপন্বী, তার বিশুভ্তা কি छात्रा त्रका क्रत्रा भावत्वन मिछिशुकाम नव्यक्ति-गः श्राष्ट्र काभानिक यूरमानीनि ও हिট्नाর यामের আদর্শ ? আমি সর্বান্তঃকরণে শ্রহা করি সীমায় শক্তির ঔষত্য প্রীভূত করে তোলে সেখানে তার বিরুদ্ধে তার चियान। चामि डांटक लाम कति, कन्द्यारात पूर्वचारत्रत बात्रीपत यत्न काषा कि এই वाङ्गिश्च मङ्गियम् व गाः चाङ्क मञ्चन मिथा पिएं चांद्रेख कर्द्र नि ? এ**छ पिन शर्द्र चढ्र**ेख चांयांद्र यत्न गर्मह व्यर्वि करव्रष्ट्। किन चामि भागिष्ठिभिन्नान नहे, এই व्यन्त मध কবুল করব।

এই উপলক্ষ্যে একটা কথা বলা দরকার। গত কন্প্রেস-অধিবেশনের ব্যবহারে বাঙালি জাতির প্রতি অবজ্ঞা প্রকাশ করা হয়েছে, এই

কন্গ্ৰেস

चिंदियांग वांशा (मर्टम वाार्थ। এই नामिमहोरक वियान क'रब निख्यात्र गर्था पूर्वमणा चारह। ठात्र मिरक नकरमहे विक्रम ठका कर्राष्ट्र, गर्वना यत्नेत्र याथा এहे त्रक्य मः नत्र व्यात्नाष्ट्रिक हरक पि इत्रा यत्निविकारत्रत्र नक्न। वृक्षागुक्तस्य प्रत्न मिननस्वक्रत्न कन्रविरात्र প্রতিষ্ঠা হওয়া সত্ত্বেও ভারতবর্ষে এক প্রদেশের সঙ্গে আর-এক প্রদেশের विष्ठित्तत्र गाःघाणिक मक्त्र नाना चाकारत्रहे (परक (परक প्रकान পাছে। ভারতবর্ষে হিন্দু ও মুসলমানের অনৈক্য শোচনীয় এবং खग्नावर (न कथा वना वास्ना। य विष्ट्रापत्र वास्न चन्नः धर्ममञ छात्र या इर्लक्या चात्र-किहू श्रूष्ठ भारत ना। किह्न এक श्राप्त नाम আর-এক প্রদেশের যে আত্মীয়বুদ্ধির ক্ষাপতা তার কারণ পরস্পরের गर्भा পরিচয়ের অভাব ও আচারের পার্থকা। এই হুর্ভাগা ভারতবর্ষে चाठात्र ७ ४र्थ এक गिःहागत्नत्र भत्रिक हत्य मासूरवत्र तृष्टिक चाविन करत्र (त्ररथष्ट्। य मिष्पत्र चाठात्र चक्क चिन-अग्रामा नत्र, य मिष्पत्र धर्मएजन मामाजिक जीवनरक थल थल करत्र नि, रमहे स्मर्भ दाद्विक लेका चित्र विकास का विकास का विकास किल्ली का का का विकास का वि সামাজিক ঐক্যের ভিভর থেকে আপনি সজীব ভাবে বেড়ে ওঠে নি। তাকে शामन करा हरत्रहा उपन अकता मायाकिक चरिनकात छेमरत, যে অনৈক্য প্রত্যেক পাঁচ-দশ ক্রোশ অস্তর অভলম্পর্ণ গর্ভ খুঁড়ে রেখেছে এবং সেই গর্ভজোকে দিনরাত আগলে রয়েছে ধর্মনামধারী রক্ষক मन।

কাবণ যাই হোক, প্রদেশে প্রদেশে জোড় মেলে নি। মনে পড়ছে আমার কোন-এক লেখার ছিল, যে জীর্ণ গাড়ির চাকাগুলো বিলিষ্ট, মড়্মড় চল্চল্ করে যার কোচবাক্স, জোরালটা খনে পড়বার মুখে, তাকে যত কণ দড়ি দিয়ে বেখেনেধে আজাবলে রাখা হয় তত কণ তার অংশ-প্রতাংশের মধ্যে ঐক্য করনা করে সজোব প্রকাশ করতে পারি,

কিন্ত যেই ঘোড়া জুতে তাকে রাস্তায় বের করা হয় অমনি তার আত্ম-বিজ্ঞাহ মুখর হয়ে ওঠে।

ভারতবর্ষের মৃক্তিষাত্রাপথের রথখানাকে আব্দ কন্প্রেস টেনে রান্তার বের করেছে। পলিটিক্সের দড়ি-বাঁধা অবস্থার চলতে যথন শুরু করলে ভখন বারে বারে দেখা গেল ভার এক অংশের সঙ্গে আর-এক অংশের আত্মীয়ভার মিল নেই। অবস্থাটা যখন এমন ভখন কংগ্রেস-কর্তৃপক্ষদের অভ্যন্ত সভর্ক হয়ে চলা কর্তব্য। কেননা, সন্দিগ্ধ মন সকল প্রকার আঘাত ও অবৈধভাকে অভিমাত্র করে ভোলে। ভাই ঘটেছে আব্দ। সমস্ত বাংলা দেশের সঙ্গে কন্প্রেসের বন্ধনে টান পড়েছে ছেঁড্বার মুখে। এর অভ্যাবশ্রকতা ছিল না। সমগ্র একটা বড়ো প্রদেশের এ রক্ষ মনশ্রাঞ্চল্যের অবস্থায় বাংলা দেশের নেভাদের ঠিক পথে চলা ছংসাধ্য হবে।

বুঝতে পারছি খনেশকে খাতন্ত্রাদানের উদ্দেশ্যে মহাত্মাজ্বর মনে একটা বিশেষ সংকল্ল বাধা রমেছে। মনে মনে তার পথের একটা ম্যাপ তিনি একে রেথেছেন। অতএব পাছে কোনো বিপরীত মতবাদের অভিঘাতে তাঁর সংকলকে কুল্ল করে, এ আশব্বা তাঁর মনে থাকা খাতাবিক। তিনিই দেশকে এত দিন এত দ্র পর্যন্ত নানা প্রমাদের মধ্য দিয়েও চালনা করে এনেছেন; সেই চালনার ব্যবহাকে শিথিল হতে দিতে যদি তিনি শহিত হন তা হলে বলব না যে সেই শব্বা একাহিপত্যপ্রিয়তার লোভে। প্রতিভাসম্পন্ন পুরুষমাত্রেরই নিজের ক্ষমতার প্রতি বিখাস দৃঢ় না থাকলে তাঁদের জীবনের উদ্দেশ্য বিফল হয়। এই বিখাসকে তাঁরা ভগবানের প্রতি বিখাসের সকে বেঁধে দিয়ে গ্রুব ক'রে রাথেন। মহাত্মাজ্বির সেই বিখাস যে সার্থক, নোটের উপর তার প্রমাণ পেয়েছেন গুরুতর ভূকচুক সত্ত্বেও। এবং তাঁর মনে যে পরিকল্পনা আছে সেটাকে যথাসম্ভব সম্পূর্ণ করতে তিনি

কন্গ্ৰেস

ছাড়া আর-কেউ পারবে না, সেও ডিনি বিশাস করেন। সকল व्यक्षारमणात्र राक्षित्रहे अहे द्रक्य विश्वारम व्यक्षिकात्र व्याष्ट्र। वित्वरू यथन जांत्र कुछ चनमाश्च एष्टि गएए एठवांत्र मूर्थ। इत्राणा महाचाचित्र रुष्यनभागात्र चात्र ध्रानक मूनावान न्छन छे भक्त्र या क्रवात्र व्यक्तायन चाष्ट्र। এই योग कर्ना यमि थिएर्वन गर्क व्यक्तात्र गर्क कांन्र गहरयाशिकात्र ना षटि का हरन नगरश्रवहे हरव कि। এ व्यवसात्र गून স্ষ্টিকর্তার উপর নির্ভর রাখতেই হবে। আমি নিজের সমক্ষে এ কৰা শীকার করব যে, মহাত্মাজির সঙ্গে সকল বিষয়ে আমার মতের ঐক্য त्नरे। **वर्षा**९, व्यामि यनि छात्र मर्छा ठात्रिख्या छात्रमात्रम मासूय रूर्छम তা হলৈ অন্ত রকম প্রণালীতে কাজ করতুম। की লে প্রণালী, আমার অনেক পুরাতন লেখায় তার বিবরণ দিয়েছি। আমার মননশক্তি যদি वा शांक किंद्र यागांत्र क्षणांव महे। এই क्षणांव याद्य याद्य वज्ञ लाक्त्रहे। पिट्नब मोडागाक्र्य पिवार यपि म ब्रक्य मेक्जिन्नव পুरूरिक वार्विर्जाव इत्र छटन छाटक छात्र भध ছেড়ে पिछिटे इटन, छात्र कर्यवादारक विकिश कद्राष्ठ भावव ना। गगत्र चागत्व यथन क्राय चांचान-क्रिवित स्थान हर्व अवर मिहे च्यावर्यान्त चायवा गकरनहे चालन वानन हेक्हारक वानन रवागाण वक्नुगारत खतुख क्रवरण नात्रव। मायत्नद्र रव चाहे नका करद्र चाक कर्गशद्र तोरका हानिरम्रह्न रम पिरक डाँक् एएड प्रथम (हाक। प्रमृष्टिहीन एक प्रम् मुख्य में का ना, छात्र मत्रकांत्र इटन।

আমার মনে যে পরিকল্পনার উদয় হয়েছিল তার কথা পূর্বেই বলেছি। আমি জানি রাষ্ট্রব্যাপার সমাজের অন্তর্গত; কোনো দেশেরই ইতিহাসে তার অন্তথা হয় নি; সামাজিক ভিজির কথাটা বাদ দিয়ে রাষ্ট্রক ইমারতের কল্পনায় মুগ্ধ হয়ে কোনো লাভ নেই। সমুজের

58

ও পারে দেখা যাছে নানা আকারের, নানা আয়তনের, অরতোরণের চূড়া, কিন্তু তাদের কোনোটারই ভিত গাড়া হয় নি বালির উপরে। বখন লুক মনে তাদের উপরতলার অমুকরণে প্লান আঁকব তখন দেশের সামাজিক চিত্তের মধ্যে নিহিত ভিত্তির রহস্তটা যেন বিচার করি।

কিছু দিন হল একটি বিরল-বসতি পাহাড়ে এসে আশ্রয় নিয়েছি।
আছি সভ-উন্মধিত রাইক উত্তেজনা থেকে দ্রে। অনেক দিনু পরে
ভারতবর্ষকে এবং আপনাকে শাস্তমনে দেখবার অবকাশ পাওয়া গেল।
দেখছি চিস্তা করে, মানবজগতে তৃই প্রবল শক্তি নিয়ে পলিটিক্সের
ব্যবহার। একটার প্রয়োগ বাহিরের দিকে, সেটা যয়শক্তি; আরএকটার কাজ মান্তবের মন নিয়ে, সেটাকে বলতে পারি ময়শক্তি।
আজ য়ুরোপের সংকটের দিনে এই তৃই শক্তির হিসাব গণনা ক'রে
প্রতিহৃদ্ধীরা কখনো এগিয়ে কখনো পিছিয়ে পদচারণা করছে।

বাহির থেকে একটা কথা আমরা স্পষ্ট দেখতে পাচ্ছি, এই শক্তির কোনোটাই সহজ্ঞসাধ্য নয়, অনেক তার দাম, স্থার্মণ তার প্রয়োগশিক্ষাচর্চা। বহু কাল ধরে আমরা পরের অধীনে আছি, বয়শক্তির আঘাত কী রকম তা জানি কিন্তু তার আয়ত্তের উপায় আমাদের স্বপ্লের আগোচর। অত্যাবশুক বোধ করলে বাহিরের কোনো পালোয়ান আতির সঙ্গে দেনা করবার কারবার কোঁদে বল্লুন্থ পাতানো যেতে পারে। সেটা দেউলে হবার রাস্তা। সে রকম মহাজ্ঞনরা আজ্ঞপ্ত এই গরিব জাতের আনাচে কানাচে খুরে বেড়ায়। ইতিহাসে দেখা গেছে, প্রবলের সঙ্গে অসমকক্ষের মিতালি খাল কেটে কুমির ডেকে আনা। তাতে কুমিরের পেট ভরে অবিবেচক খাল-কাটিয়ের খরচায়। তা ছাড়া অমঙ্গল-প্রতিরোধের যোগ্য জনমনঃশক্তি বছু কালের অব্যবহারে গিয়েছে মরচে পড়ে। ভরসা হারিয়েছি। কোনো-একটা নেশার কোঁকে মরিয়া হরে বদি ভরসা বাবি বুকে, তবে সে গিয়ে দাড়াবে

কন্গ্ৰেস

ভিতৃমীরের বাঁশের কেলায়। এক দিন ছিল বখন সাহস ও বাহবলের यार्ग ठमछ म्ए। এখন এসেছে সায়ान, निक्छ दुष्टित 'পরে ভর ক'রে। শুধু বৃদ্ধি নয়, তার প্রধান সহার প্রভূত অর্থবল। অপচ चार्यात्रत्र मफ्ट हत्व मृञ्ज एहिन এवः अस्न अनमःच निर्त्र यात्रित्र यन कर्यविधारन मृह नय, यात्रा धनामिष्ठ— यारम त्र निक र्य घरहरून रुरा बारक नम्र चक्क रुरा हारि। मिल्य भनिष्यित चारछ रुरा हिन এই ছুরুছ সমস্তা নিয়ে। সেইজন্তে প্রথম যুগের নেভারা অগত্যা नोका वानिष्मिहिलन मत्रशास्त्रत्र भार्ष्ट्राक्षे निष्म। लोगे माफ्षिमहिल रथमात्र। এই दिक्छाद मयला निरम्रहे এक पिन महाचा এमে माँ पालन विপून मिकियान अधिषकी व गायति ; इःथ गर्य ছिलन, यादा दिंहे कर्यन नि। विना यञ्जनिक्टि लिए। रे एक हिन लिए भारत करे हैं ध्रिमान क्र एक তাঁর আসা। একটা একটা উপলক্য নিয়ে তিনি লড়াই শুকু করে मिरमन; कारनाहारक य स्थि भर्ग बिरक्ट हन का वनरक भावि तन, किन्न পরাভবের মধ্যে দিয়ে চেতবার ভূমিকা স্ষ্ট করছেন। ক্রমে क्राय रमहे यन रेखित्र कद्राह्म राय यन छात्र मश्कित्र व्यक्त यशासामा गःयम ७ गाइरमत मर्क वावहात कतरा भारत। अहे चल्ल हाफ़ा क्वन रि चामामिक्र छिलायास्त्र तिरु छ। नय, ममस পृषिवीद्र धरे मना। हिः ख युष नित्र छ । रग अक्रे क्टिस्त्र ठाति मिर्क भ्वः गराश्रनित्र पूर्वभाक थाख्याम, जात्र गयाशि गर्यनात्न ।

হিংশ্র যুদ্ধের ফৌজ তৈরি করা সহজ, বছরখানেকের কুচকাওরাজে তাদের চালিয়ে দেওয়া যায় রণক্ষেত্র। কিন্তু অহিংশ্র যুদ্ধে মনকে পাকা করে তুলতে সময় লাগে। অশিকিত লোক নিয়ে ভিড় জ্মানো অনেক দেখা গেল; তাদের নিয়ে দক্ষ্য ভাঙা চলে, এমন সিদ্ধিলাভ চলে না যা মূল্যবান। এমন কি পাশব শক্তির হীতিমতো যাজা খেলে তারা আপনাকে সামলাতে পারে না, ছিন্নবিচ্ছিন্ন হরে বার।

পৃথিবীতে আৰু যে-সৰ জাতি যে-কোনো রক্ম লড়াই চালাচ্ছে তাদের সকলেরই জোর সর্বজনীন জনশিকায়। বর্তমান যুগ শিকিত বৃদ্ধির যুগ, স্পর্ধিত মাংসপেশীর যুগ নয়। জাপানের তো কথাই নেই — বড়ো বড়ো অন্ত সকল প্রাচ্য জাতিই সর্বত্র জনশিক্ষাসত্র খুলেছেন। আজকের দিনে আমরা দেশের বছ কোটি চোথ-বাঁধা মোহের বাহন নিয়ে এগোতে পারব না। মহাত্মাজি অসহযোগ আন্দোলন স্থগিত রেখে জনশিক্ষায় মন দিয়েছেন। বোধ করি প্রমাণ পেয়েছেন, ভিড় জমিয়ে অসহযোগ দেখতে দেখতে অসহ্ হয়ে ওঠে।

चाक्र रकत पितन कान् कननाग्रक পनिर्धिक्म्र कि कान् भर्ष निरम यार्यन छ। निरम्न धानक धार्माहना हमहा। यत नाना मः भम्न खारम, স্পষ্ট বুঝতে পারি নে এ-সকল পথযাত্রার পরিণাম। কিন্তু নিশ্চিত विठात कता व्यामात्र भक्क कठिन; व्यामि भनिष्ठिकरम প্রবীণ নই। এ कथा कानि, यात्रा मिकिमानी छात्रा नजून পথে অসাধ্য সাধন করে थारकन। यहाचा किहे जात्र व्ययाग। जतू, जांत्र जीक्रज नकन चथावना यह চরমতা লাভ করবে এমন কথা শ্রদ্ধেয় নয়। অন্ত কোনো কর্মবীরের यत्न नजून जाथनात्र প्रात्रणा यिन कार्ण जा रूल माहारे পाएला ज वीद हां छिटिय व'रम बाकरवन ना। रम्बन्न हम्राटा चंडा वि युषञ्चे हर्य व्यनजास भर्ष जारक मन वैधिए हर्व, रा मरनद गण्मूर्व পরিচয় পেতে ও তাকে আয়ত্ত করতে সময় লাগবে। কন্গ্রেসের चित्र्रिथ यपि कार्ता क्वा न्डन १४ थूनएड वर्त्रान, चामि चनिडळ, छात्र गिष्कि कायना कत्रव, मध्यव छात्र कायनात चिष्ठगुष्ठि— किन्दु मृद्रित থেকে। কেননা দেশের জননায়কতার দায়িত্ব অত্যন্ত বুহৎ; ভার ভালোমক ফলাফল বহদুরব্যাপী, অনেক সময়েই তা অভাবনীয়। নিজের छेপরে दाँর श्रित्र विचाग चाह्य তিনিই তা বহন করতে পারেন, किছ এ नकन (পानिरिकान श्रेषान बाबाद भएक श्रान्तिक व'तन बाबि

কন্গ্ৰেস

অহুঙৰ করি নে। পরধর্মো ভরাবহঃ। আমার নিজের এত দিনের অত্যন্ত পথেই আমি সান্ধনা পাই। গণদেবতার পূকা সকল পূজার আরত্তে, আমাদের শাল্পে এই কথা বলে। সদেশসেবার সেই প্রথম পূজার পদ্ধতি হছে এমন-সকল অমুষ্ঠানে প্রের্ড হওরা বাতে জনগণ স্পত্ত হয়, সবল হয়, শিক্ষিত হয়, আনন্দিত হয়, আত্মসন্মানে দীক্ষিত হয়, স্থানন্দিত হয়, আত্মসন্মানে দীক্ষিত হয়, স্থানন্দিত করি নির্মানকে নার্বাহন ক'রে আনে আপন প্রাত্যহিক জীবিকার ক্ষেত্রে, এবং যাতে আত্মরক্ষায় আত্মকল্যাগদাধনে পরস্পরের প্রতি প্রদারক্ষা ক'রে সকলে সন্মিলিত হতে পারে। আমার সামান্ত শক্তিতে ক্রের্ড পরিধির মধ্যে এই কাজে মন দিয়েছি প্রায় চল্লিশ বৎসর ধ'রে। মহাত্মাজি বখন স্থানেকে জাগাবার ভার নিয়েছিলেন তখন একান্তমনে কামনা করেছিল্ম, তিনি জনগণের বিচিত্র শক্তিকে বিচিত্র পথে উদ্বোধিত করবেন— কেননা আমি জানি, দেশকে পাওয়া বলতে বোঝায় ভাকে ভার পরিপূর্ণভার মধ্যে পাওয়া। দেশের যথার্থ আধীনভা হচ্ছে ভাই যাতে ভার সমস্ত অবরুদ্ধ শক্তি মুক্তিলাভ করে।

আজ আমি জানি, বাংলা দেশের জননারকের প্রধান পদ স্থতাবচল্লের। সমস্ত ভারতবর্ষে তিনি যে আসন গ্রহণের সাধনা ক'রে আসছেন
সে পলিটিক্সের আসরে, আমি পূর্বেই বলেছি সেখানে আমি আনাড়ি।
সেধানে দলাদলির ঝড়ে ধূলি উড়েছে, সেই ধূলিচক্রের মধ্যে আমি
ভবিশ্বৎকে স্পষ্ট দেখতে পাই নে—আমার দেখার শক্তি নেই। আজকেকার এই গোলমালের মধ্যে আমার মন আঁকড়ে ধ'রে আছে বাংলাকে।
যে বাংলাকে আমরা বড়ো করব সেই বাংলাকেই বড়ো ক'রে লাভ
করবে সমস্ত ভারতবর্ষ। তার অস্তরের ও বাহিরের সমস্ত দীনভা
দ্র করবার সাধনা গ্রহণ করবেন এই আশা করে আমি স্বদূচসংকর
স্থাবকে অভ্যর্থনা করি এবং এই অধ্যবসারে তিনি সহারতা প্রত্যাশা
করতে পারবেন আমার কাছ থেকে, আমার যে বিশেষ শক্তি ভাই

The state of the s

দিয়ে। বাংলা দেশের সার্থকতা বহন করে বাঙালি প্রবেশ করতে পার্থে সম্মানে ভারতবর্ষের মহাজাতীয় রাষ্ট্রসভার। সেই সার্থকতা সম্পূর্ণ হোক মভাবচজ্রের তপস্তার।

सरश् २०१९। ७२

चलागिकिक इरम्छ भूनन्छ वखरवा এको कथा बानिय द्राधि। हिन्दू यूजनयात्नव ठाकदिव हाव-वाटिशवादा नित्य चिविठाव हत्वत्ह। এहे निया हिन्दा ভात्रज्यामन-मत्रवादा नामिय वानियाहन। रमहे भरक नामचाकत कत्रा धामात यरषष्ठे विशा छिन। मीर्घ कान ठाकतित धाल वाङानित्र नाफी इर्वन रुख रगष्ट, छ। नित्र चात्र काफ़ाकाफ़ि क्रवे क्रि हम ना। हिन्दू जारगा भन्नाधीन की विकास व्यम्यारने बादखरमा यनि वक रुम्न তো হোক— তা হলেই বৃদ্ধি খাটাতে হবে, শক্তি খাটাতে হবে चाण्यनिर्छ दत्र वर्षा त्राष्टा शूर्ष वत्र कदरक ; এই इःश्वत धाकारक है चानत्व यूगास्त्र। किन्न चनिष्ठामत्त्व नामित्नत्र भत्त चामि महे नियुष्टि। তার একটি মাত্র কারণ আছে। স্বন্ধাতির দুই শ্রেণীর মধ্যে পক্ষপাতের অন্তায় বিচার দেখলে শাসনকর্তাদের প্রতি অশ্রদ্ধা জন্মে, छात्र फलाफल छाँत्राहे विठात कत्रदन। किन्न पृहे भएकत्र मर्था घृहे चग्यान वावेथात्रात्र चन्नविভाग्य त्नावनीत्र পत्रिगाय इटक्ट गाच्छामात्रिक ভেদবৃদ্ধিকে নানা দুষ্টান্তে কথায় কথায় তীব্ৰ করে ভোলা। তাকে শান্ত क्त्रवात्र व्यवकाम बाक्टव ना। पृषिवीटक हिंहेमात्र-मूर्गामीनित्र मम অগ্রায় করবার অগ্রতিহত স্থযোগ পেয়েছেন নিজের প্রবল শক্তির থেকে। তারও একটা ভীষণ মহিমা আছে। কিন্তু আমাদের দেশে নীচের তলার শাসনকর্তারা অ্যোগ পেয়েছেন উপরতলার প্রশ্রম থেকে — এই অবিমিশ্র অন্তায়ে পৌরুষ নেই। তাই যারা অবিচার সহ



করতে বাব্য হয় তাবের মনে সম্ভব আগে না, অপ্রদ্ধা আগে। বেশশাসনের ইতিহাসে এই শৃতিটা হের। কিন্তু আনাদের সম্ভা এই
শাসনকর্তাবের নিয়ে নর। কেননা শাসনকর্তাদের হাতবদল হবেই;
কিন্তু হিন্দু-মুসলমান চিরকাল পাশাপাশি থাকবেই, তারা তারতভাগ্যের
শরিক — অবিবেচক দশুধারী তাদের সহদ্বের মধ্যে যদি গতীর ক'রে
কাটা বিবিন্নে দের তবে তার রক্তপ্রাবী ক্ষত শীম্র নিরামর হবে না।
তাই আজ যে ব্যবহার মুসলমানের জমার ঘরে তৃক্ত করছে প্রবিধা,
দীর্ঘ কালের হিসাবে সেটা রয়ে যাবে নিরত ক্ষতির ছিত্ররূপে। তা
ব'লে এই চিন্তার হিন্দুদের সান্ধনার কথা নেই, কেননা আমাদের
ইতিহাসের তহবিল সাধারণ তহবিল।

वावाह ३७८७

ञादाभा

আমি আশ্রমে উপস্থিত আছি অথচ ৭ই পৌষের উৎসবের আসন গ্রহণ করতে পারি নি, এ রকম ঘটনা আজ এই প্রথম ঘটল। আমার বার্ধক্য এবং আমার রোগের তুর্বলতা আমাকে সমস্ত বহির্বিষয় থেকে দূরে সরিয়ে দিছে। আজ আমার সেই দূরত্ব থেকে তোমাদের যদি কিছু বলি তো সংক্ষেপে বলব। কেননা বাহিরের কোনো কাজে অধিক কণ মনোযোগ দিতে আমার নিষেধ আছে, কেবল যে ডাক্তারের তা নর, আমার রোগজীর্ণতারও।

যৌবনের তেজ যখন প্রথর ছিল, ভাবতুম, বার্ধক্যটা একটা चारायुक मना, चर्थार क्या क्या ममन निक द्वाम रुख मनी युक्रात्र रहना करता किन्न चाक चामि এत ভাবাত্মक দिक क्रमन উপলব্ধি করতে পারছি। সন্তার যে বহিরল, যাকে আমরা অহং নাম पिटि পात्रि, তার থেকে <u>अहा क्रियम मिथिन इ</u>स्त्र चाग्रह। ठिक यत्न रुष्ठ, रयमन পরিণত ফল তার বাহিরের খোসাতে আর আসক্ত হরে थारक ना, रमहे रथामाहै। क्रमम छात्र भरक नित्रर्थक हरत्र ५८छ। छथन তার প্রধান সম্পদ হয় ভিতরের শস্ত। কাঁচা অবস্থায় সেই শস্তের পরিণত রূপ সে অমুভব করতে পারে না, এইজ্বন্তে তাকে বিশ্বাস করে ना। তথন সে আপনার বাহিরের পরিচয়েই বাহিরে পরিচিত হতে (bष्टे) करत्र, रमथारन कारना चांचां**छ পে**रम रम रकारखंद्र विवन्न व'लि मत्न करत्र। तृष वत्रत्म ভात विभन्नीक मना घरि। त्म व्यक्तत्रव পূर্ণতার মধ্যে আপনাকে যত উপলব্ধি করতে পারে ততই একটা পরম वाशांग नाल करत्र এवर एल्डे वाहिरत्र कि विषया विगयान लास्क चात्र क्रूक क्रवाल भारत ना। अ क्षा (क्षे रयन ना यतन करत्र, अहै।

वादांगा

একষাত্র বৃদ্ধ বরসেরই অধিকারগত। বস্তুত অল্ল বরসে আমরা সংসারের বহিরঙ্গকেই সম্পূর্ণ মূল্য দিই ব'লেই সংসারে এত অশান্তি ঘটে এবং মিধ্যার হৃষ্টি হতে থাকে। কেননা এই বাহিরের দিকেই আমরা পরস্পরের সহিত বিচ্ছিন্ন এবং একমাত্র আপনার মধ্যেই আবদ্ধ।

वाब वामि রোগের দশা चिक्किम क्रमि व'लाहे वार्यागा कारक वर्ण मिडा विस्मवভारि चञ्चलव कत्रि—किश्व यथार्थ चारत्रागा म जीवरनत्र गकन चित्रांत्रहे गलाम । त्रहे चात्तात्भा चायत्रा गयस विश्वह्वत्वत्र गत्न गर्म्भार्वे यागञ्चापन क्रव्राक भावि। क्रगांक व्यागाम्बर व्यक्ति चाननाम इरम ७८५। ७४न चामाराम राम्द्र चसूक्न चन्छा। এই-य चारत्रागाञ्च बहा (मर्द्य चस्त्रविज्ञारात्र गम्भान, चमारका मकम (मर्ह वााख हरत्र काक करत। चन्नुष हर्लाहे राहे चन्नुह नामश्रम एक एक हर्त्त গিয়ে অঙ্গপ্রত্যঙ্গকে পীড়িত করতে বাকে। তখন তার বিরোধের व्यवश्रा। त्रहे द्रकम व्यामात्मित्र मखाद्र त्य व्यवद्रविভात्म व्याशाश्चिक मछा পরিব্যাপ্ত হয়ে থাকে তার প্রভাব যথন অঙ্গুণ্ণ হয়, তথন সর্বত্র তার শান্তি এবং সকলের সঙ্গে ভার সামঞ্জ । এই আন্তরিক সম্পূর্ণভাকে উপলব্ধি করবার সাধনায় কোনো বয়সের ভেদ নেই। ভরুণ অবস্থায় নানা প্রকার আসন্তির আবিলভার এই উপলব্ধির ব্যাঘাত ঘটে, কিছু ধারা ভাকে चिक्किम क'र्त्र चार्यनात्र चार्यारक উপमिक्ति क्रांट भारदन छोत्रा गर्रख শান্তিলাভ করেন। কারণ তারা মানবভার সভ্যকে অমুভব করভে পারেন, এবং তাঁদের ভয় ধাকে না, তাঁরা মৃত্যুকে অভিক্রম করেন।

মানব-ইতিহাসে কোনো কোনো জাতির মধ্যে এই সত্যের উপলব্ধির ইতরবিশেব দেখা যায়। রুরোপীর সভাতা প্রথম থেকেই বাহিরে আপনার সার্থকতা অয়েবন করেছে এবং লোভকে কর্ণধার ক'রে দেশে দেশে, বিশেষভাবে এসিয়ায় ও আফ্রিকায়, দন্তাবৃত্তি ছারা ধনসক্ষয়

করেছে। বে বিজ্ঞান যথার্থ আত্মসাধনার সহায় তাকে বিশুদ্ধ জ্ঞানের পথ থেকে লাই ক'রে জগতে মহামারী বিস্তার করেছে। এই ছুর্গতির অন্ত কোথায় জানি নে। অপর পক্ষে কোনো কোনো জাতি অপেকারুত সহজ্ঞে তাদের অভাবকে অন্তসরণ ক'রে বাহিরের চিত্তবিক্ষেপ থেকে শান্তিলাভ করে এসেছে। তারা বিবাদ ক'রে, লড়াই ক'রে মান্তবের গোরব সপ্রমাণ করতে চার নি। বরঞ্চ লড়াই করাকে তারা বর্বরতা ব'লে জ্ঞান করেছে। চীন তার প্রধান দৃষ্টান্ত। বহু শতান্ধী ধ'রে আপনার সাহিত্য, অভুলনীর শিল্প ও অতিগভীর তল্পজ্ঞানের মধ্যে মনকে সম্পদশালী করে রাখতে পেরেছে। মান্তবের চরম সত্য যে তার অন্তরে সঞ্চিত, এই কথাটা যতই তারা জীবনের ব্যবহারে সপ্রমাণ করেছে ততই তারা মহতী প্রতিষ্ঠা পেয়ে এসেছে। আজ লোভের সঙ্গে, বিজ্ঞানবাহন রিপ্র সঙ্গে, তার শোচনীয় বিরোধ ঘটল।

আমাদের বিশ্বাস, এক দিন যথন এই বিরোধের অবসান হবে তথন
চীন তার সেই চিরক্তন প্রাচীন শান্তিকে প্নরায় পৃথিবীতে স্থাপন করতে
পারবে। কিন্তু যারা লোভকে কেন্দ্র করেছে ভারা জয়লাভ করলেও
আত্মপরাভবের বিপত্তি থেকে কোনো দিন রক্ষা পাবে কি না সন্দেহ
করি। এই লোভের শেব পরিণাম মহতী বিনষ্টি। পরস্পরের প্রতি
অবিশ্বাস, পরস্পরের অর্ক্তিত সম্পদের প্রতি লুক্ক হত্তক্ষেণ— এই অভ্যাস
অনার্য অভ্যাস এবং এই অভ্যাস মাদকভার মতো শরীরমনকে অভিতৃত্ত
করে রাথে। তার থেকে নিজেকে উদ্ধার করা পরম আ্বাত্তিও
অসাধ্য। ইতিহাসের এই নির্চুর শিক্ষা দেশকে এবং ব্যক্তিগভভাবে
আমাদের প্রত্যেককেই মনের ভিতর ধ্যান করতে হবে। কারণ, পাশ্চাত্য
সংক্রামকতা আমাদের জাতির মধ্যে প্রবেশ ক'রে ভারতবর্ষের প্রাতন
আধ্যাত্মিক বীর্যকে প্রতিদিন পরান্ত করছে। থবিবাক্যে বে পরম মন্ত্র
এক দিন আমরা পেয়েছিলেম সে হচ্চে শান্তং শিবং অবৈত্যন্— এক

আরোগ্য

শত্যের মধ্যে গত্যের এই তিন রূপ বিশ্বত। শান্তি এবং কল্যাপ এবং সর্বমানবের মধ্যে ঐক্য— এই বাণীর তাৎপর্য মান্ত্রবকে তার সত্য পরিচয়ে উত্তীর্ণ করতে পারে, কারণ মানবের ধর্ম পরস্পর প্রীতির মিলন, ব্যবহারে কল্যাণ ও শান্তিকে অক্ষভাবে স্বীকার করা। আমি এই কামনা করি, আমাদের পিতামহের মর্মস্থান থেকে উচ্চারিত এই বাণী আমাদের প্রত্যেকের ধ্যানমন্ত্র হয়ে জগতে শান্তির দৌত্য করতে পাক্।

य गमान चाचात्र পরিবর্তে বহিবিষয়কে একান্ত প্রাধান্ত দেয়, সে व्यापन लाखित मक्षम मिस्र वज्यक व्याघाठ करत्र এवः मिहे लाखित সঞ্চয়ই তার ফিরে আঘাতের বিষয় হয়। এই আঘাত-প্রত্যাঘাতের कारना मिन काषां चन्छ पित्रा यात्र ना। भक्त विकृष्ट खन्नी इस्त्र म এই লোভের ছুর্গকে দৃচভর করতে থাকে, পরান্ত হলে দৃচভর প্রয়াসে তার অমুসরণ করতে থাকে। তথন পৃথিবীর যে-সকল জাতি বাছৰলে তার সমান নয় তাদের স্বাধীন কুতার্বতার পথ অবক্রম করে ফেলে। এই লোভরিপুপ্রধান সভ্যতা পৃথিবীর অধিকাংশ মানুষকে ছেম্ন করে রাখবার (প্रथय हर्म बार्क, कार्य लाङ প্রতিश्विष्ठा मञ् क्रांक भारत ना। এ রক্ম সভাতাকে সভাতা নাম দেওয়া যায় না কেননা সভাতা गर्वमानरवत्र गम्भा। चन्नकात्र महायूर्द्वत्र चिनात्रकरमत्र चन्नठ এक পক বলে থাকেন, তাঁরা সমস্ত মানবের জন্ত লড়াই করছেন। কি**ছ** निष्णामत्र गाखित वाहित्तत्र याञ्चयत्क याञ्चय व'लाहे गणा करत्र ना, छेष्ठछ लाङित्रिश्त এই नक्न। रक्नना, वाका यात्रित मूथा नका नम्र वाजीम्रजात्र वाधनीया ভाष्टित काष्ट्र मः कीर्ग। याष्ट्रवत महत्क चरेव वृद्धि चर्वा ९ चथल रेमजी लात्मत्र काष्ट्र अहा भाग्ना। यत्न द्रायल हत्व, अक मिन এই रेयजी প্রচার করবার অন্ত সেদিনকার বুদভক্ত ভারত প্রাণাস্ত चौकांत्र क'रत्र (मर्ट्म दिर्मिष्म चिक्यांन क्रिक्स, भन्नभारक

আত্যসাৎ করবার জন্ম ।

পাশ্চাত্য অলংকার-মতে মহাকাব্য যুদ্ধ্যুক । মহাভারতের আথান-ভাগেরও অধিকাংশ যুদ্ধবর্ণনার দারা অধিক্বত— কিন্ধ যুদ্ধেই তার পরিণাম নয়। নই ঐশ্বর্থকে রক্তসমুদ্ধ থেকে উদ্ধাব ক'রে পাশুবের হিংল্ল উদ্ধাস চরমরূপে এতে বর্ণিত হয় নি। এতে দেখা বায়, জিত সম্পদকে কুরুক্কেত্রের চিতাভক্ষের কাছে পরিত্যাগ ক'রে বিজয়ী পাশুব বিপুল বৈরাগ্যের পথে শান্তিলোকের অভিমুখে প্রয়ণ করলেন— একাবোর এই চরম নির্দেশ। এই নির্দেশ সকল কালে সকল মানবের প্রতি। যে ভোগ একান্ত স্থার্থগত ত্যাগের বারা তাকে কালন করতে হবে। যে ভোগে সর্থমানবের ভোজের আহ্বান আছে সভ্যতার স্বরূপ আছে তার মধ্যে। কিন্তু রিপু অতি প্রবল, সাধনা অতি হুরুহ। সেই কারণেই এই সাধনায় যত দ্র সিদ্ধি লাভ করা যায় মন্ত্র্যুত্বের গৌরব ভত দ্র প্রসারিত হতে থাকে, ব্যাপ্ত হতে থাকে ভারে সভ্যতা।

যুগ প্রতিকৃল, বর্বরতা বলিষ্ঠতার মর্যাদা গ্রহণ ক'রে আপন পতাকা আন্দোলন করে বেড়াচ্ছে রক্তপদ্বিল মৃত্যুর মধ্য দিয়ে। কিন্তু বিকার-গ্রস্ত রোগীর সাংঘাতিক আক্ষেপকে যেন আমরা শক্তির পরিচয় ব'লে ভূল না করি। লোভ যে সম্পদ আহরণ ক'রে আনে তাকে মান্তব অনেক দিন পর্যন্ত ঐশ্বর্য ব'লে জ্ঞান করে এসেছে, এবং অহংকৃত হয়েছে সঞ্চয়ের মরীচিকায়। লোভের ভাণ্ডারকে রক্ষা করবার অত্যে অগং, জুড়ে অন্ত্রসজ্জা, যুদ্ধের আন্ধোজন চলল। সেই ঐশ্বর্য আজা ভেডেচুরে তার ভগাবশেবের তলায় মনুবান্ধকে নিশিষ্ট করে দিছে।

আমার অধিক কিছু বলবার নেই, শক্তিও নেই। মানবসতোর শেষ বাণী আমাদের দেশে উচ্চারিত হয়েছে, আমি আজ কেবল তারই প্রত্যুচ্চারণ করে বিদার গ্রহণ করি

আরোগ্য

সেই প্রাতন কালে ইতিহাস যবে
সংবাদে ছিল না মুখরিত
নিশুর খ্যাতির যুগে—
আজিকার এইমতো প্রাণযাত্রাকল্লোলিত প্রাতে
যারা যাত্রা করেছেন
মরণশন্ধিল পথে
আত্মার অমৃত-অর করিবারে দান
দ্রবাসী অনাত্মীর জনে,
দলে দলে যাবা

দলে দলে বারা

মক্রবাল্তলে অন্থি গিয়েছেন রেখে,

সমুদ্র বাদের চিক্ল দিয়েছে মুছিয়া,

অনারত্ত্ব কর্মপথে

অক্তার্থ হন নাই তাঁরা—

মিশিয়া আছেন সেই দেহাতীত মহাপ্রাণ-মাঝে
শক্তি জোগাইছে বাহা অগোচরে চিরমানবেরে—
ভাহাদের কর্মণার স্পর্শ লভিভেছি

আজি এই প্রভাত-আলোকে,
ভাঁহাদের করি নমন্বার ॥

উদয়ন। শান্তিনিকেতন ১২ জিনেম্ব ১৯৪০। প্রাতে

माघ ३७८१

সভ্যতার সংকট

আত্র আমার বয়স আশি বৎসর পূর্ণ হল, আমার জীবনক্ষেত্রের বিন্তীর্ণতা আত্র আমার সন্থাবে প্রসারিত। পূর্বতম দিগন্তে যে জীবন আরম্ভ হয়েছিল তার দৃশ্য অপর প্রান্ত থেকে নিঃসক্ত দৃষ্টিতে দেখতে পাছি এবং অন্থভব করতে পারছি যে, আমার জীবনের এবং সমস্ভ দেশের মনোর্ভির পরিণতি বিথণ্ডিত হয়ে গেছে— সেই বিচ্ছিরতার মধ্যে গভীর হৃংথের কারণ আছে।

वृह्द यानवित्यंत्र गत्क चार्यापत्र প্রত্যক্ষ পরিচয় चात्रख हर्ष्यछ मिनकात्र हेश्द्रक कालित्र हेलिहारम। वायामित्र व्यक्तिकात्र गर्था উদ্ঘাটিত হল একটি মহ্থ সাহিত্যের উচ্চশিপর থেকে ভারতের এই चागह्यकत्र ठित्रेखभित्रहा ७४न चागामित्र विष्णानाष्ट्रत भषा-পরিবেশনে প্রাচুর্য ও বৈচিত্র্য ছিল না। এখনকার যে বিষ্ণা জ্ঞানের নানা কেন্দ্র থেকে বিশ্বপ্রকৃতির পরিচয় ও তার শক্তির রহস্ত নতুন नकून करत्र पिथाष्टि छात्र अधिकाः म हिन छथन निर्मा, अर्गाहरत्। প্রকৃতিতত্ত্বে বিশেষজ্ঞদের সংখ্যা ছিল অন্নই। তথন ইংরেজি ভাষার ভিতর দিয়ে ইংরেজি সাহিত্যকে জানা ও উপভোগ করা ছিল यांकिलयना रेक्ट्याद পदिहत्र। क्निदाखि यूथदिल छिन वार्कित वाधिणात्र, यक्रान्त्र ভाषाश्चवारम्य छद्रमञ्च : नित्र्ष्ट्रे चार्नाम्ना চলত সেক্স্পিয়ারের নাটক নিয়ে, বায় রনের কাব্য নিয়ে এবং ভখনকার পলিটিক্সে সর্বমানবের বিজয়বোষণায়। তথন আমরা স্বজাতির यांधीनठांत्र गांधना चांत्रष्ठ करत्रितृय, किंद्र चरुरत्र चरुरत्र हिन हेश्यक ব্যাতির ওদার্যের প্রতি বিশ্বাস। সেই বিশ্বাস এত গভীর ছিল বে এक नमम चामारित गांधरकत्रा शित्र कर्द्रिशिन रव, अहे विकिछ चाछित्र

সভ্যতার সংকট

খাধীনতার পথ বিজয়ী জাতির দান্দিণ্যের বারাই প্রশন্ত হবে। কেননা, এক সময় অত্যাচার-প্রশীড়িত জাতির আ্রারহল ছিল ইংলঙে। যারা খজাতির সন্মান রক্ষার জন্ত প্রাণপণ করছিল তাদের অঞ্জিত আসন ছিল ইংলঙে। মানবমৈত্রীর বিশুদ্ধ পরিচয় দেখেছি ইংরেজ-চরিত্রে। তাই আন্তরিক শ্রদ্ধা নিরে ইংরেজকে হ্রদয়ের উচ্চাসনে বসিয়ে-ছিলেম। তথনো সাম্রাজ্যমদমন্ততার তাদের খভাবের দাক্ষিণ্য কল্বিত ছয় নি।

আমার যখন বরগ অল ছিল ইংলতে গিরেছিলেম। সেই সময় অন্
বাইটের মুখ থেকে পার্লামেণ্টে এবং তার বাহিরে কোনো কোনো
সভার বে বক্তৃতা শুনেছিলেম তাতে শুনেছি চিরকালের ইংরেজের
বাণী। সেই বক্তৃতার হৃদরের ব্যাপ্তি জাতিগত সকল সংকীর্ণ সীমাকে
অতিক্রম করে যে প্রভাব বিস্তার করেছিল সে আমার আজ পর্যন্ত মনে
আছে এবং আজকের এই শীব্রই দিনেও আমার পূর্বস্থতিকে রক্ষা
করছে। এই পরনির্ভরতা নিশ্চরই আমাদের লাঘার বিষয় ছিল না।
কিন্তু এর মধ্যে এইটুকু প্রশংসার বিষয় ছিল বে, আমাদের আবহমান
কালের অনভিজ্ঞতার মধ্যেও মমুগ্রন্থের যে-একটি মহৎ রূপ সে দিন
দেখেছি, তা বিদেশীরকে আশ্রয় ক'রে প্রকাশ পেলেও, তাকে শ্রন্থার
সঙ্গেরণ করবার শক্তি আমাদের ছিল ও কুঠা আমাদের মধ্যে ছিল
না। কারণ, মান্তবের মধ্যে যা-কিছু শ্রেষ্ঠ তা সংকীর্ণভাবে কোনো
জাতির মধ্যে বহু হতে পারে না, তা কুপণের অবকৃত্ব ভাণ্ডারের সম্পদ্
নর। তাই, ইংরেজের যে সাহিত্যে আমাদের মন পৃষ্টিলাভ করেছিল
আজ পর্যন্ত তার বিজয়শন্থ আমার মনে মন্ত্রিত হয়েছে।

গিভিলিজেশন, যাকে আমরা সভাতা নাম দিয়ে তর্জমা করেছি, তার যথার্থ প্রতিশব্দ আমাদের ভাষার পাওরা সহজ নয়। এই সন্মাতার বে রূপ আমাদের দেশে প্রচলিত ছিল যমু তাকে বলেছেন

गर्नाठांत्र। वर्षा९, তা कठकश्रीन गांगाव्यिक निव्यायत्र वक्तन। त्रहे निम्नमश्वनित गष्टक थाठीनकारन य भात्रना ছिन राख এकि गश्कीर्ग **क्रिगामथरखत्र मर्था वद्य। जत्रश्र**की ७ मृनम्वकी नमीत्र मथावकी रव দেশ बक्षावर्छ नाय विथाज ছिन मिहे पिट्न य चाठात्र भावन्भर्यक्रम চলে এসেছে তাকেই বলে সদাচার। অর্থাৎ, এই আচারের ভিডি थात छे १ दे अ छिष्ठि — छात्र या ए । ये छ निष्ठं त ए । ये छ विष्ठा र छ थाक्। এই काরণে প্রচলিত সংস্কার আমাদের আচারব্যবহারকেই প্রাধান্ত দিয়ে চিত্তের স্বাধীনতা নির্বিচারে অপহরণ করেছিল। गमाठादित य जामर्न এकमा यस बकावर्ए প্রতিষ্ঠিত দেখেছিলেন সেই व्यानर्भ क्रम्भ लाकाठात्रक व्यायत्र कत्रला। व्यामि यथन कीवन व्यात्रस कर्त्रिक्र्म ७ थन हेश्रिक निकात खालात এই नाक् चाठारत्र विक्रिक विद्यार प्राथन निक्छ यन পরিব্যাপ্ত হয়েছিল। রাজনারায়ণবার্ কর্তৃক বণিত তখনকার কালের শিক্ষিতসম্প্রদায়ের ব্যবহারের বিবরণ পড়লে সে ৰুথা স্পষ্ট বোঝা যাবে। এই সদাচারের স্থলে সভ্যভার আদর্শকে আমরা ইংরেজ জাতির চরিত্রের সঙ্গে মিলিত করে গ্রহণ क्द्रिक्य। चार्यापद পরিবারে এই পরিবর্তন, कि ধর্মমতে कि लाकवावहात्त्र, भाषावृद्धित चञ्चनागत्न পूर्वভाव গৃহীত হয়েছিল। चामि राष्ट्रे ভাবের মধ্যে জন্মগ্রহণ করেছিলুম এবং সেই সঙ্গে আমাদের चार्जाविक गाहिलाञ्चत्राग देश्दब्रक्ष के कागत्न विग्रिक्षण । अहे राज জীবনের প্রথম ভাগ। ভার পর থেকে ছেদ আরম্ভ হল কঠিন ছংখে। প্রত্যহ দেখতে পেলুম, সভ্যতাকে যারা চরিত্র-উৎস থেকে উৎসারিত রূপে স্বীকার করেছে, রিপুর প্রবর্তনায় তারা তাকে কী অনায়াসে লব্দন করতে পারে।

নিভূতে গাহিত্যের রসসন্তোগের উপকরণের বেষ্টন হতে এক দিন আমাকে বেরিয়ে আসতে হয়েছিল। সে দিন ভারতবর্ষের জনসাধারণের

সভ্যভার সংকট

বে নিদাকণ দারিত্র্য আমার সমুখে উদ্বাটিত হল তা ক্রমবিদারক।
আর বস্ত্র পানায় শিক্ষা আরোগ্য প্রভৃতি মামুবের শরীরমনের পক্ষে
বা-কিছু অত্যাবশ্রক তার এমন নিরতিশয় অতাব বোধ হয় পৃথিবীর
আধুনিক-শাসন-চালিত কোনো দেশেই ঘটে নি। অবচ এই দেশ
ইংরেজকে দীর্ঘকাল ধরে তার ঐবর্ধ জুলিয়ে এসেছে। বখন সভ্য জগতের
মহিমাধ্যানে একাস্কমনে নিবিষ্ঠ ছিলেম তখন কোনো দিন সভ্যনামধারী
মানব-আদর্শের এত বড়ো নির্চুর বিক্রত রূপ করনা করতেই পারি নি;
অবশেবে দেখছি, এক দিন এই বিকারের ভিতর দিয়ে বছকোটি জনসাধারণের প্রতি সভ্যজাতির অপরিসীম অবজ্ঞাপূর্ণ উদাসীক্ত।

य यञ्चनक्तित्र नाहारया हेश्टब्रक चाननात्र विचकर्ष्**ष** तका करत्र এসেছে তার যথোচিত চর্চা থেকে এই নিঃসহায় দেশ विक्छ ; অথচ চক্ষের সামনে দেখলুম, জাপান ষন্তচালনার যোগে দেখতে দেখতে गर्दछाভारि की त्रक्य गम्भावान हरत्र एंठेन। रगरे कानारनत्र गमुबि वासि चठरक मिर्थ এगिছि, मिर्थिছ गिथानि चर्चाित मरश छात्र गछा শাসনের রূপ। আর দেখেছি রাশিয়ার মস্কাও নগরীতে জনসাধারণের यर्था निकारिखाद्वत्र व्याद्वागाविखाद्वत्र की व्यगायाञ्च वक्रुप्य व्यग्नात्र--रमहे व्यथायमारमय क्षांचार अहे वृहद माञ्चारकाम मूर्यका ७ देनम ७ वाबावमानना व्यथनात्रिष्ठ हरम यास्त्रः। এই मणुण वािजिनिन करम नि, विश्वष यानवगष्टकत्र व्यञाव गर्वज विश्वात्र करत्रह्। ञात्र क्रञ এবং আশ্চর্য পরিণতি দেখে একই কালে ঈর্যা এবং আনন্দ অমুভব करबि । यकाल महरव शिरम वाभियाव भागनकार्यम এकि चनारावनका वायात्र वरुद्रक म्थर्न करबिल- एएथिছिल्य, रम्यानकात्र यूमल्यानएमक गटक बाड्रे-व्यक्षिकादब्रब काग-वाटिशवाबा निद्य व्यक्रमण्यानदम्ब काटना विद्राध घटने ना, ভাদের উভয়ের মিলিভ चार्यमध्य ভিভরে রয়েছে भागनग्रवश्वात्र वधार्थ गতा ভূমিকা। वह्मश्थाक भन्नकारखन्न छेभदन

खान होना करत्र अयन ब्राह्मिक चाक खानान इति कानित्र এই পরজাতীয়ের পৌরুষ দলিত করে দিয়ে তাকে চিরকালের মতো निर्धीव करत्र द्वरथिए। त्यां छिरत्रहे त्रां निर्धात्र गरक त्रांद्विक गक्क चार्छ वहनः थाक यक्र इत्र यूननयान खाछित्र— चायि निष्य नाका निष्ठ भाति, এই জাতিকে गक्न निक् भक्तियान करत्र তোলবার জন্ত তাদের व्यथानगात्र निव्रस्त । गक्न विवर्ष जात्मव गहर्याभी करव वाथवाव वस्र माजिए के गर्ज (यए वेत ए होत खारा वासि पर थिए अवः म गर्फ किছू পড়েছি। এই त्रक्य गर्जि (यर्कित প্রভাব কোনো অংশে অসমানকর नम्र अवर তাতে मञ्चारपद शनि कदाना। रमथानकात्र भागन विष्मित्र अख्यित्र निमाक्रण निष्णियो। यख्यत्र भागन नम् । प्राथ এग्रिक्, भात्रक्रप्रभ अक मिन इहे यूद्राभीय काजित्र कांजात्र ठाटण यथन भिष्ठे हिष्ट्रण जथन त्रिश्च बाक्रमत्वत्र यूद्रांशीय मः द्वाचाक त्यत्क वाननात्क मूक्क करत्र क्यिन करत्र এই नवकाश्रठ कां जि चाचानक्षित्र भूर्नजागांश्यन व्यवृष्ट रुप्ति । (मर्थ अल्मम, खद्रभूमि सान्ति मल्य मूमनमान्ति अक कारन যে সাংঘাতিক প্রতিযোগিতা ছিল বর্তমান সভ্যশাসনে তার সম্পূর্ণ উপশম हरम शिरम्र हि। जान मोजारगान क्यान कान्न वहे रय, रम युद्राणीम कां जित्र ठकां ख्वांन (परक मूक श्रष्ठ (भरत्रिन। गर्वा खः कत्र (भ व्याप चामि এই পারপ্রের কল্যাপকামনা করি। আমাদের প্রতিবেশী আফগানি-शास्त्र यथा निका अवर नयाकनी छित्र त्नहे नार्यकनीन छेर्दैक्य यपिष्ठ এখনো घটে नि किन्छ ভার সম্ভাবনা অকুগ্ধ রয়েছে, ভার এক্যাত্র কারণ— সভ্যতাগবিত কোনো যুরোপীয় জাতি তাকে আজও অভিভূত कत्राक भारत नि। এরা দেখতে দেখতে চার দিকে উন্নতির পথে, যুক্তির भट्य, चक्षगत्र इट्ड ज्लान ।

ভারতবর্ষ ইংরেজের সভ্য শাসনের জগদল পাধর বুকে নিয়ে ভলিয়ে

সভ্যতার সংকট

পড়ে बहेन निक्रभाव निष्ठनछात्र यथा। हिनिक्षत्र यछन এछ राष्ट्रा थाठीन गणा जाणिएक देश्यक चजाणिय चार्थगाश्यम जन वन पूर्वक चहिएकनिरिय चर्जविछ करत्र मिर्टन, এবং তার পরিবর্তে চীনের এক चःभ चाषामार कराम। এই चडीएउन कथा यथन क्रमभ जूरम अरमि छथन (मथनूय, ऐखन्र-हीनरक जानान ननायःकद्रन क्रांक श्रेष्ठ ; हेरणएअत्र त्राह्वेनीजिथावीर नत्रा को चवळाशूर्व छेष्ठराजात्र मरण मह मञ्जूषिएक एक राम गम्ज करत्रिम। भरत अक नमन्न प्लानित्र প্रकाष्ठ्य-गर्डन (यए वेत क्लाम केल के विका करत पिटम, তাও **पिथमाय এই पूत्र (पट्य)** । एम्टे ममरब्रे अ**७ पिट्यि**ह, এक मन हेरद्रक राहे विभम्शा एलात्र कन चाचागमर्भन कर्त्रिहरनन। यिष हेश्द्राच्यत्र अहे खेनार्य व्याह्य हीत्नत्र मश्कटहे यद्याहिल व्याखेल हम নি, তবু যুরোপীয় জাতির প্রজাখাতন্তা রক্ষার জন্ত যখন তাদের কোনো वीव्रक প्राण्णां क्यूष्ठ प्रथम् एथन चाराव अक्राव मन् प्रम, हेश्द्रक्र क अक्षा मानविद्रि खेरीक्र ए एए पछि अवश की विचारमंत्र महन ভক্তি করেছি। যুরোপীয় জাতির স্বভাবগত সভ্যতার প্রতি বিশ্বাস ক্রমে की करत्र हात्रारना राम छात्रहे अहे लाइनीय हेछिहान चाक चामारक बानाए रम। गणा भागत्नव ठामनाव छात्रख्यर्वंत्र गक्रम्ब (ठाव रव ছूर्निक चाक याथा जूटन উঠেছে সে কেবল অন্ন বন্ধ শিকা এবং चाट्याद्वात्र लाकावर चणाव गाज नवः त्य रूटक ভावलवानीव यरग चिं नृनश्म चाचावित्यम, यात्र कारना कुमना स्वरंख भारे नि ভারতবর্ষের বাইরে মুসলমান স্বায়ত্তশাসনচালিত দেশে। আমাদের विश्रम अर्थे (य, अर्थे पूर्वाजिय करक ज्यामारमपूर्वे ग्रयाक्यक अक्यांक मात्री क्रवा हर्ति। क्रिक अरे हर्गछित्र क्रम रव खाछार्रे क्रमम छेरके हर् **উঠেছে সে यमि ভারভশাসনবদ্রের উর্ব্বন্তরে কোনো-এক গোপন কেন্তে** व्यवस्त्र बाबा लाविक ना रक का रतन कथरनारे कावक-रेकिरारमब

थक रए। चन्यानकत्र चनका नित्राय घटेए नात्रक ना। जात्रकरांनी य वृषिगायर्था कार्तन जारान जानात्न कार्य नान, ज कथा विधान-योगा नम्र। এই ছুই প্রাচ্যদেশের সর্বপ্রধান প্রভেদ এই, ইংরেজশাসনের बात्रा गर्वटाखार व्यथिक्छ ७ व्यक्टिक्छ खात्रछ, वात्र खानान এইक्रन कारना भाष्ठां जाञ्जि भक्षांत्रात्र जावत् (धरक मूक । এই विस्नीत गणाणा, यिन अदक गणाणा याना, चामामित्र की चनहत्रन करत्रहि छ। खानि ; म তার পরিবর্তে দও হাতে স্থাপন করেছে যাকে নাম দিয়েছে Law and Order, विधि এवং ব্যবস্থা, या সম্পূর্ণ বাইরের জিনিস, যা मार्त्रामानि याख। পাশ্চাত্য জাতির সভ্যতা-অভিযানের প্রতি শ্রদা जगाधा श्टब्रह्म। त्म जात्र मिक्किन चार्यापत्र पिथिरब्रह्म, মুক্তিরাপ দেখাতে পারে নি। অর্থাৎ, মান্তবে মান্তবে যে সম্বন্ধ সব চেল্লে गूमारान এবং যাকে यथार्थ मछाछा रमा ख्रां भारत, छात्र कुर्भगछा এই ভারতীয়দের উন্নতির পথ সম্পূর্ণ অবক্লম করে দিয়েছে। অথচ, আমার ব্যক্তিগত সৌভাগ্যক্রমে মাঝে মাঝে মহদাশয় ইংরেজের সঙ্গে चार्यात्र यिमन चर्छेट्छ। এই यहच चायि चन्न कालित कात्ना मध्यमारम् मर्था प्रथए भारे नि। अँम वामाम विश्वामरक हैश्त्रक काणित व्यक्ति वाक्ति (वैदिश त्रिर्श्यहन। मृष्टोक्क्स्टन अञ्चलक नाम कद्राट भादि; ठाँद मरश यथार्ष देशदबक्त, यथार्थ धुणानरक, यथार्थ यानवरक वसुलारव चलास निकरि एमथवात्र लोलागा जायात्र ঘটেছিল। আজ মৃত্যুর পরিপ্রেক্ণীতে স্বার্থসম্পর্কহীন তাঁর নিভীক गरुख चार्त्रा ब्यां रियंत्र रूप एका निरम्रह । जीन कार्ह चामान এবং আমাদের সমস্ত জাতির কৃতজ্ঞতার নানা কারণ আছে, কিছ राखिशंडडार्य अकृष्टि कांत्रण चामि छात्र कार्छ वित्निय कुडडा छक्न नग्राम हेश्द्राक माहित्जात পরিবেশের মধ্যে যে ইংরেজ জাভিকে वािन निर्मन अदा अकता मन्मूर्गिटिख निर्मन करमिट्टनम, वामान त्नच-

সভাতার সংকট

বন্ধনে তিনি তারই জীণতাও কলক নোচনে সহারতা করে গেলেন।
তার স্থতির সলে এই জাতির মর্মগত মাহাত্ম আমার মনে এব হরে
বাকবে। আমি এঁলের নিকটতম বন্ধু বলে গণ্য করেছি এবং সমস্ত
মানবজাতির বন্ধু বলে মান্ত করি। এঁলের পরিচয় আমার জীবনে একটি
লোচ সম্পদরূপে সঞ্চিত হরে রইল। আমার মনে হয়েছে, ইংরেজের
মহস্তকে এঁরা সকল প্রকার নৌকোড়বি বেকে উদ্ধার করতে পারবেন।
এঁলের বদি না দেখতুম এবং না জানতুম তা হলে পাশ্চাত্য জাতির
সম্বন্ধে আমার নৈরাশ্র কোধাও প্রতিবাদ পেত না।

এমন সময় দেখা গেল, সমস্ত ষ্রোপে বর্বরতা কী রকম নখদন্ত বিকাশ করে বিভীবিকা বিস্তার করতে উন্তত। এই মানবপীড়নের মহামারী পাশ্চাতা সভ্যতার মজ্জার ভিতর থেকে জাগ্রত হয়ে উঠে আজ মানবাদ্ধার অপমানে দিগন্ত থেকে দিগন্ত পর্যন্ত বাতাস কল্বিত করে-দিয়েছে। আমাদের হতভাগ্য নিঃসহায় নীরদ্ধ অকিঞ্চনতার মধ্যে আমরা কি তার কোনো আভাস পাই নি ?

ভাগ্যচক্রের পরিবর্তনের ঘারা এক দিন না এক দিন ইংরেজকে এই ভারতসাদ্রাজ্য ত্যাগ করে যেতে হবে। কিন্তু কোন্ ভারতবর্ষকে সে পিছনে ত্যাগ করে যাবে? কী লক্ষীছাড়া দীনতার আবর্জনাকে? একাধিক শতান্দীর শাসনধারা ধখন ওক হয়ে যাবে, তখন এ কী বিদ্ধীপুশ্বশ্যা ছ্বিষ্ট নিক্ষণতাকে বহন করতে থাকবে? জীবনের প্রথম আরম্ভে সমন্ত মন থেকে বিশ্বাস করেছিলুম মুরোপের অন্তরের সম্পদ এই সভ্যতার দানকে। আর আজ আমার বিদারের দিনে সে বিশ্বাস একেবারে দেউলিয়া হরে গেল। আজ আশা করে আছি, পরিত্রাপকর্তার জন্মদিন আগছে আমাদের এই দারিজ্যলাহিত কুটারের মধ্যে; অপেকা করে থাকব, সভ্যতার দৈববাদ্ধী সে নিয়ে আসবে, মাছবের চরম আখাসের কথা মাছবকে এসে শোনাবে এই প্রদিগন্ত

বেকেই। আন্ধ পারের দিকে যাত্রা করেছি— পিছনের যাটে কী দেখে এলুন, কী রেখে এলুন, ইভিহাসের কী অকিঞ্চিৎকর উচ্ছিট সভ্যতাভিমানের পরিকীর্ণ ভয়ন্তপ ! কিন্তু, মান্তবের প্রতি বিখাস হারানো পাপ, সে বিখাস শেব পর্যন্ত রক্ষা করব। আশা করব, মহাপ্রেলয়ের পরে বৈরাগ্যের মেবমুক্ত আকাশে ইভিহাসের একটি নির্মল আত্মপ্রকাশ হয়তো আরম্ভ হবে এই পূর্বাচলের স্র্যোদ্যের দিগন্ত থেকে। আর-এক দিন অপরাজিত মান্তব্য নিজের জন্নবাজার অভিযানে সকল বাধা অভিজ্ঞম করে অগ্রসর হবে ভার মহৎ মর্যাদা ফিরে পাবার পরে। মন্ত্রান্তর অন্তবীন প্রভিকারহীন পরাভবকে চরম বলে বিখাস করাকে আমি অপরাধ মনে করি।

এই কথা আজ বলে যাব, প্রবলপ্রতাপশালীরও ক্ষমতা মদমন্ততা আত্মন্তির যে নিরাপদ নয় তারই প্রমাণ হবার দিন আজ সমুখে উপস্থিত হয়েছে; নিশ্চিত এ সত্য প্রমাণিত হবে যে—

> অধর্মেণৈয়তে তাবৎ ততো ভদ্রাণি পশ্রতি। ততঃ সপদ্মান্ অয়তি সমুলম্ভ বিনশ্রতি॥

वि महामानव जारम जिस्स विरुक द्यामाक नारम मर्ज्यानिय पारम पारम। ख्यानिक रिट प्रक प्रति मन्द्र, नद्रतारक राख क्षत्रक— व्या महाक्षरमञ्ज नथ। जाकि जमात्रावित्र क्रांट्यांत्रण यठ थूनिकटन हर्द्य राम कथ।